Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

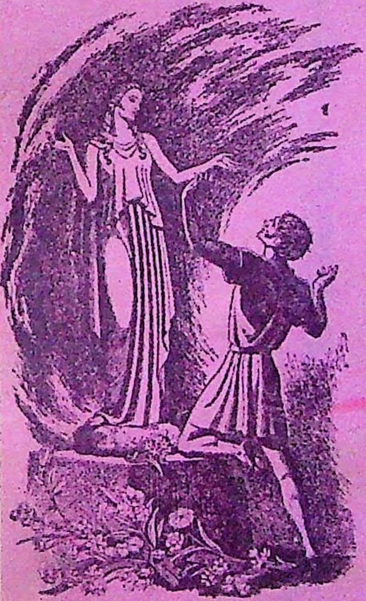

प्राचीन यूनानी कहानियाँ

डॉ० रांगेय राघव

किताब महल (होलसेल डिवीजन) प्राइवेट लिमिटेड
रजिस्टर्ड आफिस : ५६ ए, जीरो रोड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

9 18/08/20

Sh. Ghulam Mohamad & Sons
Book-Sellers, Publishers & Stationers
Govt. Order Suppliers,
Maisuma Bazar, SRINAGAR KASHMIR.

Paracheen yunani Kahanyai

प्राचीन यूनानी कहानियाँ

Ranghi Raghaw

डॉ॰ रांगेय राघव

किताब महल (होलसेल डिवीजन) प्राइवेट लिमिटेड
रजिस्टर्ड आफिस : ५६ ए, जीरो रोड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ग्रन्थ संख्या : ४१५

Acc. No 25559
Cost Rs. 5.09
Date 30.4.66

Sri Pertap Singh Library Srinagar

118

H 83.1
R 18 P

प्रकाशक : किताब महल (हो० डि०) प्राइवेट लिमिटेड
रजिस्टर्ड आफिस : ५६-ए, ज़ीरो रोड, इलाहाबाद।
शाखाएँ : २३५, हार्नबी रोड, बम्बई १।
: २८, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली ७।
एजेन्सियाँ : किताब महल, अटल भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर।
: किताब महल, अशोक राजपथ, पटना।
: किताब महल, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।
मुद्रक : यूनियन प्रेस, शहरारावाग़ इलाहाबाद।

Sri Pratap Singh Library

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकाशकीय

डॉ० रांगेय राघव अब हमारे बीच में नहीं रहे पर उनकी लिखी दर्जनों पुस्तकें हिन्दी साहित्य-भंडार की स्थायी निधि हैं।

डॉ० रांगेय राघव की प्रतिभा बहुमुखी थी और साहित्य की सभी विधाओं पर उनकी कलम समान गति से चलती थी। विचारों से वे प्रगतिशील थे पर प्राचीन साहित्य एवं संस्कृति में उनकी अगाध निष्ठा थी। उन्होंने इतिहास और संस्कृति के अन्धकार-युग में भी अपनी तीव्र कल्पना शक्ति के सहारे प्रवेश करके जिस कथा-शिल्प का निर्माण किया था वह अनूठा है।

डॉ० रांगेय राघव ने किताब महल के विशेष आग्रह पर 'विश्व की प्राचीन पौराणिक कथाओं' की ६ पुस्तकों की एक ग्रन्थमाला तैयार की थी। 'प्राचीन यूनानी कहानियाँ' इसी ग्रन्थमाला का दूसरा पुष्प है। हिन्दी-जगत में इसकी चर्चा बहुत दिनों से थी। नए रंग-रूप में अब यह आपके सामने प्रस्तुत है।

—प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनुक्रम

योरोपा और वृषभ : १
बलात्कार : ८
दुखी आयो : १६
वासना : ३२
टैंटैलस का दण्ड : ४२
मृतकों की दुनिया में ऑरफियस : ४५
गोल्डन फ्लीस की खोज : ५८
एपोलो का वंशज : ८४
एपोलो का बेटा : ६५
ईको मर गई : १०३
रूप की ज्वाला : ११५
यूलिसीस की सूझ : १६२
ईनिअस की महायात्रा : २०३
माँ का हत्यारा : २४८
ओरेंसिटीस की मुक्ति : २६३
ईडियस की यातना : २७८
मूर्ख माईडास : २६६
क्यूपिड का अमर प्रेम : ३०४
पर्सियस की महायात्रा : ३३३
वृद्ध की पत्नी फ़ीड्रा : ३५५
थीसियस और बैल : ३६९

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

योरोपा और वृषभ

ओलिम्पस का राजा (ज़िअस) ज्यूपिटर एक दिन भोर के समय पहाड़ की चोटी पर बैठा हुआ प्रकृति का सौंदर्य्य देख रहा था। ग्रीष्म ऋतु की वह सुहावनी भोर उसके मन में गुदगुदी सी पदा करने लगी। सामने ही उपवन में नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्प खिल रहे थे। पक्षियों का कलरव एक अद्‌भुत संगीत बनकर वातावरण को गुँजा रहा था। ज्यूपिटर विकल सा होकर इधर-उधर देखता हुआ बैठा था।

फेनिला सुन्दरी (एफ्रोडाईट) वीनस ने उसे उसी समय ताल के तीर से देखा। वह उस समय जल-विहार के उपरान्त बाहर निकली थी। नवजात पुष्प की भाँति वह सद्यस्नाता भुवनमोहिनी ज्यूपिटर को उस अवस्था में देख-कर ही समझ गई कि वह विकल क्यों हो उठा है। वह तनिक मुस्कराई और एक वृक्ष की ओट खड़े होकर उसने क्यूपिड का स्मरण किया। तुरंत जैफायर भागा और मंद मलयानिल पर बिठाकर क्यूपिड को वहाँ ले आया। वीनस ने उससे खुसफुसा कर कुछ कहा और शीघ्र ही उस काम और वासना के देवता ने धनुष पर पुष्प प्रत्यंचा चढ़ा कर काम बाण ज्युपिटर के हृदय पर छोड़ दिया। वह अदृश्य बाण जाकर वहाँ गड़ गया और उसके लगते ही ज्यूपिटर काम से विकल हो उठा। उसके श्वांस जल्दी-जल्दी चलने लगे और वह तीव्र वासना से भर गया। उसी समय उसकी दृष्टि सुदूर पृथ्वी पर समुद्र तीर पर मधुर पुष्प-वन में खेलती हुई कई सुन्दरी नवयुवतियों पर पड़ी। उसको उनका इस प्रकार भाग कर खेलना, हँसना तथा आनंद मनाना उस समय बहुत भाया। वह निर्निमेष नेत्रों से उन्हें देर तक देखता रहा, उसने पहचाना कि उन सब में टायर के राजा की पुत्री यूरोपा ही सर्वश्रेष्ठ थी। बाकी सभी युवतियाँ भी लावण्यमयी तो अवश्य थीं परन्तु यूरोपा उन सबमें रानी प्रतीत हो रही थी। उसने देखा कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हँस कर केलि करती हुई वह युवतियाँ कभी समुद्र के फेनों में घुस जातीं तो कभी तीर पर आकर एक दूसरी के पीछे भागने लगती थीं। उनकी किलकारियों और मधुर हास्य से समुद्र तीर मानो उल्लसित होकर ज्यूपिटर का आवाहन कर रहा था। विशाल नेत्रों वाली सुन्दरी योरोपा अंग से चिपके भींगे वस्त्रों में से अनन्य कामिनी बनी हुई मानो उसे ही बुला रही थी।

ज्यूपिटर और अधिक सहन नहीं कर सका। वह उस सुन्दरी को तुरंत अपनी भुजाओं में समेट लेना चाहता था। ओलिम्पस के राजा के लिए यह कोई बड़ी बात नहीं थी। वह सर्वशक्तिमान था। चाहता तो उसी समय उसे पकड़वा बुलवाता। परन्तु प्रत्यक्ष में वह ऐसा नहीं कर सकता था क्योंकि उसे अपनी स्त्री जूनो का अत्यधिक भय था। हालाँकि उस समय वह बहुत दूर कहीं गई हुई थी परन्तु फिर भी उसे भय लगा हुआ था कि कहीं वह आ न जाय। उसने तुरंत अपना रूप एक साँड़ का सा बनाया और उसी रूप में वह पृथ्वी की ओर चल पड़ा। स्वर्ग को पार करके वह श्वेत साँड़ आकाश-गंगा (मिल्की-वे) पर होता हुआ पृथ्वी पर आया और वहीं जहाँ योरोपा अपनी सखियों के साथ खेल रही थी जाकर हरी दूब चरने लगा।

योरोपा ने जब अपनी सखियों सहित पास ही एक अत्यन्त हृष्ट-पुष्ट सुन्दर साँड़ को चरते देखा तो पहिले तो वह उससे डरी परन्तु जब उसने देखा कि वह बहुत ही सीधा-सादा पशु था तो वह दौड़कर उसके पास आ गई और उसने उसको प्यार से पुचकारा। ज्युपिटर को उसकी वह पुचकार अत्यन्त लुभावनी लगी और वह अर्द्ध-निमीलित नेत्रों से उसकी ओर देखता हुआ वहीं उसके सामने बैठ गया और अपनी गर्दन उसने योरोपा के कोमल हाथों के नीचे झुका दी। उसको इस प्रकार करते देख स्त्रियाँ खिलखिला उठीं और तब योरोपा उस पर प्यार से हाथ फेरने लग गई। उसके उस स्पर्श से वह बैल अत्यन्त कामोद्वेलित हो रहा था और उसके सारे शरीर में फरफरी फैल रही थी। योरोपा को उसका महाश्वेत शरीर बहुत अच्छा लगा क्योंकि वह चन्द्रमा की भाँति उज्ज्वल और चमकदार था। उसके सींग छोटे-छोटे और अर्द्ध चन्द्राकार थे जो एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विचित्र चमक से ज्योति फैला रहे थे। स्त्रियों ने उसे चारों ओर से घेर लिया और वह सभी उसे थपथपाने लगीं। वे उससे हँस-हँस कर बातें भी करती जाती थीं। थोड़ी ही देर में उन्होंने सुगन्धित रंग-बिरंगे फूलों का एक मोटा गजरा बनाया और उसे बैल के गले में पहना दिया। ज्यूपिटर वासना की तीव्र पीड़ा से कराह उठा और उच्छ्वसित होकर श्वासें छोड़ रहा था। वह योरोपा की कोमल हथेलियों के बीच बिल्कुल झुक गया था क्योंकि ऐसा करने में उसने उसका अधिक से अधिक स्पर्श पा लिया था।

योरोपा ने अब उसकी पीठ और उठे हुए ठठार को दबाते हुए अपनी सखियों से कहा :

"यह इतना सीधा और अच्छा बैल है कि मेरी इच्छा इस पर चढ़ कर बैठ जाने की हो रही है. . . .आओ हम सभी इसकी बड़ी पीठ पर बैठ जायँ और फिर हम चारों ओर इसे चलायेंगी. . . ."

"बिल्कुल ठीक. . . .बिल्कुल ठीक," अन्य सखियाँ चिल्लायीं और तब उछल कर योरोपा उसकी पीठ पर बैठ गई। उसी समय वह बैल लपक कर खड़ा हो गया और इतने में कि अन्य सखियाँ बैठतीं. . . .वह समुद्र की ओर वायु वेग से भागा और पलक मारते में अन्य सखियों की पकड़ से वह बहुत दूर हो गया। योरोपा ने भय से चीत्कार किया और उसके साथ-साथ उसकी सखियाँ भी घबरा कर चीत्कार कर उठीं। जब वह जल के पास पहुँचा तो भय मिश्रित आश्चर्य के साथ योरोपा ने देखा कि बिना किसी रुकावट के वह जल पर भी उसी आसानी से भागा चला जा रहा था जैसे वह पृथ्वी पर भाग रहा हो। वह घबराकर उसके चाँदी के सींगों को पकड़े उसकी पीठ पर चिपकी बैठी रही। उसके उस मांसल स्पर्श से बैल अत्यन्त सुख प्राप्त कर रहा था।

समुद्र के बीच जब वह पहुँचा तो चारों ओर से उसे सुन्दरी मत्स्य-कन्याओं ने घेर लिया। वह उस समय अपने विचित्र वाहनों डोल्फिन मछलियों पर चढ़ी हुई थीं। कोई-कोई ट्रिटन जन्तुओं पर चढ़ी हुई विचित्र शंखों में श्वाँस फूँककर बाजा बजा रही थीं। उन्होंने उस साँड़ को तीन ओर से घेर लिया और गाजे-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाजे के साथ उसके साथ आगे बढ़ने लगीं। मानो वह उस बैल का ससम्मान जुलूस निकाल रही थीं ; समुद्र में ज्वार-भाटे आने लगे और पानी में भयंकर खलबली मच गई। परन्तु बैल पर जैसे इन सभी का कोई असर नहीं था— वह तीव्र गति से पानी की सतह पर फिसला चला जा रहा था। योरोपा ने देखा कि वह उसी प्रकार शांत था। उसी समय समुद्र में भयानक हलचल मची और समुद्र का देवता नैप्चून (पोसीडौन) स्वयं बाहर निकला और उसने जल की सतह पर खड़े होकर उस बैल का अभिवादन किया, तत्पश्चात् उसने चिल्लाकर आज्ञा दी कि तूफान शांत हो जाय और वह स्वयं आगे-आगे भाग कर मार्ग को साफ और स्थिर करने लगा।

योरोपा भय से आक्रांत थी। उसने बैल को कसकर चिपका लिया और अपना गाल उसकी ठठार पर रखे वह आँखें मींचे पड़ी रही। उसके आलिंगन से ज्युपिटर के रग-रग में नवीन उत्साह छा गया और वह द्रुत गति से आगे बढ़ने लगा।

उस बैल की विचित्रताओं और समुद्र के बीच अति सम्मान पाने से योरोपा अब यह तो समझ गई थी कि वह कोई साधारण साँड़ नहीं था। निश्चिय ही वह कोई विशेष साँड़ था जिस पर देवताओं की असीम कृपा थी। ऐसा उसने सोचा, परन्तु अब वह अपने घर से बहुत दूर आ गई थी। उसे भय हुआ कि कदाचित् वह लौट कर वहाँ जा ही न सके। साहस एकत्रित करके वह गिड़गिड़ा कर रुकते-रुकते बोली :

"मु....झे....मुझे....कहीं दूर देश.... न ले जाओ....मुझे वहाँ नये-नये मनुष्यों....के बीच रहना पड़ेगा....नहीं....नहीं.... मुझे वापस ले चलो....मुझे वापस ले चलो....मैं अपने देश अपने बंधु-बांधवों और मित्रों के साथ....मित्रों के साथ....रहना चाहती हूँ.... मुझ पर दया करो।"

और वह इतना कह कर चुप ही हुई थी कि मधुर स्वर से ज्युपिटर बोला :

"हे सुन्दरी ! घबराओ मत क्योंकि तुम्हारा संरक्षण स्वयं देवाधिदेव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(ज़िअस) ज्युपिटर कर रहा है....हे कामिनी मैंने तुम्हें ओलिम्पस से जो हँसते, भागते और किलकारियाँ करते देखा तो उसी समय से मैं तुम्हें चाहने लग गया था....तुम्हारे लिये मैं इतना अधिक विकल हो उठा था कि उसी समय तुम्हें पाने के लिए मैं इस रूप में तुम्हारे पास चला आया....हे रूपसि ! तुहारे कोमलम और मांसल शरीर का स्पर्श मुझे अत्यन्त सुखकर और मादक लग रहा है और मैं वासना की अग्नि में जलता हुआ कामोद्वेलित हो उठा हूँ.... तुम मुझे छोड़ कर कहीं नहीं जा सकती क्योंकि मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ। इस समय मैं तुम्हें अपने जन्म-स्थान क्रीट की ओर ले जा रहा हूँ जहाँ पहुँचते ही मैं तुम्हें अपने असली रूप में ग्रहण करूँगा और तत्पश्चात् तुम्हारे साथ विवाह करके अखण्ड विलास से तुम्हें विभोर कर दूँगा....बोलो....बोलो....क्या तुम अपने इस प्रेमी को ठुकरा दोगी.... ?"

ज्यूपिटर का यह प्रश्न था अथवा आज्ञा यह तो योरोपा नहीं समझी परन्तु उसकी मधुर वाणी को सुनकर उसका भय बिल्कुल जाता रहा बल्कि भय के स्थान को प्रेम ने ले लिया। वह पुलकित हो उठी और उसने अब बाहें फैला कर उस बैल की पीठ को छपटा लिया और उसकी ठठार को चूम लिया। वह आत्म-विभोर होकर उच्छ्वसित श्वासों से उस पर पड़ी हुई उस सुन्दर घड़ी की बाट जोहने लगी जब उसका वह स्वर्गीय प्रेमी उसे अपनी भुजाओं में लेकर प्यार करेगा....वह बहुत खुश थी क्योंकि देवाधिदेव पराक्रमी ज्यूपिटर स्वयं उसका प्रेमी और होने वाला पति था....

इसी प्रकार देर तक वह साँड़ कोमलांगी योरोपा को लेकर क्रीट देश के तीर पर जा पहुँचा। नैप्चून अब भी आगे-आगे चल रहा था। यहाँ आकर योरोपा धीरे से उसकी पीठ से नीचे खिसक पड़ी। तुरन्त ही उसने देखा कि बैल का शरीर छोड़ कर अपने असली रूप में दिव्य वस्त्र धारण किये रत्नजटित किरीट और सुवर्ण कवच से अलंकृत ज्यूपिटर सामने खड़ा हो गया। वह सुन्दर देवता अपनी बलिष्ठ भुजाओं को फैलाये उसे पा लेने को आगे बढ़ा। वह शर्माई सी उस स्थान पर खड़ी रह गई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसी समय ओलिम्पस के बादलों से बने सिंहद्वार के रक्षक ऋतु लोग आकाश से उतर कर वहाँ द्रुतगति से आये और उन्होंने बादलों को बुला कर उनके सदृश्य धवल वस्त्रों से योरोपा को विवाह की पोशाक पहना दी। अलौकिक वस्त्रों को पहिन कर वह अनुपम सुन्दरी साक्षात् मोहिनी की भाँति प्रतीत हुई। वीनस ने उसे दूर से देखा और आँख मार कर क्यूपिड को बाण छोड़ने का इशारा किया। इस हठीले और उत्पाती क्यूपिड ने आकर्ण प्रत्यंचा खींचकर पुष्पबाण उसके हृदय में मार दिया। उसका लगना था कि योरोपा वासना में बह चली। लज्जा के स्थान पर काम ने उसे अधीर बना दिया और वह स्त्री सलज संकोच को भी छोड़ कर हंसग्रीवा की भाँति गोरी और मांसल भुजाओं को फैलाये ज्यूपिटर की ओर दौड़ी। काम के प्रहार से वह आरक्त, अधीर और उच्छ्वसित हो रही थी। वह भाग कर अपने प्रेमी के वक्षस्थल से चिपट गई। ज्यूपिटर ने उसे अपनी बाँहों में बाँध लिया। जैफायर ने तुरन्त बादलों से उन्हें चारों ओर से ढँक लिया। योरोपा का विलास प्रारम्भ हो गया।

उसी समय कलह की देवी ऐरिस से जूनो ने पूछा :

"हे सखि! आज मैं अपने पति को यहाँ कहीं भी नहीं देख रही हूँ.... मैंने सारा ओलिम्पस छान डाला है परन्तु वह कहीं भी नहीं मिल पाया है.... क्या तुम्हें मालूम है वह कहाँ है?" जूनो सुदूर देश से लौट आई थी।

ऐरिस ने एक बार पृथ्वी पर क्रीट के तट पर बादलों का वह पुंज देखा और फिर ज्यूपिटर के खिलाफ बोलने से भयभीत होकर इंकार कर दिया। ऐरिस द्वारा ही सारे स्वर्ग और पृथ्वी में कलह हुआ करते थे। जब जूनो ने उससे मना कर दिया तो जूनो (हैरा) एक प्रकार से निश्चिंत हो गई। उसे विश्वास हो गया कि उसका पति किसी अन्य स्त्री के साथ कहीं नहीं गया था।

ज्यूपिटर ने योरोपा को क्रीट की रानी बना दिया और उसके साथ अखण्ड विलास करता हुआ सुख भोगने लगा। वह नित्य उसके पास आता और जैफायर उसकी आज्ञा पाकर बादलों से उन्हें ऐसा ढँक लेता कि उन्हें कोई भी न देख पाता था।

योरोपा सारे संसार में मानी जाने लगी थी। उसके सम्मान में बड़े-बड़े

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राजा लोग उठ कर उसका स्वागत करते थे, ज्यूपिटर से उसके तीन पुत्र उत्पन्न हुए जो अपने जीवन काल में बहुत यशस्वी और बुद्धिमान हुए।

अनंत काल तक राज्य करने के उपरान्त जब योरोपा ने अपना शरीर छोड़ा तो ज्यूपिटर की असीम कृपा से वह देवी बना दी गई और फिर ओलिम्पस में रहने लगी। पृथ्वी पर लोगों ने उसके मन्दिर बनाये और श्रद्धा से उसको पूजने लगे। प्रेमीगण उसके मंदिरों में जाकर अपने अभीष्ठ की प्रार्थना करते थे और वीनस ने भी प्रसन्न होकर उसे अपनी प्रिय सखी बना लिया था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बलात्कार

ज्यूपिटर और उसके भाइयों ने सृष्टि के आरम्भ में 'टिटन्स' से भयानक युद्ध किया। टिटन्स ने भी वीरतापूर्वक मुकाबला किया। कई वर्षों तक लोमहर्षक युद्ध होता रहा। परन्तु अंत में ज्यूपिटर और उसके भाइयों ने उन्हें पराजित करके भगा दिया। वह प्राणों को लेकर भागे। ज्यूपिटर ने पीछा किया। परन्तु वह हाथ न आये। भाग कर वह एक गहरे अँधेरे गड्ढे में छिप गये जहाँ का मार्ग अत्यन्त दुष्कर था। इसे टारटारस कहते थे। जब शत्रु नहीं रहे तब ज्यूपिटर ने विश्व के तीन भाग किये। स्वयं वह स्वर्ग का राजा बना। नैप्चून समुद्रों का और हेड्स पाताल लोक अर्थात् अँधेरी दुनिया का राजा हुआ। इस प्रकार तीनों भाइयों ने तीन अलग-अलग राज्य स्थापित कर लिये।

कुछ समय तक तो शांतिपूर्वक सब कुछ ठीक चलता रहा परन्तु ऐसा समय हमेशा नहीं बना रहा। 'टिटन्स' के स्थान पर अब दानव खड़े हो गये और देवताओं से युद्ध करने लगे। इसमें भी वीभत्स संहार हुआ और पूरे दस वर्षों तक चलता रहा। देवता लोग अबकी बार फिर विजयी हुए। उन्होंने दानवों को पकड़ कर बाँधा और उन्हें 'एटना' के पहाड़ों के नीचे गाड़ दिया। परन्तु दानव, क्योंकि जीवित थे, वहाँ से छूटने का भीषण प्रयत्न करते थे। जब-जब वह छूटने को तड़फड़ाते पृथ्वी पर भूकम्प आ जाते। ऐसा प्रतीत होने लगता था मानो अब वह छूट जायँगे। परन्तु वह चाहे जितना भी क्यों न जोर लगाते वह मुक्ति नहीं पा सकते थे। एक बात अवश्य होती थी। वह यह कि जब यह दानव चिल्लाते और मुँह से अग्नि छोड़ते तो वह आग पहाड़ों की चोटियों को फाड़ कर ऊपर को निकलती थी, उसके साथ ही दानवों के मुँह से निकली क्रोधाग्नि की भाप भी धुआँ बन कर निकलने लगती थी।

शुरू-शुरू में जब यह लोग पहाड़ों के नीचे गाड़े ही गये थे तो हेड्स उनके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस शोरगुल और छूटने के प्रयत्न में तत्पर उनकी वाचालता को देखकर चिंतित रहता था। उसे डर था कि कहीं उनके हिलने से पृथ्वी कहीं से चटक न जाय क्योंकि उस हालत में निश्चय ही उन दरारों से सूर्य की किरणें नीचे की अँधेरी में पहुँच जायँगी जो वहाँ की व्यवस्था को ही बदल डालेंगी। अतएव वह हमेशा सतर्क रहता था। जब-जब दानव पहाड़ों के नीचे से निकलने का भीषण प्रयत्न करते तो वह अपने काले घोड़ों से जुते रथ में बैठ कर आकाश मार्ग से एटना के पर्वतों पर उड़ता और निरीक्षण किया करता था। उसके घोड़े कोयले की भाँति काले चमकते और अत्यन्त ही बलिष्ट और फुर्तीले थे।

ऐसे ही एक दिन वह पर्वत कंपित हो रहे थे। हेड्स अपने उसी रथ में बैठ कर एटना पर्वतों के ऊपर आकाश में चक्कर लगा रहा था कि उस पर दूर खड़ी वीनस की दृष्टि पड़ी।

वीनस को हेड्स की आदतें पसंद न थीं क्योंकि एक लंबे समय से प्रेम और वासना के जाल से दूर रह रहा था। अपने राज्य के प्रबन्ध में वह स्त्री जाति को बिल्कुल ही भूल गया था। वीनस को यह बात पसंद नहीं थी। वह तो चाहती थी कि उसके अधिक से अधिक उपासक हों। उसने उसी समय अपने पुत्र क्यूपिड को बुलाया जो ऊधम करता हुआ उसके पास आया। वह उससे बोली :

"पुत्र ! शीघ्र अपना एक तेज बाण निकाल और ताक कर अचूक संधान कर। तीर जाकर अँधेरी दुनिया के सम्राट के हृदय को वेध कर निकल जाय। इसमें काल उत्पन्न हो जाय। . . . मैं नहीं चाहती कि स्वर्ग में मिनर्वा और डायना की भाँति यह भी हमारी अवहेलना करे। और तो और सिरिस की कन्या पर्सिफोन भी वासना और प्रेम से दूर हमारी अवहेलना कर रही है। हमें अभी से इन सब पर रोक लगानी चाहिये नहीं तो संभव है यह वैराग्य की बीमारी बढ़ती ही चली जाय . . . . जल्दी कर। देख वह आकाश में अपने काले घोड़े जुते रथ में खड़े होकर चक्कर लगा रहा है . . . . यही मौका है . . . . मार. . . . पर निशाना न चूक जाना।" क्यूपिड ने तुरंत वीनस की आज्ञा शिरोधार्य की और तरकश से एक पैना काम-बाण निकाल कर धनुष पर चढ़ाया। उसी समय वीनस फिर बोली :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"मैं चाहती हूँ कि इसके हृदय में पर्सिफोन के प्रति प्रेम उमड़ पड़े और यह दोनों फिर मिल जायँ।" यह कहकर उसने अपनी दोनों हथेलियाँ मिलाकर बताया और कहा : "ऐसे।"

क्यूपिड ने पुष्प प्रत्यंचा खींची और आकर्ण उसे खींच कर वासना का शर हेड्स पर छोड़ दिया। क्यूपिड का निशाना हमेशा अचूक होता था। तीर जाकर सीधा हेड्स के हृदय में घुस गया। उसके लगते ही वह एक अज्ञात भावना से विचलित हो उठा। जो हेड्स अब तक केवल शत्रुओं को ही दमन करने की फिक्र में लगा रहता था इस समय सब कुछ भूल कर वासना की अग्नि में जलने लगा। अब वह चपलता से अपने चारों ओर सुन्दरी स्त्रियों को ढूँढ़ने लग गया। उसी समय उसकी चिर-परिचित सुन्दरी पर्सिफोन पर उसकी नजर पड़ी। जब कभी हेड्स पृथ्वी पर पहिले आया-जाया करता था वह सिरिस और उसकी पुत्री पर्सिफोन से मिलता रहता था परन्तु आज तक कभी उसने उसकी ओर उस दृष्टि से नहीं देखा था। अब जब उसने उस सुन्दरी को देखा तो वह उसे पाने को लालायित हो उठा। इस समय सुन्दरी पर्सिफोन अपने उद्यान में फूल समेट रही थी। भ्रमर मानों उसके चन्द्रानन को भी खिला हुआ कमल समझ कर उसके चारों ओर गुंजार कर रहे थे। लंबी पलकें और घनी कमानदार भवें उसे एक अलौकिक सौंदर्य्य प्रदान कर रही थीं। पर्सिफोन समुद्र के फेनों के सदृश गोरी और स्निग्ध त्वचा वाली थी। उसके रोमरहित तन पर दृष्टि ठहर नहीं पाती थी क्योंकि वह कंचन की आभा के समान दमक रही थी। यौवन अपनी सीमाएँ तोड़ कर मानो उसके शरीर से फूट कर निकलने को बेताब था। मांसल शरीर यौवन की कोटि-कोटि ज्वाला से मानो दग्ध होकर दमक रहा था। उन्नत स्तन और पीन नितंब मानो क्षीण कटि पर तुले हुए थे। उस समय वह अपनी सखियों सहित उद्यान में हँस-खेल कर आनंद मना रही थी। हेड्स ने उसे देखा और वह तीव्र वासना में जलने लगा। ऐसा लगता था जैसे अब यदि वह उसे न पा सका तो निश्चय ही मृत्यु को प्राप्त हो जायगा परन्तु प्रेम करना अथवा वासना के सागर में तरंगों के साथ गोते खाना वह जानता ही न था। उसने अभी तक कभी ऐसा कार्य ही नहीं किया था जो उन सब बातों को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह जानता होता। उसकी तो प्रकृति ही ऐसी थी कि प्रेम शब्द उसे कुछ नया-नया सा मालूम होने लगा। परन्तु उसकी आत्मा पर्सिफोन के लिये छटपटाने लगी। वह कुछ भी तय नहीं कर सका। पर्सिफोन अब सखियों सहित सरोवर में जलक्रीड़ा कर रही थी। उसके उस सौंदर्य्य को प्रतिक्षण बढ़ता हुआ देख कर हेड्स की तृष्णा कई गुना और बढ़ रही थी। आखिर उसने तय किया कि ज्यूपिटर से मिल कर सलाह ली जाय। वह मुड़ा और उसने घोड़ों को ओलिम्पस की ओर मोड़ दिया। भुजंग-काले दीर्घाकार बलिष्ठ घोड़े अब उसे रथ सहित लेकर स्वर्ग की ओर आकाश मार्ग से विद्युत गति को भी चुनौती देकर अति तीव्र गति से उड़े और क्षण भर में ही वह वहाँ पहुँच गया। उस समय हेड्स का हृदय धक-धक कर रहा था।

ज्यूपिटर ने हेड्स को आदरपूर्वक आसन दिया और विशेष परिचर्या के उपरान्त पूछा :

"तुम्हें देखकर ऐसा लगता है जैसे तुम प्रेम की अदृश्य ज्वालाओं से तृप्त हो उठे हो. . . . हे हेड्स ! क्या आखिर तुम पर भी क्यूपिड ने तीर छोड़ ही दिया. . . . !!" और यह कह कर वह हँसने लग गया।

हेड्स ने ठंडी आह भरी और बोला : "पहले कभी ऐसा नहीं हुआ परन्तु अब तो उस सुन्दरी के बिना जीवन ही व्यर्थ प्रतीत होने लगा है। वह त्रिभुवन में सर्वसुन्दरी है। उसी की सुन्दरता पर विश्व का सौंदर्य्य निर्भर है। वह सूर्य की भाँति दमकती है. . . . उसका यौवन. . . ." वह इतना ही कह पाया था कि ज्यूपिटर ने बीच ही में बात काट कर कहा : "परन्तु वह है कौन ?" आह भर कर हेड्स बोला :

"वह सिरिस की पुत्री. . . ."

"पर्सिफोन ! ! ! !" ज्यूपिटर ने उत्सुकता से पूछा।

"हाँ," हेड्स ने उत्तर दिया। ज्यूपिटर ने सुना और गहरी चिन्ता में पड़ गया। हेड्स ने उसे ऐसे देखा तो अधीर होकर कहा :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"क्यों क्या बात है ?"

ज्यूपिटर ने कुछ देर चुप रह कर कहा :

"पर्सिफोन को स्त्री बनाना मामूली काम नहीं है। वह स्त्री काम वासना और प्रेम से बहुत ही दूर रहती है। उसकी माता सिरिस बड़ी शक्ति वाली स्त्री है। वह भी अपनी पुत्री को प्रेम और वासना के जालों से बहुत दूर रखती है। वह उसे बहुत अधिक प्यार करती है। कभी अकेली नहीं जाने देती। जब कभी पर्सिफोन बाहर जाती है तो साथ में दर्जनों सखियाँ साथ चलती हैं. . . .यदि तुम अपनी स्त्री बनाना चाहते हो तो उसे मौका पाकर तुम्हें भगा कर ले जाना होगा। अन्यथा अनुनय-विनय, प्रेम-प्रदर्शन इत्यादि से तुम्हें वह कभी नहीं मिलेगी।"

हेड्स ने पूछा : "परन्तु मैं उसे उड़ाकर भला किस प्रकार ले जा सकता हूँ ?" उसके प्रश्न को सुनकर प्रेम के विषयों में दक्ष ज्यूपिटर हँसा और तब उसने उसे उपाय बतलाया और साथ-साथ साहस और ढाढ़स भी बँधाया। बड़ी देर तक वह उसे समझाता रहा, तत्पश्चात् हेड्स बिदा हो गया।

× × ×

एक दिन सुन्दरी पर्सिफोन अपनी युवती सखियों सहित इन्ना की घाटियों में घूमने गई। यह वह घाटी थी जहाँ बारहों महीने बसंत की बहार छाई रहती थी, चारों ओर रंग-बिरंगे महकदार फूल खिले हुए थे और सूर्य के प्रकाश में स्थान अत्यंत रमणीक प्रतीत हो रहा था। पर्सिफोन उस प्रकृति के अद्भुत सौंदर्य्य को देखकर आनंद से विभोर हो उठी। सखियों सहित फूल चुनती हुई वह वहाँ घास के हरे-भरे सुन्दर मैदानों में खेलती हुई क्रीडा करने लगी। उन सुन्दरी युवतियों की किलकारियों से वातावरण अत्यंत संगीतमय हो रहा था। भागते-भागते पर्सिफोन सखियों से कुछ आगे निकल गई। वहाँ उसे एक अत्यंत सुन्दर फूल खिला हुआ दिखाई दिया। वह उस फूल की सुन्दरता को देखते ही उस पर रीझ गई। वह इतना सुन्दर फूल था कि उस पर से निगाह हटती ही नहीं थी। इतना मनमोहक और सुन्दर पुष्प आज तक उसने कभी देखा ही नहीं था। वह उसे लेने पास गई। ज्यूपिटर ने हेड्स की सहायतार्थ ही सुन्दर पुष्प वहाँ पर्सिफोन को आकर्षित करने के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिये ही उगाया था। जब वह वहाँ पहुँची उसी समय नीचे से पृथ्वी फट गई और गहरे गड्ढे में से हेड्स के रथ में जुड़े काले बलिष्ठ घोड़े जोर से हिनहिनाये। पर्सिफोन भय से चीत्कार कर उठी और उसकी चीख सुन कर सखियाँ उसे बचाने भागीं। परन्तु इतनी देर में हेड्स ने अपनी बलिष्ठ भुजाओं में उसे कस लिया था। जब सखियाँ पहुँची गड्ढा भी बंद हो गया था। पृथ्वी के अंदर गहन शून्य में काले वलिष्ठ घोड़े हेड्स और पर्सिफोन को लिये रथ को हवा में उड़ाते पाताल-लोक की अँधेरी दुनिया की ओर ले जा रहे थे।

उस घोर अन्धकार में भागने के अभ्यस्त वह दीर्घाकार वलिष्ठ काले घोड़े तीव्र गति से भाग रहे थे। हेड्स पर्सिफोन को अपने शरीर से चिपटाये चला जा रहा था। उस उष्ण और मादक स्पर्श से रोमांचित होकर वह पुलकित हो उठा था। साथ ही वह स्वेदश्लथ भी था क्योंकि उस रोमांच ने उसे उत्तेजित भी काफी कर दिया था। पर्सिफोन उस अंधकार में भय से चीत्कार कर रही थी। वह उच्च स्वर से रोती जा रही थी। उसकी पतली आवाज पहाड़ों से टकराई और गूँज गई। कंदराओं ने उस आवाज को भयानक रोर देकर गुंजाया और तब वह सारे आकाश में फैल गई। जब वह समुद्र की तरंगों पर विखरी तो उत्तुंग तरंगों ने उसे उठाया और भयानक थपेड़ों से उसे सारे अंतरिक्ष में गुँजा दिया। सर्वत्र हाहाकार छा गया। ओलिम्पस में सिरिस ने वह आवाज सुनी। वह तुरंत अपनी प्यारी पुत्री की आवाज़ पहचान गई और घबरा कर उठी। शीघ्र ही वह आकाशमार्ग से उड़कर पृथ्वी पर आई। उसने पर्सिफोन को ढूँढ़ना शुरू किया क्योंकि वह अपने रहने के स्थान पर नहीं मिली। उसने देखा उसकी सखियाँ रो रही थीं। वह सारी पृथ्वी पर उसे ढूँढ़ने गई परन्तु वह उसे कहीं नहीं मिली। उसने उसे पर्वतों पर कंदराओं के अंदर तथा घोर जंगलों तक में ढूँढ़ डाला परन्तु वह होती तभी तो उसे मिलती। उसने लोगों से पूछा परन्तु किसी ने उसे कुछ नहीं बतलाया। देवता और मनुष्य सभी हेड्स के प्रतिशोध से डरते थे, इसलिए उन्होंने कुछ भी नहीं बतलाया। नौ दिन और नौ रात तक सिरिस अपनी पुत्री को सारे संसार में ढूँढ़ती फिरी, तत्पश्चात् वह सूर्य देवता के सामने पहुँची। उसने उच्च स्वर से दुहाई देकर उससे पर्सिफोन के बारे में पूछा। वह बोली: "हे सर्व-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शक्तिमान् सूर्य ! संसार में घटित छोटी से छोटी बात भी तुमसे छिपी नहीं रहती । मेरी लाड़ली बेटी पर्सिफोन कहाँ है मुझे सचसच बता ।"

सूर्य बोला : "पर्सिफोन मरे हुए लोगों के लोक में पहुँच गई है । स्वयं हेड्स उसे उठाकर ले गया । वह पृथ्वी फाड़कर अपने काले घोड़ों के रथ में आया और उसे बलपूर्वक रोती कलपती हुई हालत में उठाकर ले गया ।"

सिरिस ने सुना और उसका हृदय दुख से भर गया क्योंकि वह जानती थी कि उस अँधेरे लोक से कोई भी लौटकर नहीं आ सकता था । उसका दुख इतना था कि वह उसे सहन करने में असमर्थ होकर आँसू बहाने लगी । वह ओलिम्पस लौट कर नहीं गई । पृथ्वी पर ही रह गई । उसने देवताओं को फटकार कर भगा दिया और मनुष्यों के बीच बुढ़िया की भाँति भेष में वह रहने लग गई । वह क्रोध और दुख से विक्षुब्ध हो उठी थी । उसने आग्नेय नेत्र से पर्सिफोन पर निगरानी रखने वाली उसकी सखियों की ओर देखा और शाप देकर उन्हें अर्द्धनारी और अर्द्धपक्षी बना दिया । उनका ऊपर का शरीर स्त्रियों जैसा और नीचे का पक्षियों जैसा हो गया । उसे पृथ्वी पर अत्यंत क्रोध हो आया क्योंकि उसी ने तो अपने गर्भ में हेड्स के आने-जाने लायक गुफा बनाई थी । वह चिल्लाई और बोली :

"नमकहराम पृथ्वी ! तुमने मुझे धोखा दिया है । तुमने मेरी पुत्री के अपहरण में शत्रु की सहायता की है । तुम्हें शस्य श्यामला बनाने वाली को ही तुमने धोखा दिया है । इसीलिए आज मैं तुमसे तुम्हारा यह गुण छीने लेती हूँ । जाओ तुम्हारे ऊपर अब कुछ पैदा नहीं हो सकेगा. . . .!"

और उसी दम सारे संसार में एक भयानक परिवर्तन छा गया । जो कुछ उगा हुआ था वह सब सूख गया, हरे-भरे वृक्ष और घासें सूख कर नीचे गिर पड़ीं । कुछ ही महीनों में सब कुछ वीरान हो गया । अब पृथ्वी पर कुछ भी पैदा नहीं होता था । भूमि पत्थर की भाँति कठोर हो गई । हल उसमें टूट गये । सूर्य ने खेतों को झुलसा दिया और मेह ने बीज बहा दिये । केवल पूले-सरकंडे ही पृथ्वी पर उगते थे, बाकी सब कुछ लोप हो गया । मवेशी मर गए और सारे संसार में अकाल फैल गया । मनुष्य भूख से मरने लगे । हजारों की संख्या में नित्य नर-नारी मरने लगे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सर्वत्र हाहाकार छा गया। मनुष्य मनुष्य को ही खाने लगे। वीभत्सा बढ़ गई। नरकंकालों का ढेर लग गया और दिन-रात उनकी लाशों पर गिद्ध मँडराने लगे।

पृथ्वी कराह उठी। उसकी पुकार पहाड़ों से गूँजी और समुद्र की छाती पर गरजी। ओलिम्पस में उसे ज्यूपिटर ने सुना और वह उस वीभत्स दृश्य से थर्रा उठा। परम पराक्रमी देवाधिदेव ज्यूपिटर अपने ऊँचे सुवर्ण सिंहासन से उठा और उसने देवताओं के एक दल को पृथ्वी पर सिरिस के पास उसे समझाने को भेजा। वह मनुष्यों का इस प्रकार मरना बिल्कुल सहन नहीं कर सका था।

देवता लोग जब सिरिस के पास पहुँचे वह उन्हें मारने दौड़ी। तब उन्होंने कहा :

"हे सिरिस! हम लोग ज्यूपिटर की आज्ञा से तेरे पास आये हैं। तू क्यों इतनी विक्षुब्ध हो उठी है कि संसार में तूने इतनी वीभत्सा फैला रखी है? पृथ्वी को फिर से शस्य श्यामला बना दे जिससे यह अकाल समाप्त हो जाय।"

"हरगिज़ नहीं!" सिरिस बोली, "मैं कभी ऐसा नहीं कर सकती; पृथ्वी को इसी प्रकार बना रहना पड़ेगा जब तक कि मेरी पर्सिफोन मुझे नहीं मिल जाती।"

देवताओं ने उसे बहुत समझाया परन्तु वह किसी भी तरह नहीं मानी। लाचार होकर देवता लौट आये और उन्होंने ज्यूपिटर से सारी बातें ज्यों की त्यों आ कहीं। ज्युपिटर जान गया कि सिरिस को समझाना व्यर्थ था। उसने अपने पुत्र मर्करी को बुलाया। वह वायु से भी तीव्रगति से चलने वाला सुन्दर देवता मन में उठे विचारों की भाँति तेज चलने की क्षमता रखता था। ज्यूपिटर ने उसे हेड्स के पास भेजा और आज्ञा दी कि वह शीघ्र पर्सिफोन को उसकी माता को वापस कर दे।

मर्करी पलक मारते ही अँधेरी दुनिया के राजा हेड्स के सम्मुख पहुँचा। उसने कहा :

"हे पाताल लोक के राजा! मैं प्रचण्ड पराक्रमी देवाधिदेव ज्यूपिटर की आज्ञा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आपको सुनाने आया हूँ। उन्होंने कहा है कि संसार के मनुष्यों की भलाई के लिये यह परम आवश्यक हो गया है कि सिरिस का क्रोध शांत किया जाय क्योंकि उसने अपनी पुत्री पर्सिफोन के विछोह में पृथ्वी से उसकी उपजाने वाली शक्ति छीन ली है। अब पृथ्वी पर कुछ भी पैदा नहीं होगा। चारों ओर भीषण हाहाकार फैल रहा है। अकाल से नगर के नगर मर चुके हैं। सिरिस किसी भी हालत में इस बिगड़ी बात को बनाने के लिये तैयार नहीं होती है।....हाँ यदि उसे उसकी पुत्री मिल जाय तो यह सब झगड़ा, अशांति, भूख और अकाल समाप्त होकर पृथ्वी फिर से शस्य श्यामला हो उठे। इसलिए महान् ज्यूपिटर की आज्ञा है कि पाताल का राजा अपनी प्रिया पर्सिफोन को फौरन पृथ्वी पर भेज दे।"

हेड्स ने सुना और सिर झुका लिया। क्यूपिड के तीर का घाव बहुत गहरा था। उसका हृदय किसी भी भाँति उस यौवन से परिपूर्ण स्त्री को छोड़ने को तैयार न था पर फिर किया भी क्या जा सकता था। ज्यूपिटर की आज्ञा का उल्लंघन भी वह नहीं कर सकता था। वह उठा और उसने हताश होकर अपने सारथी को आज्ञा दी और कहा।

"काले घोड़ों को रथ में जोत ला।"

जब वही बलिष्ठ दीर्घ काले घोड़े रथ में जुत कर आये तो उसने उदास मन से पर्सिफोन को उस पर मर्करी के साथ चढ़ाया। तत्पश्चात् उसे एक युक्ति सूझी। उसने एक पोमेग्रेनेट (अनार) मँगवाया और जाती हुई पर्सिफोन को उसे बड़े प्रेम के साथ खिला दिया। जब उसने वह खा लिया तो हेड्स मन ही मन खुश हुआ और उसने सारथी को रथ हाँककर पृथ्वी पर उन्हें छोड़ आने की आज्ञा दे दी। वह जानता था कि पोमेग्रेनेट खा लेने के बाद उस स्त्री को वापस उसी के पास आना ही पड़ेगा।

मार्ग में सारथी को हटाकर मर्करी ने स्वयं उस दिव्य रथ को हाँका और पलक मारते वह पर्सिफोन को लेकर सूर्य के आलोक से जगमगाती हुई पृथ्वी पर आ गया। वह उसे सिरिस के एक मंदिर में ले गया जहाँ वह देवी प्रतीक्षा कर रही थी। उसने अपनी पुत्री को देखा और दौड़कर उसे अपनी बाहों में लेकर हृदय से लगा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिया। माँ बेटी एक बार फिर मिल गईं।

उन्हें बातें करते सारा दिन बीत गया। वह वहीं उसी मंदिर में बैठी हुई बातें कर रही थीं। सिरिस अपनी पुत्री से मिलकर आनंद से विभोर हो उठी थी। वह ऐसी बेखबर हो गई कि उसे मर्करी की उपस्थिति का भी ध्यान नहीं रहा जब सूर्य डूबने लगा और संध्या की लालिमा फैलने लगी तो मर्करी ने उससे कहा :

"हे सिरिस ! तेरी पुत्री तेरे पास आ गई है अब अपने वचन के अनुसार पृथ्वी को उपज करने की शक्ति वापस कर दे।"

सिरिस ने तुरत अपना वचन पूरा कर दिया। पृथ्वी को एक बार फिर उसने शस्य श्यामला बना दिया। अब रूखे पेड़ों में फिर से जान आ गई और उसकी वह पत्थर की भाँति कठोरता भी जाती रही। मर्करी चला गया और उसने ओलिम्पस जाकर ज्यूपिटर तथा देवताओं को संसार में अकाल मिट जाने का शुभ संदेश सुना दिया।

इधर सिरिस अपनी लाड़ली पुत्री पर्सिफोन से महीनों के विछोह का कारण और सारी वार्ता पूछ रही थी। उसने उससे वह सभी बातें कहीं जब वह उसको ढूँढ़ती हुई सारे संसार में दुखी होकर घूमी थी। पर्सिफोन बोली :

"हे माता ! मैं पाताललोक में बहुत ही सुख से रहती थी। वहाँ का राजा हेड्स जो अत्यंत सुन्दर और बलिष्ठ है मुझे अपनी आँखों में बिठा कर रखता है। वह मुझे कितना चाहता है यह मैं तुम्हें समझा कर बतला नहीं सकती। प्रेम समझाया नहीं जाता, वह तो केवल अनुभव किया जाता है। हेड्स ने मुझे वहाँ ले जाकर उस दुनिया की रानी बना दिया था। वह मेरा कुशल चाहने वाला है। वह मुझे अत्यंत सुख से रखता था। मैं उसके प्रेम और वासना के बिना बिना जल के मछली की भाँति छटपटाती हूँ। मुझे उसका सहवास अत्यंत सुखकर प्रतीत होता है। हेड्स पुरुष सिंह है जिसकी कठोर बाहुओं के बीच, मैं जो कि स्वच्छन्द स्त्री हूँ, नारीत्व के गौरव का अनुभव करने लगी थी।....हे माता तुम मुझे उसी के पास पहुँचा दो क्योंकि अब जब कि मैं उससे इतनी दूर आ गई हूँ, मुझे उसका वियोग सता रहा है।"

उसकी ऐसी बातें सुनकर सिरिस ने उससे पूछा:

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हे पुत्री क्या तूने उसका दिया हुआ कोई फल खाया है ?"

"हाँ, पोमेग्रेनेट खाया है। मेरे पति ने मुझे आते समय वह खिलाया था।"

"हाय !" सुनते ही सिरिस चीख उठी, "तब तो तुझे वहाँ जाना ही पड़ेगा।"

"निश्चय ही मैं तो जाऊँगी," बड़े विश्वास के साथ पर्सिफोन ने उत्तर दिया।

सिरिस ने सुना और शून्य दृष्टि से देखती हुई कुछ देर बैठी रही, तत्पश्चात् उसे क्रोध चढ़ा। वह चिल्लाई :

"नहीं, मैं ऐसा नहीं होने दूँगी। हेड्स ने मेरे साथ धोखा किया है।" और वह क्रोध से फुफकारने लगी। अब वह सीधी ज्यूपिटर के पास पहुँची। उसको देखकर उसने चिल्लाकर हेड्स की चालाकी की बात कही। सुनकर ज्यूपिटर मन ही मन हेड्स की चतुरता पर बहुत खुश हुआ। परन्तु प्रत्यक्ष में बोला :

"परन्तु अब हो ही क्या सकता है जब पर्सिफोन स्वयं अपने प्रेमी के पास जाना चाहती है और फिर उसने पोमेग्रेनेट भी जो खा लिया है। तुम तो जानती हो, इस फल को खाने के बाद तो निश्चय ही हर स्त्री को उस अँधेरी नगरी में लौटना पड़ता है।"

"परन्तु यह मेरे साथ धोखा है," सिरिस ने विरोध किया। आखिरश उसके क्रोध और उसकी शक्ति को ध्यान में रखते हुए ज्यूपिटर ने निर्णय दिया। वह बोला :

"सिरिस अब कभी पृथ्वी से उसकी उपज की शक्ति नहीं छीन सकेगी। छ महीने पर्सिफोन पृथ्वी पर सिरिस के पास रहेगी और बाकी छ महीने अपने पति के पास पाताललोक में रानी बन कर रहेगी। बसंत और ग्रीष्म ऋतुओं में माँ के पास और पूरे जाड़े के दिनों में वह अपने पति के पास रहेगी।"

तत्पश्चात् सिरिस ज्यूपिटर द्वारा भेजे गये अजदहों से जुते हुए रथ में बैठ कर पर्सिफोन के साथ ओलिम्पस चली गई। आकाश में उठते हुए उन्होंने देखा कि पृथ्वी पर एक बार फिर शस्य श्यामला होकर चारों ओर हरियाली फैल रही है। किसान भूमि को बैलों से जोत रहे हैं और नाना प्रकार के फूल चारों ओर अपनी पूरी चहक और महक से खिल रहे हैं। पृथ्वी पर अब कोई अकाल या भुखमरी नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुखी आयो

जिस दिन से ज्यूपिटर ने आयो को देखा उसी दम से वह उस पर दीवाना हो गया। आयो राजकुमारी थी और सुन्दरता में अपनी सानी नहीं रखती थी। उसके उज्ज्वल गौर शरीर पर सूर्य का प्रकाश पड़कर फैल जाता और वह स्वयं आलोकित होकर जगमगाने लगती थी। वह ऐसी सुन्दर थी कि उसके सम्मुख चन्द्रमा भी शर्माकर बादलों में मुँह छिपा लेता था। आयो की काया तप्त स्वर्ण की भाँति दमकती थी और उसमें से सदा सुगंध निकला करती थी। वह दृश्य और गंध इतनी मादक थी कि उसको सूँघनेवाला मदहोश होकर उसे देखता ही रह जाता था। ज्यूपिटर का तो यह हाल था कि वह आँख मूँदकर उस अनुपम मादक गंध को घंटों सूँघा करता। वह ऐसी गंध थी कि उससे वातावरण तक में वासना सजीव होकर ऊष्मा फैला देती थी। आयो के सम्पर्क में आते ही पुरुष आलस्योन्मुख होकर फिर उत्तेजना से भर उठता था और उस पर प्राणों को भी न्योछावर करने को तत्पर हो जाता था। ज्यूपिटर उससे प्रथम बार रात्रि के समय नदी तीर पर मिला था। उस समय आकाश में दूज का चाँद खिला था जिसके मद्धिम प्रकाश में वह सुंदरी ऊष्मा बिखेरती हुई नीहार के समान शुभ्र और हिमगिरि की भाँति श्वेत लग रही थी। ज्यूपिटर के अखंड पौरुष को देखकर वह सुंदरी स्वयं विचलित होकर उसकें अंक में गिर गई थी। दोनों ओर से यौवन की बाढ़ें टकराईं और ऊँची उठीं। इतनी ऊँची, इतनी ऊँची कि उसकी फुहारों से सारा संसार भीग गया—ज्यूपिटर और आयो का प्रेम आदर्श बन कर चिरस्थायी हो गया।

ज्यूपिटर आयो के बिना स्वयं को अपूर्ण समझने लगा था। मिलन से पूर्व वह हर रात ओलिम्पस से चुपचाप पृथ्वी पर आता और अदृश्य शरीर धारण करके आयो के सोने के कक्ष में घुसकर सोती हुई आयो की शैय्या के पास खड़ा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो जाता था। तत्पश्चात् वहीं बैठकर निर्निमेष नेत्रों से उसे देखा करता था। वह उस सोती सुंदरी के कानों में तब वासना के सने हुए शब्द फुसफुसाया करता था जिन्हें आयो स्वप्न समझती हुई निद्रावस्था में देखा करती थी। जब भोर होती तो उसे रात में स्वप्न में देखी गई बातों का स्मरण हो आता जो उसके मन को बहुत ही अधिक भाता था।

एक रात वातायन से मधुर चाँदनी आयो के शरीर पर पड़ रही थी जिसके शीतल प्रकाश में बेखबर सोने से वस्त्रों के हट जाने से, उसका, यौवन की बाढ़ से प्रस्फुटित, शरीर दमक रहा था। वस्त्र उसकी बाँईं कदली सदृश स्निग्ध और गौर जंघा से बिल्कुल हट गया था जो चाँदी के समान चमक रही थी। उन्नत पयोधर अर्द्धनग्न थे जो सुवर्ण के आलोकित कलशों की भाँति चमक कर गहरी श्वासों के साथ ऊपर-नीचे हो रहे थे। अलकावलियाँ खिसक कर उसके चंद्रानन पर उलझ गई थीं जो अत्यंत लुभावनी प्रतीत होती थीं। ज्यूपिटर ने देखा और वह उसे पाने को आतुर हो उठा। वह धीरे से अपने अदृश्य शरीर से शैय्या पर बैठ गया और उस सुंदरी के कान में फुसफुसाकर बोला :

'हे सुंदरी तू कब तक कन्या बनी रहेगी? देख क्यूपिड ने अपना पुष्पबाण खींचकर शर छोड़ दिया है—तू यौवन की हिलोरों से ओतप्रोत है—यौवन के इस उन्नत प्रवाह में बह चल। देवताओं का पराक्रमी राजा ज्यूपिटर तेरे प्रेम में पागल है। हे सुंदरी! उसके गले में हाथ डाल दे।"

नींद में आयो मुस्कराई और उसके होंठ धीरे-धीरे हिलने लगे। ऐसा प्रतीत होता था मानो वह अपने उस प्रेमी को मुस्कराकर स्वीकृति दे रही थी। ज्यूपिटर उस अपूर्व सौंदर्य्य को देखता ही रह गया। उस समय आयो उच्छ्वसित श्वासों से प्रसन्न दिखाई दे रही थी। जब वह प्रातःकाल सोकर उठी तो उस पर प्रेम का एक विचित्र जादू हो गया था। वह गई रात के स्वप्नों को सोच-सोच कर वासना से भर उठी थी। इसके बाद नित्य ही रात्रि समय ज्यूपिटर उसके कानों में वासना के मंत्र सोते समय फूंक जाता जिन्हें वह स्पप्न समझा करती। इन सब का फल यह अवश्य निकला कि वह अब प्रेम और वासना की अग्नि में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जलने लगी और पुरुष सम्पर्क के लिए उसका यौवन बंधनों का उल्लंघन करने लगा था। वह अधीर और अशांत दिखाई देती थी।

ऐसे ही वासना की तप्त ज्वालाओं में जलती हुई आयो उस रात नदी तीर पर दूज के चाँद की ओर देखती हुई घूम रही थी। उसी समय ज्यूपिटर ने उपयुक्त समय समझ कर एक सुनहरे बादल से उसे ढँक दिया। एकाएक अपने आपको बादल में समा जाने से आयो को आश्चर्य हुआ परन्तु उसी समय दिव्य ज्योति से जगमगाता हुआ ज्यूपिटर सामने खड़ा दिखाई दिया। वह भी बादल के अंदर ही खड़ा था। विस्फारित नेत्रों से आयो ने उसी गर्वीले सुंदर देवता को देखा जिसे अब तक स्वप्न में देखती आई थी और अपने आप को और अधिक रोकने में असमर्थ पाकर वह उसके शरीर पर गिर पड़ी। ज्यूपिटर ने उसे उठाकर अपने हृदय से लगा लिया। ज्यूपिटर की आज्ञा से बादल उन्हें चारों ओर से इस तरह घेरे और ऊपर से ढँके खड़ा था कि बाहर से उन्हें कोई देख नहीं सकता था। आयो और ज्यूपिटर प्रेम और वासना के प्रवाह में अपने आप खो गए।

जूनो ज्यूपिटर की सुंदरी देवी स्त्री थी जो प्रकृति से ही ईर्षालु और शक करने वाली स्त्री थी। खासकर अपने पति के विषय में तो वह सदैव चौकन्नी रहती थी। वह जानती थी कि उसका पति चंचल प्रकृति का पुरुष था जो स्त्रियों को देखकर अकसर विचलित हो उठता था। आज जब वह बाहर से लौटी तो उसने उसे ओलिम्पस पर नहीं पाया। वह उसे ढूँढ़ने लगी और देर तक ढूँढ़ती ही रही। परन्तु जब वह ओलिम्पस में कहीं नहीं मिला तो वह आकाशगंगा पर होकर पृथ्वी पर आई। उसकी निगाहों में न पड़ जाय इसी विचार से ज्यूपिटर ने जैफ़ायर को आज्ञा दी थी कि जब वह आयो के साथ विहार करता हो तब बादलों का समूह उसे और उसकी प्रिया को सब तरफ से इस प्रकार घेर ले कि वह दिखाई न दे। जब जूनो पृथ्वी पर उस हरे-भरे मैदान में आई जहाँ वह बादल खड़ा था तो उसे कुछ शक हो गया। थोड़ी देर तक वह उसे गौर से देखती रही परन्तु फिर उसके मुँह से अस्फुट से शब्द निकले :

"हो न हो इसी में हो," और तब वह उच्च स्वर से चिल्लाकर बोली, "मैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जूनो, स्वर्ग की देवी आज्ञा देती हूँ कि जैफायर इस बादल को फौरन यहाँ से हटा दे।" उसका स्वर सुनकर बादल के अंदर ज्यूपिटर और उसकी प्रेमिका घबरा गए। अब तक वह प्रेम में ऐसे खोये हुये थे कि उन्होंने अंदर से बाहर का दृश्य दिखाने में समर्थ उन पारदर्शी बादलों के बाहर खड़ी जूनो को देखा भी नहीं था। बादल लोप होने लगे और ज्यूपिटर ने और कुछ न कर सकने के कारण झट से इच्छामात्र से अपनी प्राणप्रिया आयो को एक बहुत सुंदर श्वेत हीफर (गाय) बना दिया। जब बादल हट गये तो जूनो ने देखा हरे-भरे मैदान में ज्यूपिटर अकेला लेटा हुआ था। उसके साथ कोई भी सुंदरी स्त्री नहीं थी। केवल उसके पास ही एक सुंदर हीफर ज़रूर खड़ी थी।

जूनो भी बड़ी चतुर थी। फौरन भाँप गई कि वह हीफर और कुछ नहीं अवश्य ही कोई सुंदरी स्त्री थी जिसे उसके पति ने उसके भय से उसी समय वैसा बना दिया था। परन्तु वह बोली कुछ नहीं। अपने मन का भाव छिपाकर उसने उस हीफर की सुंदरता की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उसने तत्पश्चात् अपने पति को आलिङ्गन किया और प्रेम प्रदर्शन करने लगी। ज्यूपिटर भी कृत्रिम प्रेम दिखाने लगा। उसके हृदय से वह भय अब निकल गया था क्योंकि वह तो बला टल गई समझ रहा था। थोड़ी देर बाद ज्यूपिटर से वह हँसकर ललचाई दृष्टि से बोली :

"यह हीफ़र इतनी सुंदर है कि मेरा हृदय इसे पाने को आतुर हो उठा है। हे ज्यूपिटर तुम इसे मुझे दे दो।"

ज्यूपिटर घबरा गया। वह जूनो की बातों से आश्चर्यचकित हो गया। परन्तु अपनी कमजोरी छिपाता हुआ वह बोला :

"यह तो बहुत ही साधारण वस्तु तुमने माँगी है। भला इसको लेकर तुम करोगी भी क्या ? अच्छा यही है कि तुम इसे न लो क्योंकि ली जाय तो फिर अच्छी ही वस्तु। तुम स्वर्ग की सुंदरी ऐसी व्यर्थ की वस्तु को माँगती शोभा नहीं देती हो। तुम कोई उत्तम वस्तु माँगो और उसे मैं तुम्हें अवश्य दूँगा। इस हीफर को यहीं रहने दो। यह अपने आप कहीं चरती चली जायगी।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"नहीं, नहीं मुझे तो यही चाहिये," जूनो ने ज़िद पकड़ी । अब ज्यूपिटर निरुत्तर हो गया था । उसने थोड़ी और कोशिश की कि जूनो का मन उस ओर से फिर जाय परन्तु जब जूनो ने कहा :

"क्या इतनी साधारण सी वस्तु भी तुम मुझे उपहार में नहीं दोगे ?" तो वह बिल्कुल निरुत्तर हो गया। मजबूरन हीफर जूनो को दे देनी पड़ी। ज्यूपिटर उदास था परन्तु और कोई चारा ही न था । जूनो ने एक रस्सी से उस श्वेत हीफर को बाँधा और ज्यूपिटर को वहीं अकेला छोड़कर एक ओर चल दी । आँखों के सामने ही जूनो द्वारा उसकी प्रिया छीन ली गई । ज्यूपिटर हताश हो गया और ओलिम्पस लौट गया । वह कटे हुए पेड़ के समान शोभाहीन और मलिन दिखाई दे रहा था ।

जूनो वह गाय लेकर एक घनघोर जंगल में पहुँची । गाय भय से डकरा रही थी और उसके नेत्रों से आँसू बह रहे थे । उसे उस हालत में देखकर ईर्षालु जूनो अत्यंत प्रसन्न हुई । उसने उसे सान्त्वना या हाथ फिराकर पुचकारा नहीं बल्कि एक मोटे डंडे से उसे खूब मारा । प्रत्येक चोट पर आयो बिलख-बिलख कर रोने लगी । अब उसके रोने का शब्द सुनकर जो बिल्कुल स्त्रियों जैसा था, जूनो को निश्चय हो गया कि वह कोई स्त्री थी । जंगल के बीच पहाड़ों की गहरी अँधेरी घाटियों में भयंकर दानव आर्गस रहता था जिसके सौ आँखें थीं । वह कभी अपनी सारी आँखें बंद करके नहीं सोता था । जब वह कुछ आँखों से सोता तो उसकी बाकी कुछ आँखें खुली रहती थीं । जूनो ने सोचा कि ऐसा चौकीदार उस हीफर के लिए बहुत ही उपयुक्त रहेगा, जिसकी निगाह बचाकर वह कहीं भी नहीं जा सकेगी । वह उसके पास गई और उस गाय को उसे देकर बोली :

"इस गाय की रखवाली तू रात और दिन हर समय कर । यह तेरी नजर बचाकर कहीं निकल न जाय इस बात का ध्यान रख । दिन में यह हरी घास पहाड़ों की तलहटी में चरेगी और रात्रि समय यह सुंदरी . . . गाय सूखी घास पर दड़बे में सोयेगी. . . ." सुंदरी शब्द कहकर वह हँसी भी परन्तु आर्गस का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ध्यान उस ओर नहीं गया। तत्पश्चात् स्वयं ही वह फिर बोली :

"इस पर किसी की नजर न पड़ने पाये। कोई इससे मिलने न पाये.... खबरदार वरना तू अपराधी माना जायेगा....मैं जूनो! स्वर्ग की सम्राज्ञी तुझे ऐसा करने की आज्ञा देती हूँ।"

जूनो को विश्वास हो गया कि इस एक सौ नेत्रों वाले आर्गस से किसी के लिए भी पार पाना अत्यंत कठिन था क्योंकि वह पूरी तरह सोता तो था ही नहीं। उसने सोचा यहाँ आकर ज्यूपिटर भी अपनी प्रिया का कल्याण नहीं कर सकेगा। आर्गस ने आज्ञा का पालन किया और हीफर को रस्से से पकड़ कर बाँध लिया। तत्पश्चात् जूनो ओलिम्पस की ओर उड़ गई। आर्गस कठोर दानव था जो भीमकाय और अपराजित था। उसके सामने से उस हीफर को बलपूर्वक ले जाने वाला विश्व भर में उस समय और कोई नहीं था। वह दिन में घाटी में उसे छोड़कर चराता और कई आँखों से उसकी निगरानी किया करता था। रात को वह उसे मोटे रस्से से बाँध देता और तब भी उसकी कुछ आँखें उस पर निगरानी रखा करती थीं।

ओलिम्पस में बैठा हुआ ज्यूपिटर यह सब देख रहा था परन्तु जूनो के भय से कुछ भी करने या हस्तक्षेप करने में असमर्थ वह केवल देख-देखकर दुख से मरा जाता था। अपनी प्रिया के प्रति कुछ भी उपकार, चाह कर भी, वह नहीं कर पा रहा था। वह रह-रहकर छटपटा रहा था और अनेकानेक उपाय आयो को छुड़ाने के हेतु सोच रहा था। किसी भी भाँति वह उसे छुड़ा लाना चाहता था। परन्तु उस हर समय जागते रहने वाले आर्गस की चौकस दृष्टि से भला वह आयो को किस प्रकार छुड़ा सकता था। उसने बहुत सोचा परन्तु कोई उपयुक्त उपाय उसे नहीं सूझा। वह ग्लानि और दुख से भर गया। उस अनन्य सुंदरी के प्रति उस अन्यायपूर्ण बर्ताव को देखकर असहाय सा इतनी अधिक चिंता किया करता था कि उसे अपने तन-वदन की सुध भी नहीं रहती थी।

इसी प्रकार कुछ दिन बीत गये। और अधिक उस यातना को सहने में असमर्थ ज्यूपिटर ने अपने प्रिय पुत्र मर्करी को बुलाया और उससे कहा :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"तुम्हारी तीव्र गति सारे विश्व में प्रसिद्ध है। परन्तु साथ ही साथ बुद्धि में भी तुम किसी से कम नहीं हो। मेरी प्रिया आयो जो इस समय हीफर बनी हुई है जूनो की ईर्षा के कारण इस समय आर्गस जैसे दुष्ट और पराक्रमी दानव के हाथ पड़ गई है। वह दानव न दिन में सोता है न रात में क्योंकि उसके सौ आँखें हैं और बारी-बारी से कुछ आँखों से सोकर बाकी से उसकी चौकसी करता है। मेरी प्रिया दुख से डकराती है और मैं उसके प्रेम में पागल हो गया हूँ। हे मर्करी! तुम जाओ और किसी भी प्रकार उसको उस दुष्ट के पंजे से छुड़ाकर लाओ.... अन्यथा मेरा जीना दुर्लभ हो जायगा...."

मर्करी उसकी बातें सुनकर बहुत दुखी हुआ। उसका हृदय करुणा से भर गया। वह अपनी जान देकर भी उन दोनों प्रेमियों को मिलाने पर तुल गया। उसने शीघ्र अपना परदार शिरस्त्राण और परदार जूते उतार दिये और अपना भेष एक चरवाहे का सा बनाकर बाँसुरी बजाता हुआ पृथ्वी पर उस पहाड़ के पास जा पहुँचा जहाँ आर्गस बैठा हुआ हरी घास चरती हुई उस गाय की चौकसी कर रहा था। मर्करी वहीं एक पेड़ की छाँह में बैठकर बाँसुरी बजाने लगा। उसने इतनी करुणाजनक बाँसुरी बजाई कि वातावरण मधुर स्वरों से गूँजने लग गया। वह विभोर होकर बजा रहा था। आर्गस ने जब यह अनुपम स्वर्गीय वाँसुरी की तान सुनी तो उसका हृदय मानो हिल उठा। वह उन स्वरों के उतार-चढ़ाव के साथ झूमने लगा। जब मर्करी ने हठात् बाँसुरी रोक दी तो वह जैसे झटके से उठा। उसे बुरा लगा। तब उसने उसे बुलाया और कहा:

"हे चरवाहे! मेरे पास आ जा और अपनी मधुर बाँसुरी बंद न कर। बजाता जा। मेरे जीवन में अकेलापन और दुख ही दुख है। रात और दिन जूनो की आज्ञा से मुझे इस हीफर की रखवाली करनी पड़ती है। इसके अतिरिक्त मेरे पास और कोई काम नहीं है। तुम्हारा संगीत इतना सुखकर है कि यदि तुम रात और दिन भी इस बाँसुरी को बजाओ तो भी इससे मैं कभी नहीं थकूँगा। बजाओ मेरे मित्र!!"

मर्करी उसके पास जा बैठा और अपनी बाँसुरी बजाने लगा। उसने करुणा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भरे सभी स्वरों को बजाया। आर्गस विभोर होकर सुन रहा था। उस मधुर संगीत से उस पर मदहोशी छाने लगी और वह झूमने लगा। आँखें झपकने लगीं; परन्तु मर्करी ने देखा कि सभी आँखें बंद नहीं होती थीं। कुछ सो जाती थीं तो कुछ खुली रहती थीं; मर्करी तन्मय होकर बजाता रहा। सारे दिन और सारी रात उसने बाँसुरी बजाई और बार-बार उन्हीं स्वरों को दुहरा-दुहरा कर वह आर्गस को सुना रहा था। आर्गस आलस्य से थक गया था। उसकी प्रायः सभी आँखें झपकने लगीं। परन्तु मर्करी ने देखा अब भी कुछ खुली थीं। वह बजाता ही गया। आखिर आर्गस की सभी आँखें बंद हो गईं और वह सो गया। मर्करी ने तब अपने उन चरवाहों की पोशाक में से छिपी हुई एक तलवार निकाली और झट से उस दानव की गर्दन काट डाली। इसके बाद उसने भागकर हीफर के गले की रस्सी काट दी जिससे गाय भागने को स्वतंत्र हो गई। अब मर्करी ओलिम्पस की ओर चल दिया। उसने पलक मारते वहाँ पहुँचकर ज्यूपिटर से सारी बातें कह दी जो सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ।

परन्तु इससे पहले कि ज्यूपिटर अपनी प्रिया का कुछ हित कर सकता और उस हीफर को पुनः स्त्री आयो बनाकर जूनो की पहुँच के बाहर सुरक्षित स्थान पर पहुँचाता, जूनो को अपने सेवक आर्गस की मृत्यु का समाचार मिल गया। वह बहुत दुखी हुई और साथ ही साथ क्रोध भी उसे हो आया। वह तेजी से पृथ्वी पर आई और उस स्थान पर पहुँची। उसने देखा आर्गस मरा पड़ा है। उसने हीफर को देखा तो उसे वहाँ न पाया। उसने आँखें उठाकर दूर तक देखा। उसे बहुत दूर अपनी पहुँच के बाहर वह गाय भागती दिखाई दी। वह क्रोध से दाँत किटकिटाने लगी। पकड़ तो वह उसे सकती नहीं थी। इसलिए उसने अब सोचा कि उसे किसी न किसी प्रकार परेशान और तंग अवश्य करना चाहिये। वह झट से एक खून चूसने वाली मक्खी को उसकी ओर फेंक कर बोली:

"तू उस गाय के मुख से जाकर चिपट जा और उसका खून खूब पी। उसके मुख पर, उसकी आँखों पर भनभना कर उसे काट और रात-दिन उसे चैन न लेने दे। वह जहाँ भी जाय उसके साथ-साथ रह और उसे परेशान कर। खबरदार उसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमजोर जानकर या असहाय जानकर उस पर जरा भी दया की तो !"

मक्खी फौरन उड़ी और गाय से जा चिपटी। वह उसके मुख पर स्थान-स्थान पर काटती हुई इतनी भनभनाई कि आयो, वह गाय परेशान होकर इधर-उधर भागने लगी। परन्तु मक्खी उसे छोड़ती न थी। उसने उसे इतना परेशान किया कि वह दर्द और उसकी आवाज को निरंतर सुनते रहने से पागल सी हो गई। अब उसे सिवा भागते रहने के जैसे कोई काम ही नहीं था। रात-दिन वह उससे बचने के लिए भागती फिरती थी। वह कभी गिरती, कभी रँभाती, कभी दौड़ती और किसी भी प्रकार इस कमबख्त मक्खी से छुटकारा पाना चाहती थी परन्तु वह उसे पल भर को भी नहीं छोड़ती थी। वह बड़े-बड़े मैदानों को पार करती हुई समुद्र के तट पर दौड़ी और किनारे-किनारे भागती हुई निकल गई। बाद में यही समुद्र उसी के नाम पर आयोनियन समुद्र कहलाया। एक दिन इसी प्रकार भागते-भागते वह एक पहाड़ के पास पहुँची जहाँ से दूर से किसी आदमी की कराह सुनाई दी। उसने चारों ओर देखा और किसी को वहाँ न देखकर निगाह ऊपर उठाई। उसने देखा पहाड़ की एक चोटी पर एक बड़ी चट्टान से एक आदमी बँधा हुआ है। वह उसी ओर उत्सुकतावश चली। पास पहुँचकर उसने देखा कि वह मजबूत जंजीरों से बँधा हुआ था। एक गिद्ध उस पर बुरी तरह हमला करने को तैयार था। वह झपट कर उसके मास को नोचने के लिये उचका था कि आयो ने दौड़कर उस गिद्ध को उड़ा दिया। उसने उस आदमी की ओर दया भरी दृष्टि से देखा और करुणा के आँसू उसकी आँखों में छलछला आये। उसी समय उसको घोर आश्चर्य में डालता हुआ वह आदमी उससे बोला :

"सुंदरी आयो, मेरे पास आओ। मैं तुम्हें जानता हूँ कि तुम्हें जूनो के क्रोध के कारण कितना दुख उठाना पड़ रहा है। निश्चय ही इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। परन्तु जूनो देवी है; उसकी शक्ति अधिक है, अतएव दंड तो तुम्हें भोगना ही पड़ेगा. . . .आओ मेरे पास आओ।"

आयो को बड़ा अचम्भा हुआ क्योंकि इस घनघोर जंगल में जहाँ सभ्यता और मनुष्य का कोई एक चिन्ह भी नहीं था यह आदमी उसे क्योंकर जानता था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और फिर तब जब कि वह अपने असली रूप में भी नहीं थी। वह उसके पास चली गई। जब वह बिल्कुल पास पहुँच गई तो वह आदमी बोला :

"मुझसे डरो मत। मेरा नाम प्रोमेथियस है। मैं मनुष्यों से प्रेम करता हूँ और सदा से उनकी भलाई के ही लिए प्रयत्न करता रहा हूँ। स्वर्ग से अग्नि को मैंने ही लाकर पृथ्वी पर मनुष्य को दिया था। उसके पहिले यहाँ आग नहीं थी जिसके अभाव में सभ्यता का उदय ही न हो पाया था। स्वर्ग के राजा ने इसका मुझे दंड दिया और मुझे यहाँ इस प्रकार युगों तक प्रकृति की क्रूरताओं का शिकार बनाकर गिद्ध द्वारा नोचे जाने को बाँध दिया है।....मैं अब भी मनुष्यों से प्रेम करता हूँ। मेरा हृदय मनुष्य-प्रेम से लबालब भरा हुआ है.... आओ मैं तुम्हें तुम्हारे भविष्य के बारे में सब कुछ बतला दूँ। हे सुंदरी तुम्हारा दुख देखकर मेरे हृदय में करुणा जाग उठी है। परन्तु बँधा रहने के कारण मैं किसी और तरह से तुम्हारी कोई भलाई नहीं कर सकता...."

आयो ने प्रोमेथियस का नाम सुन रखा था कि मनुष्यों की भलाई करने के अपराध में ही देवताओं ने उसे अन्याययुक्त दंड दिया था। यही वह सत्पुरुष था जिसने संसार को अग्नि दी थी। उसे यह भी मालूम था कि इन सब बातों के होते हुए भी वह आदमी हृदय में अब भी कलुष नहीं आने देता था। वह उसके प्रति दया और सद्भावनाओं से भर गई। उसकी ऐसी दशा देखकर आयो के नेत्रों में अश्रु छलछला आये। वह स्नेह की दृष्टि लिये उसकी ओर बढ़ी। उसने सोचा किसी प्रकार वह उसे छुड़ा दे, उसके बंधनों को काट डाले। परन्तु उसी समय प्रोमेथियस बोला :

"नहीं सुंदरी आयो, तुम मुझे चाहकर भी नहीं छुड़ा सकती ; मुझे वास्तव में कोई भी नहीं छुड़ा सकता। मुझे छुड़ाने वाला अभी पैदा ही नहीं हुआ है। वह तुम्हारे ही वंश में आगे चलकर होगा। उसी के द्वारा मैं आजाद होऊँगा। तुम इस समय व्यर्थ कष्ट मत करो।"

आयो चुपचाप खड़ी हो गई। उसे प्रोमेथियस की बातों पर बड़ा आश्चर्य हो रहा था। वह सोच रही थी कि इतने ज्ञानी व्यक्ति को भी अकारण ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देवताओं ने ऐसा कठोर दंड क्यों दिया है। प्रोमेथियस तभी जोर से हिला और अपने ऊपर हमला करते हुए उस विकराल गिद्ध को उसने उड़ाने का प्रयत्न किया। परन्तु इतनी देर में कि आयो उसकी मदद कर सके, उस गिद्ध ने प्रोमेथियस के हिलने की तथा डराने की तनिक भी परवाह न करते हुए उसके नंगे कंधे पर भयंकर प्रहार कर दिया और वहाँ पलक मारते अपनी चोंच और पंजों से गोश्त निकाल लिया। प्रोमेथियस कराह कर रह गया। गिद्ध उड़कर दूर जा बैठा। उसके पंजों में गोश्त था। प्रोमेथियस के कंधे से रुधिर बहने लगा। आयो घबराई। वह उस दृश्य को देखने में असमर्थ होकर आँखें भींच गई। उसे उसकी यंत्रणा देखकर अपार पीड़ा हुई। थोड़ी देर तक रुधिर बहता रहा, तत्पश्चात् वह वहीं जम गया। मक्खी आयो को अब भी तंग कर रही थी। उसी समय कराहते हुए प्रोमेथियस बोला :

"सुंदरी आयो, मैं जानता हूँ कि तुम्हें मेरा हाल देख कर बहुत दुख हो रहा है। परन्तु यह बात हमारे तुम्हारे हाथ नहीं है कि इसे हटा सकें। अब जब तक यह घाव अच्छा न हो जायगा तब तक गिद्ध मुझ पर हमला नहीं करेगा। इसी प्रकार हमले पर हमले युगों से मेरे ऊपर इसी गिद्ध के हो रहे हैं। यह तो भोग है जो मुझे भोगना ही पड़ेगा जिससे छुटकारा असंभव है। तुम्हारी वंशावलि में आगे चलकर हरक्युलीस नामक एक असाधारण बलवान व्यक्ति होगा, वही मुझे इस संकट से छुड़ा सकेगा।"

इतना कहकर वह चुप हो गया। आयो चुपचाप आँसू बहाती हुई खड़ी रही। कुछ देर बाद प्रोमेथियस उससे कहने लगा :

"इस मक्खी से परेशान होकर तुम अभी बहुत सें जंगलों, पहाड़ों और समुद्र के तटों पर मारी-मारी फिरोगी। भयानक जंगलों में भी होकर तुम्हें जाना पड़ेगा। परन्तु अंत में तुम इससे छुटकारा पा जाओगी। जब तुम थ्रेस के समुद्र की नहरों को तैर कर पार करोगी तब यह मक्खी तुम्हारा पीछा करना छोड़ देगी। उस समुद्र के जल में घुसते ही यह पीछे छूट जायगी। समुद्र के जल से जब तुम बाहर दूसरे छोर पर पहुँचोगी तब तुम बिल्कुल अकेली रहोगी और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम्हारे मार्ग में कोई बाधा नहीं आयेगी। तुम्हारे नाम पर ही आगे युगों तक वह नहरें याद की जायेंगी। वह बोस्फोरस काऊ-फोर्ड (गाय द्वारा पार किया जाने वाला समुद्र) के नाम से प्रसिद्ध होकर तुम्हारा नाम सदा अमर बनाये रखेंगी. . ."

इतना कहकर वह सुस्ताने को रुक गया। तत्पश्चात् गला साफ करके फिर बोला :

"और तब तुम्हारे दिन फिर से अच्छे आ जायँगे। तुम आगे चलकर मिश्र देश में नील नदी के हरे-भरे उपजाऊ भाग में पहुँचोगी और वहाँ जहाँ जूनो की दृष्टि कभी नहीं पहुँच सकेगी। ज्यूपिटर तुम्हारी मदद के लिए तैयार मिलेगा। वह तुम्हारे प्रेम की विरहाग्नि में जलता हुआ तुम्हारी सहायतार्थ तुम्हें पहले से ही वहाँ खड़ा मिलेगा। वही तुम्हें उसी समय स्त्री रूप में परिणत करेगा और तुम अपना वही अलौकिक सौंदर्य एक बार फिर वैसे प्राप्त कर सकोगी। तब तुम अपने प्रेमी के साथ बहुत समय तक आनंद भोगोगी। ज्यूपिटर तुम्हें उस स्थान की रानी बना देगा और तुम्हें नाना यत्नों से प्रसन्न रखेगा। तुम्हारे एक पुत्र होगा जो बड़ा पराक्रमी बनेगा और संपूर्ण मिश्र का सम्राट बनेगा. . . . हे सुंदरी, अभी वह सब समय दूर है. . . .अभी तुम धीरज रखो।"

इतना कहकर वह चुप पड़ गया। हीफर वहीं बैठी रही। दूसरे दिन भोर के समय वह उठी और चरती हुई एक ओर चल दी।

× × ×

बहुत समय व्यतीत हो गया। बोस्फोरस काऊ-फोर्ड पार करके हीफर मिश्र के तट पर जा पहुँची और वहाँ से अकेली वह आगे बढ़ी। मक्खी ने उसका पीछा करना छोड़ दिया था। वह शांत भाव से आगे बढ़ती गई। काफी दिन बाद वह नील नदी की हरी-भरी उपत्यका में पहुँची और प्रोमेथियस के कहे अनुसार ज्यूपिटर वहीं उसे मिला। उसने तुरन्त उसे असली रूप (स्त्री) में परिणत कर दिया। परन्तु इतने दिनों की यातना झेलने के कारण काया उतनी कोमल नहीं रही थी। ज्यूपिटर ने इस परिवर्तन को देखकर इच्छामात्र से उसे वही पुराना असली सौंदर्य्य दिया और एक बार वह फिर अनिंद्य सुंदरी बन गई जिसके मांसल शरीर से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मादक सुगंध निकलने लगी। ज्यूपिटर ने उसे हृदय से लगा लिया। वह उसके साथ मिश्र में आनंदपूर्वक रहने लगा। आयो रानी घोषित कर दी गई।

प्रोमेथियस का प्रत्येक कथन अक्षरशः सत्य निकला। आयो अपने प्रेमी के साथ अनन्तकाल तक सुख भोगती हुई राज्य करने लगी। उसके एक पुत्र हुआ जो मिश्र का पराक्रमी सम्राट् बना।

यहाँ आने के उपरांत आयो पर जूनो ने कोई संकट नहीं भेजा क्योंकि यह स्थान उसकी पहुँच के बाहर था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वासना

वीनस जितनी सुंदरी थी उतना ही कुरूप उसका पति वल्कन था। वह लँगड़ा, कुबड़ा और अत्यंत कुरूप था। एक ओर जहाँ वीनस को पाने के लिए सभी देवतागण आतुर थे उसी ओर न जाने क्या सोचकर परम पराक्रमी ज्यूपिटर ने वल्कन को उसका पति बनने की आज्ञा प्रदान की थी। वीनस पर मानो वज्र-पात हुआ था। परन्तु संसार और ओलिम्पस में भला ऐसा कौन था जो उसकी आज्ञा की अवहेलना कर सकता। लाचार वीनस को उसे ही स्वीकार करना पड़ा था। परन्तु मन से वह उसे कभी न अपना सकी। वह प्रेम और वासना की देवी स्वयं अपने लिए योग्य, रूपवान और हृष्टपुष्ट पति न पा सकी और इसी-लिए उसका ध्यान सारे विश्व में वासना और प्रेम जाग्रत करने में लगा रहता था। कभी-कभी जब उसे कोई रूपवान व्यक्ति मिल जाता तो वह उससे गुप्त प्रेम प्रगट करती और अपनी वासना की क्षुधा पूरी किया करती थी। ज्यूपिटर को इसमें कोई आपत्ति नहीं थी क्योंकि ऐसी भुवनमोहिनी को वह बंधनों में बाँधकर रखना अन्याय समझता था।

इसी प्रकार दिन निकलते चले गये। अतृप्त प्रेम के कारण वीनस सदा वासना की उद्दीप्त ज्वाला में तड़पा करती थी। ऐसे ही समय में एक दिन वह अपने उत्पाती बालक क्यूपिड के साथ लेटी हुई उसे खेला रही थी। वह सदा की भाँति आज भी कटि भाग तक नग्न थी। क्यूपिड उसके शरीर पर चढ़कर कूद रहा था और नाना प्रकार से हँसते हुए ऊधम कर रहा था। वीनस विभोर होकर उस बालक के खेलने में मग्न थी।

क्यूपिड जब उछल-कूद रहा था, उसके कंधे पर बँधे तीरों में से एक तीर वीनस के पीनस्तन के अग्रभाग से छू गया। उसका छूना था कि उसका स्तन हिल उठा और उसके अंतस तक प्रेम की एक हिलोर छा गई। उसने अपने उस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुत्र को ढकेल कर हटा दिया परन्तु उसकी वह हिलोर ऐसी बढ़ी कि उसका शरीर प्रेम की चाह से काँपने लग गया। उससे अब बैठा नहीं रहा गया। वह अधीर हो कर इधर से उधर भागी-भागी फिरने लगी। जब किसी भी भाँति उसको शांति नहीं मिली तो वह अपने हंस-रथ पर बैठ कर आकाश में विचरने लगी—हंस उसके उस दिव्य रथ को लिये बादलों पर तैरते हुए द्रुत गति से उड़े चले जा रहे थे। जब वह रथ साईप्रस नामक द्वीप के ऊपर पहुँचा तो एकाएक वीनस की दृष्टि नीचे पृथ्वी पर एक झूले में सोते हुए एक नवजात शिशु पर पड़ी। उसे देखते ही वह प्रेम से आह्लादित हो गई और नीचे जाकर उसने उसे उठाकर अपने तप्त हृदय से लगा लिया। वह शिशु इतना सुंदर और स्वस्थ था कि वीनस ने आगे चलकर उसे अपना प्रेमी बनाना निश्चय किया। और इसी ध्येय को लेकर वह उसे पालने में से उठाकर अपने साथ ले चली। अब उसने अपने रथ का रुख हेड्स की राजधानी पाताल की ओर कर दिया। जब वह वहाँ पहुँची तो वहाँ की रानी पर्सिफोन ने उसका भव्य स्वागत किया। वीनस ने देखा कि, वह लोक अंधकार से पूर्ण था। वहाँ सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँच पाता था। कोई ऐसी वस्तु नहीं थी जिस पर धूल नहीं छाई हुई थी। वीनस को वह स्थान पसन्द नहीं आया परन्तु उस शिशु एडोनीस को पालने के लिए ऐसा एकांत स्थान मिलना भी अत्यंत दुष्कर था और वह उसे दुनिया की निगाहों से छिपाकर केवल अपने लिये चाहती थी। उसे इस बात का भी भय लगा हुआ था कि कहीं अन्य स्त्रियाँ उसे अपने प्रेमपाश में न बाँध लें। उसने पर्सिफोन को वह बालक देकर कहा।

"हे सखि! यह मेरा होने वाला प्रेमी है, इसे तुम शीघ्र पाल-पोसकर युवक बना देना. . . . मुझे आशा है कि तुम मेरे कहे अनुसार इस पर किसी अन्य स्त्री की छाया भी नहीं पड़ने दोगी. . . ."

वीनस ने तत्पश्चात् उस शिशु को बहुत देर तक हृदय से लगाकर चूमा और फिर उसे पर्सिफोन की गोद में छोड़कर वह ओलिम्पस को वापस लौट गई।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पलक मारते कई वर्ष बीत गये। अब एडोनीस जवान हो चुका था। वह अत्यन्त स्वस्थ, सुंदर और बलवान था। डीलडौल का बड़ा तथा हँसमुख एडोनीस जब आखेट को निकलता तो वन्य प्रदेश में स्वच्छन्द विचरने वाले हिंस्रक पशु भी उसके भय से भागने लगते। पर्सिफोन ने उसे नाना प्रकार की विचित्र पौष्टिक वस्तुएँ खिलाकर अद्वितीय योद्धा बनाया था। वह जवान तो हो गया था परन्तु पर्सिफोन तो मानो उसे वीनस के पास अब उसे वापस भेजने का नाम ही नहीं लेती थी। वीनस ने ओलिम्पस में सुन लिया था कि उसका होनेवाला प्रेमी—वह, जिसके लिये वह स्वयं इतने वर्षों से साधना कर रही थी—अब जवान हो चुका है। उसने तुरन्त हरकारे भेजे और पर्सिफोन से कहलवाया कि उनके साथ एडोनीस को ओलिम्पस भेज दिया जाय। परन्तु जब दूतों ने लौटकर कहा :

"पर्सिफोन ने हमें मार कर भगा दिया. . . ." तो वह क्रोध से फुफकारती हुई अपने हंस-रथ पर बैठ कर आकाश-गंगा पर वायुवेग से चलती हुई सीधी पाताल की ओर चली। जब वह वहाँ पहुँची तो उसने देखा कि नगर का सिंहद्वार बंद है और उसके पुकारने पर भी नहीं खुलता। वह क्रोध से पागल हो उठी। उसने चिल्लाकर द्वाररक्षक को आज्ञा दी :

"द्वार खोल दे क्योंकि देख ओलिम्पस की देवी स्वयं साक्षात् वीनस यहाँ खड़ी है. . . ."

परन्तु उसकी बात का कोई असर नहीं पड़ा। पर्सिफोन ने पहले से ही वीनस के लिए द्वार बंद करवा दिये थे। वीनस इस अपमान को और अधिक सहन नहीं कर सकी। उसने अपना रथ मोड़ा और पीछे हटी। रथ रोक कर उसने उतर कर हंसों से धीरे से कुछ कान में कहा और फिर रथारूढ़ होकर हंसों को हाँक दिया। अबकी बार हंस आकाश में उड़े और वीनस द्वार के ऊपर होकर नगर में प्रवेश कर गई।

× × ×

एडोनीस की छुटपन से देख-रेख स्वयं पर्सिफोन करती थी। उसने उसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कभी सेवकों के हाथ में नहीं दिया था। जब वह जवान हुआ तो वह उस पर इतनी आसक्त हो गई थी कि बिना उसे देखे उसे चैन नहीं आता था। वह हरदम उसके साथ रहने लग गई थी। पर्सिफोन स्वयं सुंदरी थी और हेड्स की परवाह नहीं करते हुए वह एडोनीस को चाहने लग गई थी।

जब वीनस के दूत एडोनीस को वापिस माँगने आये थे उस समय वह उससे प्रेम प्रदर्शन कर रही थी, उसे उनका व्याघात बहुत बुरा लगा। उसी दिन उसने यह भी अनुभव किया कि बिना एडोनीस के तो वह जीवित ही न रह सकेगी। इसी-लिए उसने तुरंत आज्ञा दी और दूतों को भगा दिया था। इस समय वह एडोनीस के साथ रत्नजटित सिंहासन पर बैठी हुई उसे अत्यंत पौष्टिक भोजन करा रही थी कि हंस वाहन पर बैठी हुई त्रिभुवन सुंदरी वीनस उसके सामने हाँफती हुई आ पहुँची। पर्सिफोन उसे देखकर आशंका से खड़ी हो गई परन्तु इससे पहले कि वह सँभले वीनस समुद्र के फेन की भाँति वायु में तैरती हुई एडोनीस के पास जा पहुँची और उसने उसे अपने गाढ़ालिंगन में बाँध लिया और वह उसके मुख का लंबा चुंबन लेती हुई एक बार सब कुछ भूलकर उसी में खो गई। पर्सिफोन ने चकित होकर यह सब देखा। पहले तो भौचक रह गई परन्तु जब उसे वास्तविकता का ध्यान आया तो विद्युत गति से तड़पती हुई वह आगे बढ़ी और उसने एडोनीस को धक्का देकर वीनस के आलिंगन से छुड़ा लिया। वीनस कटे वृक्ष की भाँति नीचे गिर पड़ी। जब वह उठी तब तक एडोनीस को पीछे किये पर्सिफोन आगे सन्नद्ध होकर खड़ी थी। वीनस ने उसे आग्नेय नेत्रों से देखा और कहा :

"मैं एडोनीस को माँगने आई हूँ क्योंकि वह मेरा है....जब मैं इसे तेरे पास छोड़ गई थी मैंने तभी कह दिया था कि आगे चलकर मैं इसे अपना प्रेमी बनाऊँगी....अब वह जवान हो गया है....तू उसे मुझे क्यों नहीं वापस कर देती?"

"इसलिए कि एडोनीस शुरू से अब तक मेरे ही पास रहा है और अब मैं स्वयं अनुभव करने लगी हूँ कि मैं उसके बिना जीवित नहीं रह सकती.... मैं उससे प्रेम करती हूँ और कदापि तुझे उससे नहीं मिलने दूँगी।" पर्सिफोन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने एक ही साँस में उत्तर दे दिया।

वीनस ने सुना। वह आहत हुई। तो यह बात है। यह दुष्टा स्त्री स्वयं ही उसके प्रेमी पर डोरे डाल रही थी....अब उसे सूझा....सचमुच ही उसने उसे पर्सिफोन को सौंप कर बड़ी गलती की थी। सारी दुनिया की निगाह बचाकर जो वह उसे यहाँ लाई थी और यहाँ यह हुआ कि खुद पालने वाली ने ही उसे फँसा लिया....एक बार वीनस निरुत्तर हो गई और शिथिल हो गई परन्तु दूसरे ही क्षण उसे याद आया कि वह स्वयं ओलिम्पस की एक महान् देवी थी, वह ज्यूपिटर की प्रियपात्र थी। क्यूपिड उसी का तो पुत्र था फिर भला वह कमजोर कैसे थी और सगर्व उसका शीश उठ गया। उसने नेत्रों में घृणा भरकर पर्सिफोन से कहा :

"ओ मृत्यु की चुड़ैल! तेरे इस राज्य में जहाँ सभी कुछ अंधकार और धूल से धूमिल है, जहाँ सूर्य का प्रकाश कभी पर्वतों की जड़ों में से भी छनकर नहीं आता और जहाँ की वायु भी बँधी हुई है ऐसे स्थान में मेरा प्रेमी कभी नहीं रह सकता। वह मेरा है और निश्चय ही उसे अपने साथ मैं अभी ले जाऊँगी ....विश्व में ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो फेनिला वीनस के प्रेम-मार्ग में रुकावट डाल सके...." इतना कह कर उसने क्यूपिड का स्मरण किया। जैफायर ने तुरंत मंद मलयानिल पर बिठाकर उसे वीनस के पास भेज दिया। वीनस क्रोध से समझ खो बैठी थी। उसने क्यूपिड को आज्ञा दी कि वह अपने शरों से पर्सिफोन को आहत करे और क्षतविक्षत कर दे। उसे उस समय यह तनिक भी नहीं सूझा कि क्यूपिड के शरों से आहत होकर तो वह वासना और प्रेम में इतनी उन्मत्त हो उठेगी कि किसी भी हालत में अपने प्रिय एडोनीस को नहीं छोड़ेगी। और हुआ भी ऐसा ही। जब वीनस आगे बढ़ी तो पर्सिफोन ने उसे मार्ग में ही रोका और उससे जूझ पड़ी। दोनों स्त्रियों में एडोनीस के लिए अब संघर्ष छिड़ गया और अब वह भीषण कोलाहल करती हुई लड़ने लगीं। क्यूपिड निरंतर शर-वर्षा कर रहा था। तीर कभी पर्सिफोन के लगते तो कभी वीनस के हृदय को पार कर जाते और इस प्रकार दोनों ही का प्रेम बढ़ता ही गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वासना के तीरों से आहत दोनों स्त्रियाँ उस एक पुरुष के लिए प्राणों की आहुति लगा कर लड़ रही थीं। भयानक संघर्ष हो रहा था। एडोनीस ऐसे खड़ा था जैसे उसे कुछ लेना-देना ही न था। वह शायद आखेट के बारे में कुछ सोच रहा था।

ओलिम्पस में जब उन दोनों स्त्रियों के चीत्कार सुनाई पड़े तो अपने ऊँचे रत्नजटित सिंहासन पर बैठे हुए देवाधिदेव ज्यूपिटर ने झुककर नीचे देखा। उसने देखा कि वीनस और पर्सिफोन क्षतविक्षत होकर लड़ रही हैं। उनकी लड़ाई देखकर ऐसा प्रतीत होता था जैसे उनका वह युद्ध कभी समाप्त नहीं होगा। उसने एक बार जूनो की ओर देखा और तदनंतर कलह की देवी ऐरिस को बुलाकर उसने उन दोनों की लड़ाई का कारण पूछा। वह बोला :

"मुझे बतलाओ कि वीनस और पर्सिफोन किस कारण लड़ रही हैं? और यह क्यूपिड क्यों निरंतर शर-वर्षा कर रहा है?"

ऐरिस ने उत्तर दिया :

"एडोनीस नामक मर्त्यलोक के सुंदर युवक के पीछे दोनों प्राणों की बाजी लगा कर लड़ रही हैं। क्यूपिड वासना से दोनों को पीड़ित कर रहा है।"

ज्यूपिटर समस्या को समझ गया। उसने अपने दायें हाथ के वज्र को हिलाया और आकाश में बिजली कौंध गई। पहाड़ गूँजने लगे और समुद्र थर्राने लगे। उसने मेघ गर्जन की भाँति गंभीर स्वर से आज्ञा दी :

"फेनिला वीनस और पर्सिफोन को हमारे सम्मुख उपस्थित करो।"

तुरंत मर्करी (हरमीस) विचारों की तीव्रता से भाग चला।

× × ×

अपने ऊँचे सिंहासन पर बैठ कर ज्यूपिटर ने वीनस और पर्सिफोन की पूरी वार्ता सुनी। दोनों ही स्त्रियाँ क्यूपिड द्वारा बुरी तरह आहत थीं और वासनोन्मुख होकर गर्म-गर्म साँसें छोड़ रही थीं। स्वयं प्रेमी होने के नाते वह परिस्थिति को फौरन समझ गया। वह बोला :

"ऐडोनीस का पौरुष अखंड है। मैं आज्ञा देता हूँ कि वह दोनों स्त्रियों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का प्रेमी बने। वर्षा और शीतकाल में वह पर्सिफोन के साथ में रहे और वसंत ऋतु से ग्रीष्म के अंतिम दिवस तक वीनस उससे स्वच्छन्द विहार करे...."

आज्ञा का उल्लंघन नहीं हो सकता था। अतएव वह सर्वथा मान्य हुई। उन दिनों वर्षा ऋतु थी, इसलिए पर्सिफोन उसे लेकर चली गई। साईप्रस द्वीप में जाकर वह ऐडोनीस के साथ रहने लगी। भोर से रात्रि तक वह उसे निर्निमेष नेत्रों से देखा करती और एक पल को भी आँखों से ओझल न होने देती थी। परन्तु वह जो स्वयं मर्त्यलोक की रानी थी उसमें प्रेम और वासना की मादकता नहीं थी जो जीवित प्राणियों के रक्त में उत्तेजना भरती। ऐडोनीस अपने विचारों में ही लीन रहता। वह ऐसे रहता था जैसे कोई खास बात ही नहीं थी। पर्सिफोन उसकी प्रिया अवश्य थी परन्तु वह उसमें अपने आप को भुला नहीं सका।

और जब शिशिर ऋतु समाप्त हुई फेनिला वीनस अपने हंस-रथ पर आरूढ़ होकर आ पहुँची। पर्सिफोन विरह के विछोह को आँखों से बहाती हुई पाताल को चली गई।

वीनस ने उस दिन अद्‌भुत श्रृंगार किया था। वह इंद्रधनुष की आभा की भाँति दमक रही थी। उन्नत स्तनों पर सुगंधित पुष्पों के हार उसकी सुवर्णमयी रत्नजटित माला से उलझ गये थे। उसके चिबुक पर उसने कृत्रिम तिल बनाया था जहाँ देवताओं की भी दृष्टि अटक कर रह जाती थी। उसकी पतली कटि पर माणिक जटित सुवर्ण मेखला थी जिसके कस लेने से प्रेम और वासना में वेग बढ़ जाता था। इस मेखला की छोटी-छोटी सुवर्ण किंकिड़ियाँ उसके विशाल नितंबों के चालन के साथ-साथ बज उठती थीं। वह बादलों की सुवर्ण रेखाओं से पृष्ठ भाग में आच्छादित होकर बंकिम कटाक्ष और भ्रूभंग करती हुई उसके पास आई और उसने अपनी गर्म श्वासों से वायुमंडल को कँपाते हुए वातावरण में मादकता भर दी। उसकी पीन जंघाओं के घर्षण से मानो विद्युत कौंध उठती और एडोनीस अपलक नेत्रों से भी अपनी इस प्रिया का रूप पकड़ नहीं पा रहा था। वह ऐसी थी कि जहाँ भी एडोनीस की निगाह जाती वहीं अटक कर रह जाती। क्यूपिड जो वीनस का अपना पुत्र था और जिसे वीनस ने पर्सिफोन पर शर संधान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करने को मना कर दिया था अब स्वच्छंद होकर अपने अचूक कामबाणों से ऐडोनीस और वीनस दोनों के हृदयों को छेदे डाल रहा था। प्रत्येक प्रहार के वाद प्रेमियों के मुँह से 'आह' निकल जाती थी। ऐडोनीस उठा और उसने अपनी मादकता बिखेरती हुई इस प्रिया को हृदय से लगा लिया। वसंत ऋतु खिल उठी और जहाँ-तहाँ कलियाँ खिलकर पुष्प बन गईं। पक्षियों के मधुर कलरव से वन-उपवन नंदनवन की शोभा को प्राप्त हो गये। जैफायर की आज्ञा से सुरभित समीरण बहने लगा और वीनस के श्वासों के साथ मिलकर वह भी मादक हो गया। अगाध आनंद का स्रोत बहने लगा। एडोनीस युगों-युगों से जिस नारी की वाट में था वह आज उसे मिल गई थी।

सुख के दिन व्यतीत होते देर नहीं लगती। विरह और दुख की घड़ियाँ ही पल-पल पहाड़ बन कर कटती हैं। अभी वीनस की वासना का मध्याह्न ही हो पाया था कि ग्रीष्म की मधुर ऋतु समाप्त हो गई और आँसुओं के बीच उसे बिदा हो जाना पड़ा। पर्सिफोन ने आकर अब एडोनीस के गले में बाँहें डाल दीं।

इसी प्रकार ऋतुएँ आतीं और चली जातीं। एडोनीस बारी-बारी से उन दोनों स्त्रियों के साथ रहता और विलास करता।

वीनस को अपने पति के जीवन का भय सदा लगा रहता था क्योंकि वह मर्त्यलोक का प्राणी था और इसलिए जब वह आखेट के लिये जाता तो वह सदा उसके साथ डायना की भाँति ढाल, कवच और शिरस्त्राण पहिने अंगरक्षिका के रूप में चलती थी। कभी वह उसका अनुसरण पृथ्वी पर चल कर करती तो कभी आकाश मार्ग में अपने हंस-रथ पर आरूढ़ होकर उस पर दृष्टि गड़ाये रखती थी।

एक बार एडोनीस बीहड़ जंगल में अपने शिकारी कुत्तों को लेकर गया। वह प्रकृति से ही वीर और बेधड़क था। साधारण सी बात में भी अपने प्राणों की बाजी लगा देने का वह इतना आदी हो गया था कि उसकी आदत के कारण फेनिला वीनस सदैव डरा करती थी। परन्तु वह उसके लाख समझाने पर भी अपनी यह आदत न सुधार सका। उस दिन वीनस आकाश मार्ग से हंस-रथ पर आरूढ़ होकर साथ-साथ चल रही थी। हंस और दिनों की अपेक्षा आज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ अधिक ऊँचाई पर उड़ रहे थे। शाम हो गई थी, कुछ-कुछ अँधेरा छाने लगा था। उसी समय कुत्ते बड़े जोर से भूँकने लगे और तीर की तरह भागते हुए एक पर्वत की गुफा में घुस गये। एडोनीस भाला उठाये पीछे से उस गुफा में घुसा। उधर कुत्तों ने अंदर सोते हुए भयानक बनैले सुअर को खदेड़ा। वह भीमकाय जन्तु क्रुद्ध हो उठा और उसने एक बार रुक कर भयानक आक्रमण किया। एडोनीस निर्भय होकर उसके सम्मुख जा पहुँचा और उसने अपना भाला उठाकर पूर्ण वेग से उस पर संघातिक प्रहार किया। सुअर की बगल में जाकर वह भाला गड़ गया और लगता था जैसे वह अब गिर पड़ेगा। कुत्ते अब भी भूँक रहे थे। एडोनीस अब बेफिक्र हो चुका था क्योंकि उसे निश्चय हो गया था कि चोट करारी है। परन्तु उसकी यह बेफिक्री उसकी मौत का कारण बन गई। सुअर उछला और गड़े भाले के सहित वह उस पर टूट पड़ा। भयानक संघर्ष होने लगा। जितने में कि शिकारी कुत्ते अपने मालिक की सहायता करते या आकाश से देवी वीनस उतर कर उसको बचाने का उपक्रम करतीं, उस क्रूर पशु के नुकीले दाँत एडोनीस की गर्दन पर गड़ गये। तेज दाँत उसके मांस को छेदकर अंदर तक घुस गये। एडोनीस की चीत्कार से गुफा गूँज उठी और वह तत्काल कटे वृक्ष की भाँति निर्जीव होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। जब वीनस आई उसने देखा उसका प्यारा पति मरा पड़ा था। एडोनीस की वह भयानक चीत्कार अब भी गूँज रही थी। एडोनीस का रक्त पृथ्वी पर गिर कर जम गया था। वीनस ने देखा और वह मूर्च्छित होकर वहीं गिर पड़ी।

जब कुछ देर बाद उसकी आँखें खुलीं उसने देखा कि सुअर के मृत शरीर के पास ही एडोनीस मरा पड़ा था। वह उठी और उससे लिपट कर रोने लगी। उसके नेत्रों से अविरल धाराओं में अश्रु बहने लगे।

वह कभी उसके मृत शरीर से लिपट जाती तो कभी उसके अंग-अंग की शोभा देख-देखकर रुदन करने लगती। उसका हृदय मानो फट जाना चाहता था। बड़ी देर बाद वह उठी और बोली :

"हे मेरे प्रियतम ! तुम्हारी मृत्यु के साथ-साथ मेरे जीवन का मधुर स्वप्न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमेशा-हमेशा के लिये समाप्त हो गया है . . . . मेरी सुंदरता को द्विगुणित करने वाली रसना भी आज मैं तुम्हें खोने के बाद खो चुकी हूँ. . . . हाय प्रियतम ! मेरी कामनाएँ बिल्कुल अधूरी रह गई हैं और मैंने तुम्हें तनिक असावधानी के कारण सदा के लिये खो दिया है. . . . अब मेरे जीवन से हास्य और संतोष प्रायः नष्ट हो गये हैं. . . . मैं देवी हूँ, अतएव चाहकर भी तेरे साथ मर नहीं सकती . . . . परन्तु अपनी अलौकिक शक्ति से चुंबन द्वारा मैं तेरे शरीर से तेरा सारा प्रेम अभी पी लूँगी . . . ."

इतना कहकर वीनस ने मृत एडोनीस का देर तक चुंबन लिया और उसके शरीर में स्थित सारे प्रेम को पीकर वह उदास मन से ओलिम्पस चलने को तैयार हो गई। उसने एक बार उन खूनों के धब्बों को देखा और फिर उन पर अमृत छिड़क दिया।

जब मर्करी स्वयं एडोनीस की आत्मा को लेकर पाताललोक की ओर गया तो रास्ते में पेड़, पत्तियाँ और पहाड़ भी दुख की आहें भरने लगे। जंगल रोने लगे और वन्य प्रदेश की सुंदर देवियाँ और दैवी गायक सभी शोकग्रस्त होकर कराहने लगे। एडोनीस की मृत्यु पर सारा संसार रोया क्योंकि उसके बिना संसार ही सूना हो गया था। वह इतना महान् था कि ज्यूपिटर की आज्ञा से स्वयं मर्करी उसकी आत्मा को लेकर हेड्स गया था।

वीनस का स्वप्न समाप्त हो गया था। पर्सिफोन के पास अब एडोनीस हमेशा-हमेशा के लिये पहुँच गया था। परन्तु अब वह प्रेम नहीं कर सकता था क्योंकि अब वह मर, चुका था।

जहाँ एडोनीस का खून गिरा था वहाँ रक्तवर्ण के कुसुम खिल उठे। वह वीनस और एडोनीस के प्रतीक आज भी संसार में खिलते हैं। कवियों ने उनका नाम 'ऐनीमोनीस' रखकर उस अमर प्रेम की गाथा को सदैव सजीव कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

टैंटैलस का दंड

ईजियन समुद्र के तट पर सिपैलोस के राजा का नाम टैंटैलस था। उसका राज्य बहुत बड़ा था जिसमें लिडिया का भी काफी हिस्सा मिला हुआ था। यह राजा टैंटैलस देवताओं के राजा ज्यूपिटर का एक पुत्र था जिसकी माता संसार की ही रहने वाली थी। टैंटैलस के उच्च वंश और महान् पिता के कारण उसको बहुत अधिक सम्मान प्राप्त था। संसार के मनुष्यों के अतिरिक्त देवतागण भी उसे बहुत इज्जत की निगाह से देखते थे। उसको इतने अधिक अधिकार प्राप्त थे कि वह जब चाहता ओलिम्पस में भी चला जाता और देवताओं तथा अपने पिता ज्यूपिटर से मिल आता था। उसकी सभी ओर धाक जमी हुई थी, परन्तु इतना सब कुछ होते हुए भी टैंटैलस स्वयं अच्छा आदमी नहीं था। वह नीच प्रकृति का था। अपनी प्रजा पर वह मनमाने अत्याचार करता और उन्हें पीड़ित करने में बहुत संतुष्ट होता था। उसका हृदय पाप से भर गया था। बढ़ते-बढ़ते उसकी यह हालत हो गई थी कि वह देवताओं से भी ईर्षा करने लगा और उन्हें भी अपने आपसे नीचा समझने लगा। वह अपने आप कहता :

"पराक्रमी ज्यूपिटर का पुत्र होकर भी मैं भला इस धरती पर क्योंकर रहूँ ? क्यों नहीं मैं भी उस स्वर्ग ओलिम्पस में ही रहूँ और वहाँ आनंद भोगूँ। क्यों न मेरे भी मंदिर पृथ्वी पर अन्य देवताओं की भाँति बनें और मैं भी पूजा जाऊँ ?" ऐसा वह सोचा करता और उसकी लालच और तृष्णा बढ़ती जाती थी। धीरे-धीरे उसकी यह ईर्षा घृणा में बदल गई। अब वह पराक्रमी देवताओं से घृणा करता और सदा उन्हें किसी न किसी भाँति नीचा दिखाने के प्रयत्न में लगा रहता था। परन्तु सर्वशक्तिमान देवताओं को नीचा दिखाना भला किस प्रकार होता ? प्रत्यक्ष में उनसे युद्ध करने का साहस तो उसे नहीं था और न वह उनसे प्रत्यक्ष में विमुख ही हो सकता था। अतएव उसने सोचा कि किसी भाँति धोखे से उन्हें परास्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किया जाय क्योंकि वह स्वयं नीच था। उसने नीचता का काम करने का ही निश्चय किया। उसने उन्हें मनुष्य का मांस खिलाने का षड्यंत्र रचा। ऐसा करने से जब देवता लोग वास्तविकता जानेंगे तो वह आत्मग्लानि से सिर नीचा कर लेंगे और तब वह उनका परिहास कर सकेगा। ऐसा उस दुष्ट टैंटैलस ने सोचा।

उसने अपने दूतों द्वारा देवताओं को दावत पर आमंत्रित कर दिया। उसने समाचार भेजा। दूत ने जाकर देवताओं से कहा :

"परमपराक्रमी राजा टैंटैलस की आज्ञानुसार मैं देवताओं के सम्मुख सिर नवाकर प्रार्थना करता हूँ कि वह सिपैलोस के राजमहल म दावत खाने के लिए पधार कर कृतार्थ करें। राजा टैंटैलस को बहुत संतोष होगा।"

देवताओं ने दावत में जाना मंजूर कर लिया।

इधर दुष्ट टैंटैलस ने अपना एक छोटा पुत्र पैलोप्स जो अभी बच्चा ही था, मार डाला और उसे एक बड़े पानी भरे पात्र में डालकर खूब उबाला। जब मांस पक गया तो उसे काटकर नमक लगा कर सुखा दिया।

जब देवता लोग निश्चित समय पर दावत खाने आये तो उसी मांस को उन्हें परोस दिया गया। एक देवता ने उसमें से जरा सा खाया था कि वह घबरा गया। वह मांस सामने देखकर सभी देवता झिझक गये और विषाद की गहरी छाया उन पर छा गई। वह शीघ्र ही वास्तविकता को जान गये और भय से पीछे हट कर खड़े हो गये। तत्पश्चात् उन्हें क्रोध हो आया। टैंटैलस की धमकी और नीचता देखकर वह उसकी ओर बढ़े और बोले :

"दुष्ट तू इतना नीच है यह हमने अब तक नहीं जाना था। तूने एक तो उस अबोध बालक का बध किया और फिर उसे उबलवा कर हमी को खाने को दिया। तुझे इसका दंड भोगना पड़ेगा। हमारा शाप है कि तू अँधेरी दुनिया में अभी चला जा जहाँ तुझे निरंतर भूख और प्यास से तड़पते रहना पड़े। तुझे कभी शांति नहीं मिले और तू 'हाय भूख, हाय प्यास' ऐसे ही चिल्लाता रहे।"

इतना कहकर देवता लोग तेज कदमों से ओलिम्पस की ओर चले गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुरंत टैंटैलस का वध कर दिया गया और उसकी काली आत्मा अँधेरी धूल धूसरित पाताल नगरी में भेज दी गई जहाँ हेड्स ने उस पर कठोर नियंत्रण कर दिया। उसे एक शुभ्र नीले जल वाले सरोवर के तट पर बिठा दिया गया जहाँ से वह हिल-डुल नहीं सकता था। उसके ऊपर फलों से लदी हुई पेड़ों की घनी डालें झूम रही थीं। चारों ओर सुंदर वृक्ष लहरा रहे थे। वह प्यास से पानी पीना चाहता और पानी पीने को झुकता कि जल नीचे से हट जाता और उसके होंठ सूखी रेत से जा लगते। जब वह भूख से व्याकुल होकर हाथ बढ़ाकर उन फलों को तोड़ना चाहता उसी समय हवा का एक झोंका आता और उस डाली को ऊपर उठा देता था। खाने और पीने के साधनों के इतने पास रह कर भी वह भूखा और प्यासा ही रह जाता था। वह उस घोर यातना को भोगने को मजबूर किया गया। उसके इस दंड की अवधि भी नहीं नियुक्त की गई।

परन्तु देवताओं ने उस क्रोध में भी उस अबोध बालक को फिर से जीवनदान देने की बात नहीं भूली। पैलोप्स का सारा मांस इकट्ठा किया गया और उस पर अमृत छिड़क कर उसे फिर से जीवित कर दिया गया। परन्तु चूँकि उसका थोड़ा-सा मांस खा लिया गया था अतएव उसके एक कंधे पर जरा सा गड्ढा रह गया। देवताओं ने एक हाथीदाँत का कंधा बनाकर उसके लगा दिया। वह इतनी सफाई से बनाया गया था कि पैलोप्स को भी स्वयं अपने जीवन काल में उसका तनिक भी पता नहीं चला।

टैंटैलस आज भी अपने कुकर्मों का फल भोग रहा है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मृतकों की दुनिया में औरफियस

थ्रेस के राजकुमार औरफियस की माता कैलिओप स्वर्ग की अप्सरा थी। अपने अद्‌भुत संगीत से उसने मनुष्य और देवता सभी को संतुष्ट कर रखा था। औरफियस स्वयं एक अत्यंत सुंदर युवक था जिसे देखकर थ्रेस की सुंदरियाँ कटाक्ष करतीं और लुभाने का प्रयत्न किया करती थीं।

देवताओं ने कैलिओप के इस पुत्र से प्रसन्न हो कर उसे कवि बनाया। वह उच्चतम कविता करने लगा और उन्हीं के प्रसाद से वह अद्‌भुत संगीतज्ञ बन गया। स्वयं एपोलो ने प्रसन्न होकर उसे अपना सोने का लायर (बाँसुरी) दिया था। जब वह उसमें अपने प्राणों को फूंक कर बजाता तो देवता और मनुष्य सभी झूमने लग जाते। जब वह अपने मधुर संगीत को विखेरता हुआ बनों में घूमता और कभी विहाग गाता तो पहाड़ रोने लगते और पेड़ तक आहें खींचने लग जाते थे। उस समय हिंस्र पशु भी अपनी क्रूरता भूलकर बिल्कुल सीधे हो जाते थे। उसके संगीत में इतनी शक्ति थी कि नदियाँ अपना वेग भूलकर सहसा थम जातीं और फिर उसी के पास से बहने लगती थीं। अद्‌भुत था उसका वह संगीत जिसे सुनकर वन-उपवन में पक्षी अपना कलरव भूल जाते और विभोर होकर मानो सारी प्रकृति ही झूमने लग जाती थी।

एक मधुर चाँदनी रात में औरफियस जंगल में बाँसुरी बजाता हुआ जा रहा था जब मार्ग में उसे एक वन-सुंदरी मिली। उस समय वह अकेली थी। संगीत की तानों में खोई अस्तव्यस्त खड़ी थी। विस्फारित नेत्रों से वह चकित हरिणी की भाँति उसे अलसायी दृष्टि से देख रही थी। औरफियस ने उसे देखा और एक विचित्र आनंद का भास करते हुए उसने बाँसुरी पर वह तान छेड़ी कि जिसको सुनकर वृक्षों पर फूल खिल गये और वह वन उल्का के प्रकाश के समान प्रकाशमान हो उठा। औरफियस ने आज तक ऐसा राग कभी नहीं बजाया था जिसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुनकर आकाश में विचरण करने वाले देवता वहीं रुक गये और आनंद मानो सजीव होकर नृत्य करने लगा। सुंदरी यूरैडिस ने वह स्वर्गीय संगीत सुना। वह अपने तन-मन की सुध खोकर उसकी ओर यंत्रचालित की भाँति खिंची चली आई और पास आकर उसने उसके गले में हाथ डाल दिये।

औरफियस और यूरैडिस का प्रेम थ्रेस और ओलिम्पस में गाथा बनकर फैल गया। उनका प्रेम आकाश के समान दीर्घ और समुद्र की भाँति विस्तृत था जिसका ओर-छोर कहीं नहीं था। देवताओं ने भी उनके उस प्रेम की भूरि-भूरि प्रशंसा की क्योंकि उनकी जोड़ी बहुत ही सुंदर लगती थी। जितना औरफियस सुंदर और स्वस्थ था उतनी ही सुंदरी यूरैडिस थी। वह सभी अंगों से पूर्ण अत्यंत लावण्यमयी और रसीली प्रतीत होती थी। हंस के समान श्वेत और गुलाब जैसी खिली कली के सदृश वह सद्यःस्नाता सुंदरी जब सरोवर के बाहर निकलती तो साक्षात् वीनस जैसी प्रतीत होती थी। कैलिओप ने अपने पुत्र की प्रेमिका को देखा और प्रेम के आवेश में उसे खींचकर हृदय से लगा लिया।

औरफियस और यूरैडिस का विवाह भी शीघ्र ही घोषित हो गया। सर्वत्र आनंद की हिलोर फैल गई। सुंदरी यूरैडिस अपने प्रेमी को सदैव इस प्रकार देखा करती थी जैसे वह नेत्रों के द्वारा ही उसे अपने हृदय में समेट लेना चाहती थी। अलौकिक था उनका प्रेम जिसकी धूम दूर-दूर तक फैल गई थी।

जिस दिन विवाह होने वाला था और अतिथि लोग थ्रेस के राजमहल में आनंद मना रहे थे। विवाहों का देवता हाईमन् स्वयं केसरिया रंग से रँगे हुए उत्तम वस्त्र वहाँ लाया और उसने ओलिम्पस की ओर से यूरैडिस को भेंट में दिये। यूरैडिस उन्हें पहन कर रानी जैसी सुंदरी लगने लगी और उसने हाईमन् को झुककर अभिवादन किया। वह अत्यंत प्रसन्न थी। और तभी जब वह अपने पति के बाँहों में आलिंगन के हेतु झुकी, उसे पैर में एक विषैले सर्प ने काट लिया। वह दुष्ट न जाने कैसे वहाँ आ गया और क्षण भर में ही उसने अपना तीव्र विष उस सुंदरी के शरीर में उतार दिया। यूरैडिस को उस विष से गश आ गया और वह अपने प्रेमी की बाँहों में झूल गई। औरफियस ने घबराकर उसे देखा और जितनी देर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में कि वह उसे सँभाले यूरैडिस के मुँह से नीले झाग निकलने लगे और वह पलक मारते पैर पटक कर मर गई। उसके नेत्र अब भी खुले थे। औरफियस ने देखा और चीख मारकर बेहोश हो गया।

रंग में भंग हो गया। जहाँ-तहाँ खुशियाँ मनाते हुए अतिथिगण ने जब यह दुखद समाचार सुना तो वहीं स्तब्ध रह गये। बाजे-गाजे सभी एकदम बंद हो गये। रानी कैलिओप और उसका पति पछाड़ खाकर भूमि पर गिर पड़े। नृत्य करती हुई सुंदरियों के पाँव उठे के उठे रह गये। शोक फैल गया। सर्वत्र हाहाकार छा गया। पेड़ों ने सुना, वह पसीज उठे, पहाड़ जल से भींग गये और कंदराओं से हाहाकार का स्वर गूंजने लगा। वीनस ने देखा और वह फफक कर रो उठी। पृथ्वी पर घास की हरी शैय्या पर सुंदरी यूरैडिस लेटी हुई थी। वह ऐसी निश्चल पड़ी थी जैसे गहरी निद्रा में सो रही हो। उस सौंदर्य्य को देखकर मनुष्य हाहाकार कर उठे। उसी समय आकाश में वज्र कड़का और पूरा अंतरिक्ष बिजली की कौंध से काँप उठा। अपने ऊँचे सुवर्ण सिंहासन से झुककर ज्यूपिटर ने नीचे देखा और उसके मुँह से आह निकल गई। दुख सारे संसार पर काला बादल बनकर छा गया। औरफियस का मुँह के अंदर पहुँचा हुआ ग्रास छिन गया था। सुंदरी यूरैडिस की मृत्यु ने उसके जीवन में विषाद की गहरी कालिमा ला दी।

औरफियस अब पागलों की भाँति जंगलों में भटकने लगा। उसका दुख असह्य था। वह दुखद स्वरों में लायर बजाता जिसे सुनकर पहाड़ भी रोने लगते थे। पेड़ आह भरते और पशु-पक्षी सभी अश्रुपूर्ण हो उठते थे। उनके उन दुखपूर्ण स्वरों को सुनकर पृथ्वी भी द्रवित हो उठती थी। ऐसा लगता था मानो हृदय अपने आप ही मुँह के बाहर निकल आना चाहता हो। इतना दुख था उसका कि देखने सुनने वाले भी आँसू से भींग उठते थे। विरह के गीत गाता हुआ औरफियस सारी सृष्टि को रुलाता हुआ घूमने लगा।

इसी तरह एक लंबा समय निकल गया परंतु उसके हृदय की आग शांत होने के बजाय दिनोदिन बढ़ती जाती थी। वह अनुभव करने लगा कि अगर ऐसा ही कुछ दिन और रहा तो उसकी मृत्यु निकट थी। और अब वह सचमुच

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुनकर आकाश में विचरण करने वाले देवता वहीं रुक गये और आनंद मानो सजीव होकर नृत्य करने लगा। सुंदरी यूरैडिस ने वह स्वर्गीय संगीत सुना। वह अपने तन-मन की सुध खोकर उसकी ओर यंत्रचालित की भाँति खिची चली आई और पास आकर उसने उसके गले में हाथ डाल दिये।

औरफियस और यूरैडिस का प्रेम थ्रेस और ओलिम्पस में गाथा बनकर फैल गया। उनका प्रेम आकाश के समान दीर्घ और समुद्र की भाँति विस्तृत था जिसका ओर-छोर कहीं नहीं था। देवताओं ने भी उनके उस प्रेम की भूरि-भूरि प्रशंसा की क्योंकि उनकी जोड़ी बहुत ही सुंदर लगती थी। जितना औरफियस सुंदर और स्वस्थ था उतनी ही सुदरी यूरैडिस थी। वह सभी अंगों से पूर्ण अत्यंत लावण्यमयी और रसीली प्रतीत होती थी। हंस के समान श्वेत और गुलाब जैसी खिली कली के सदृश वह सद्यःस्नाता सुंदरी जब सरोवर के बाहर निकलती तो साक्षात् वीनस जैसी प्रतीत होती थी। कैलिओप ने अपने पुत्र की प्रेमिका को देखा और प्रेम के आवेश में उसे खींचकर हृदय से लगा लिया।

औरफियस और यूरैडिस का विवाह भी शीघ्र ही घोषित हो गया। सर्वत्र आनंद की हिलोर फैल गई। सुंदरी यूरैडिस अपने प्रेमी को सदैव इस प्रकार देखा करती थी जैसे वह नेत्रों के द्वारा ही उसे अपने हृदय में समेट लेना चाहती थी। अलौकिक था उनका प्रेम जिसकी धूम दूर-दूर तक फैल गई थी।

जिस दिन विवाह होने वाला था और अतिथि लोग थ्रेस के राजमहल में आनंद मना रहे थे। विवाहों का देवता हाईमन् स्वयं केसरिया रंग से रँगे हुए उत्तम वस्त्र वहाँ लाया और उसने ओलिम्पस की ओर से यूरैडिस को भेंट में दिये। यूरैडिस उन्हें पहन कर रानी जैसी सुंदरी लगने लगी और उसने हाईमन् को झुककर अभिवादन किया। वह अत्यंत प्रसन्न थी। और तभी जब वह अपने पति के बाँहों में आलिंगन के हेतु झुकी, उसे पैर में एक विषैले सर्प ने काट लिया। वह दुष्ट न जाने कैसे वहाँ आ गया और क्षण भर में ही उसने अपना तीव्र विष उस सुंदरी के शरीर में उतार दिया। यूरैडिस को उस विष से गश आ गया और वह अपने प्रेमी की बाँहों में झूल गई। औरफियस ने घबराकर उसे देखा और जितनी देर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में कि वह उसे सँभाले यूरैडिस के मुँह से नीले झाग निकलने लगे और वह पलक मारते पैर पटक कर मर गई। उसके नेत्र अब भी खुले थे। औरफियस ने देखा और चीख मारकर बेहोश हो गया।

रंग में भंग हो गया। जहाँ-तहाँ खुशियाँ मनाते हुए अतिथिगण ने जब यह दुखद समाचार सुना तो वहीं स्तब्ध रह गये। बाजे-गाजे सभी एकदम बंद हो गये। रानी कैलिओप और उसका पति पछाड़ खाकर भूमि पर गिर पड़े। नृत्य करती हुई सुंदरियों के पाँव उठे के उठे रह गये। शोक फैल गया। सर्वत्र हाहाकार छा गया। पेड़ों ने सुना, वह पसीज उठे, पहाड़ जल से भींग गये और कंदराओं से हाहाकार का स्वर गूँजने लगा। वीनस ने देखा और वह फफक कर रो उठी। पृथ्वी पर घास की हरी शैय्या पर सुंदरी यूरैडिस लेटी हुई थी। वह ऐसी निश्चल पड़ी थी जैसे गहरी निद्रा में सो रही हो। उस सौंदर्य्य को देखकर मनुष्य हाहाकार कर उठे। उसी समय आकाश में वज्र कड़का और पूरा अंतरिक्ष बिजली की कौंध से काँप उठा। अपने ऊँचे सुवर्ण सिंहासन से झुककर ज्यूपिटर ने नीचे देखा और उसके मुँह से आह निकल गई। दुख सारे संसार पर काला बादल बनकर छा गया। औरफियस का मुँह के अंदर पहुँचा हुआ ग्रास छिन गया था। सुंदरी यूरैडिस की मृत्यु ने उसके जीवन में विषाद की गहरी कालिमा ला दी।

औरफियस अब पागलों की भाँति जंगलों में भटकने लगा। उसका दुख असह्य था। वह दुखद स्वरों में लायर बजाता जिसे सुनकर पहाड़ भी रोने लगते थे। पेड़ आह भरते और पशु-पक्षी सभी अश्रुपूर्ण हो उठते थे। उनके उन दुखपूर्ण स्वरों को सुनकर पृथ्वी भी द्रवित हो उठती थी। ऐसा लगता था मानो हृदय अपने आप ही मुँह के बाहर निकल आना चाहता हो। इतना दुख था उसका कि देखने सुनने वाले भी आँसू से भींग उठते थे। विरह के गीत गाता हुआ औरफियस सारी सृष्टि को रुलाता हुआ घूमने लगा।

इसी तरह एक लंबा समय निकल गया परंतु उसके हृदय की आग शांत होने के बजाय दिनोदिन बढ़ती जाती थी। वह अनुभव करने लगा कि अगर ऐसा ही कुछ दिन और रहा तो उसकी मृत्यु निकट थी। और अब वह सचमुच

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मरना ही चाहता था। एक दिन दुख से रोते हुए व्यथित हृदय से वह आकाश की ओर हाथ उठाकर चिल्लाया :

"ओलिम्पस में रहने वालो ! देखो मेरी क्या दशा हो गई है। मुझे मेरी प्रिया यूरैडिस के बिना कुछ भी नहीं सूझता। मैं मरना चाहता हूँ...... हे देवाधिदेव ज्यूपिटर तुम सदा मुझ पर दया करते रहे हो। तुम सर्वशक्तिमान हो, तुम मेरी सहायता करो जिससे मैं यूरैडिस को मृतकों के अंधकारपूर्ण लोक से वापस ला सकूँ....!"

ज्यूपिटर ने उसकी हृदयद्रावक पुकार सुनी। वह मन ही मन रो उठा। परन्तु वह चुप न रह सका। वह बोला :

"हे औरफियस, तेरे दुख से सारा संसार रो रहा है। देख पर्वत तक आँसू बहा रहे हैं। सारा ओलिम्पस तेरे दुख से दुखी है। अब पवन भी मस्त होकर नहीं बह रहा है क्योंकि जैफायर स्वयं रोता रहता है। आज तक कभी इतना दुख सृष्टि में नहीं फैला। निश्चय ही तेरा प्रेम महान है।" फिर तनिक रुककर उसने कहा : "मैं ज्यूपिटर, ओलिम्पस का राजा, तुझे आज्ञा देता हूँ कि तू मृतकों के लोक में जाकर अपनी प्रिया से मिल और वहाँ के राजा हेड्स से आज्ञा लेकर उसे उपने साथ ले आ। आज तक पाताल लोक में कोई भी मनुष्य मृत्यु के पहिले नहीं गया है। केवल तुझे ही यह आज्ञा दी जाती है कि तू वहाँ से अपनी सुंदरी प्रेयसि को युक्तिपूर्वक ला सके। खबरदार ! क्योंकि मार्ग बहुत ही कठिन है जहाँ पग-पग पर खतरा सजीव बनकर खड़ा रहता है। उस अंधकारपूर्ण लोक के द्वारों में एक बार घुसने के उपरांत मनुष्य वापस नहीं लौट सकते परंतु मेरी आज्ञा से तू केवल वापस आ सकेगा। वह मार्ग बहुत ही खतरनाक है और जाने से पहले मैं तुझे सावधान करता हूँ कि यदि अब भी तू रुक सके तो रुक जा क्योंकि उन मुश्किलों और दुखों को शायद तू सहन नहीं कर सकेगा...."

"इससे कोई और दुख बड़ा नहीं है," उत्तर में औरफियस चिल्लाया : "मैं अवश्य जाऊँगा, मैं अवश्य जाऊँगा। मैं वह काम करूँगा जो आज तक किसी ने नहीं किया है। हे ज्यूपिटर ! आज्ञा दो कि मैं इसी क्षण अपने पथ पर अग्रसर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो सकूँ।"

ओर वह उसी क्षण मृतकों की अँधेरी दुनिया की ओर चल पड़ा। वह चलता रहा, चलता रहा और जब पृथ्वी समाप्त हो गई तो वह जहाज में बैठकर समुद्रों को पार करता हुआ आगे बढ़ा। बड़े-बड़े तूफान और अंधड़ों ने उसका मार्ग रोकने का निष्फल प्रयत्न किया परंतु वह प्रेम का दीवाना अपनी धुन में मस्त बढ़ता ही गया। उसने कठोर पर्वतों और विस्तृत मैदानों को सहज ही में पार कर लिया। जब वह समुद्र की उत्तुंग लहरों पर ज्वार-भाटे के बीच आगे बढ़ता तो अपनी बाँसुरी बजाने लगता। उसके उन करुणा भरे स्वरों को सुनकर समुद्र की सुंदरियाँ जल में रोने लगतीं। और स्वयं नैप्चून समुद्र के गर्भ में अपने स्वर्ण सिंहासन पर बैठा हुआ रो उठा। उसने तूफान शांत कर दिये। सारा समुद्र भी उसके रुदन से विक्षुब्ध हो उठा। अब वह हीनैरम की भयानक चट्टान के सम्मुख पहुँच गया था जो समुद्र के बीच इस प्रकार फैल रही थी जैसे विकराल दाँते की कठोर दाढ़ हो। वह वहाँ जहाज से उतर गया और उसी दाँत जैसे चट्टान की गहरी गुफा में बेधड़क घुस गया। वह वही गुफा थी जिनमें होकर हेड्स के साम्राज्य में प्रवेश किया जाता था। घनी, काली, अंधकारपूर्ण गुफा में वह अकेला ही आगे बढ़ रहा था। पैरों के नीचे ऊबड़-खाबड़ पृथ्वी थी जहाँ जल भी थोड़ा-बहुत भरा था। एक विचित्र प्रकार की बंद हवा से वहाँ उसे संकट भी होने लगा परंतु अपनी प्रिया को पाने में व्याकुल उस प्रेमी को वह सब मानो कुछ नहीं था। मार्ग उसे नीचे, बहुत नींचे उतारता चला जा रहा था और अंधकार भयानकतम होता चला जाता था। अपनी सुनहरी बाँसुरी पर अब भी मन को रुलाने वाली तानें छेड़ता हुआ वह निर्भीक प्रेमी यूरैडिस से मिलने की संभावना में अथक कदमों से बढ़ रहा था। ऐसा लगता था कि वह बिना अपनी प्रिया को पाये कहीं रुकेगा ही नहीं।

चलते-चलते गुफा खत्म हो गई और औरफिग्रस ने अपने को एक बहुत चौड़ी नदी के किनारे पाया। उस स्थान पर अंधकार तो अवश्य था परंतु इतना नहीं जितना उस गुफा में था। उसने देखा उसके चारों ओर मृतकों की अँधेरी छायाएँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ठसाठस खड़ी थीं। वे सभी उस नदी को पार करने की प्रतीक्षा में खड़ी थीं। और तभी लंबी दाढ़ी वाला एक व्यक्ति नाव लेकर तीर पर आया और छायाओं को नाव पर चढ़ा कर उस पार ले गया। वह केवल उन आत्माओं को ले जाता था जिन्हें वह चाहता या जिनकी उसको आवश्यकता होती थी। बाकी सभी वहीं छोड़ दिये जाते थे। वह व्यक्ति चारन था और उसकी निगाहें अचूक थीं; नदी के पार उसके साथ केवल वही जा सकते थे जिनका मृतक संस्कार विधि-पूर्वक हुआ था और जिनके पास एक ताँबे का पैसा पार जाने के लिये किराया देने को होता था। जिनका मृतक संस्कार ठीक नहीं होता था और जिनके पास पैसा नहीं होता था वह वहीं छोड़ दिये जाते थे। वह पूरे सौ वर्ष तक उसी नदी तीर पर भूखे-प्यासे भटकते रहते थे। पूरा समय निकलने के बाद ही उन्हें उस नदी स्टाइक्स को पार करने की आज्ञा मिलती और तब वह मृतकों के उस अँधेरे लोक में प्रवेश कर पाते थे।

औरफियस तो जीवित ही था और सदेह उस भयानक और मनुष्यों के लिए वर्जित स्थान पर पहुँच कर पार जाना चाहता था। उसके मृतक संस्कार का प्रश्न तो तब उठता जब वह मरा हुआ होता। फिर इस समय उसके पास ताँबे का एक पैसा भी नहीं था जिसे वह उस नाव वाले चारन को देता। इन सबसे मुश्किल बात यह भी थी कि चारन की तीव्र आँखें कभी धोखा नहीं खाती थीं; हृदय में उमड़ते हुए दुख को थाम कर औरफियस लायर बजाने लगा। वह किसी भी भाँति उस पार अपनी प्रियतमा के पास शीघ्रातिशीघ्र पहुँच जाना चाहता था। अधीर होकर वह लायर बजाने लगा। उसके उस दुखद स्वर, करुणाजनक संगीत से मृतकों की वह अँधेरी काली छायाएँ भी दुख से हिल उठीं। ऐसा प्रतीत होने लगा मानो सारा वातावरण उनके आँसुओं से भींग गया हो। चारन उस अमर संगीत को सुनकर अपनी सुधबुध खो बैठा। नाव चलाना भूलकर वह विस्फारित नेत्रों से उसे देखता हुआ स्वर लहरियों के साथ-साथ ताल देता हुआ झूम उठा और थोड़ी ही देर बाद उसका हृदय मरोड़े खाता हुआ दर्द से कराह उठा। वह विदीर्ण हो गया और रोने लगा। मृतक लोक की मर्यादा टूट गई क्योंकि अभी तक कोई मृतक आत्मा उस अँधेरे लोक में कभी नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रोई थी। चारन ने नाव किनारे से लगा दी और उस जीवित मनुष्य को भी बिना शुल्क लिये ही नाव पर चढ़ा लिया। वह उसे लेकर तेजी से नाव खेने लगा और स्टाइक्स के पार उसे छोड़ आया। उसका मन फफक-फफक कर औरफियस के लिये रो रहा था।

उस पार औरफियस उतर गया और उन काली छायाओं के साथ मृतकों के उस लोक के दरवाजों की ओर बढ़ा। धूमिल प्रकाश में सभी चीजों पर धूल पड़ी थी। एक विचित्र उदास वातावरण चारों ओर छा रहा था। वायु स्तब्ध थी और बोल कोई नहीं रहा था। उन काली छायाओं के अंग चालन और चलने से भी कोई शब्द न था। किसी प्रकार की कोई आहट नहीं होती थी। सभी कुछ मृत्यु की गहरी उदासी और निस्तब्धता से निर्जीव प्रतीत होता था। केवल उस नीरवता को तोड़ती हुई उन छायाओं की आहें कभी-कभी सुनाई पड़ जाती थीं।

उस अँधेरी दुनिया का बड़ा दरवाजा दिखाई देने लगा। मृतकों की काली छायाएँ अंदर प्रवेश करने लगीं। केवल वही अंदर जा सकते थे जो मर चुके थे। द्वार की रक्षा तीन सिरों वाला भीमकाय कुत्ता सैरिब्रस कर रहा था। वह सदा जागता रहता था। बारी-बारी से उसका एक सिर सोता तो दो सिर जाग कर चौकीदारी किया करते थे। उसकी दृष्टि गिद्ध की पैनी दृष्टि को भी मात करती थी। ऐसा कोई नहीं था जो उसकी नजर बचाकर द्वार के अंदर चला जाता। सैरिब्रस ने दूर से ही जीवित शरीर धारण किये औरफियस को जब आते देखा तो वह अपनी विकराल दाढ़ें फैलाये उस समय अपने तीनों सिर से गुर्राने लगा। परन्तु उसी क्षण औरफियस ने अपना लायर छेड़ दिया जिसकी करुण ध्वनि सुनकर वह रोने लगा और पृथ्वी पर लेट गया। औरफियस लायर बजाता हुआ उसके बिल्कुल पास पहुँचा तो उसने देखा कि आज जीवन में पहली बार सैरिब्रस अपने तीनों सिरों से सो गया था। औरफियस मृतकों के उस लोक में घुस गया। उसका गौर शरीर वहाँ की काली छायाओं के संपर्क से और अँधेरे से धूमिल सा दिखाई दे रहा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसकी व्यग्रता अब बढ़ गई। अपनी प्रिया के इतने पास आकर वह उसे शीघ्र देखना चाहता था। वह उस अँधेरी नगरी के शांत धूल-धूसरित उदास पथों पर उसे ढूँढ़ने लगा। वह अपना सोने का लायर अब भी बजा रहा था। दुख की बाढ़ अब भी उन स्वरों से उमड़-उमड़ कर बिखर रही थीं। उसने देखा चारों ओर काली छायाएँ कुछ न कुछ काम उदास और शब्दहीन होकर कर रही थीं। उन्हें देखकर ऐसा लगता था जैसे उनके काम का कोई अंत ही न था। उसने अपने चारों ओर दुख, अगाध दुख देखा। बीमारियाँ अपना विकराल रूप दिखा रही थीं जिनके जबड़े में मनुष्य पिस रहा था। भूख से तड़पते नर, नारी और बच्चे देखे जिन पर यही दंड रखा गया था। एक ओर देखा भय से वह काली आत्माएँ पीली पड़ी हुई थीं। दुख और उदासी उन सभी के चेहरों पर प्रत्यक्ष झलक रही थी। परन्तु औरफियस के लायर के संगीत को सुनकर मानो सभी पर जादू हो गया था। वह सभी अपना काम छोड़कर उसकी ओर देखने लगे और फिर उठकर उसके इर्दगिर्द चलने लगे। उस विरह के राग को सुनकर उन सभी के मुँह से आहें निकलने लगीं।

औरफियस आगे बढ़ा तो उसे क्रूर और भयानक छायाएँ दिखाई दीं जिन्होंने अपने कुरूप चेहरों से उसे आग्नेय नेत्रों से घूरा परन्तु जब उस संगीत को उन्होंने सुना तो उनके चेहरे ढीले पड़ गये और निगाहें झप गईं। उनके हृदय मोम की तरह पिघल गये। कलह की देवी डिस्कौर्ड एक ऊँचे काले धूल से ढँके सिंहासन पर बैठी थी। उसके सिर पर बालों के स्थान पर फुफकारते हुए विषधर सर्प उग रहे थे। उसके नेत्रों से अंगारे बरस रहे थे। परन्तु संगीत के प्रभाव से वह भी नरम हो गई और उदास नेत्रों से उसे देखती हुई दया का प्रदर्शन करने लगी। ऐसा संगीत था वह कि उसके भी नेत्रों में आँसू आ गये थे।

औरफियस और आगे बढ़ा। उसने एक गहरा गड्ढा देखा जिसके अंदर अंधकार के कारण कुछ साफ नहीं दिखाई देता था। जब निगाहें जमी तो उसने देखा वहाँ भयंकर दानव ब्रेरिअस पड़ा था। उसके सौ हाथ थे जो चारों ओर भयानक ढंग से घूम रहे थे। पास ही नौ विकराल सिरों वाला हाईड्रा सो रहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था। उस संगीत से वह सभी नम्र हो गये थे। थोड़े आगे चलकर उसने देखा कि एक विचित्र प्राणी भयानकता से मुँह से अग्नि की लंबी-लंबी लपटें फेंक रहा है। यह शिमीरा था जिसका सिर शेर जैसा, शरीर बकरे जैसा और पूँछ अजदहे जैसी थी। परन्तु उसके संगीत के सम्मुख वह भी झुक गया। एक अँधेरे स्थान पर टिटैलस दानव पड़ा था। उसका शरीर इतना विशाल था कि नौ एकड़ भूमि को वह घेरे पड़ा था। उसने औरफियस को देखा और मुस्करा दिया। एक बहुत ही बड़े पहिये को घुमाते हुए इक्सन ने उसे मुस्कराकर देखा। एक बार उसने इतना साहस किया था कि देवाधिदेव ज्यूपिटर की स्त्री जूनो का हाथ पकड़ कर प्रेम प्रगट किया था। जूनो ने क्रुद्ध होकर उसे मरवा डाला था और तत्पश्चात् उसकी आत्मा को अनंत काल तक यही दंड भोगने की आज्ञा हेड्स ने दी थी। आजीवन दुष्टता करने के कारण सिसैफस पहाड़ की सीधी चढ़ाई पर बड़ी चट्टान को चढ़ाने का निरंतर प्रयत्न कर रहा था। उसे यही दंड मिला था। क्षण भर को उसने भी अपना काम रोक कर औरफियस की ओर मुस्कराकर देखा। अपनी भूख और प्यास को भूलकर टैंटैलस ने उसे देखा और उसके नेत्रों से ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वह उस क्षण दुख से मुक्त हो गया हो।

सारे अँधेरे लोक में औरफियस का संगीत जादू का सा प्रभाव डाल रहा था। दल के दल छाया पुरुष उसे घेर कर चल रहे थे। आखिरकार हेड्स भी अपनी सुंदरी पत्नी पर्सिफोन सहित उसी अद्भुत संगीत में खोया हुआ उसके सामने आ पहुँचा। पर्सिफोन उसके दुखभरे रागों को सुन कर रोने लगी और अपने पति की ओर उसने डबडबाये नेत्रों से देखा। हेड्स स्वयं भी उदास खड़ा था।

औरफियस ने लायर बंद कर दिया और अब वह अपने रसीले करुण कंठ से गाने लगा। उसने गाया :

"हे अँधेरी दुनिया के मालिक! मेरे टूटे हुए दिल की दास्तान सुनो! विरह और प्रेम की ज्वालाओं में मैं भस्म हो चुका हूँ। मैं उसी के द्वारा जीवितावस्था में ही यहाँ आ सका हूँ। मेरा प्रेम एक ठंडी आग है जो मुझे धीरे-धीरे सुलगा रही है। हे हेड्स, यह वही प्रेम है जिसने तुम्हें और पर्सिफोन को एक दिन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिलाया था। मैं तुम्हारे इस लोक में यहाँ की बातें और गुप्त विषयों को जानने के लिये नहीं आया हूँ और न तुम्हारे तीन सिर वाले सैरिब्रस को ही संगीत द्वारा सुलाने आया हूँ। मैं तो अपनी प्राणप्रिया यूरैडिस को ढूँढ़ने आया हूँ जो इतनी छोटी अवस्था में ही सांसारिक सुखों से वंचित होकर यहाँ आ गई है। उसने यौवन भी तो नहीं भोगा था। वह अनबूझ सुंदरी आनंद से वंचित ही रह गई है। उसके बिना मैं बिल्कुल अकेला हूँ। मुझे अब संसार में कुछ भी अच्छा नहीं लगता है—मैं अपनी यूरैडिस के बिना जीवित नहीं रह सकता। मैं आज तुम्हारे सामने इसलिए गा-गाकर भीख माँग रहा हूँ कि इन गहरी गुफाओं के बाहर मेरी यूरैडिस को मेरे साथ भेज दो, इस शून्य स्थान से जो समय की कोई गणना नहीं रखता। भाग्य के क्रूर चक्रों से मेरी प्यारी को मुक्त कर दो। एक बार उसे फिर जीवित कर दो और मुझे दे दो। और जब वह सांसारिक सुखों को भोग लेगी तब वह यहीं मेरे साथ वापस आ जायगी—मुझे मेरी प्राणप्यारी दे दो. . . . मैं उसके बिना नहीं रह सकता। मैं भीख माँग रहा हूँ, मुझे निराश न करो। यदि मुझे उसे नहीं दोगे तो मैं भी यहीं रह जाऊँगा वापस नहीं जाऊँगा. . . ."

उसका स्वर इतना करुण था, उसका संगीत इतना हृदयद्रावक था कि उन बिना रक्त-मांस के शरीरों में भी शिथिलता आ गई और नेत्र आँसुओं से भर गये। हेड्स और पर्सिफोन उसकी पुकार से विचलित हो गये। उन्होंने उसको यूरैडिस दे दी। हेड्स बोला :

"तेरा दुख देखकर हम सभी अत्यंत विचलित हो गये हैं। तुझे आज्ञा है कि तू अपनी प्रिया को अपने साथ ले जा सकता है। वह फिर जीवित होकर तेरे साथ जीवित लोक में जा सकेगी. . . ." फिर रुककर उसने कहा :

". . . .परन्तु एक शर्त है। तू आगे-आगे उसको राह दिखाकर यहाँ से वापस ले जायगा और जब तक कि तुम दोनों ही सूर्य से जगमगाते हुए संसार में नहीं पहुँच जाओ तुम मुड़कर अपनी यूरैडिस को कहीं भी देख नहीं सकोगे। यदि तुमने देख लिया तो फिर यूरैडिस तुमसे छीन ली जायगी।"

औरफियस ने सुना और दौड़कर हेड्स के कदमों पर गिर पड़ा। वह प्रसन्नता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से नाचने लग गया। और तभी पर्सिफोन की आज्ञा से यूरैडिस आई जिसे देख कर औरफियस पागल हो गया। अब एक पल भी उन्हें वहाँ ठहरने की आज्ञा न मिली। आगे-आगे अधीर हृदय को दबाये औरफियस चला और उसके पीछे उसकी प्यारी यूरैडिस चलने लगी। दोनों के हृदय इस मधुर मिलन के कारण आह्लादित हो रहे थे। औरफियस गाता-बजाता चल रहा था और मंत्रमुग्ध की भाँति यूरैडिस उसका अनुसरण कर रही थी। परन्तु अब का संगीत चारों ओर हर्ष की लहरें फैला रहा था। जब वह नगरद्वार से बाहर निकला तो सैरिब्रस उस संगीत को सुनकर अपने तीनों सिरों से झूमने लगा। जब वह स्टाइक्स नदी के अँधेरे किनारे पर पहुँचा तो उसी भाँति चारन ने नाव किनारे से लगा दी और उन्हें बिठाकर पार उतार दिया। तत्पश्चात् उन्होंने वह कठिन अंधकार से भरा हुआ रास्ता तय किया जो ऊबड़-खाबड़ गुफाओं में होकर पड़ता था। घंटों वह चलते रहे और आखिरकार वह हीनैरम को गुफाओं को पारकर आगे बढ़े। अब गुफा का अंत आ चुका था और बाहर का प्रकाश छन-छन कर आ रहा था। औरफियस खुशी से खिल उठा और दौड़कर उसने वह बाकी रास्ता पार किया। अब वह सूर्य की जगमग किरणों से आलोकित पृथ्वी पर पहुँच गया था। वह इतना उत्तेजित हो उठा था कि वह बाहर आते ही अपनी प्रिया को देखने में अधीर होकर उस शर्त को भूल गया जो हेड्स ने चलते समय कही थी। वह मुड़ गया और उसने देखा कि उसकी प्यारी यूरैडिस गुफा के बाहर प्रकाश की ओर अपनी पहली सी सुंदरता से आ रही है। वह अपने आपको और नहीं रोक सका। उसने उसकी ओर अपनी बाँहें फैला दीं। वह उस समय मुस्करा रहा था और उसका हृदय धड़क रहा था। उसी समय आकाश में वज्र कड़का और—और—उसने देखा कि उसकी प्यारी युरैडिस स्वप्न की भाँति वायु में लोप होने लगी। वह छाया की तरह पीछे हट रही थी और वायुमंडल में ऐसे खो गई जैसे वह शरीरहीन थी। वह इसी प्रकार क्षीण होकर उसी गहरी अँधेरी गुफा के अँधेरे में लोप हो गई। औरफियस ने सुना कि वह उस गुफा से उसका नाम ले-लेकर चिल्ला रही थी। वह बिदा ले रही थी। धीरे-धीरे उसकी पुकार भी दूर होती गई और फिर सब कुछ खत्म हो गया। औरफियस किंकर्त्तव्यविमूढ़ सा बैठा रह गया। उसने भारी भूल कर दी थी। वह उतावलापन कर गया था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हाय ! क्या हो गया ? वह इतना उतावला ! हाय ! अब क्या करूँ ?' उसने सोचा और टूटे हृदय से वह बेतहाशा उस गुफा के अंदर भागा परन्तु अबकी बार देवताओं ने उसका मार्ग रोक लिया । वह पाताल लोक में अब फिर घुस नहीं सका ।

सात दिन और सात रात वह विना कुछ खाये-पिये वहीं उसी गुफा के द्वार पर पड़ा रहा और आहें भरता हुआ अश्रु बहाता रहा । उसका दुख देखा नहीं जाता था । 'हाय, अब क्या करूँ? हाय, मैं मरना चाहता हूँ', बस इसी भाँति वह चिल्लाता रहा परन्तु किसी ने अबकी बार उसकी करुण पुकार नहीं सुनी । आखिर वह उठा और भग्न हृदय लिये हुए अपने सोने के लायर को बजाता हुआ वापस लौटा । वह कितना भाग्यहीन था वह सोचने लगा । "मेरी गलती के कारण मेरी प्यारी मेरे इतने पास आकर भी फिर छिन गई । हाय मुझ सा अभागा और कौन होगा," वह विलाप करने लगा । "हाय वह मेरी प्राणेश्वरी मुझसे बिछुड़ते समय मेरे लिये कितना रोई थी ! हाय हतभाग्य औरफियस ! तेरे ही कारण उसने इतना दुख पाया था," ऐसा कहकर वह अपने आपको धिक्कारने लगा । और उसने पहाड़ से अपना सिर दे मारा । परन्तु पहाड़ नर्म पड़ गया और उसने उसको चोट नहीं लगने दी । औरफियस अब दिशाहीन होकर लायर बजाता पागलों की भाँति भटकता हुआ चल दिया । उसका दुख अब पहिले से भी अधिक था । उसके लायर से मानो दुख का समुद्र उमड़ रहा था । सारी सृष्टि उन स्वरों से उदास हो गई । पहाड़ पिघल गये । फूलों ने मुरझा कर अपने सिर लटका लिये और जब वह वृक्षों के पास से निकलता तो वह आहें खींचने लगते थे । चिड़ियों ने उसका संगीत सुना, वन्य पशुओं ने सुना और वह मूक हो गये । पृथ्वी पसीजने लगी और उसको प्रेम करने वाले देवता गण बेबस होकर रोने लगे । वीनस एक बार फिर फफक उठी । ज्यूपिटर को दुख हुआ परन्तु बार-बार प्रकृति की मर्यादा को तोड़ने में असमर्थ वह भी आँसू बहाकर चुप हो गया ।

औरफियस अब बिल्कुल पागलों जैसा हो गया था । लंबी दाढ़ी, मूछें उसके उग आई थीं । उसके नेत्रों में अब पहली सी ज्योति नहीं थी ! उदासी और दुख

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने उसके शरीर को जर्जर कर दिया था। घूमते-घूमते एक दिन वह थ्रेस के राज्य में आ पहुँचा। परन्तु नगर से बहुत दूर जब वह पर्वतों से घिरे एक मैदान में पहुँचा तो वहीं गिर पड़ा। वहाँ पड़े ही पड़े वह लायर बजाता हुआ अपनी यूरैडिस को बुलाने लगा। परन्तु इस बार यूरैडिस स्वयं आकर उसे भी अपने साथ ले गई। वह मर गया। अपने बंधु-बांधवों और मित्रों से बहुत दूर वह उस निर्जन स्थान में ही मर गया। देवताओं और उनके (गंधर्व) संगीतज्ञों ने उसे देखा और उसके शरीर को ओलिम्पस के ढाल के नीचे गाड़ दिया।

औरफियस अब शरीर के बंधनों से छुटकारा पाकर अँधेरी दुनिया में अपनी प्रिया के पास हमेशा के लिये पहुँच चुका था। उसने वहाँ पहुँचकर उसे अपने हृदय से लगा लिया। हेड्स और पर्सिफोन ने उन्हें साथ-साथ अनंतकाल तक उस अँधेरी दुनिया में आनंदपूर्वक रहने की आज्ञा दे दी। वह हाथ में हाथ डाले पर्वतों और हरे-भरे मैदानों में अनंतकाल तक आनंद मनाते रहे।

जहाँ औरफियस का शरीर गड़ा था वह स्थान आज तक सुरक्षित है और पहचाना जा सकता है क्योंकि यहीं अर्द्धरात्रि के समय कोयल (नाईटिंगेल) अत्यंत सुरीले स्वर से कूकती है। ऐसी सुरीली तान से वह सारे संसार में और कहीं नहीं कूकती। रात्रि के समय उसकी इसी कब्र से ऊपर आकाश में उसका सोने का लायर तारों की भाँति चमक कर प्रकाश फैलाता है। ज्यूपिटर ने स्वयं उस लायर को आकाश में नक्षत्रों के साथ स्थान दिया था जो आज तक वहीं चमक कर किसी समय हुए औरफियस और यूरैडिस की प्रेमगाथा की याद दिलाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गोल्डन फ्लीस की खोज

उत्तरी ग्रीस में थिसेली नामक स्थान में राजा ईसन राज्य करता था। वह बहुत नेक और सीधा-सादा व्यक्ति था। बुराई नामक किसी वस्तु को वह जानता भी नहीं था। सारी प्रजा को वह अपने आत्मीयों की भाँति मानता और उनसे अगाध प्रेम करता था। उसका एक भाई था। इसका नाम पिलिअस था और यह बड़ा दुष्ट था। जितना ईसन भला आदमी था उतना ही उसका यह भाई नीच प्रकृति का मनुष्य था। उसने चुपचाप एक सेना एकत्रित की और एक रात जब ईसन बेखबर सो रहा था उसने उस पर हमला कर दिया। भयंकर मारकाट तथा स्थान-स्थान पर आग की लपटों से सारे नगर में हाहाकार मच गया। स्त्रियों की चीत्कार से वायुमंडल गूँजने लगा और पिलिअस के सैनिक निर्ममता के साथ आबालवृद्ध सभी की हत्या करने लगे। राजा ईसन ने देखा कि उसके साथ उसी के भाई ने गहरा घात किया है और जब बचने का उपाय सिवा भागने के और कोई नहीं है तो उसने अपनी स्त्री से कहा :

"प्रिये, जेसन को जगा लो और हम तीनों सुरंग के रास्ते अभी भागेंगे क्योंकि बचने का कोई उपाय नहीं है।"

रानी, जो उस समय बिल्कुल घबरा गई थी, तुरंत अपने बच्चे को गोद में उठा लाई और राजा उसी समय उसे लेकर सुरंग की राह जंगल में निकल गया। रानी दुख से फफक-फफक कर रो रही थी, वह अपने बच्चे को छाती से लगाये अपने पति के पीछे-पीछे चली जा रही थी। उसने आज तक कभी कष्ट नहीं झेले थे और जब आज उसे नंगे पैरों भागना पड़ा तो कठोर ऊबड़-खाबड़ भूमि पर चलने के कारण उसके पैरों में छाले पड़ गये और रक्त बहने लगा। राजा भग्न हृदय परन्तु धीरज रखते हुए चला जा रहा था।

दुर्दान्त वन में पहुँच कर राजा ने रानी से कहा :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हमारा राज्य तो गया। हमारी असावधानी के कारण पिलियास ने उसे हमसे छीन लिया। अब वहाँ से तो हम लोग जान बचा कर भाग आये हैं परन्तु फिर भी उस दुष्ट से अपने बच्चे को बचाने का हमें पूरा-पूरा उपक्रम अभी से कर लेना चाहिये। निश्चय ही वह हमारा पीछा करेगा और इस असहायावस्था में यदि वह हमें पा गया तो तुरन्त ही मरवा डालेगा। उसकी काली दृष्टि से जेसन को बचाना ही होगा...."

रानी रोने लगी और बोली :

"नहीं, नहीं ऐसा नहीं हो सकता। मैं अपनी गोद खाली नहीं कर सकती। मेरा जेसन...हाय मेरा जेसन मुझसे न छीनो इसे मेरे ही पास रहने दो...." और वह अपने पति से लिपट गई और अनुनय करने लगी।

ईसन ने उसे स्नेह से आलिङ्गन बद्ध करते हुए कहा :

"अपने खून को अपने से अलग करते हुए मुझे भी बहुत दुख होता है परन्तु हम लोग विपद्ग्रस्त हैं। शत्रु हमारे पीछे लगा हुआ है। यदि जेसन को बचाना चाहती हो तो उसे सिनेटौर चिरन के पास छोड़ दो। वह उसका पालन-पोषण बहुत ही अधिक स्नेह से करेगा क्योंकि उसने अभी तक न जाने कितने राजकुमारों, देवताओं के पुत्रों तथा कन्यादेवियों के पुत्रों का पालन किया है। वह इस मामले में दक्ष है और दयालु भी है, अतएव हमें अब देर नहीं करनी चाहिये...."

रानी रोई तो बहुत परन्तु उसने अब कोई विरोध नहीं किया। चुपचाप उसने गर्दन हिलाकर स्वीकृति दे दी।

जब राजा ईसन अपनी स्त्री व पुत्र को लेकर सिनेटौर चिरन के पास पहुँचा उस समय वह अनुभवी वृद्ध जंगली जड़ी-बूटियों को पीस कर कोई औषधि बना रहा था। इन्हें देखते ही खड़े होकर उसने स्वागत किया और आदरपूर्वक बिठाया। राजा ने थोड़ी देर बाद उससे कहा :

"हे चिरन, तुम बच्चों को बहुत प्रेम से पालते हो, यह हम सभी जानते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरे जेसन को भी उसी प्रकार बड़ा करो और राजकुमारों की भाँति शिक्षा दो। हम नहीं चाहते कि राज्य के अभाव में हमारा पुत्र उस शिक्षा को प्राप्त न कर सके। दूसरी बात इससे भी अधिक जरूरी है और वह यह कि इसका चाचा पिलिअस इसे जान से मार डालना चाहता है। तुम्हें उससे अथवा उसके किसी भी आदमी से इसकी रक्षा करनी होगी। सौगन्ध खाओ कि इसे बचाने का पूरा प्रयत्न करोगे और इसके भेद को भी सदा गोपनीय रखोगे जब तक कि वह बड़ा होकर यह स्वयं पराक्रमी न बन जाय. . . ."

चिरन ने पवित्र देवताओं की शपथ ली और तब राजा ईसन अपनी रानी सहित द्रवित हृदय लिये जेसन को वहीं छोड़ कर चला गया। जाते-जाते वह अपने रहने के तमाम ठिकानों को उसे बता गया कि यदि कभी आवश्यक काम हो तो वह उसे आसानी से बुला सके।

चिरन बहुत योग्य व्यक्ति था। वह बहुत ही अच्छा कवि और वैद्य भी था। संसार के सभी गुण उसमें मौजूद थे। जब जेसन थोड़ा बड़ा हुआ तो वह उसे बड़े स्नेह से शिक्षा देने लगा। जैसे-जैसे वह बड़ा होता जाता था उसने उसे अनेकानेक विद्याएँ सिखाकर पारंगत बना दिया। जब वह जवान हुआ तो प्रकांड विद्वान, कवि, वैद्य तथा उत्तम धनुर्धर बना। उसके समान तलवार चलाने वाला और कोई न था। वह अद्भुत साहसी और वीर बना। देखने में वह देवताओं जैसा सुंदर पुरुष था। उसको देखकर युवती स्त्रियाँ उसकी ओर आकर्षित होने लगी थीं। वह उस समय तक वन में ही पला था, इसलिए अधिक संपर्क तो उसका लोगों से नहीं होता था परन्तु जब कभी वह जंगल में धनुष संधान करता हुआ निकल जाता तो वन्य प्रदेश की तरुणी युवतियाँ उसे देखकर काम से पीड़ित हो उठती थीं; परन्तु चिरन की शिक्षा ऐसी थी कि वह कभी उन युवतियों की ओर आकर्षित नहीं हुआ। वह स्त्रियाँ लंबी-लंबी साँसें लेती हुई मन मसोस कर रह जाती थीं।

एक दिन जब सिनेटौर चिरन ने उसकी खड्ग चलाने की तथा शक्ति की परीक्षा ली तो उसने एक ही वार में लोहे की मोटी ढाल के दो टुकड़े कर डाले। चिरन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उससे अत्यधिक प्रसन्न हुआ और उसे स्नेह से चूम लिया। वह बोला :

"हे पुत्र ! अब समय आ गया है जब तुझे अपनी असलियत जान लेनी चाहिये ..." और तब चिरन ने उसके पिता, माता तथा चाचा की सारी बातें कह सुनाईं। उसने यह भी बतला दिया कि थिसैली के राज्य का असली हकदार वही था।

जेसन यह सुनकर गुस्से से लाल हो उठा। अपने तथा अपने माता-पिता के साथ किये गये अन्याय को सुनकर वह उत्तेजित हो उठा। पिलिअस की धृष्ठता से वह बहुत ही अधिक कुपित हुआ और तब वह सिनेटौर चिरन से बोला :

"हे पिता, मेरे तो तुम ही पिता हो क्योंकि तुम्हारे समान दयालु और कौन हो सकता है जिसने मुझे पाल-पोस कर इतना बड़ा कर दिया। तुम सचमुच महान् हो। परन्तु अब मुझे आज्ञा दो कि मैं जाकर अपने माता-पिता के साथ किये गये अन्यायों का बदला पिलिअस से लूँ। मैं अब एक पल भी व्यर्थ नष्ट नहीं करना चाहता हूँ। जो मेरा है उसे मैं अवश्य ही लूँगा। यदि पिलिअस मुझे राज्य माँगे से नहीं देगा तो मैं बलपूर्वक जबर्दस्ती उससे छीन लूँगा। वह मेरे हाथ से अब बच नहीं सकता....उसे अब दंड भोगना ही होगा....मैं जाता हूँ।"

और वह इतना कहकर दौड़कर गुफा के अंदर गया और अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर चिरन को मस्तक नवाकर बाहर निकल गया। अब वह तेज कदम उठाता हुआ थिसैली की ओर जा रहा था। वह निश्चय कर चुका था कि सीधा अपने चाचा के दर्बार में जाकर उससे वह अपना राज्य माँगेगा।

जेसन जंगलों, पहाड़ों और नदियों को पार करता हुआ थिसैली की ओर बढ़ा। चलते-चलते उसे कई दिन हो गये। एक दिन संध्या समय वह एक तेज नाले के किनारे पहुँचा। स्वच्छ जल इतनी तेजी से बह रहा था कि उसमें फेन उमड़ रहे थे। पानी गर्जन करता हुआ बह रहा था। वह उसमें उतर कर पार जाना ही चाहता था कि उसी समय एक झुरमुट की ओट में बैठी हुई एक कमजोर बुढ़िया पर उसकी दृष्टि पड़ी। वह नाले के उस पार जाने में असमर्थ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होकर वहाँ बैठी थी। जेसन को उस पर बड़ी दया आई और वह उसके पास जाकर बोला :

"हे माता तुम घबराओ मत। मैं तुम्हें पार उतार दूँगा। लाओ अपनी लाठी मुझे दे दो।"

बुढ़िया को उसने अपनी पीठ पर लाद लिया और उसकी लकड़ी लेकर आगे बढ़ा। वह उस तेजी से बहते हुए पानी में उतर गया। जब वह बीच धार में पहुँचा तो वहाँ जल की तेजी बहुत ज्यादा थी। उसके पैर खासकर उस बोझ के कारण पानी में टिकते न थे। बड़ी मुश्किल से उसने अपने भीमप्रयत्न से सधते हुए आगे कदम उठाया परन्तु ऐसा करने में उसके पैर से जूता निकल गया। वह रुका नहीं, बढ़ता ही गया और नाला पार कर गया। वहाँ जाकर उसने उस बुढ़िया को नीचे उतार दिया और फिर वह अपने पैरों की ओर देखकर स्वय हँस कर कहने लगा :

"पिलिअस के दर्बार में एक पैर में जूता पहिने मैं कैसा अजीब लगूँगा।"

तब उसने गर्दन उठाई और बुढ़िया से कुछ कहने के लिये मुँह खोला ही था कि आश्चर्य से उसका मुँह खुला का खुला ही रह गया। उसने देखा कि वह बुढ़िया साँप की तरह अपना पुराना चोला छोड़कर एक दिव्य देवी बन गई जो सूर्य की भाँति दमकने लगी। वह उसकी ओर देखकर मुस्कराई और फिर अदृश्य हो गई। जेसन ने पहिचाना कि वह जनो थी। स्वयं ज्यूपिटर की स्त्री, स्वर्ग की सम्राज्ञी को इस तरह अपने सम्मुख देख कर वह श्रद्धा से नतमस्तक हो गया।

अपने एक जूते को पहने अब वह आगे चला। कठिन मार्ग, बियाबान जंगल पार करता हुआ अंत में वह थिसेली की सीमा में जा पहुँचा। शीघ्र ही वह ग्राम-ग्राम मार्ग पूछता हुआ आयोल्कस नामक नगरी में जा पहुँचा जहाँ उसका चाचा पिलिअस रहता था। वह उसी बेधड़क चाल से सीधा राजमहल की ओर पहुँचा। वहाँ उसे एक पैर में जूता पहने देखकर नौकर-चाकर हँसने लगे और उसका उपहास करने लगे। उसने उनकी कोई परवाह नहीं की। वह सीधा राज-दर्बार में घुस गया और अपने चाचा के सामने जा पहुँचा। वह धीरता से बोला :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"मैं तुम्हारा भतीजा जेसन हूँ। राजा ईसन का पुत्र जेसन आज तुम्हारे सामने खड़ा है, देखो और मुझे पहिचानो। तुमने जिसे मरा समझ लिया था वह जिंदा है और आज अपने राज्य को तुमसे वापस माँगने आया है...." फिर कुछ देर वह चुप रहा और बोला :

"थिसेली मेरी है—यह मेरा राज्य है। इसे मैं अपना हक समझता हूँ और यह मेरा अपना अधिकार है, मैं केवल वही माँगता हूँ जो मेरा है। तुम जो चाहो ले सकते हो—धन, सामान, मवेशी, जो भी चाहते हो ले जाओ पर मेरे पिता का राजदंड मुझे दे दो...."

पिलिअस भरे दर्बार में उन शब्दों को सुनकर स्तब्ध रह गया। इस प्रकार एक अजनबी द्वारा राज वापस माँगना उसे विचित्र लगा और साथ ही साथ उसे भय हुआ। वह दुष्ट काले दिल का आदमी था। इस समय वह उसे किसी प्रकार मरवा डालने की सोच रहा था। परन्तु उसी समय उसे बहुत पहले कही गई एक भविष्यवाणी की याद हो आई जिसमें उसे बतलाया गया था कि जब उसका कोई संबंधी केवल एक पैर में जूता पहिन कर उसके सामने प्रगट हो तब उसकी मृत्यु निकट ही होगी। आज उसका भतीजा ही उस हालत में खड़ा था। वह भीतर ही भीतर भय से थर्रा गया परन्तु प्रत्यक्ष में उसने कुछ जाहिर नहीं होने दिया। वह जेसन की मृत्यु के लिये मन ही मन षड्यंत्र करने लगा। प्रत्यक्ष में उसने उसका बड़ा स्वागत किया और बोला :

"हे जेसन तुम्हें देखकर मुझे बहुत ही अधिक प्रसन्नता हुई है। मेरा हृदय प्रेम से भर उठा है। तुम्हारी बातें सभी उचित हैं। राज्य पाने के तुम पूरे हक़दार हो। मैं सहर्ष तुम्हें थिसेली का राजदंड दे दूँगा। आज मेरी ओर से दावत स्वीकार करो।" यह कहकर उस झूठे और मक्कार राजा ने जेसन को उठकर अपने सीने से लगा लिया।

दावत बहुत शानदार हुई। नाना प्रकार के मांस और व्यंजन बनाये गये तथा अच्छी मीठी शराब नदी के जल की भाँति अतिथि और अन्य सर्दारों के बीच बहने लगी। सबके बाद चारणों द्वारा गायन हुआ। यह एक उत्तेजनापूर्ण वार्त्ता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थी। पहिले समय में 'गोल्डन-फ्लीस' अर्थात् 'सोने की जूँ' नामक एक घटना हुई थी जिसे अब गा-गाकर सुनाया गया था। पिलिअस ने स्वयं इसी गाने को गाने का आदेश पहिले से ही चारणों को दिया था। इसमें जोश आने वाली बातें थीं और पिलिअस यह चाहता था कि किसी भी भाँति जेसन उसे सुनकर उत्तेजित हो उठे और उसमें कथित उन सोने की जूँओं को लेने चला जाय। वह जानता था कि वह इतने भयंकर स्थान में स्थित थी कि कोई वहाँ जाकर लौटा नहीं था। चारण ने गाया। उसके गाने का सारांश था—

ग्रीस के राजा की दुष्ट रानी ने अपने सौतेले बच्चे को जान से मारने का उपक्रम किया। बच्चे मासूम थे और वह सौतेली माँ बड़ी क्रूर थी। वह किसी भी प्रकार उन्हें जीवित रहने देना नहीं चाहती थी। उसने यत्न करके एक दिन उन्हें देवताओं की बलि देने के लिये नौकरों द्वारा मंदिर में बुलाया। सायंकाल का समय था। वह राजकुमार फ्रिक्सस और उसकी बहिन को पकड़ कर बेदी के पास घसीट कर ले गई और उनका सिर नीचे दबाकर तलवार से उन्हें कटवाना ही चाहती थी कि उसी समय एक विचित्र घटना घटी। एक अद्‌भुत मैंढा, जिसके सारे शरीर में सोने की जूँ पड़ी हुई थी और जो उनके कारण और अपने सोने के सींगों के कारण चमक रहा था, उसी समय न जाने कहाँ से वहाँ आया और तीव्र गति से उन दोनों बच्चों को अपनी पीठ पर बिठा कर हवा में उड़ गया। रानी देखती की देखती रह गई। और दोनों बच्चे बच गये। मैंढा उन्हें लेकर उड़ा चला जा रहा था। जब वह महाद्वीप के छोर के ऊपर पहुँचा तो वह लड़की उस मैंढे की पीठ से लुढ़क गई और नीचे समुद्र की नहर में गिर पड़ी और डूब कर मर गई। (यूरोप और एशिया के बीच में समुद्र में वह गिर गई थी) वह समुद्र इस घटना के बाद हेली का समुद्र अथवा हेलिस्पौंट कहलाया।

परन्तु वह मैंढा रुका नहीं और बढ़ता चला गया। राजकुमार फ्रिक्सस अब भी उसकी पीठ पर मजबूती से बैठा था। काले समुद्र के किनारे बहुत दूर जाकर वह मैंढा कोलचिस देश में पहुँचा जहाँ प्रसिद्ध और नेक राजा ईटिस ने फ्रिक्सस का भव्य स्वागत किया और अपने यहाँ रखकर उसका पालन पोषण किया। वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसे अपने पुत्र के समान समझता था।....और वहीं वह अद्वितीय मैंढा ज्यूपिटर के मंदिर में बलि चढ़ा दिया गया। उसके शरीर की वह सोने की जूएँ एक पेड़ पर लटका दी गईं जहाँ आज तक वह सुरक्षित हैं। एक भयंकर अजदहा उसकी रक्षा करता है और रात दिन जागता रहता है....

आखिरी बात पर पिलिअस ने जोर देकर कहा।

"अच्छा तो वह सोने की जूएँ अब भी मौजूद हैं ? अफसोस अब मैं बूढ़ा हो गया। यदि मैं जवान होता तो निश्चय ही फौरन उन्हें ढूँढ़कर लाने चल देता और तभी लौटता जब उन्हें पा जाता। वह थिसेली की मिल्कियत है, यहीं आनी चाहिये। परन्तु मैं अब कुछ नहीं कर सकता, हाय !...."

सब लोग उसकी बातें सुनकर चुप रहे। उसने सब की ओर गर्दन घुमा कर फिर अपनी आँखें जेसन पर गड़ा दीं। तत्पश्चात् वह उससे बोला :

"मेरे प्यारे भतीजे तुम जवान हो। तुम बलवान और बहादुर हो। तुम उन सोने की जूँओं को लेने जाओ। यहाँ का तख्त तो तुम्हारा है ही। इसमें जरा भी शक मत करो। तुम यह वीरतापूर्वक कार्य करके जब लौटोगे तब मुझे ज्यूपिटर की सौगन्ध है, मैं फौरन नीचे उतर कर तुम्हें इस सिंहासन पर बिठा दूँगा।"

जेसन उसकी बातें सुनकर उत्तेजित हो उठा था। वह पिलिअस का षड्यंत्र तो समझा नहीं, वह तो केवल जवानी के जोश में आकर भावुक हो गया और उसने हाथ उठाकर शपथ लेते हुए कहा :

"मैं उस पवित्र सोने की जूँओं वाली उस मैंढे की खाल को लाने तुरंत जाऊँगा और जब तक उसे न पा जाऊँ थिसेली लौट कर नहीं आऊँगा—वह पवित्र वस्तु थिसेली की है। यहीं वापस आनी चाहिये।"

पिलिअस सुनकर बहुत खुश हुआ। उसने प्रत्यक्ष में उसकी पीठ ठोंकी और हिम्मत बढ़ाई। मन ही मन वह कुटिल व्यक्ति हँस रहा था क्योंकि वह जानता था कि 'गोल्डन फ्लीस' को लाने का मतलब ही मृत्यु थी।

५

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूसरे ही दिन जेसन उस कठिन यात्रा पर जाने की तैयारी करने लगा। जूनो ने चुपचाप जेसन के उद्देश्य को सारे थिसेली देश में फैला दिया और स्थान-स्थान पर नौजवान लोगों के दिलों में जोश फूँका कि वे भी जेसन के साथ उस पवित्र 'गोल्डन-फ्लीस' को लाने जायँ। बहुत से शूरवीर तब एकत्रित होकर उसके पास आये और उससे उन्होंने साथ जाने को कहा। जाने वाले युवक प्रसिद्ध वीर पुरुष थे। उनमें हर्क्युलिस, ओर्फियस, पिलिअस तथा द्वंद्व युद्ध के जुड़वाँ देवता कैस्टर और पोलक्स भी थे। पिलिअस वही वीर था जिसका पुत्र बाद में एकलीस के नाम से प्रसिद्ध हुआ था और जो ट्राय के युद्ध का विजेता था। कैस्टर और पौलक्स आज भी आकाश में रात्रि के समय नक्षत्र रूप में चमका करते हैं।

जूनो की ही सहायता से जेसन ने एक बहुत बड़ा जहाज बनाया था। आज तक इतना बड़ा जहाज नहीं बना था। वह इतना बड़ा था कि उसमें पचास आदमी इकट्ठे बैठकर यात्रा कर सकते थे। उसका नाम आर्गो रखा गया। जब सब तैयारियाँ हो गईं तो जेसन अपने साथियों को लेकर उस पर जा चढ़ा। वह सब आर्गोनौट्स कहलाये और अपने पाल ताने हुए वह समुद्र में जहाज को ले चले। थिसेली के तट से लंगर उठा दिये गये और महायात्रा का प्रारंभ हो गया।

वह लोग पूर्व दिशा की ओर बढ़े। सारे दिन समुद्र की चौड़ी छाती को चीरते हुए वह बढ़े चले जाते थे। रात को वह लोग सुरक्षित स्थानों में लंगर डाल कर जहाज रोक लेते और भोजन बना कर खा लेते थे। खाने-पीने का काफी सामान अपने पास उन्होंने रख लिया था। कभी-कभी वह लोग मार्ग के तटों पर उतर पड़ते और वहीं विश्राम करते। खाने-पीने के बाद वह उन स्थानों का घूम-घूम निरीक्षण करते। वहाँ के मनु॰. उनके रहन-सहन और रीतिरिवाजों को भी देखते जाते थे। उन्हें देख कर वह ल.ग आश्चर्य करते और उनके साहस की प्रशंसा करते थे।

ऐसे ही एक बार वह एक द्वीप पर जाकर उतरे। वह लेम्नौस के नाम से जाना जाता था। वहाँ उन्हें केवल स्त्रियाँ ही स्त्रियाँ मिलीं। उन सब के आदमी मर चुके थे। सारे द्वीप पर एक भी पुरुष जीवित नहीं था। केवल स्त्रियाँ ही थीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो सुंदरी और उदास रहती थीं। जब यह लोग वहाँ पहुँचे तो वे इन्हें देखकर बहुत ही अधिक प्रसन्न हुईं। उन्होंने आगे बढ़कर उनका भव्य स्वागत किया। नृत्य और गीत गाकर वे उन्हें अपने घरों पर लिवा ले गईं। उत्तम मांस पका कर उन्हें खिलाया गया और स्वादिष्ट मदिरा उन्हें पीने को दी। तत्पश्चात् महोत्सव मनाये गये। उन्होंने उनसे कई दिनों तक सहवास किया और उन्हें वह जाने ही नहीं देना चाहती थीं। परन्तु जेसन अपनी बात भूला नहीं था। वह नहीं रुका और अपने साथियों को लेकर चल पड़ा।

एक और स्थान पर हर्क्युलिस उन्हें छोड़ गया। उसका सर्वप्रिय मित्र हाईलास जब स्वच्छ जल में उतर कर नहा रहा था तो समुद्र में रहने वाली जल-सुंदरियों ने उसे पकड़ लिया और उसे अपने साथ ले गईं। वह उसके रूप को देखकर उससे प्रेम करने लग गईं और किसी भी शर्त पर उन्होंने उसे नहीं छोड़ा। हर्क्युलिस अपने मित्र के इस प्रकार खो जाने के अपार दुख से व्यथित हो गया और आर्गोनोट्स से बिदा लेकर वह स्वदेश की ओर लौट गया।

जब यह लोग थ्रेस पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वहाँ का वृद्ध राजा फिनिअस अंधा था। उसको एक विचित्र प्रकार के जीव यातना देते थे। वे जीव भयानक आकृतिवाले थे और हार्पीस कहलाते थे। उनके शरीरों से भयानक दुर्गंध निकलती थी। उनका आधा शरीर चिड़ियों का और बाकी आधा स्त्रियों जैसा था। पैने और खतरनाक इनके पंजे और चोंचें थीं और उनके पर चिमगादड़ की भाँति थे। वह सदा वृद्ध अंधे राजा के ऊपर आकाश में मँडराया करते थे। जब भी राजा के सम्मुख भोजन रखा जाता था तो यह हार्पीस झपट्टा मार कर उसको ले जाते और खा जाते थे। जो उनसे न खाया जाता उसे बिगाड़ कर फेंक देते थे। राजा कुछ नहीं खाने पाता था। रातों-दिन यही हालत रहती थी। राजा केवल कंकालमात्र रह गया था जिसकी हड्डियों पर केवल खाल लटक रही थी। मांस का नाम भी उसके शरीर में नहीं बचा था। वह भूख से व्याकुल चिल्लाया करता था परन्तु वह इतना क्षीण हो चुका था कि उसकी आवाज भी बहुत धीमी निकलती थी। वह दुख से मर जाना चाहता था परन्तु मरता भी न था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोई भी उसकी मदद करने को तैयार नहीं होता था क्योंकि सभी उन हार्पीस से डरते थे। आर्गोनौट्स को उसे देख कर बहुत दुख हुआ। उन्होंने निश्चय किया कि वह उसकी मदद करेंगे। उनमें से दो तलवार निकाल कर उसके दोनों ओर खड़े हो गये। यह राजा बोरिस के वीर पुत्र थे। राजा बोरिस उत्तरी बर्फीली हवाओं का राजा था। उसके यह पुत्र शक्ति में अपोलो के समान थे। उन्होंने आज्ञा दी कि राजा फ़िनिअस के सामने भोजन परोसा जाय। तुरंत भोजन लाया गया। उसे देखते ही हार्पीस आकाश से मँडराते हुए उस पर झपटे परन्तु तभी इन दोनों वीरों ने भयानक आक्रमण कर दिया। विद्युत गति से तलवारें चमकने लगीं और हार्पीस भय से पीछे हट गये। फिर भी वह घायल हो गये। राजा बोरिस के पुत्र अब उन पर टूट पड़े और निकट ही था कि उन्हें मार डालते कि उसी समय देवताओं ने आकर उन्हें बचाया। वह बोले :

"इन हार्पीस को तुम लोग न मारो क्योंकि यह हमारे प्रिय हैं।" सुनकर राजा बोरिस के पुत्रों ने उत्तर दिया : "तो फिर इन्हें यहाँ से ले जाओ।" "ऐसा ही होगा," देवताओं ने वचन दिया। "यह अब कभी इधर नहीं आवेंगे। कभी राजा फ़िनिअस को तंग नहीं करेंगे।"

थ्रेस के राजा को अब भोजन मिल गया। उसके प्राण बच गये। वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने आर्गोनौट्स को बहुत धन्यवाद दिया। उसने कहा :

"हे वीर पुरुषों, तुमने मेरी जान बचाई है, इसलिए मैं तुम्हारा जीवन भर आभारी रहूँगा। तुम सचमुच में महान् हो। तुम लोग कौन हो, कहाँ से आ रहे हो और इस भयंकर समुद्र में कहाँ और क्यों भटक रहे हो ? मुझसे कहो, क्या मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकता हूँ। तुम्हारी सहायता करना मेरा कर्त्तव्य है। बोलो तुम क्या चाहते हो ?"

और तब आर्गोनौट्स ने अपना परिचय दिया और अपना मंतव्य उन्हें बतलाया। सुनकर वह आश्चर्य से उन्हें देखने लगा, फिर बोला :

"सचमुच ही तुमने भारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ली है। 'गोल्डन-फ्लीस' तक पहुँचने का मार्ग बहुत अधिक भयावना है। कोई भी उधर जाकर अभी तक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लौटकर नहीं आया है. . . .परन्तु मैं तुम्हें हताश नहीं करना चाहता। तुम्हारे जैसे वीरों के लिये यह भी कोई बड़ी बात नहीं होगी। मेरा विश्वास है कि तुम अपने काम में अवश्य ही सफलता प्राप्त करोगे।. . . .मैं तुम्हें वहाँ का मार्ग बताता हूँ, सुनो।"

और तब उसने वहाँ तक पहुँचने का पूरा मार्ग उन्हें समझाया। वह कहने लगा :

"खतरे मार्ग में बहुत हैं। तुम्हें एक स्थान पर सिम्पिलिगेड मिलेंगे जो अलग-अलग भारी चट्टानों से बना हुआ पहाड़ है। उसमें चट्टानें एक दूसरे से टकरा कर नीचे लुढ़क जाया करती हैं। गहरी अँधेरी गुफा में होकर आगे जाना पड़ता है। चाहे जब जहाज पर दोनों ओर अथवा ऊपर से चट्टान गिरने का डर बना रहता है। कभी-कभी वह मार्ग आगे से बंद भी हो जाता है और तब आगे बढ़ने का मार्ग नहीं रहता। इतना आगे जाकर जहाज लौटाये भी नहीं जा सकते क्योंकि उस तंग अँधेरे मार्ग में इतनी जगह ही नहीं है। सबसे ऊपर खतरा यह है कि चाहे जब चट्टानें ऊपर लुढ़क पड़ती हैं। इसलिए उस गुफा में घुसने के पहिले एक बतक को तुम लोग उसके अंदर उड़ा देना। अगर वह पार निकल जाय तो तुम भी आगे बढ़ जाना और यदि वह लौट आवे तो तुम तब तक वहीं लंगर डाले प्रतीक्षा करना जब तक कि मार्ग साफ न हो जाय। परन्तु अधिक दिनों तक तुम वहाँ ठहर भी नहीं सकोगे क्योंकि वह स्थान बहुत ही भयानक है। उस सूरत में तुम वापस आ जाना। . . . .एक बात और है। उस गुफा में पानी सदैव खौलता रहता है। सावधान रहना—कहीं उसमें उतर कर पार जाने की गलती मत कर बैठना अन्यथा जल जाओगे।"

राजा फ़िनिअस की सलाह पर ही आर्गोनौट्स चले। आयो द्वारा पार किये गये समुद्र बोस्फोरस को लाँघने के उपरान्त वह उस भयानक गुफा के मुहाने पर आ गये। उन्होंने तब एक मादा बतक गुफा के अंदर छोड़ दी। वह उड़कर पार निकल गई। जब वह पार निकली केवल उसके कुछ पर उलझ गये और वहीं रह गये। जेसन ने परिस्थिति को ध्यानपूर्वक देखा। वह घबराया नहीं। थोड़ी ही देर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाद चट्टानें खुलीं और रास्ता चौड़ा हो गया। चतुर मल्लाहों ने ज़ोर मारा—भीम प्रयत्न से उन्होंने तीव्र गति से जहाज़ को आगे बढ़ाया। जेसन ने आवाज़ लगाई और जहाज़ पार हो गया। अब आर्गोनौट्स काले समुद्र की भीम तरंगों पर तैर रहे थे। बहुत दिनों तक जहाज़ चलता रहा और तब वह एमेज़ौन की घाटियों के बीच होकर निकला। वहाँ उन्होंने नग्न सुंदरियों को देखा जो बिल्कुल असभ्यता से रहती थीं। वह पशुओं की भाँति रहती थीं। वह अत्यंत सुगठित गौर शरीरों वाली सुंदरियाँ आकर्षक मालूम होती थीं। कुछ दिन आर्गोनौट्स वहीं रहे और उन्होंने स्त्रियों के साथ विहार किया।

आगे चलकर वह कोहकाफ़ के पहाड़ों के समीप पहुँचे। उन्होंने दूर से देखा पहाड़ की चोटी पर मजबूत जंजीरों से प्रोमेथियस बँधा था। उन्होंने उस गिद्ध के पर फड़फड़ाने का शब्द भी सुना जब वह उस असहाय टिटन पर झपटता था। उन्हें उसे देखकर दया तो बहुत आई परन्तु वह उसको छुड़ाने को रुके नहीं क्योंकि वह जानते थे कि उसके मुक्त होने का समय अभी आया नहीं था। वह अनुकूल हवाओं के साथ अपने पालों को ताने आगे बढ़ता गया और भोर के समय कौलचिस के तट पर जा लगा। तुरंत लंगर डाल दिये गये। आर्गो-नौट्स ने हर्षोल्लास से जयजयकार किया।

आकाश में जूनो ने ओलिम्पस से पृथ्वी की ओर देखा। कोलचिस के तट पर जेसन का जहाज़ लंगर डाल रहा था। वह मन ही मन कोप गई। उसे प्रत्यक्ष दिख रहा था कि उसके प्रिय जेसन तथा उसके साथियों पर आपत्ति मँडरा रही है। परन्तु आपत्ति भी इतनी बुरी थी कि अकेली वह चाह कर भी उनकी मदद नहीं कर सकती थी। अकेली मदद करना उसकी शक्ति के बाहर था। उसने थोड़ी देर डरते-डरते सोचा। तत्पश्चात् वह प्रेम और वासना की देवी वीनस के पास गई और बोली:

"हे सखि, आर्गोनौट्स को कोलचिन्स से बचाने में मेरी जो भी सहायता तुमसे बन पड़े वही करो। वह मुझे अत्यन्त प्रिय है। मैं उन पर कोई भी मुसीबत नहीं आने देना चाहती। तुम तो जानती ही हो कि कोलचिन्स कितने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भयानक और खूँखार हैं. . . ."

सुंदरी वीनस उसकी बातें सुनकर आश्चर्यचकित रह गई क्योंकि वह तो उसकी मित्र नहीं थी, खासकर जब कि उसने जूनो के पति ज्यूपिटर को हज़ारों ही बार अन्य स्त्रियों से प्रेम करने को मजबूर किया था। परन्तु शीघ्र ही जूनो की इस प्रार्थना को उसने सहर्ष स्वीकार कर लिया क्योंकि वह उस पर एहसान भी करना चाहती थी। उसने निश्चय किया कि इस बात में विरोधाभास न करते हुए वह उसकी मदद करेगी। उसने अपने पुत्र क्यूपिड को बुलाया और उससे बोली :

"तू शीघ्र एक कामबाण कौलचिन्स के राजा की सुंदरी पुत्री मीडिआ के हृदय में मार दे जिससे वह जेसन के प्रेम में विह्वल हो उठे : उसके हृदय में वासना तरंगों की भाँति हिलोरें लेने लग जाय। . . . वह बड़ी खतरनाक जादूगरनी है। वह जितनी सुंदरी है उतनी ही खतरनाक भी है। एक बार यदि वह जेसन के प्रेम में फँस गई तो फिर जेसन का कोई कुछ भी न बिगाड़ सकेगा। . . . पुत्र जल्दी कर।"

फिर उसने जूनो से कहा :

"सखि, मेरी यह तरकीब अवश्य पूरा काम करेगी। जितनी मदद जेसन की मीडिआ वहीं रहकर कर सकेगी उतनी शायद तुम और मैं भी इतनी दूर से न कर सकेंगी।"

जूनो ने स्वीकारात्मक सिर हिलाया। उसी समय क्यूपिड ने तीर चढ़ाया और झाँक कर नीचे पृथ्वी की ओर देखा। आर्गोनौट्स जेसन सहित आगे बढ़ रहे थे। राजमहल के पास जब वह पहुँचे तो राजा ईटिस तथा उसके योद्धागणों ने बढ़कर उनका भव्य स्वागत किया। क्यूपिड निशाने ताके खड़ा था। उसी समय महल की दूसरी मंजिल से सुंदरी मीडिआ ने जेसन की ओर उत्सुकतावश देखा। क्यूपिड ने ताककर पूरा वार उसके हृदय पर कर दिया। तीर आरपार हो गया और उसके लगते ही वह जेसन पर आसक्त हो गई। वह प्रेम से विह्वल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो उठी और वासना के उष्ण श्वास छोड़ने लगी। उसी समय उसकी ऐसी हालत हो गई कि वह भाग कर उससे लिपट जाना चाहती थी परन्तु नवागंतुकों के सामने ऐसा व्यवहार करना उचित न जानकर ही उसने बड़ी कठिनाई से अपने हृदय की भावनाओं को दबा लिया। वीनस ने चुपचाप जूनो की कुहनी पर कोहनी मार कर इशारा किया। दोनों मीडिआ की वह हालत देखकर मुस्करा उठीं। मीडिआ ने आज तक जेसन जैसा सुंदर, सुगठित, और बलिष्ठ पुरुष नहीं देखा था।

सायंकाळ के समय एक बड़ी दावत का आयोजन किया गया। आर्गोनौट्स के सम्मान में राजा ईटिस ने दिल खोलकर स्वागत किया था। उत्तम मांस तथा तेज़ मदिरा परोसी गई। लोग शराब के नशे में झूमने लगे। जब नग्न सुंदरी नर्त्तकियों का नृत्य हुआ तो आर्गोनौट्स को छोड़ कर सभी अश्लीलता से चिल्लाने लगे। उत्सव के बाद जेसन ने उठकर खड़े होकर राजा ईटिस को उसके आतिथ्य के लिए धन्यवाद दिया और अपने आने का कारण कहा। अंत में वह बोला :

"'गोल्डन फ्लीस' थिसेली की ही वस्तु है। उसे वहीं वापिस जाना चाहिये। हम लोग पवित्र देवताओं की संतान हैं। हम लोग तुम्हारे शत्रुओं के साथ तुम्हारी ओर से युद्ध कर सकते हैं। यदि तुम किसी कष्ट में हो तो हमसे कहो हम तुम्हें त्राण दिला सकते हैं। इसके अतिरिक्त यदि तुम हमसे कोई कठिन कार्य कराना चाहते हो तो हम उसके लिये भी तैयार हैं—बोलो जो चाहते हो वही कहो. . . .हम तुम्हारा वही काम कर सकते हैं. . . .बदले में हम केवल 'गोल्डन-फ्लीस' चाहते हैं।"

राजा ईटिस यह सुनकर बहुत रुष्ट हुआ। पर उसने अपना क्रोध प्रगट नहीं होने दिया। वह उस फ्लीस को देने को बिल्कुल तैयार नहीं था। प्रत्यक्ष में उसने उनकी माँग को न्यायोचित कहा। उसने मंजूर किया कि 'फ्लीस' वास्तव में ग्रीस की ही निधि है और वहीं जाने भी चाहिये। "पर," वह बोला, "मैं उस पवित्र 'फ्लीस' को केवल किसी के कहने मात्र से नहीं दे सकता। मैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहिले यह जानना चाहता हूँ कि इसे माँगने वाले इस लायक हैं कि नहीं। अतएव तुम्हारी परीक्षा परमावश्यक है। तुम अपने बल और साहस का परिचय देकर जब परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे तभी तुम्हें हम उस 'फ्लीस' के योग्य समझेंगे। प्रतीक्षा करो और इसी बीच तुम्हारी परीक्षा का प्रबंध हम किये देते हैं।"

दूसरे दिन राजा ने उन्हें बुलाकर पूछा :

"मेरे कहे कामों को कौन करेगा....जो भी हो सामने आ जाय।"

"हम करेंगे," आर्गोनौट्स गरजे।

"तो सुनो," राजा बोला, "सबसे पहले मेरे दो जंगली बैलों को जुए में जोतकर दिखाओ। उनके पैर काँसे के हैं और वह मुँह से आग उगलते हैं। तत्पश्चात् उनसे एक खास खेत को जोतो जो कि मार्स देवता के लिये खास तौर से अर्पित है। जब खेत जुत जाय तो उसके कूड़ों में तुम अजदहे के दाँतों को बीज की भाँति बो दो। यह बीज मैं स्वयं तुम्हें दूँगा। तुरंत ही उन सब कूड़ों में से एक सेना उठ खड़ी होगी जो हर तरह से अस्त्रशस्त्रों से सुसज्जित होगी। उन सबसे अकेले ही तुम में से किसी एक को लड़ना होगा। जब अकेले ही उस सारी फौज को तुम काट डालोगे तभी तुम उस पवित्र निधि को पाने के लायक समझे जाओगे। कृपया मेरी बात को उल्टा न समझना क्योंकि जो कुछ मैं कह रहा हूँ सभी बातें न्याययुक्त हैं।" इसके बाद उसने जेसन को देखकर कहा :

"तुम्हें इस काम के बाद उस अजदहे को मारना पड़ेगा जो उस 'फ्लीस' की रक्षा करता है। भला उसे मारे बिना तुम उस वस्तु को पा ही किस प्रकार सकते हो ?"

जेसन और उसके सभी साथी राजा की इन बातों को सुनकर हताश हो गये। भला ऐसे अजीब और भयंकर काम वह कैसे कर सकते थे ? परन्तु फिर भी जेसन ने साहस नहीं छोड़ा। वह युवक था जिसमें साहस और पौरुष की मात्रा अपने अन्य साथियों से कहीं ज्यादा थी। उसने अपनी मर्य्यादा का ध्यान किया और राजा को उन सभी कामों को करने का वचन दे दिया। उसने स्वतः कहा :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"या तो कर ही लेंगे या मर जायँगे। अब पीछे लौटना भी मृत्यु के समान ही है फिर भला डर काहे का ?"

रात को बड़ी देर तक वह जागता पड़ा रहा और कल होने वाली बातों के बारे में सोचता रहा। और तभी चुपचाप राजा ईटिस की परम सुंदरी पुत्री मीडिआ उसके पास आई। क्यूपिड के बाण से यह कामोन्मत्त नारी अपने को और अधिक रोकने में असमर्थ होकर अकेली छिपकर अपने प्रेमी के पास उस रात के अँधेरे में आई थी। वह अपने पिता के साथ धोखा कर रही थी पर जैसे उसे इस बात की कोई लज्जा नहीं रह गई थी। वह जेसन के पास आई और उससे लिपट गई। उष्ण श्वासों के बीच उसने उस पर अपना प्रेम प्रकट किया। वह बोली :

"हे मेरे प्रियतम ! तुम्हारे सामने अब सारे संसार में मुझे और कोई नहीं भाता। मुझे मेरे पिता से भी कोई संबंध तुम्हारी खातिर नहीं रखना है। जो कुछ मेरे लिये हो सो तुम ही हो. . . .मैं तुम्हारी इस कठिन समय में सहायता करने के लिये आई हूँ। मैं जादू जानती हूँ और इसी गुण के द्वारा तुम्हें मदद दूँगी।" और तब उसने जेसन को एक खास तरह का मलहम दिया और बोली :

"इसे तुम अपने शरीर और हथियारों पर मल लेना। इससे तुम पर कोई खतरा नहीं आयेगा और तुम्हारे हथियार अजेय हो जायँगे। तुम्हें किसी प्रकार की विपत्ति का सामना नहीं करना पड़ेगा. . . ." इसके बाद वह उससे फिर लिपट गई और देर तक उसे उस अजदहे के दाँतों से बनने वाली सेना को नष्ट करने का उपाय बताती रही। जब भोर होने को हुई तो वह चुपचाप वहाँ से उठ गई और महल में आ सोई।

दूसरे दिन सुबह मार्स के खेत में कौलचिन्स और आर्गोनौट्स एकत्रित हुए। दोनों ही पक्ष उत्तेजित हो रहे थे। वह अपने सुगठित शरीरों पर दिव्य वस्त्र तथा अस्त्रशस्त्र धारण किये हुए थे जो सूर्य्य की रोशनी में चमचमा रहे थे। उनके शिरस्त्राण और ढालें उन्हें कठोर बना रही थीं। तभी जेसन ने कहा :

"हम तैयार हैं. . . .काम शुरू करो।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राजा ने अपने सेवकों को इंगित किया और तभी दो भयानक आकृति वाले विकराल बैल खंदक से बाहर मैदान में छोड़ दिये गये। वह अर्राकर टूट पडे। उनके नेत्रों से और मुँह से आग की लंबी-लंबी लपटें निकल रही थीं। वह रंग के काले और कत्थई थे। उनकी पूछें ऊपर को उठी हुई थीं। वह बारंबार डकरा रहे थे और नथुने फड़फड़ाकर अग्नि बिखेर रहे थे। उन्हें जिसने भी देखा वहीं भय से थर्रा गया। उन्हें पकड़ कर जुए में जोतना तो क्या, उनके पास भी जाने में सभी घबरा रहे थे। कहीं हमला न कर बैठें, यह विचार कर लोग वहाँ से भागने को तैयार हो गये थे। भय आतंक बन चुका था। और तभी वीर जेसन उस जादू के मलहम से अपने शरीर को पोते हुए मैदान के बीच में उतर आया। बैलों ने उसे देखा तो हमले को सन्नद्ध हो गये। जेसन ने एक लाल कपड़ा एक को दिखाया जिसे देखते ही वह बिचका और क्रोध से उस पर टूट पड़ा। जेसन ने लपक कर उसके सींग अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया और उसके सिर को नीचे दबाया। बैल रुक गया और तब उन दोनों में भीषण संघर्ष होने लगा। क्षण भर को ऐसा मालूम होने लगा जैसे वह बैल और जैसन कोई पत्थर की मूर्ति हैं क्योंकि बल के संतुलन में दोनों निश्चल खड़े थे। दोनों ही भीम शक्ति लगाकर एक दूसरे को दबा लेना चाहते थे। जेसन ने बैल के सींगों को अब एक ओर उमेठना शुरू कर दिया। बैल भी अपने कठोर पाशविक बल से रोकने का प्राणपण प्रयत्न कर रहा थां। लोग साँस बाँधे अपलक नेत्रों से उस मनुष्य और पशु के लोमहर्षण युद्ध दृश्य को देख रहे थे। वह अधीर थे। जेसन ने धीरे-धीरे झुका कर उसका सिर नीचे भूमि में लगा दिया। अब एक हाथ छोड़ कर उसने जुआ उसके कंधे पर रखा और नाक में नाथ घुसा कर रास हाथ में ले ली। फिर दूसरा सींग भी छोड़ दिया। बैल छूटते ही उछला पर जेसन के हाथ में अब उसकी नाथ जो थी। इसी प्रकार जेसन ने दूसरे बैल को भी दबाया और उस पर भी पूर्ण विजय प्राप्त की। दोनों बैल जुए में जोड़ दिये गये। राजा विस्फारित नेत्रों से देख रहा था। अवरुद्ध कंठ से आर्गोनौट्स ने जयघोष किया। अब जेसन उन बैलों को हल में जोत कर उस खेत को जोतने लग गया। कूँड के कूँड जुतने लगे और राजा द्वारा दिये गये अजदहे के दाँतों को वह उनमें बोने लगा। खेत जुतता गया और दाँत बुवते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गये। सब लोग उत्सुकता से यह विचित्र दृश्य देखते रहे।

जब खेत जुत गया, जेसन एक ओर खड़े होकर उस विचित्र बीज की उपज की प्रतीक्षा करने लगा। एकदम आकाश में धूल उड़ी और मैदान में कुछ भी दिखाई नहीं दिया। जब धूल हल्की पड़ी तो जेसन ने आश्चर्यमिश्रित आतंक से देखा। तमाम कूंडों में से छोटे-छोटे सशस्त्र सैनिक खड़े थे। वह उस समय केवल एक-एक बालिश्त के थे। धीरे-धीरे वह बढ़ने लगे। उनके शस्त्र भी बढ़ने लगे। आर्गो-नौट्स भय से चिल्लाने लगे। राजा ईटिस मुस्कराने लगा—सैनिक अब बढ़कर विशालकाय हो गये और भयंकर रूप से उन्होंने ईटिस का नाम लेकर जयघोष किया। आकाश काँप गया—पहाड़ गूँजने लगे और समुद्र थर्रा गया। अब वह समुद्र के समान विशाल वाहिनी जेसन की ओर हथियारों को ताने बढ़ी, दर्शकों का रक्त भय से जम गया।

जेसन ने देखा वह उसकी ओर तीव्र गति से बढ़ रहे थे। वह थोड़ी देर को सब कुछ भूल गया और भय से काँपने लगा। उसका मन किया कि भाग चले। परन्तु वह उनसे भागकर जाता भी कहाँ? उसने पैर उठाने का प्रयत्न किया पर वह तो जैसे पृथ्वी में गड़ गये थे। हिलते भी नहीं थे। अब उसने निश्चय समझ लिया कि अंत समय आ गया था।

फ़ौज बढ़ी आ रही थी। जेसन जड़वत् खड़ा रहा। परन्तु उसी समय उसे मीडिआ की कही बात याद आ गई। उसमें साहस का संचार फिर से हो आया। वह तो स्वयं अपराजित था क्योंकि उसके शरीर पर तो जादू का मलहम लगा ही हुआ था। जब शत्रु बिलकुल सिर पर ही आ गये तो उसने झपट कर पृथ्वी से एक छोटा सा पत्थर उठाया और तीन वार हाथ ऊपर आकाश में घुमा कर वह उस सेना के बीच में फेंक दिया। उसने बिजली का सा असर किया।

सैनिकों ने जेसन को तो छोड़ दिया और अब एकदम आपस में ही भयंकरता से युद्ध करने लग गये। वह भालों और तलवारों से भयानक आक्रमण एक दूसरे पर करने लगे। लोमहर्षण संग्राम छिड़ गया और जेसन उन्हें एक ओर खड़े होकर देखने लगा। उसे मीडिआ के किये गये उस जादू पर परम आश्चर्य हो रहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था । भयंकर मारकाट होने लगी । थोड़ी ही देर में वह सब कटकर मर गये । उनमें से एक भी बाकी न बचा । सारे कूंड रक्त से भर गये । वह मार्स की भूमि रक्त से लाल हो गई और लाशों पर गिद्ध मँडराने लगे । आर्गोनौट्स ने हर्ष से जयनाद किया । जेसन ने आँख मींचकर जूनो का ध्यान किया और फिर वह भी आनंद मनाने लगा । राजा ईटिस यह सब देखकर क्रोध से पागल हो गया । उसका सारा प्रयत्न व्यर्थ गया था । वह वहाँ से उठा और भनभनाता हुआ अपने महल में पहुँचा । वहाँ जाकर अपने विश्वस्त अनुचरों को साथ बिठाकर वह जेसन और उनके साथियों के नाश का षड्यंत्र करने लगा । वह अब हर तरह से उन्हें मार कर पीछा छुड़ाना चाहता था । 'गोल्डन फ्लीस' को किसी प्रकार नहीं देना चाहता था । उसने युक्ति निकाली कि जब भोर में जेसन अपने साथियों को लेकर 'गोल्डन फ्लीस' लेने उस अजदहे के पास जायेगा तब वह उन सबको मरवा डालेगा । इन बिना बुलाये आगन्तुकों को वह तनिक भी सहन करने को तैयार नहीं था ।

निश्चय ही राजा ईटिस का षड्यंत्र सफल हो जाता यदि उसी रात अँधेरे में लुकती-छिपती उसकी सुंदरी पुत्री मीडिआ जेसन को सावधान करने नहीं आती । उसने जब अपने पिता की बातें सुनीं तो वह अपने छोटे भाई के साथ छिप कर सीधी आर्गो पर पहुँची और जेसन को जगाकर उसने उससे सारे खतरे विस्तारपूर्वक कहे । उसने उसे उस अजदहे से बचने के उपाय भी बतलाये । वह बोली :

"भोर की प्रतीक्षा व्यर्थ है । 'गोल्डन फ्लीस' लेने अभी तुम मेरे साथ चलो । इतने में कि हम उसे वहाँ से लेकर वापस आयें अपने साथियों से कहो कि वह जहाज को पाल इत्यादिक तान कर सब सामग्री सहित ठीक कर रखें । जैसे ही तुम जहाज में चढ़ो, लंगर उठा लिये जायँ अन्यथा मेरे पिता का क्रोध तुम सब पर मृत्युवत बनकर उतरेगा. . . ."

फिर उसने जेसन के गले में हाथ डाल दिया और उससे धीरे से बोली :

"चलो मेरे साथ, मैं उस भयंकर अजदहे पर जादू कर दूंगी जिससे वह तुमसे कुछ न कहे और तुम उस पवित्र 'फ्लीस' को आसानी से उस पेड़ पर से उतार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लाओ. . . . ''

इतना कहकर वह उसे लेकर चलने लगी। आर्गोनौट्स सब जाग गये थे और मीडिआ की बातें सुनकर यात्रा की तैयारी में लग गये। थोड़ी ही देर में वह लोग जहाज़ की ओर चल दिये। मार्ग में मीडिआ अपने पिता को धोखा देने के कारण रोने लगी। उसे जब यह भी ध्यान आता कि उसका प्रियतम अब हमेशा के लिये छोड़ कर चला जायेगा तो वह दुख से भर उठती और फफक कर रोने लगती थी। वह जैसन को किसी प्रकार छोड़ना नहीं चाहती थी। जेसन उसकी उस अवस्था को देखकर समझ गया। उसने उसे दोनों हाथों में लेकर आलिङ्गन में बाँध लिया और प्रेम से उसे सांत्वना दी। वह उसे प्यार से थपथपाते हुए स्नेहसिक्त स्वर से बोला :

"अजदहे के स्थान को मैं तुम्हारे साथ जा रहा हूँ। तुम जो भी कहोगी वही करने को मैं तैयार हूँ परन्तु एक बात तुम्हें मेरी भी माननी पड़ेगी। 'गोल्डन फ़्लीस' जब मैं लेकर यहाँ से जाऊँगा तभी इसी शर्त्त पर कि तुम मेरे साथ चलोगी। मैं तुम्हें यहाँ छोड़कर नहीं जा सकता। मैं तुम्हें हृदय से प्रेम करता हूँ। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम्हारे बिना यहाँ से नहीं जाऊँगा।" और उसने उसे बाँधकर आलिङ्गन में लेकर प्यार किया। मीडिआ यह सुनकर आनंदातिरेक हो गई और उससे चिपट गई।

अब मीडिआ और जेसन हाथ में हाथ डाले चंद्रज्योत्स्ना से चमकते हुए हरे-भरे मैदानों को पार कर उस झाड़ी की ओर बढ़े जहाँ वह 'सोने की फ्लीस' टँगी हुई थी। उन्होंने दूर से देखा भयानक और विशालकाय अजदहा मुँह से आग की लपट निकाल रहा था। वह सन्नद्ध था और यह साफ दिख रहा था कि उसके रहते कोई शक्तिशाली उस 'फ्लीस' को वहाँ से ला नहीं सकता। उसके सारे शरीर पर बड़े-बड़े काँटें थे और उसके नेत्रों से अग्नि निकल रही थी। जेसन उसे देखकर घबरा गया परन्तु मीडिआ तनिक भी न डरी। वह अपने प्रेमी को साथ लेकर उसके पास बढ़ती गई। अब उसने एक गीत गाना शुरू कर दिया। वह जादू का गाना विचित्र था और अत्यत सुखकर मालूम होता था। उस मधुर संगीत की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लहरियाँ वायुमंडल में फैल गईं और उस अजदहे पर अपना असर करने लगीं जिन्हें सुनकर वह बिल्कुल सीधा-सादा नम्र पशु बन गया। अब बिना डरे अथवा संकोच किये जेसन उस स्त्री के साथ उसके पास पहुँच गया। मीडिआ ने अब अजदहे पर एक जादू के मंत्रों से अभिमंत्रित जल डाला। गाना वह अब भी गाती रही। इस जल ने उसके सिर पर पड़कर ऐसा जादू किया कि अजदहा जमीन पर लेट गया और सो गया। वह गहरी नींद में सोता हुआ खर्राटे लेने लगा। इस शब्द से पहाड़ गूँज रहे थे और आकाश काँप रहा था।

झपट कर जेसन ने झाड़ी से उस सुवर्ण की 'फ्लीस' वाली 'खाल' को उतारा और मीडिआ की ओर देखा। मीडिआ उसे और अपने भाई एप्साईर्टस को साथ लेकर समुद्र के किनारे भाग चली। जब यहाँ वे पहुँचे तो उन्होंने देखा जहाज तैयार था। वे भागकर उस पर चढ़ गये और तुरंत लंगर उठा लिये गये। जहाज़ के पाल तान लिये गये और वह अनुकूल हवा के सहारे आगे बढ़ता चला गया। रात्रि अब भी छाई हुई थी।

समुद्र में जाते हुए आर्गोनौट्स उस अजदहे की घर्राहट अब भी सुन रहे थे। परन्तु उसी घर्राहट ने राजा ईटिस को भी जगा दिया था। वह जब अपने सैनिकों को लेकर भागा हुआ उस स्थान पर आया तो वहाँ उसने देखा 'गोल्डन-फ्लीस' जा चुकी है और अजदहा सो रहा है। तभी एक दासी ने आकर सूचना दी कि राजकुमारी मीडिआ और राजकुमार एप्साईर्टस को भी आर्गोनौट्स पकड़ कर ले गये हैं क्योंकि महल में अब वह कहीं नहीं हैं। राजा ईटिस घबरा गया। उसे अपने पुत्र से बहुत स्नेह था। उसने तुरंत आज्ञा दी कि एक जहाज पर चढ़कर उनका पीछा किया जाय।

राजा का जहाज़ बहुत तेज़ था। उसके चलाने वाले बहुत थे और वह तीव्र गति से पानी को चीरता हुआ आगे बढ़ रहा था। जब भोर हुई तो आर्गो पर चढ़ी हुई मीडिआ ने देखा कि उसका पिता पीछे जहाज़ बढ़ाये चला आ रहा है। उसने तथा आर्गोनौट्स सभी ने देखा कि उस जहाज़ की चाल आर्गो से कहीं अधिक थी और थोड़ी ही देर में यदि कोई उपाय न किया गया तो वह इन्हें पकड़ लेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह इतने पास आ लगा था कि राजा ईटिस की आवाज़ सुनाई देती थी। राजा उच्च स्वर से अपने पुत्र एप्साईर्टस और पुत्री मीडिआ को वापिस माँग रहा था। मीडिया ने सुना और वह व्यथित हो उठी। परन्तु अपने प्यारे जेसन को वह नहीं छोड़ सकती थी। उस विचार से ही वह दुखी हो जाती थी। पिता का जहाज़ पास आ गया था। अब किया क्या जाय? उसने सोचा और पलक मारते अपना कर्त्तव्य निश्चय कर लिया; किसी न किसी भाँति पीछा करने वालों को रोका जाय—कम से कम इतने समय उन्हें रोक दिया जाय कि अपना जहाज़ बहुत आगे निकल जा सके। उसने झपट कर अपने छोटे भाई को पकड़ लिया और अपने पिता की आँखों के सामने उसे मार डाला। तत्पश्चात् तलवार से उसके अंग-अंग काट डाले। प्रत्येक टुकड़े को अब वह उनके जहाज के अगल-बगल जल में फेंकने लगी। उसके शरीर को कई टुकड़ों में काट डाला गया और इसी भाँति फेक दिया गया।

ईटिस ने यह सब दर्दनाक और घृणित कार्य अपनी आँखों से देखा। उसका हृदय विक्षोभ से भर गया। अपनी ही पुत्री इतना भीषण काम कर सकेगी इस विचार से वह उससे विमुख हो गया। उसका प्यारा पुत्र तो मर ही चुका था और उस हत्यारी-कुलक्षिणी पुत्री का अब वह मुख भी देखना बुरा समझता था। उसने जहाज़ वहीं ठहरा दिया। वह अब आगे बढ़ना नहीं चाहता था। उसने अपने पुत्र के अंग-प्रत्यंग को जल से उठवाया और भग्न हृदय रोते हुए वह अपने देश लौट चला। वह उसकी अन्त्येष्ठि राज्योचित् करना चाहता था। कौलचिन्स लौट गये। मीडिआ ने देखा और वह प्रेम में मतवाली होकर अपने प्रियतम से लिपट गई।

आर्गोनौट्स अब थिसेली की ओर लौट चले। मार्ग में उन्हें बहुत बड़े खतरों का सामना करना पड़ा। जूनो और मीडिआ ने उनकी कई बार रक्षा की। जब आर्गो एक भयानक अँधेरी पहाड़ी गुफा में होकर निकला तो जूनो ने उनकी रक्षा की। विकराल दानवी स्कैल्ला यहीं रहती थीं जो मल्लाहों को खाने की बड़ी शौकीन थी। जब जहाज़ आर्गो उस गुफा में घुसा तो स्कैल्ला ने उन्हें अपने एक ही हाथ से पकड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर रोक लिया परन्तु उसी समय जूनो ने उसे आज्ञा दी कि वह उन्हें छोड़कर गुफा में चुपचाप बैठ जाय।

कैराईब्डिस नामक अंधकार से भरे स्थान में पानी के भँवर ने उन्हें खा जाना चाहा। वह भँवर दिन में दो बार पानी को पी जाता था और फिर उसे इतनी जोर से उगलता था कि उसके वेग में सब कुछ डूब जाता था। जब आर्गो उस स्थान के पास पहुँचा तो जूनो ने पहले से ही उसे दबा दिया कि वह उसे शांतिपूर्वक निकल जाने दे।

एक द्वीप के बगल से होकर जब एक दिन आर्गो जा रहा था तो वहाँ रहने वाले भीमकाय काँसे के बने दानव ने उन पर अपनी आदत के अनुसार पहाड़ों की बड़ी-बड़ी चट्टानें लुढ़कानी शुरू कीं परन्तु इससे पहिले कि वह ऐसा कर पाता मीडिआ ने उसे जादू से निष्प्राण कर दिया।

बहुत दिनों के बाद एक दिन सबेरे के समय वह थिसेली के तट पर आ लगे। उनकी महायात्रा समाप्त हो गई थी। जेसन ने अपने साथियों को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और उनसे प्रेमपूर्वक गले मिलकर उनसे बिदा ली। वह वीर पुरुष अपने-अपने घरों को चले गये।

अब जेसन ने मीडिआ का हाथ पकड़ा और 'गोल्डन फ्लीस' सहित अपने चाचा राजा पिलिअस के महल की ओर चला।

यात्रा समाप्त हो चुकी थी। जिस जेसन को पिलिअस ने मरा हुआ समझ कर आत्मसंतोष किया था वही जीता-जागता सामने खड़ा था और वह भी 'गोल्डन फ्लीस' हाथ में लिये जिसे पाना ही कमाल था। अब भला पिलिअस करता भी क्या? बहुत अनमने होकर वह सिंहासन से उठा और नीचे उतर गया। जेसन उस पर जा बैठा और थिसेली के राज्य को उसने तुरंत अपने अधीन कर लिया। परन्तु ताज उसने अपने सिर पर नहीं रखा। चतुर दूतों को सभी दिशाओं में भेजकर अपने माता-पिता को उसने ढुंढ़वाया। तत्पश्चात् जब उनके रहने का स्थान मालूम हो गया तो स्वयं वहाँ जाकर उन्हें थिसेली ले आया। उसने अपने पिता से उस स्थान का राजा बनने तथा अपने असली राज्य को वापस लेने को कहा, पर राजा अब

६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुत वृद्ध हो चुका था। उसका हाथ और सारा शरीर काँपता था। हाथ में राज-दंड उठाने की शक्ति उसमें नहीं रही थी। उसने इंकार किया और बोला :

"इतने वर्षों के देशनिकाले और कष्टों ने मुझे अब जर्जर कर दिया है। मुझमें तनिक भी शक्ति अब बाकी नहीं रही है। मेरा बल जल की आखिरी बिंदु की भाँति मेरे शरीर से निकल चुका है। इंसाफ़ मुझे मिला ज़रूर है परंतु अब वह मेरे पास इतनी देर बाद आया है कि मेरे लिये अब उसका कोई उपयोग नहीं है...." वह बुरी तरह काँप रहा था।

मीडिआ ने सुना और तब उसने दयार्द्र होकर उस राजा पर जादू का असर किया और उसे विचित्र विधि से जवान बना दिया। वह तगड़ा और वीर्यवान, बलवान पुरुष हो गया। राजा बहुत प्रसन्न हुआ और तब उसने मीडिआ से कहकर अपनी स्त्री को भी यौवन दिलवा दिया। तत्पश्चात् वह थिसेली के राज्य को भोगने लगा। जेसन अपनी युवती सुंदरी स्त्री मीडिआ के साथ आनंद भोगने लगा।

इधर जब पिलिअस की लड़कियों ने सुना कि मीडिआ ने विचित्र जादू से राजा ईसन तथा उसकी रानी को यौवन दिला दिया है तो वह भी उत्सुक होकर उसके पास अपने पिता को यौवन दिलाने के लिये आईं। वह मीडिआ से बोलीं :

"हे सुंदरी हमारे पिता को भी यौवन प्रदान करो।"

मीडिआने स्वीकारात्मक सिर हिलाया। उसने उनके सामने ही उसी समय एक मेंढ़े को काट डाला और उसे जड़ी-बूटियों सहित एक बड़े पानी के बर्तन में डालकर उबाला और तत्पश्चात् वह जादू के मंत्र बोलने लगी। थोड़ी ही देर बाद एक छोटा सा मेमना उस पात्र में से बाहर निकल आया जिसे देखकर लड़कियाँ बहुत खुश हुईं। उन्होंने मीडिआ को बहुत धन्यवाद दिया और अपने घर चली गईं।

उस रात उन्होंने अपने पिता पिलिअस को मार डाला और टुकड़े-टुकड़े करके एक बड़े पानी के बर्तन में उन टुकड़ों को डालकर उबाला। सांथ ही वही जड़ी-बूटियाँ भी डाल दीं। जब वह मांस पक गया तो वह प्रतीक्षा करने लगीं कि वह अब निकलेगा, अब निकलेगा—परन्तु जब नहीं निकला और मांस पककर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिखरने लगा तो वह मीडिआ को बुलाने दौड़ीं पर वह उस समय जानबूझ कर छिप गई।

रात बीत गई और मीडिआ नहीं मिली। अब भला दिन में हो भी क्या सकता था ? उन्होंने बुरी तरह धोखा खाया था। रोती-कलपती वह अपने घर चली गईं। उन्हें घोर पश्चात्ताप हो रहा था कि वह अपने ही पिता की हत्यारी बन गई थीं।

मीडिआ ने प्यार से जेसन के गले में हाथ डालकर कहा :

"हे प्रियतम तुम्हें सताने वाले से बदला लिया जा चुका है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एपोलो का वंशज

प्रोक्रिस और ओरथिया की बहिन क्रिऊसा बहुत भाग्यहीन स्त्री थी। वह राजा एरेक्थिअस की पुत्री थी और अत्यंत सुंदरी थी। वह जब छोटी ही थी एक दिन जंगल में अपने साथियों से भटक गई। एक सुंदर पहाड़ी स्थान में वह अकेली फूल बीनने लगी। उसी समय एक बलिष्ठ पुरुष ने पीछे से उसे पकड़ कर दबा लिया। वह उसे न देख सकी, न चीख ही सकी कि इतने में उस पुरुष ने उसे उठा लिया और पलक मारते वह पास ही स्थित एक बहुत बड़ी अँधेरी गुफा में घुस गया। वह पुरुष इस प्रकार आया कि जैसे हवा में से एकदम उत्पन्न हो गया हो और उसने बलात्कार की योजना भी निश्चय ही पहिले से बना ली थी क्योंकि पल भर भी नष्ट किये बिना वह उसे लेकर अंधकार में घुस गया।

पहिले तो क्रिऊसा को उस अंधकार में कुछ भी दिखाई नहीं दिया परन्तु थोड़ी देर बाद उसने देखा कि उसका लाने वाला व्यक्ति अत्यंत बलिष्ठ और देवताओं की भाँति सुंदर था। परन्तु उस घबराहट में उसे कुछ न सूझा और वह अपनी माता का नाम लेकर बारंबार चिल्लाने लगी। परन्तु उस निर्जन स्थान में उसका चिल्लाना सब व्यर्थ था। जब वह बहुत चिल्लाई और रोने लगी तो वह सुंदर पुरुष मेघ गंभीर ध्वनि से बोला :

"हे सुंदरी मैं एपोलो हूँ। मैं तेरी सुंदरता पर रीझ गया हूँ। आ, और मुझे प्रसन्न कर।"

यह कहकर बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये ही उसने उसे पकड़ कर आलिङ्गन में बाँध लिया और प्रेम करने लगा।

संध्या समय जब क्रिऊसा घर वापस आई वह एक नई स्त्री थी जिसके हृदय में देवता एपोलो के प्रति घृणा भरी हुई थी। उसके केश और वस्त्राभूषण सब अस्तव्यस्त हो गये थे। वह छिप कर अंदर गई और उसने अपने आपको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकृतिस्थ किया। उसने किसी से भी अपनी बात नहीं कही। उस बलात्कार को अत्यंत गोपनीय रहने दिया, परंतु एपोलो की संतान उसके पेट में बड़ी हो रही थी। जैसे-जैसे दिन बीतते जाते थे परिस्थिति विकट होती जाती थी। वह बात खुलने और गर्भ जाहिर हो जाने से मर जाना अधिक पसंद करती थी। कन्या का छिपकर गर्भ धारण करना लोकनिंदा और हास्य का विषय था। वह जानती थी कि देवता एपोलो का नाम लेने से कोई नहीं मानेगा, उल्टे उसी पर सब शक करेंगे कि झूठ बोलती है। उस अवस्था में संभव था कि पिता अपमान के कारण मरवा भी डाले। निदान वह चुप रही। उसने बड़ी कठिनाई से बीमारी का वहाना बना कर तथा बहुत से वस्त्र अपने शरीर पर लपेट कर अपने गर्भ को छिपाया। वह यह कभी न जान सकी कि एपोलो ही उसे देखने वालों की दृष्टि में फ़र्क डाल देगा कि वे उस गर्भ को न देख सकें। जब गर्भ की अवधि पूरी हुई तो एक दिन चुपचाप वह उसी गुफा में अकेली जा पहुँची और अत्यंत पीड़ा के उपरांत उसने एक पुत्र को वहाँ जन्म दिया। तत्पश्चात् उसने अपनी पतली ओढ़नी और एक खास तौर पर बनाये हुए चोगे में उस बच्चे को लपेटा और उसे वहीं छोड़कर घर चली आई। यह चोगा उसने अपने हाथों से बनाया था और उसमें सुनहरे तारों से सुंदर कसीदे काढ़े थे। उसे अब एपोलो से अत्यधिक घृणा हो गई थी। उसी के कारण यह सब अनर्थ हो रहा था। वह उस नवजात शिशु को इसलिए वहाँ छोड़ आई थी कि उसे जहाँ से उसने पाया था वहीं वापस कर दिया जाय। दूसरे वह चाहती थी कि उस निर्जन स्थान में अवश्य उसे कोई जंगली जानवर खा जायगा और इस तरह गोपनीय बात कभी न खुलने पायेगी। वह घर लौट आई और अब स्वतंत्रता के साथ रहने लगी।

परन्तु उसका जी न माना। तीसरे दिन फिर वहीं पहुँची। बच्चे की ममता उसके हृदय में ऐसी उमड़ आई कि वह लाख प्रयत्न करने के बाद भी अपने को न रोक सकी। परन्तु वहाँ जाकर वह धक सी रह गई। बच्चा वहाँ मौजूद न था। उसने चारों ओर गौर से देखा कि संभव है कोई जानवर उसे खा गया हो परन्तु वहाँ खून इत्यादि का एक छींटा भी न था। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि उसके साथ वह ओढ़नी और चोगा भी गायब थे। तो क्या कोई ले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गया ? उसके मन ने तर्क किया परन्तु तभी उसे एक और बात सूझी। कोई ईगल (गरुण) या गिद्ध तो नहीं ले गया उसे ? और यही विचार पुष्ट होता गया। अवश्य ही कोई मांसभक्षी पक्षी ही उसे पंजे में दबाकर उड़ गया था। वह दुख से रोती हुई अपने घर वापस चली आई।

कई वर्ष बीत गये। अब क्रिऊसा एक पूर्ण तरुणी बन चुकी थी। उसका लड़कपन खत्म हो गया था। उसकी सुंदरता बिखर कर पूर्ण विकसित पुष्प की भाँति शोभा को प्राप्त हो रही थी। यौवन की तरंगों में वह मादक प्रतीत होने लगी थी। परन्तु उसके हृदय में अब भी अपने उस पुत्र की याद काँटे की भाँति चुभा करती थी। राजा ने देखा उसकी पुत्री विवाह के योग्य हो चुकी थी। उसने जुथस नामक एक परदेशी से उसका संबंध पक्का कर दिया।

यह आदमी जुथस सुंदर, ऊँचे डीलडौल वाला बलिष्ठ पुरुष था। वह एथेंस या एटिका का नहीं था बल्कि एक परदेशी था जिसके बारे में कोई कुछ नहीं जानता था। एक बार युद्ध में उसने राजा एरेक्थिमस की काफी सहायता की थी और तभी से राजा उस पर कृपादृष्टि रखता था। उसको अपनी रूपवती पुत्री देकर उसने एक प्रकार से अपना ऋण चुकाया था।

जुथस क्रिऊसा को पाकर धन्य हो गया। इतनी सुंदरी पत्नी पाकर वह प्रसन्न हो गया। परन्तु पति-पत्नी का आनंद बहुत दिनों तक नहीं बना रहा। वर्ष पर वर्ष बीत गये पर क्रिऊसा से कोई बच्चा नहीं हुआ क्योंकि जुथस परदेशी था। एथेंस के लोगों ने यह उसी का दोष माना। वह कहते 'भला अज्ञात कुलशील वाले युवक से संबंध स्थापित करने से कहीं अभिजात कुल की कन्या के गर्भ रह सकता है ? कभी नहीं ! यह विवाह ही अनुचित था।' चर्चा दिनोंदिन बढ़ती जाती थी यहाँ तक कि लोग जुथस से घृणा करने लगे। क्रिऊसा को पुत्र के अभाव में अपना वह पहला पुत्र बहुत याद आता था। परन्तु अब वह न जाने कहाँ था ? था भी कि नहीं, वह क्या जानती थी। सबसे बड़ी बात यह थी कि वह चाहकर भी न उसके बारे में पूछ ही सकती थी न उसे ढुंढ़वाने का ही प्रयत्न कर सकती थी। उसने अपने पति से भी उसे छिपा कर ही रखा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आख़िर एक दिन जुथस क्रिऊसा को साथ लेकर डैल्फ़ी गया। वहाँ वह एपोलो की पुजारिनों से मिलकर आशीर्वाद प्राप्त करना चाहता था। वह जानता था कि एपोलो ख़ुश होकर पुत्र शीघ्र दे देता है। क्रिऊसा मन ही मन एपोलो से घृणा करती थी। वह उसे उस भयंकर परिस्थिति में अकेला छोड़ गया था। और उसी के कारण उसे अपना पुत्र तक जंगल में छोड़ देना पड़ा था। वह वहाँ नहीं जाना चाहती थी परन्तु भला देवता से रुष्ट होने का क्या कारण देती। चुपचाप वह उसके (जुथस) साथ डैल्फ़ी चली गई।

परन्तु जब दम्पत्ति डैल्फी पहुँचे तो क्रिऊसा अपने पति को नगर में ही छोड़कर पहिले स्वयं एपोलो के मंदिर में पहुँची। वह अकेले में उस देवता से मिलकर विद्रोह की भावना प्रगट करना चाहती थी, साथ ही साथ उससे अपना पुत्र भी माँगना था। जब वह बाहरी दालान में पहुँची तो उसने वहाँ एक अत्यंत सुंदर युवक को पुजारियों के से वस्त्र पहने देखा। वह तन्मय होकर देवता की स्तुति कर रहा था और मधुर कंठ से गीत गाता हुआ देवता के पवित्र स्थान को सोने की झारी से निर्मल जल उँडेल कर धो रहा था। क्रिऊसा उसे देखकर आत्मसंतोष से न जाने क्यों एकदम भर उठी। उसने उस युवक की आँखों में अपना प्रतिबिंब पाया। वह उसके मधुर बोल, आकर्षक मूर्ति, और तन्मय गीत से अत्यंत प्रभावित हुई। उस लड़के ने देखा कि बहुमूल्य वस्त्राभूषणों से अलंकृत दिव्यज्योति से दमकती हुई एक अपूर्व सुंदरी निर्निमेष नेत्रों से उसकी ओर देख रही है। वह उस रूप और दमक से जैसे चकाचौंध हो गया। प्रशंसनीय दृष्टि से क्रिऊसा को देखते हुए वह बोला :

"हे उच्च कुल में उत्पन्न सर्वगुण सम्पन्ना देवी! तुम निश्चय ही संसार में सुख भोगने आई हो। कहो मैं दरिद्र तुम्हारी क्या सेवा करूँ?"

क्रिऊसा इस संबोधन को सुनकर चिढ़ गई। वह होंठ बिचका कर बोली :

"सुख न कहो वत्स! क्योंकि यह शब्द तो मुझसे बहुत ही दूर है—मैं तो बड़ी दुखी हूँ।" और उसके कमल के समान सुंदर नेत्र आँसू से भर गये। लड़का सुनकर चुप हो गया और विस्फारित चकित नेत्रों से उसे देखता हुआ खड़ा रहा। क्रिऊसा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने देखा वह कितना भोला था। वह स्फटिक की भाँति स्वच्छ और नीहार की भाँति पवित्र था। न जाने क्यों एक विचित्र आकर्षण से वह उसकी ओर खिंचती चली गई। उसमें उसने अपनी छाया का अनुभव किया और तब वह उससे बोली :

"हे वत्स तुम कौन हो ? इतनी छोटी आयु में तुम प्रौढ़ पुजारियों की भाँति कपड़े क्यों पहनते हो ? किन कठोर माता-पिता ने तुम्हें सांसारिक सुखों से वंजित कर यहाँ देवभक्त बना दिया है ? बताओ, क्योंकि मेरी जिज्ञासा बढ़ती जाती है।"

लड़के ने उसके प्रश्न सुने और वह सरल भाव से हाथ हिलाकर बोला :

"मुझे मालूम नहीं मैं किसका पुत्र हूँ। मेरा नाम आयन है और मुझे एपोलो की पुजारिन यहाँ लाई थी। मुझे उसने मंदिर की बाहर की सीढ़ियों पर लेटा हुआ पाया था। उसने मुझे बहुत प्रेम से पाल-पोस कर पुजारी बनाया है। मैं यहाँ बहुत ही प्रसन्न हूँ और सारे दिन मंदिर के काम करता हूँ। मुझे इस बात का गर्व है कि मैं मनुष्य की सेवा नहीं वरन् स्वयं देवता की सेवा करता हूँ।"

क्रिऊसा ने उसके मधुर बोल सुने और वह मंत्रमुग्ध सी उसकी ओर देखती रह गई। उसके हृदय में उसके प्रति एक अज्ञात और प्रबल प्रेम की भावना उमड़ रही थी।

अब आयन ने उससे साश्चर्य पूछा कि वह कौन थी। इतनी वार्ता के उपरांत उसमें अब साहस आ गया था। वह बोला :

"हे देवि ! तुम्हें देखकर मुझे आश्चर्य होता है। तुम कौन हो जो डैल्फी में इस प्रकार दुखी होकर आई हो। यहाँ तो जो भी आते हैं सभी हँसते हुए आते हैं। एक तुम ही इतनी उदास और गमगीन क्यों हो कि तुम्हारे नेत्र अश्रुपूर्ण हैं। हे देवि ! यह पवित्र देवता एपोलो का मंदिर है, यहाँ दुख निवास नहीं करता।"

एपोलो का नाम सुनकर क्रिऊसा के तन-बदन में आग सी लग गई। वह उत्तेजित स्वर से बोली :

"एपोलो ! 'वह झूठा देवता ! नहीं. . . .मैं उसके दर्शनों के लिए डैल्फी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं आई हूँ। मैं उसको देखना भी बुरा समझती हूँ....मैं तो यहाँ डैल्फी में और ही काम से आई हूँ...." और वह हाँफने लगी।

आयन देवता के प्रति ऐसे अपमानसूचक शब्द सुनकर भौंचक्का सा रह गया। आश्चर्य से वह उसकी ओर विस्फारित नेत्रों से देखने लगा। उसकी दृष्टि में अब उस स्त्री के प्रति क्रोध भी था। क्रिऊसा ने फिर कहा :

"....हाँ मैं जो कहती हूँ, सच है। मैं डैल्फी अपने एक जरूरी काम से आई हूँ। मेरा पति मेरे साथ है जो इस समय नगर में घूमने गया है। वह अवश्य एपोलो के ही दर्शनों के हेतु यहाँ आया है। वह पुत्र प्राप्ति के लिये वरदान माँगने यहाँ आवेगा....परन्तु मैं तो एक बच्चे को ढूँढ़ने आई हूँ जो अब तुम्हारे बराबर होगा....वह बच्चा....वह बच्चा...."

इतना कहकर वह घबरा गई, आगे न कह सकी। परन्तु शीघ्र उसने अपने को सँभाला और फिर झट बोली :

"....वह बच्चा मेरी एक सखी का था। वह उसके लिए बहुत रोती है। उसक जीवन उसके बिना सचमुच ही व्यर्थ है। उस स्त्री के साथ तुम्हारे इस पवित्र देवता ने धोखा किया था। उसे असहायावस्था में वह छोड़ गया था। उसके साथ बलात्कार करते समय उसने यह नहीं सोचा कि उस पर क्या मुसीबत आवेगी। ....कितने साल हो गये अब उन बातों को" लंबी साँस लेकर वह फिर बोली : "....कितने साल हो गये...और आज तक उस बच्चे का कुछ भी पता नहीं चला....कितनी तड़पती है उसकी माँ उसे देखने के लिये!!!" और वह रोने लगी।

आयन एपोलो पर लांछन सुनकर भीतर तक काँप गया। कौन है यह पागल स्त्री जो उस पवित्र देवता के नाम को कलुषित करने का साहस कर रही है। क्यों नहीं उस पर गाज गिर जाती। क्यों नहीं उन अपवित्र शब्दों का उच्चारण करते समय उसकी जीभ गलकर गिर जाती। नहीं, नहीं यह सब झूठ है। उसका एपोलो ऐसा नीच कार्य कभी नहीं कर सकता, उसने सोचा। फिर वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शांत स्वर में बोला :

"हे देवि ! तुम्हें भ्रम हो गया है। एपोलो महान् है। वह मनुष्यों पर बहुत दया करता है। वह उनके दुखों को दूर करने वाला पवित्र और सुंदर देवता है। वह ऐसा कभी नहीं कर सकता. . . .वह स्त्री स्वयं कुलटा होगी जिसने अपने किसी मित्र से व्यभिचार किया होगा और बाद में अपवाद के भय से देवता पर झूठा लांछन लगा कर अपने आपको निर्दोष साबित करने का प्रयत्न किया होगा. . . . ऐसी अनर्गल बातें तुम्हारे मुख से शोभा नहीं देतीं।"

क्रिऊसा के हृदय पर वह बातें वज्राघात के सदृश्य लगीं। उसे व्यभिचारिणी बता रहा है यह लड़का. . . .कैसे सहन कर सकेगी वह यह सब. . . .नहीं. . . . नहीं. . . .वह कभी इतनी अपमानित नहीं हुई। वह चिल्लाई :

"नहीं. . . .नहीं. . . .वह स्त्री पवित्र थी और अब भी पवित्र है. . . . दोष उसी एपोलो का है जो यहाँ पुष्पों से आच्छादित पूजा जा रहा है. . . .वह पुरुष और कोई नहीं स्वयं देवता एपोलो था. . . .मैं उसे जानती हूँ. . . .मैं इसीलिए यहाँ आई हूँ कि उससे पूछूँ कि वह पुत्र. . . .उस स्त्री का पुत्र कहाँ है जिसे उसने एक दिन अपवाद के भय से उसी गुफा में अकेला छोड़ दिया था जिसमें उसके साथ बलात्कार किया गया था. . . ."

आयन छोटा तो था पर था बुद्धिमान युवक। वह अब चुप हो गया। थोड़ी देर बाद उसने विनम्र कंठ से कहा :

"अगर जो कुछ तुमने कहा सच भी हो तो भी तुम्हें पवित्र एपोलो के मंदिर में बलि-खंभ तक उसे डाँटने, फटकारने अथवा लांछन लगाने की नीयत से नहीं जाना चाहिये। मनुष्यों को देवताओं की भक्ति ही उचित है. . . .इस प्रकार वार्ता से वह प्रसन्न नहीं होते।"

अब क्रिऊसा का धैर्य जाता रहा। उसे अपने प्रतिवाद में शिथिलता दिखाई देने लगी। निश्चय ही वह उस बालक से बहस नहीं कर सकती थी जो तनिक भी विचलित नहीं होता था और जो शांति की मूर्ति बना उसके सामने खड़ा था। परन्तु उसके हृदय में जो तूफान उठ रहा था उसे वह दबा भी न सकी। तो क्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस लड़के के कहने मात्र से वह एपोलो के सामने जाकर अपना खोया हुआ पुत्र वापस न माँगे ? माँगेगी वह, अवश्य माँगेगी और तब वह फूत्कार कर उठी। वह बोली : "मैं तुम्हारा कहना कभी नहीं मानूँगी. . . .नहीं मैं वही करूँगी जो मुझे करना चाहिये. . . .मैं अवश्य एपोलो से मिलूँगी। मैं आल्टर के सामने जाकर चिल्लाऊँगी. . . ." वह इतना ही कह पाई थी कि

". . . .नहीं अब उसकी आवश्यकता नहीं है" कहते हुए उसी समय वहाँ जुथस आ पहुँचा। वह आज अत्यधिक प्रसन्न था। उसके मुँह से खुशी की चमक निकल रही थी। वह ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे विजय प्राप्त करके आया हो. . . . .वह बोला :

"मुझे एपोलो ने मेरा पुत्र दे दिया है. . .अब तुम्हारे चिल्लाने की आवश्यकता नहीं रही।" उसने समझा था कि उसकी स्त्री एपोलो के सम्मुख पुत्र प्राप्ति के लिये ही चिल्लाने वाली थी। अब उसने अपनी भुजाएँ फैला दी और वह अत्यंत प्रेम से अपनी स्त्री को आलिङ्गन में लेने को उसकी ओर बढ़ा परन्तु उसके आश्चर्य और आशंका का ठिकाना नही रहा जब उसने देखा कि क्रिऊसा पीछे हट गई। वह कुछ आहत अवश्य हुआ परन्तु फिर उसके मुख पर मुस्कान नाचने लगी और अबकी बार वह बाँह फैलाकर आयन की ओर बढ़ा और चिल्लाया :

"पुत्र ! आओ और मेरे हृदय से लग जाओ···तुम मेरे ही पुत्र हो।"

आयन ने उसकी ओर गंभीर दृष्टि से देखा और पीछे हट गया। जुथस चिल्लाया :

"तुम मेरे अपने पुत्र हो. . . .मुझे पवित्र देवता एपोलो ने आज्ञा दी है कि मैं तुम्हें अपना पुत्र मानूँ. . . .आओ मेरे पास आओ. . . ." और उसने स्नेह से उसे अपने पास खींचना चाहा।

अब एक विचित्र खिंचाव क्रिऊसा के दिल में भर गया। भला उसका पति उस लड़के को अपना पुत्र कैसे बता रहा है। तो क्या जुथस का किसी अन्य स्त्री से संबंध था ? उसके मन में ईर्षा भर गई। उसने तीव्र कंठ से पूछा :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"कैसे है यह तुम्हारा पुत्र ? बताओ इसकी माता कौन है ?" उसके स्वर में अब अधिकार की भावना आ गई थी। वह उस स्त्री के बारे में जानना चाहती थी जो उसके पति की गुप्त प्रिया थी। उसके नेत्रों में एक प्रकार की चुनौती थी। परन्तु जुथस ने इन सब बातों की ओर बिना लक्ष्य किये ही उत्तर दिया:

"यह तो मैं नहीं जानता परन्तु जब स्वयं देवता एपोलो ने इसे मुझे दिया है तो मेरा भी विचार है कि यह मेरा ही पुत्र है।...मुझे ऐसा मानना भी चाहिये।"

आयन उन सब बातों को चुपचाप सुन रहा था। उसे वह दोनों ही अच्छे नहीं लग रहे थे। एक थी जो उसके देवता पर ही लांछन लगाती थी तो दूसरा जाने कौन था जो उसे ही अपना पुत्र बनाये लेता था। कौन हैं ये विचित्र लोग ? वह सोच रहा था। क्रिऊसा की क्षणिक ईर्षा अब जाती रही थी। अब एक आंतरिक घृणा से उसका मन विषाक्त हो गया था। भला उस अज्ञात कुलशील लड़के को वह अपना पुत्र कैसे मान ले ? जाने किस नीच स्त्री से वह उत्पन्न है। जाने उसकी माता कितनी घृणित व्यभिचारिणी थी ....नहीं...नहीं ऐसे जारज को वह अपना पुत्र कभी नहीं मान सकेगी ? ....उसका मन पुरुष जाति के प्रति विद्रोह कर उठा। उसने सोचा वह पुरुषों से घृणा करती है....सभी एक से हैं... देवता और मानव सभी एक से धोखेबाज़ हैं....।

उसी समय एपोलो के मंदिर की वृद्धा पुजारिन वहाँ आई। उसके हाथ में कपड़ों की एक पोटली थी। वह मंथर गति से चलती हुई वहाँ आई और जुथस से बोली :

"तुम्हें पुजारी जी बाहर बुला रहे हैं...शीघ्र जाओ और उनसे मिल लो।"

जब वह चला गया तो आयन से स्नेहसिक्त स्वर से बोली :

"पुत्र ! अब तुम अपने नये पिता के साथ जाने की तैयारी करो। पवित्र देवता की ऐसी ही इच्छा है।" तत्पश्चात् उसने उस पोटली को खोला और उसमें से उसने एक ओढ़नी और चोगा निकाला जिन्हें देखते ही क्रिऊसा बुरी तरह चौंक पड़ी। वह साँस बाँधकर सुनने लगी। वृद्धा बोली :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"जब तुम मुझे मिले थे यह कपड़े तुम्हारे शरीर से लिपटे हुए थे।"

"ऐसा!" खुश होकर आयन बोला: "तब तो मैं अपनी माता को ढूँढ़ लूँगा—इनकी सहायता से तो. . . ." परन्तु वह अपना वाक्य पूरा नहीं कर पाया। क्रिऊसा ने झपट कर उसे छाती से लगा लिया। अबकी बार उसने पीछे हटने अथवा विरोध करने का भी अवसर नहीं दिया, वह उसे छपटाकर उच्छ्वसित स्वर से बोली:

"पुत्र! मेरे पुत्र! तुम मेरे पुत्र हो! मैंने ही यह कपड़े तुम्हारे शरीर पर लपेट कर तुम्हें. . . .तुम्हें उस गुफा में छोड़ दिया था. . . .मेरे बेटे. . . .मेरे बेटे. . . ." और उसके नेत्रों में आनंदाश्रु छलक आये। आयन और वृद्धा विस्मित होकर उसे देख रहे थे। वह फिर वैसे ही बोली:

"यह चोगा मैंने अपने हाथों से तुम्हारे लिये बनाया था. . . .चोगे को खोल कर देखो. . . .मैंने दोनों कोनों पर सोने के तारों से वहाँ दो साँप बनाये थे. . . ." वह और न बोल सकी। उसका कंठ अवरुद्ध हो गया।

आयन और वृद्धा ने चोगा खोलकर देखा। वहीं कोनों पर सुनहरे सर्प कढ़े हुए थे। वह निश्चित ही उसकी माँ थी। आयन उसे चकित दृष्टि से देख रहा था। हठात् वह बोला:

"परन्तु मुझे तो एपोलो ने जुथस का पुत्र बतलाया है. . . .हे माता! यह कैसी पहेली है? मेरे कुछ समझ में नहीं आती।"

"एपोलो ने जुथस से प्रसन्न होकर तुम्हें पुत्रस्वरूप उसे दिया था. . . .सगा पुत्र नहीं बतलाया था।" क्रिऊसा ने तुरंत उत्तर दिया।

उसी समय आकाश से दिव्य ज्योति उन दोनों पर ऊपर से आकर पड़ी। उनके नेत्र चौंधिया गये। उन्होंने ऊपर सिर उठाकर देखा. . . .वे भय और श्रद्धा से मौन हो गये। हवा में अधर टँगी एक दिव्य मूर्ति खड़ी थी। वह भव्य और विराट् थी तथा उसमें एक विचित्र आकर्षण था। वह उन्हीं की ओर देख रही थी। उसने वज्रखचित बहुमूल्य वस्त्रादिभूषण पहिन रखे थे। उसके सिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर मणि-माणिकों से जड़ा चमचमाता हुआ मुकुट था। एक हाथ में चौड़े फल का चमकता हुआ भल्ल था। वह बोलीं :

"मैं पैलैस एथेना हूँ और मुझे पवित्र देवता एपोलो ने भेजा है। आयन अब क्रिऊसा का है। वह एपोलो और उसका और सपुत्र है। जब वह उस गुफा में छोड़ दिया गया था तो एपोलो ही उसे डैल्फी ले आया था—क्रिऊसा उसे अपने साथ एथेंस ले जाय। आयन उस राज्य और प्रसिद्ध नगर का योग्य शासक बनेगा—एथेंस एपोलो को बहुत प्रिय है क्योंकि वह उसी की भूमि है।"

माँ-बेटे ने भयमिश्रित श्रद्धा से पृथ्वी पर गिर कर उस देवी की अभ्यर्थना की। जब वह उठे पैलैस एथेना जा चुकी थी। अब आकाश में कुछ भी नहीं था। उन्होंने एक दूसरे की ओर प्रेम से देखा। आयन अपनी माता से मिलकर बहुत ही प्रसन्न हुआ।

जब जुथस अपने साथ प्रफुल्लवदना क्रिऊसा और उसके पुत्र आयन को लेकर एथेंस वापस आया तो एथेंस के रहने वालों ने उसका भव्य स्वागत किया। अब किसी में साहस नहीं था जो उस पर उँगली उठाता। अब उसकी स्त्री पुत्रवती हो गई थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एपोलो का बेटा

थिसली में यूनान देश की विख्यात सुंदरी कौरोनिश रहती थी। उसकी सुंदरता को देखकर चाँद भी शर्माता था। वह एक धनी व्यक्ति की पुत्री थी और ऐशोआराम से जीवन की रँगरेलियाँ मनाती हुई स्वच्छंद विचारों से पूर्ण आनंदपूर्वक रहती थी। उसके केश सूर्य की किरणों की भाँति सुनहरे और रेशम के तारों से भी हल्के घुँघराले और चमकते थे। समुद्र की सी नीली आँखों वाली गौरांगी, शुभ्रवसना, जब वह अपनी सुगठित देह को लचक देकर चलती तो उन्नत और भारी वक्ष मानो उसकी पतली सुती हुई कमर पर विशाल नितंबों से संतुलित होते थे। वह कोकिल कंठी थी, जिसे सुनकर मनुष्य तो क्या देवता भी विचलित हो उठते थे।

एक बार वह अपने उद्यान में घूमते हुए फूल बटोर रही थी, उस समय वहाँ एकांत होने के कारण उसके वस्त्रादिक अस्तव्यस्त थे। तप्त कंचन की भाँति दमकता हुआ यौवन उसके वस्त्रों को फाड़कर बाहर निकल आना चाहता था। ऐसे ही समय में आकाश मार्ग से जाते हुए सौंदर्य के देवता परम पराक्रमी एपोलो ने उसे देखा और ठिठक कर खड़ा हो गया। वह कौरोनिश की सुंदरता और उफनते हुए यौवन को देखकर विचलित हो उठा। पृथ्वी पर उतर कर वह उसके पास गया और उसने प्रेम की याचना की। कौरोनिश ने एपोलो की ओर गौर से देखा और गंभीर मुद्रा से पूछा :

"तुम कौन हो ?"

एपोलो ने सुनकर कहा :

"हे सुंदरी सौंदर्य को जन्म देने वाला ओलिम्पस के राजा ज़ियस का मित्र मैं देवता एपोलो हूँ, मैं तेरी सुंदरता पर रीझ गया हूँ। सारे संसार की संपत्ति तेरे चरणों पर मैं लाकर पटक दूँगा। तू सुख और ऐश्वर्यपूर्वक मेरे साथ आनंद भोग।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कौरोनिश चुप रही। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। उपयुक्त अवसर जानकर एपोलो ने अपने बलिष्ठ हाथों पर उसे उठा लिया। कौरोनिश ने कोई आपत्ति नहीं की और सहर्ष उसने उसे आत्मसमर्पण कर दिया।

इसके बाद एपोलो प्रायः नित्य ही उसके पास आने-जाने लगा। इसी प्रकार कई दिन बीत गये। कौरोनिश ने उसको आत्मसमर्पण किया तो था, परन्तु न जाने क्यों वह उसे पति रूप में मानती नहीं थी। और उसने एक अन्य पुरुष से जो देवता नहीं था प्रेम करना प्रारंभ कर दिया। वह उस पुरुष से तब मिलती जब एपोलो न होता। उस प्रेमी को भी एपोलो के बारे में कुछ मालूम नहीं था। इसी तरह कुछ महीने गुज़र गये। कौरोनिश इतनी बुद्धिहीन थी कि प्रथम तो उसने देवता के प्रेम को ठुकरा कर एक साधारण संसारी व्यक्ति से प्रेम किया। दूसरे उसे इतना भी ध्यान नहीं रहा कि एपोलो जो प्रेम में कभी किसी को धोखा नहीं देता था। भला अपनी प्रेमिका से कैसे धोखा खा सकता था। निश्चय ही यदि उस युवक को एपोलो के बारे में कुछ भी पता होता तो वह उसके भय से भी भाग जाता और कौरोनिश से मिलने का कभी उद्योग न करता।

उन दिनों संसार की सारी बातें गिद्ध ही ओलिम्पस (स्वर्ग) में जाकर देवताओं को सुनाया करते थे। तब तक वह श्वेत पंखों वाले सुंदर पक्षी थे। वह आकाश में बहुत ऊँचा उड़कर एक ही साँस में स्वर्ग तक जाने की क्षमता रखते थे। कुशाग्र बुद्धि और दूरदर्शी वे गिद्ध देवताओं को बहुत प्यारे थे। एक दिन कौरोनिश अपने प्रेमी के साथ जल विहार कर रही थी। विहार के उपरांत जब वह तीर पर आई उस समय उसके उस सौंदर्य को देखकर वह प्रेमी विचलित होकर उसकी ओर बढ़ा और उसे उसने अपने बाहुपाश में लेकर आलिंगन किया, कौरोनिश भी शरीर ढीला छोड़कर उससे लिपट गई। उसी समय आकाश में उड़ते हुए श्वेत पंखों वाले एक सुंदर गिद्ध को देवता की प्रिया को इस प्रकार एक साधारण मानव के आलिंगन में देखकर परम आश्चर्य हुआ और वह उसी क्षण पँख फैला कर ओलिम्पस की ओर उड़ चला।

रत्नजड़ित सुवर्ण के खंभों पर टिकी चमचमाती हुई चाँदी की छत के नीचे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विल्लोर से छनकर आती हुई सतरंगी सूर्यरश्मियों से उद्दीप्त उस विशाल भवन के एक खंड में शुभ्र शैय्या से आच्छादित हाथीदाँत से बने पलँग पर एपोलो उस समय नाना सुंदरियों से घिरा हुआ अधलेटा सा ओलिम्पस के संगीतज्ञों से संगीत सुन रहा था। उस समय उन स्वर लहरियों से उसका वह विशाल भवन गूंज रहा था। चपल सुंदरियों के हाथ विद्युत गति से हार्प के तारों पर फिरते और चाँदी के लायर में से निकली हुई तानें मानो सजीव होकर वहीं नृत्य कर रही थीं। त्रिभुवन में विख्यात सुंदर एपोलो उस समय आनंद से विभोर होकर झूम रहा था। तरुणियाँ श्रमश्लथ एपोलो की देह को अधिक से अधिक स्पर्श करने को लालायित होकर दबा रही थीं। परन्तु एपोलो का ध्यान उनकी ओर नहीं था। संगीत की मधुर लहरियों में खोया हुआ सौंदर्य का देवता उस समय भी अपनी मानव प्रिया कौरोनिश के बारे में सोच रहा था। उसी समय आकाश में चक्कर देता हुआ एक गिद्ध उस कक्ष में बने हुए पश्चिम की ओर खुलने वाले एक चाँदी के जँगले पर उतरा। वह श्वेत गिद्ध उस समय थका हुआ सा मालूम होता था। एपोलो ने उसे देखा और अंदर आने की आज्ञा दी। गिद्ध उड़ा और पलँग के दाहिनी ओर लटके हुए मोटी डंडी के चाँदी के चक्र पर बैठ गया। संगीत रुक चुका था। परंतु अभी तक उन मधुर ध्वनियों से वह दीर्घ भवन गुंजायमान था। ऐसा लगता था जैसे वह ध्वनियाँ सजीव होकर घूम रही थीं।।

एपोलो के इशारा करने पर गिद्ध बोला :

"सौंदर्य के राजा तथा सच्चे प्रेमी एपोलो की मानवी प्रिया कौरोनिश आज स्वेच्छापूर्वक मर्त्यलोक के एक साधारण युवक के साथ काम वासना से उद्दीप्त होकर उसके बाहुपाश में कसी हुई नदी तीर पर लेटी थी। मैंने उसे वस्त्रों से अस्तव्यस्त उस पुरुष के आलिङ्गन में बद्ध उच्छ्वसितावस्था में देखा है। जिस एपोलो ने प्रेम में कभी किसी को धोखा नहीं दिया वही कौरोनिश से धोखा खा गया है।"

एपोलो ने सुना और धक्क से रह गया। उसकी छाती पर मानो किसी ने करारा घूँसा मार दिया था। किंकर्त्तव्यविमूढ़ सी हालत में वह ठगा सा बैठा हुआ शून्य की ओर देख रहा था। कुछ क्षण तो वह अपने विचारों में ऐसा खोया हुआ था

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि उसे अपने तन-बदन किसी की भी सुध न रही । जब उसे वास्तविकता का ध्यान हुआ तो वह क्रोध से जलने लगा । उसके नेत्रों से अंगारे फूट निकले, उसकी भुजाएँ फड़कने लगीं । स्त्रियाँ भयभीत होकर पीछे हट गईं । उसने देखा सामने चाँदी के चक्र पर गिद्ध शांत भाव से बैठा है । उस क्षण ऐसा लगा मानो वही उस विष की जड़ था, जिसकी अग्नि में एपोलो जल रहा था । क्रोधित होकर एपोलो चिल्लाया । वह बोला :

"दुष्ट यह सब तेरे ही कुकृत्य हैं । जाओ मेरे शाप से इसी घड़ी से तेरे पंख काले हो जायँ ।"

आकाश में बिजली कौंधी और उसी घड़ी गिद्ध के पंख काले हो गये । गिद्ध का मन विक्षुब्ध हो उठा । नेकी करने का नतीजा उसे दंड से मिला । ओलिम्पस में आज यह पहला उदाहरण था जब किसी देवता ने अन्याय किया था । परन्तु उस समय एपोलो के क्रोध के सामने आने का साहस किसी को नहीं मिला । एपोलो ने जब हाथ उठाकर धनुर्धरों में वीर श्रेष्ठ वीरांगना आर्टरमिस को आज्ञा दी कि वह तुरंत अपने अचूक बाणों से कौरोनिश और उसके प्रेमी को उसी क्षण मार दे । आर्टरमिस ने तुरंत आज्ञा का पालन किया और विष से बुझे हुए दो फलकदार तीर अपने तूणीर से निकाले । धनुष पर अनुसंधान करके पृथ्वी की ओर छोड़ दिये विद्युत गति से वह तीर जाकर काम क्रीड़ा में रत कौरोनिश और उसके प्रेमी के हृदय को फाड़ कर पार निकल गये । सुंदरी कौरोनिश और उसका प्रेमी निर्जीव होकर गिर पड़े । रक्त रंजित वह दोनों तीर हत्या के प्रमाणार्थ लौटकर आर्टरमिस की तूणीर में घुस गये । एपोलो ने देखा गिद्ध जा चुका था । वह उठा और खिड़की के पास आ खड़ा हुआ । उसने देखा दूर पृथ्वी पर थिसेली नदी के तट पर लकड़ी की बड़ी चिता पर कौरोनिश निर्जीव लेटी हुई है और उसके बन्धुजन उदास चारों ओर खड़े हैं । कौरोनिश के बायें स्तन को फाड़कर तीर से फटे हुए हृदय का रक्त अब वहाँ जम गया है । कौरोनिश अब भी अपूर्व सुंदरी प्रतीत हो रही थी । एपोलो को उस समय उस पर अत्यंत दया हो आई । उसके प्रेम ने उसके हृदय को कचोटा । परन्तु अब तो वह मर चुकी थी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और मृत प्राणी को सजीव करना देवताओं के लिए अवैध था। हठात् एपोलो को याद आया कि रूपवती कौरोनिश गर्भवती थी। जिस प्रकार जीयस ने शिमली की मृत्यु पर उसके गर्भ स्थित शिशु को बचाया था उसी प्रकार एपोलो ने इस समय अपने बालक को बचाने की ठानी। वह स्वतः बोला :

"मैं अपनी संतान को अवश्य बचाऊँगा।"

एपोलो ने दाहिना हाथ सीधा किया जिसमें से बिजली फूट कर निकली। वह तड़तड़ाई और ब्रह्मांड को कँपाती हुई कौरोनिश की कुक्षि फाड़कर शिशु को अंदर से बाहर निकाल लाई। उसके आलोक से सबों की आँखें मिच गईं, किसी को कुछ नहीं दिखा। जब उनकी आँखें खुलीं उस समय चिता हरहरा कर जल रही थी। अग्नि की भीषण लपटें धू-धू करके आकाश की ओर उठ रही थीं। एपोलो ने प्यार से अपने पुत्र उस नवजात शिशु को उठाकर हृदय से लगा लिया।

उसे लेकर एपोलो सुवर्ण पंखों को पहन कर उड़ा और पिलियन पर्वत पर जाकर दयालु और वृद्ध सिनेटौर चिरन के पास पहुँचा। चिरन बहुत बुद्धिमान व्यक्ति था। उसकी लंबी श्वेत दाढ़ी नाभि तक लटकती थी। वह उस समय अपनी विशाल कंदरा में चाँदी के सिंहासन पर बैठा था। एपोलो को देखकर वह उठ खड़ा हुआ और करबद्ध होकर उसने उसकी अभ्यर्थना की। एपोलो ने उसके हाथों में उस शिशु को थमा दिया और गद्गद् वाणी से कहा :

"हे चिरन! तू पिलियन का सिनेटौर (रखवाला) है। तू दयालू है और तेरी बुद्धि से ओलिम्पस के सभी देवतागण प्रसन्न हैं। ले यह मेरा पुत्र है इसकी माता सुंदरी कौरोनिश मृत्यु को प्राप्त हो गई है, अब तू ही इसका पालन कर। क्योंकि तेरे अतिरिक्त कोई भी इसकी देखरेख न कर सकेगा...." फिर हाथ ऊँचा उठाकर एपोलो ने उच्च स्वर से कहा :

"यह मेरा पुत्र है। इसका नाम एसक्यूलैपियस है। यह संसार में इसी नाम से प्रसिद्ध होगा।" और उसी क्षण उसके उसी हाथ में से विद्युत निकली, वज्र कड़का और सारा पर्वत प्रदेश गूंज उठा। एसक्यूलैपियस का नाम सारे संसार में फैल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गया । देर तक पर्वत की कंदराओं में वह नाम गूँजा किया । चिरन ने भय से आँखें मूँद लीं । जब गूँज थमी उसने आँखें खोलीं । एपोलो जा चुका था ।

चिरन उन दिनों बच्चों का लालन-पालन करने में प्रसिद्ध था । उसने कई राजा के पुत्रों को पाल-पोस के योग्य बनाया था । परन्तु इस कौरोनिश के पुत्र को न जाने क्यों अपने हृदय का टुकड़ा समझ कर अत्यंत प्यार करता । वह उसे विशेष योग्य और संसार में महान् बनाना चाहता था । जब एसक्यूलैपियस बड़ा हुआ और लड़का ही था तो उसमें उसी समय ज्ञान की खोज कर लेने की एक विशेष रुचि उत्पन्न हो गई थी । वह गंभीर प्रकृति का बालक था जो अधिक से अधिक विद्या ग्रहण करने की धुन में लगा रहता । अन्य राजपुत्रों की भाँति वह अपना समय केवल दौड़धूप में अथवा घुड़सवारी में नहीं बिगाड़ता था ।

चिरन विख्यात वैद्य था । जड़ी-बूटियों का उसको बहुत ज्ञान था; यहाँ तक कि वह स्वयं औषधियों का भंडार कहलाता था । इसके अतिरिक्त वह बड़ा प्रसिद्ध मंत्रज्ञ भी था तथा ठंडी हवाओं और शीतल जल द्वारा भी इलाज करता था। सारे ओलिम्पस और मृत्युलोक में उसके समान धुरंधर कोई नहीं था । उसने अत्यंत स्नेह से अपने इस शिष्य को पूरी विद्या पढ़ाई । जब भी कोई मरीज उसके पास आता तो चिरन अपने इस शिष्य को सदा अपने पास रखता । औषधियाँ बनाने की विधि, उनका प्रयोग और मरीजों पर उनका असर यह सभी बातें वह उसे अच्छी तरह सिखाता था । एसक्यूलैपियस कुशाग्र बुद्धि का शिष्य था जो अपने पिता तुल्य गुरु की प्रत्येक बातों को गहन कर समझ लेता था । उसकी याददाश्त बड़ी जबरदस्त थी । एक बार किसी भी बात को जानने के उपरांत दोबारा पूछने की उसे कभी आवश्यकता नहीं पड़ती थी । जब वह तरुणावस्था को प्राप्त हुआ उस समय वह मेधावी बन चुका था । चिरन की सारी विद्या मानो उसने घोट कर पी ली थी । धीरे-धीरे उसका यश फैलने लगा । वह औषधियों के नये-नये प्रयोग करता और कठिन से कठिन रोगों को जादू की भाँति पल भर में दूर कर देता था । उसने नाना प्रकार की नई औषधियाँ बनाईं और इस प्रकार वह अपने गुरु से भी आगे बढ़ गया । परन्तु फिर भी वह उसकी इज्जत करता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था। एक बात एसक्यूलैपियस में बड़ी विचित्र थी कि वह इतना सब कुछ जानते हुए भी अपने आप को वैद्यक के उस अनन्त समुद्र की केवल एक बिन्दु समझता था। चिरन जानता था कि यही बात उसके गहन ज्ञान की रहस्य थी। एसक्यूलैपियस का नाम धीरे-धीरे सारे देश में फैल गया। उसने अपने जीवन का मुख्य ध्येय मनुष्य मात्र की सेवा करना ही बना लिया था। उसकी उन सेवाओं से अब लोग रोगग्रस्त होकर नहीं मरते थे। नतीजा यह हुआ कि कुछ ही दिनों में मरने वालों की संख्या घट गई। इस परिवर्तन से हेड्स को चिंता हुई और उसने ज्यूपिटर से जाकर एसक्यूलैपियस की शिकायत की। वह बोला :

"यदि यह व्यक्ति इसी भाँति इलाज करने के लिये स्वतंत्र रहा तो मेरा तो साम्राज्य ही छिन्न-भिन्न हो जायगा।"

ज्यूपिटर और अन्य देवतागण उसी समय एपोलो के उस पुत्र के मन ही मन विरुद्ध हो गये। परन्तु प्रत्यक्ष में उसका कोई अपराध नहीं था जो खुलकर उसे दंडित करते। और फिर वह जो एपोलो का पुत्र था उससे छेड़छाड़ करने का किसी का साहस भी नहीं होता था। उन्होंने उस पर उस समय केवल यही आरोप लगाया कि वह मनुष्य होकर इतने ऊँचे विचारों को सोचता है जो मनुष्य की सीमा के बाहर हैं।

एक बार एसक्यूलैपियस ने एक मृत आदमी को जिला दिया। थीसिअस का पुत्र हिप्पोलिटस जब रोग से मर गया एसक्यूलैपियस वहीं मौजूद था। थीसिअस ने उसे बहुत धन देने का प्रलोभन दिया और अपने पुत्र को पुनर्जीवित करने के लिए कहा। पहिले तो वह ऐसा करने से झिझका परन्तु फिर उसने अनुमति दे दी। उसने एक विचित्र औषधि पहाड़ों पर जाकर बनाई और उसे हिप्पोलिटस को पिलाया। हेड्स परेशान हो गया क्योंकि देखते-देखते हिप्पोलिटस की आत्मा पाताललोक को छोड़कर सूर्य के प्रकाश में जगमगाने वाली दुनिया में वापिस आ गई और मृत शरीर में घुस गई। अब वह क्रुद्ध हो उठा।

ज्यूपिटर की सृष्टि में यह अधिकार किसी देवता को भी नहीं था कि वह मृत को दुबारा जीवित करे। फिर भला एसक्यूलैपियस का यह कार्य किस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सहन किया जा सकता था। देवताओं ने उसे मृत्युदंड देने के लिये ज्यूपिटर से अनुरोध किया। ज्यूपिटर ने अपने वज्र को घुमाया और एक ही प्रहार से एसक्यूलैपियस को मार डाला। वह दुनिया का दोस्त, रोगियों का प्राणदाता अब सदा के लिये मर गया।

एपोलो मन ही मन क्रुद्ध हो उठा। उसे अपने पुत्र को मरने का बड़ा दुख हो रहा था—वह सीधा एटना गया जहाँ साईक्लोप्स ज्यूपिटर के लिए वज्र बनाते थे। उसने उन्हें तीरों से बींध डाला जिससे वह सभी मरणासन्न होकर गिर गये।

जब ज्यूपिटर को यह मालूम हुआ वह एपोलो पर बहुत रुष्ट हुआ। उसने उसे नौ वर्ष के लिये राजा एड्मिट्स का दास नियुक्त कर दिया जहाँ उसे दासता करनी पड़ी। यह वही राजा एड्मिटस था जिसकी स्त्री ऐल्सैस्टिस को हर्क्युलिस हेड्स से छुड़ा कर लाया था।

थीसिअस का लड़का हिप्पोलिटस एसक्यूलैपियस द्वारा जब पुनर्जीवित हो उठा था तो फिर हेड्स के काबू में कभी नहीं आया। उसके बाद वह अमर हो गया और इटली चला गया जहाँ वह बर्बिअस के नाम से प्रसिद्ध हुआ और देवताओं की भाँति पूजा जाने लगा।

एसक्यूलैपियस भी मरने के बाद युगों तक पुजता रहा। उसके भी कई मंदिर बनाये गये जहाँ सैकड़ों वर्षों तक अंधे, बहरे, अपाहिज तथा रोगी आकर स्वास्थ्य के लिये प्रार्थना किया करते थे। वह उसे बलि चढ़ाते और फिर वहीं सो जाते। स्वप्न में एसक्यूलैपियस उन्हें दर्शन देता और साँपों द्वारा उनका इलाज कराता था। इसी कारण इसके मंदिर में साँप भी बहुत रहते थे जो उसे अत्यंत प्रिय थे। वह उसके पवित्र चाकर मानें जाते और पूजे भी जाते थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ईको मर गई

सुंदर नारसिस्सस स्त्रियों से घृणा करता था। कोमलाङ्गी तरुणी के स्पर्श से तो क्या, वह उसकी छाया से भी दूर भागता था। वह बलिष्ठ युवक अपने इस विचित्र गुण के कारण स्त्रियों के लिये एक विकट समस्या बना हुआ था। सुंदरी नवयुवतियाँ जब उसे लुभाने के लिये अपने अङ्गों का प्रदर्शन करती हुई उसे देख कर कटाक्ष करतीं तो वह घृणा से उनकी ओर से मुँह फेर लेता। स्त्रियों के लिये यह बहुत अपमान का विषय होता और वह कभी-कभी तो उसे अकेला पाकर चारों ओर से घेर कर पकड़ भी लेतीं परन्तु तब वह गालियाँ देता हुआ उन पर पत्थरों की वर्षा करने लगता था। एक बार वसन्त ऋतु में जब चारों ओर वन-उपवन में सुगंधित पुष्प अपनी मादक गंध फैलाकर वातावरण को मद लालसा से परिपूर्ण कर रहे थे, युवतियों की एक टोली ने एक 'ओक' के पेड़ की छाया में उसे सोते देखा। निर्जन देखकर युवतियों ने आज अपनी पूर्ण शक्ति लगाकर उसे रिझाने का प्रयत्न किया। पास ही सरोवर में नीला जल सूर्य की आभा से चमक रहा था। मादक समीरण बहने लगा। स्त्रियों ने अपने वस्त्रों को उतार कर सरोवर में जलक्रीड़ा आरंभ कर दी। वह किलकारियाँ मारतीं एक दूसरी के पीछे जल में संतरण करने लगीं और जल को ऊँचा उछाल कर केलि करने लगीं। तभी एक सुंदरी जिसका नाम ईको (प्रतिध्वनि) था चुपके से उसी रूप में तीर पर आई और उसने अपनी कोमल हथेलियों की खोंच बना कर नारसिस्सस पर पानी उछाल दिया। जल उसके मुँह पर लगा और वह जाग गया। वह झटके के साथ जब उठा तो उसकी दृष्टि नग्न खड़ी मुस्कराती हुई तरुणी ईको पर पड़ी। वह मद-विह्वला स्त्री उस समय ऐसी लग रही थी मानो सरोवर के तीर पर स्वयं चंद्रमा अपने शतशत प्रकाश से उद्दीप्त हो रहा हो। उसकी कोमल, स्निग्ध, गोरी त्वचा पर जलबिन्दु मोती की भांति चमक रहे थे। उसके पिंगल, लंबे केश जल से भींग कर उसके शरीर पर अस्तव्यस्त पड़े थे। नीले समुद्र की भाँति गहरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विशाल नेत्रों से वह चकित हिरनी की भाँति उसे देख रही थी। उसकी शुभ्र दंता-वलि खिली हुई मोतियों की आभा के समान चमचमा रही थी। उन्नत पयोधरों को श्वाँसों के साथ उठाती-गिराती वह मोहिनी उस समय साक्षात् 'साईके' जैसी लग रही थी। स्वयं ज्यूपिटर ने उसे अपने सुवर्णमय सिंहासन पर बैठे ओलिम्पस की ऊँचाई से उसी समय देखा और वह उस पर मोहित हो उठा परन्तु नारसिस्सस ने उसे क्रोध से घूरा और घृणा से मुँह फेर लिया। ईको ने उस पर अब की बार फिर जल फेंका और इतने में कि वह हटे या भागे, जल से बाहर निकल कर सभी स्त्रियों ने उसे चारों ओर से घेर कर पकड़ लिया—वह उसे बलपूर्वक पकड़ कर जल में ले गईं और उसे बीच में रखकर नाना प्रकार से उसको स्पर्श करती हुई विचलित करने का प्रयत्न करने लगीं। ज्यूपिटर आकाश से यह सब लीला देख रहा था और रह-रह कर वह उनके बीच उपस्थित होकर केलि करने की चाहना करत था। परन्तु जूनो के निकट ही होने के कारण वह एकदम ऐसा न कर सका। नारसिस्सस क्रुद्ध सर्प की भाँति फुफकार रहा था। जल में कई बार गोते लगाने के कारण वह हाँफ भी रहा था। परन्तु स्त्रियाँ थीं कि आज उन्हें खिलौना मिल गया था और वह ठिठोली करती ही जाती थीं। नारसिस्सस अब हाथापाई पर आ गया और उसने पास ही खड़ी ईको को ज़ोर से ढकेल दिया। लाल-लाल आँखें किये हुए वह अब क्रोध से भनभनाता हुआ तीर की ओर चला और तभी एक युवती ने पीछे से उसके पैर पकड़ कर खींच लिये। वह छपाक से मुँह के बल आग पानी में गिरा और युवतियों ने उसे घेर लिया। उन्होंने अबकी बार मुस्कुराते हुए उसके शरीर से अपने गीले परन्तु वासना से तप्त शरीर सटा दिये और उस पर उष्ण साँसें छोड़ने लगीं। नारसिस्सस अधिक सहन नहीं कर सका। उसने नेत्र मूँद लिये। ज्यूपिटर आश्चर्य से देख रहा था कि वह कैसा विचित्र पुरुष था जिस पर सुंदरियों के नग्न शरीरों और वासनामय श्वाँसों का भी कोई असर नहीं होता था। वह कैसा अपराजित पौरुष था जो अजस्र रूप से बहते हुए यौवन को अपने इतने समीप पाकर भी विचलित नहीं होता—और ईको ने उसी समय अन्य स्त्रियों को ढकेल कर अत्यंत विकल होकर उच्छ्वसित श्वाँसों से हाँफते हुए यौवन के खिंचाव से फटते अपने मांसल गौर और कोमल शरीर को नारसिस्सस के अंक में डाल दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नारसिस्सस भयानक चीत्कार करते हुए पीछे हटा और भीम वेग से हाथ-पैर चलाते हुए उसने अपने आपको उन सभी स्त्रियों से छुड़ा लिया और तीव्र गति से वह तीर पर चढ़ कर एक ओर भाग गया। उसके मुख से अपार घृणा का भाव झलक रहा था और वह उन सभी स्त्रियों से क्रुद्ध हो गया था। स्त्रियों की ओर मुड़ कर उसने एक बार भी नहीं देखा और सीधा चला गया। युवतियाँ इस अपमान से विक्षुब्ध हो उठीं। कई एक को तो रुलाई भी आ गई थी। धीरे-धीरे वे जल से बाहर निकलीं और वस्त्र धारण करने के बाद चली गईं। किसी को उस समय ध्यान ही नहीं रहा कि सुंदरी ईको अपमान के इस आघात से पीड़ित होकर मौन बनी तीर के जल में बैठी ही रह गई थी। अपने ध्यान में स्वयं ईको को भी विचार नहीं आया कि अब वह उस निर्जन स्थान में अकेली रह गई थी। वह अब भी वस्त्रहीन वासना से दग्ध निमीलित नेत्रों से आकाश की ओर देखती हुई मानो स्वप्न सा देख रही थी।

ज्यूपिटर ने देखा समय और वेला अनुकूल थी। उसने मुड़कर देखा तो मालूम हुआ जूनो कहीं दूर, बहुत दूर चली गई है। वह उठा और अधीर पगों को सँभालता हुआ आकाश गंगा से उतरता हुआ पृथ्वी पर आया और उसी सरोवर के तीर पर पहुँच कर उसने पीछे बैठ कर ईको के कोमल शरीर को अंक में लेकर दबा लिया। ईको इस अचानक स्पर्श से चौंक उठी और निकट ही था कि वह चिल्ला उठती तभी ज्यूपिटर ने उसे अपने दिव्य रूप में दर्शन दिये। सूर्य के तेजोमय पुंज के समान उद्दीप्त ज्यूपिटर अपार पौरुष का केन्द्र बना हुआ खड़ा था। सुवर्णमय किरीट में नाना प्रकार के रत्न उस आलोक में मानो तड़प रहे थे। उसके हाथों में सारे विश्व को कँपा देने वाला वज्र था जिसके तनिक हिलने से सृष्टि काँपने लग जाती थी। उस दिव्य रूप को देखकर वह वासनोन्मत्त तरुणी विकल होकर मछली की चपलता से नेत्रों को घुमाती हुई मानो एकत्रित यौवन के ज्वार को बिखेरने को लालायित हो उठी थी। ज्यूपिटर मुस्कुराया और बोला :

"हे सुंदरी मैं ज्यूपिटर हूँ। तेरा अखंड यौवन देखकर आकाश से उतरकर मैं तेरे पास आया हूँ......आ! मुझे अपने प्रेम बाणों से आहत कर।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ईको ने सुना और विभोर होकर अपने अंग को ढीला छोड़ते हुए ज्यूपिटर के अंक में गिर पड़ी—

ज्यूपिटर ईको के साथ बहुत समय तक आनंद भोगता रहा। वह नित्य समय निकाल कर उसके पास आता और तब जब वह प्रेम में मग्न होकर केलि करते जैफायर की आज्ञा से नीले और सुनहरे बादल उन्हें घेर कर जूनो की दृष्टि से बचा लेते थे। ईको अपने देवता प्रेमी को पाकर उन दिनों सभी कुछ भूल गई थी।

एक दिन जूनो की दृष्टि बचाकर ज्यूपिटर वन सुंदरियों के साथ आनंद मनाने पृथ्वी पर आया। वन की सुंदरियाँ अलौकिक सौंदर्य वाली थीं। वह ज्यूपिटर को बीच में लेकर नाना प्रकार से नृत्य करती हुई उसे रिझाने लगीं। आज ज्यूपिटर ने ईको को वन के छोर पर इसलिए बिठा दिया था कि वह आपत्ति की सूचना, यदि जूनो आ जाय तो, उसे पहिले ही दे सके। ईको जो स्वयं भी एक वन सुंदरी थी और चंद्रमा की देवी डायना की कृपापात्र थी आज अत्यंत चतुराई से अपने प्रेमी की आज्ञानुसार चौकीदारी कर रही थी।

जूनो स्वभाव से ही ईर्षालु और पति के चरित्र पर शक करने वाली थी। जब उसने ज्यूपिटर को ओलिम्पस में उस दिन नहीं पाया तो उसे कुछ निश्चय सा हो गया कि वह हो न हो अवश्य ही किसी स्त्री की फ़िराक में कहीं गया था। उसने पृथ्वी की ओर गौर से देखा। वन्य प्रदेश में एक स्थान पर कुछ पेड़ों के पत्ते हिल रहे थे और एक सुंदरी कन्या पहरा दे रही थी। उसका शक और पक्का हो गया। वायुवेग से वह चली और आकाशमार्ग से होकर वह वहाँ पहुँच गई। ज्यूपिटर ने उसे आकाश से उतरते देख लिया था। अब वह घबराया। कहाँ भागूँ और कैसे बचूँ वह यही सोचकर परेशान हो रहा था कि सामने ही कुछ दूरी पर उसे जूनो आती दिखाई दी। अब तो वह और भी घबराया। वन्य सुंदरियाँ जूनो के भय से थरथर काँप रही थीं। उसी समय ईको को एक युक्ति सूझी। वह उठी और दौड़ी-दौड़ी जूनो के सम्मुख पहुँची और उसने उसका अभिवादन किया। ईको जैसी सुकुमारी कन्या को प्रत्यक्ष देखकर जूनो एक बार ज्यूपिटर को ढूँढ़ना भूलकर उसे देखती ही रह गई। अब ईको ने अत्यंत चतुरता से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपनी चलती-फिरती बातों से जूनो को आकर्षित किया और उसे भुलावा देकर वह वन के दूर छोर पर जा निकली। जूनो भी ऐसी वहक गई कि उसके साथ-साथ चलने लगी और उसकी मधुर वाणी से उस पर जैसे कोई जादू हो गया हो, वह अपनी सुधबुध ही खो बैठी। जब चलते-चलते वह एक सरोवर के तट पर पहुँची तब जूनो को अपनी गलती का अनुभव हुआ। तब तक मौका पाकर वन्य प्रदेश की सुंदरियाँ और ज्यूपिटर भाग चुके थे। जूनो तीव्र गति से लौटी और उसने वह वन पूरा छान डाला परन्तु वन के मध्य भाग में वृक्षों की सघन छाया के नीचे कुछ पुष्पों के ढेर के अतिरिक्त और उसे कोई नहीं मिला। उसने धूलि पर स्त्री-पुरुष के पदचिन्ह भी वहाँ देखे परन्तु मिला उसे कोई नहीं। जूनो समझ तो गई कि अवश्य ही वह ज्यूपिटर और किसी स्त्री के पदचिन्ह थे परन्तु अब भला क्या हो सकता था। अब उसे हठात् ध्यान आया कि यदि ईको की रसभरी बातों में वह न बहक जाती तो निश्चय ही वह अपने पति को रँगे हाथों पकड़ लेती। उसे क्रोध हो आया। वह ईको की ओर रोषयुक्त नेत्रों से देखती हुई बोली :

"तूने मुझे धोखा दिया है....अपनी लुभावनी बातों से तूने मुझे अपने ध्येय से डिगा कर बहका दिया है, तुझे दंड मिलेगा।"

ईको अनिंद्य सुंदरी थी और बात करने में अत्यंत चतुर थी। उसकी यह विशेषता थी कि आखिरी शब्द वार्तालाप करते समय वही बोलती थी। अब तक यह बात किसी ने खास तौर से समझी न थी और यही कारण था कि वह सदा अपनी बातों से विजय पाया करती थी। वह इतनी सुन्दर थी कि जब वह बोलती थी तो ऐसा लगता मानो फूल झड़ रहे हों और तब उसके लावण्य और यौवन की ही ओर प्रायः सब का ध्यान रहता था। परन्तु जूनो से उसकी यह चाल छिपी न रह सकी। वह बोली :

"तूने मुझे धोखा दिया है, इसलिए मैं तुझे शाप देती हूँ कि तू अपनी जीभ की यह चपलता खो दे। प्रथम संभाषण तू कभी नहीं कर सकेगी। तू चाह कर कभी बोल नहीं पायेगी, उत्सुकता और अधीरता से जब तू बोलना चाहेगी तो तेरी यह जीभ पत्थर की बनकर बिना मुड़े तेरे मुँह के अंदर निश्चल पड़ी रहेगी....दूसरे के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संभाषण का आखिरी शब्द ही तू उच्चारण कर सकेगी—केवल वही जो किसी अन्य ने अंत में कहा हो।"

यह कहकर ईको की सारी खुशियों पर वज्रपात करती हुई कठोर हृदय जूनो ओलिम्पस की ओर चली गई।

× × ×

ज्यूपिटर ने अब ईको के पास आना छोड़ दिया था। वह नितांत अकेली प्रेमी-रहित होकर जंगलों में भटकने लगी। उसकी बोली बंद हो चुकी थी। सखियाँ जब उससे बोलतीं तो वह केवल उनके आखिरी शब्दों को दोहरा देती। वह क्रुद्ध होकर उसका साथ छोड़ देतीं और उसे अकेली छोड़ जातीं। वह किसी प्रेमी को भी नहीं पा सकती थीं क्योंकि वह केवल शब्द ही दुहरा सकती थी जिन्हें सुनकर वह उसे मूर्ख समझ कर छोड़ जाते थे। उसे अपने प्यारे नारसिस्सस का ध्यान हो आया। 'हाय! वह कितना अछूता और पवित्र था जिस पर किसी स्त्री की वासना का दाग भी न था!' उसने सोचा, 'क्या ही अच्छा होता जो ज्यूपिटर के चक्कर में वह न पड़ती और मनुष्यों के बीच ही विनोद करती रहती।' निश्चय ही ये देवता लोग मनुष्यों को निरीह बना देते थे। परन्तु अब क्या हो सकता था। जूनो का शाप मिट तो सकता नहीं था क्योंकि वह तो देवी थी। मन मसोसकर सिवा रोने के अब उसके पास कोई चारा नहीं रहा।

उन्हीं दिनों जब वह वन में एकांत भटका करती थी एक दिन नारसिस्सस जंगल में शिकार खेलने गया। वह अपने कुत्तों को लेकर बीहड़ वन में घुस गया और सुअरों का शिकार करने लगा। ईको ने उसे देखा और वह उसे देखकर अपने आपको काबू में न रख सकी। उसने चिल्लाकर उसे बुलाना चाहा पर जुबान तालू से सट गई और वह ऐसा न कर सकी। उसका हृदय उमड़ कर मुँह को आ रहा था पर वह लाचार थी। नारसिस्सस ने उसे देखा न था। वह अपने शिकार के पीछे भागता चला जा रहा था। निदान ईको उसके पीछे-पीछे भागने लगी। नारसिस्सस अपने साथियों से बिछुड़ गया था और अकेला ही जंगल में मारा-मारा फिर रहा था। ईको उसके पीछे-पीछे भाग रही थी। हतभागिनी रोती जाती थी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर मुँह से शाप के कारण बोल नहीं पाती थी। इसी प्रकार कई दिन बीत गये। नारसिस्सस मार्ग भूल कर वन में भटक रहा था। एकाएक उसे कहीं पत्तों की चरमराहट सुनाई दी और वह चिल्लाया :

"कौन है यहाँ ???"

"यहाँ !!!!" ईको ने उत्तर दिया क्योंकि वह केवल वही शब्द बोल सकी। नारसिस्सस उस उत्तर को सुनकर कुछ समझ नहीं सका परन्तु उसने सोचा कि हो न हो यह उसका कोई साथी था जो उसी की भाँति वन में भटक रहा था। वह फिर चिल्लाया :

"यहाँ आओ !!!!"

"आओ," ईको ने उत्तर दिया और शर्माती हुई वह उसकी ओर चली। जब वह उसके पास आ गई तो अपने प्रेम और वासना को और अधिक रोकने में असमर्थ उस सुंदरी ने अपनी बाँहें फैलाकर उसके गले में डाल दीं। वह उस समय मद विह्वल सी होकर गर्म-गर्म श्वाँसें ले रही थी। नारसिस्सस ने उसे देखा और उसके इस प्रकार के व्यवहार से चिढ़कर उसे दूर ढकेल दिया। बेचारी ईको उस समय फूट-फूट कर रोने लगी परन्तु अपनी उस अवस्था में भी अपना प्रेम प्रकट न कर सकी। केवल उसके रतनारे नयन अपने प्रियतम को देखते रहे। नारसिस्सस ने जो इसे चुप देखा तो उसकी क्रोधाग्नि और भड़क उठी। वह उसे नीच स्त्री समझ कर घृणा से देखता हुआ बोला :

"नगर और ग्रामों से भी जो स्त्रियाँ अपनी नीचता के कारण निकाल दी जाती हैं निश्चय ही तू उन्हीं में से कोई एक है जो यहाँ इस घोर वन में भी मेरे पीछे लगी घूम रही है। मैं तुझसे घृणा करता हूँ। मैं मरना अधिक पसंद करूँगा बनिस्बत इसके कि तेरे साथ विहार करूँ। तेरा साहस अत्यंत घृणित है....तू और भला मुझे ले !"

"मुझे ले," ईको ने उत्तर दिया।

उसके इस प्रकार निर्लज्जतापूर्वक दिये गये उत्तर को सुनकर नारसिस्सस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने घृणा से थूक दिया। वह बोला :

"निश्चय ही तू नीच बाजारू औरत है जो अपने शरीर को समर्पण करने में तनिक भी हिचकिचाती नहीं।"

"नहीं," ईको ने उत्तर दिया।

नारसिस्सस तब उसे छोड़ कर चला गया। ईको रोती ही पड़ी रही। ईको की सारी खुशी अब समाप्त हो गई थी। अब न वह अपनी सखियों के साथ ही निकलती, न वन में पहिले की भाँति ही क्रीड़ा करती हुई भागती फिरती। वह जीवन से बिल्कुल उदास हो गई। अब वह अपनी संरक्षिका देवी डायना के साथ आखेट पर भी नहीं जाती थी। केवल पहाड़ों की अँधेरी कंदराओं में ही वह नितांत अकेली पड़ी रहती। कभी-कभी जब बहुत ही जी घबराता तो पहाड़ों की शून्य चोटियों पर चढ़ जाती और इसी तरह जीवन बिताने लगी।

दुख ने शीघ्र ही उसे जर्जर कर दिया। उसका शरीर अब पहिले की भाँति दमकता नहीं था। वह शीघ्र बूढ़ी हो गई। उसके स्निग्ध शरीर पर अब झुर्रियाँ छा गईं। कमर झुक गई और नेत्रों की ज्योति भी जाती रही। एक दिन इसी प्रकार वह सुंदरी स्त्री जो किसी समय वासना और प्रेम का प्रतीक थी, जिसके मधुर हास्य और किलकारियों से किसी समय वन्य प्रदेश खिल उठता था—आज जर्जर वृद्धावस्था को असमय ही प्राप्त हुई और मर गई। पहाड़ों ने दयार्द्र होकर उसे अपनी जड़ों में दबा लिया।

ईको मर गई पर उसकी आवाज़ दुनिया में रह गई। आज भी जब कोई पहाड़ों और पहाड़ों की चोटियों पर बोलता है तो वह उनके बोले शब्दों को प्रतिध्वनित करती है। उसकी आवाज़ अब भी जीवित है और उसके दुखपूर्ण जीवन की याद दिलाती है।

× × ×

उधर जब ईको निर्जन पहाड़ों में प्रेम-विह्वला बनकर फटे हुए हृदय से घूमा करती थी, नारसिस्सस मौज में शिकार खेला करता था। स्त्रियों से वह अब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी घृणा करता था। एक दिन उसने ईको की ही भाँति एक अन्य स्त्री को बहुत भला-बुरा कहकर अपमानित किया, जब कि वह उससे प्रेम प्रदर्शन करने उसके पास आई थी। उससे वह अपमान सहन नहीं हुआ। वह नदी तीर पर गई और उसने जल में कूदकर आत्महत्या कर ली। मरने से पहले उसने एक बार आकाश की ओर देखा और दोनों हाथ ऊँचे करके वीनस का स्मरण किया। वह बोली :

"हे प्रेम और वासना की देवी वीनस! तू समुद्र के फेनों से बनी अत्यंत लावण्यमयी है। तूने प्रेमियों की प्रार्थनाओं पर सदा ध्यान दिया है। आज मेरी यह प्रार्थना स्वीकार कर कि जिस नारसिस्सस के कारण ईको और कई स्त्रियाँ और आज मैं भी मृत्यु को प्राप्त हो रही हैं, उसको भी प्रेम और विरह की घड़ियाँ स्वयं झेलनी पड़ें। वह जो औरों का दुख आज तक नहीं समझा है अब से प्रेम में पागल हो जाय।"

वीनस ने सुना और देवताओं से कहा। ज्यूपिटर बोला :

"मैंने देखा है कि किस प्रकार नारसिस्सस सुंदरी युवतियों का अपमान करता था। निश्चय ही वह घमंडी है और उसे दंड मिलना चाहिये।"

और जब सभी देवताओं ने मिलकर योजना बनाई। उन्होंने निश्चय किया कि वह अपने आप ही अपने प्रेम में ही घुल-घुल कर मरे। ज्यूपिटर बोला :

"वह जो औरों से प्रेम नहीं कर सके, स्वयं अपने आप को ही प्रेम करके दुख झेले।"

× × ×

शिकार खेलते हुए नारसिस्सस उसी सरोवर के किनारे जा पहुँचा जहाँ एक दिन उसे ईको ने अपनी सखियों सहित मोहित करने का भीषण परन्तु असफल प्रयत्न किया था। नारसिस्सस उन सभी बातों को अब भूल चुका था। वह जल के किनारे पहुँचा और उसने झुककर देखा। उसे अपना प्रतिबिंब उसके अंदर दिखाई दिया। वह नहीं समझा कि वह क्या था। देवताओं के शाप के कारण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसे कोई अपरिचित व्यक्ति समझा जिसकी सुंदरता पर वह रीझ उठा। वह देर तक उसे निर्निमेष नेत्रों से देखता रहा और अपनी ही छाया के प्रेम में वह फँस गया। उसे उस परछाँई के व्यक्ति के नेत्र इतने अधिक आकर्षक प्रतीत हुए कि वह उन्हें देखता ही रह गया और लाल होंठों को तो वह मानो चूम ही लेना चाहता था। उसके घुंघराले काले केशों के पाश में वह अपने व्यक्तित्व को धोखा देने पर उतारू हो गया। अब अपने आप को सँभालने में असमर्थ होकर झुककर उसको चूमना चाहा परन्तु जैसे ही उसके होंठ का स्पर्श जल में हुआ जल हिल उठा और उसका प्यारा खो गया। हताश वह उसे ढूँढ़ने लगा। उसके हृदय को आज पहिली बार गहरी ठेस लगी।

सारे दिन वह वहीं बैठा रहा। जब जल निश्चल हो गया तो फिर उसने उसमें झुककर देखा और संतोष की किलकारी उसके मुँह से निकल गई। उसका प्यारा उसे देख रहा था। वह ठंडी साँसें लेकर बोला :

"इसके प्रेम में मैं कितने विरह से जल रहा हूँ। कितनी पीड़ा है मेरे हृदय में। हाय ! मैं तो इसे छोड़कर कहीं जा भी नहीं सकता हूँ। इसने तो जैसे मुझ पर जादू ही कर दिया है।"

और इसी प्रकार कई दिन व्यतीत हो गये। नारसिस्सस अपने उसी प्रतिबिंब पर पागल हो गया था। वह उसे एक क्षण भी आँख से ओझल नहीं होने देता था। कहीं वह चला न जाय इसलिए अब उसने जल को छूना भी बंद कर दिया था। वह आहें भरता और कहता : "छूने न दे तो नहीं सही पर कम से कम मैं तुझे जी भरकर देख तो लूँ।"

जंगल की सुंदरियों ने उसे इस प्रकार जब देखा तो वह दया से भर गईं और उन्होंने उसके पास आकर उसे रिझाने का प्रयत्न किया। वह उसे देखकर मुस्कराईं और उन्होंने उससे बोल कर उसका ध्यान बटाना भी चाहा पर वह तो जैसे पागल हो उठा था। उसने उनकी ओर देखा तक नहीं और न उनकी कोई बात ही सुनी। वह अपनी छाया को देखकर कराह कर बोला :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"आह ! तुझे देखकर ही मैं सब्र कर लूँगा पर तू न हिल ! मैं तुझ पर मरना चाहता हूँ—केवल मृत्यु ही अब मुझसे तुझे छुड़ायेगी. . . ."

"छुड़ायेगी," ईको की आत्मा ने पहाड़ों की चोटियों से उत्तर दिया।

"हाय ! हाय !" नारसिस्सस चिल्लाया।

"हाय ! हाय !" ईको ने कंदराओं के अंदर से उत्तर दिया।

और जब-जब वह दुख से चिल्लाता ईको उतनी ही बार उससे समवेदना प्रगट करती हुई उसे उत्तर देती थी।

महीनों बीत गये और नारसिस्सस अपनी परछाँई के प्रेम में पागल होकर वहीं बैठा रहा। उसने अन्न-जल सब त्याग दिया था। वह अत्यंत क्षीण हो गया और चिल्ला भी नहीं पाता था। वह धीरे से आहें भरता पर ईको उसकी इन कराहों का भी उत्तर देकर उसे सांत्वना दिया करती थी। नारसिस्सस अब और सहन न कर सका। वह अंतिम बार प्राणों की शक्ति लगा कर अपनी छाया को देखकर चिल्लाया :

"विदा. . . .अलविदा।"

और आखिरी बार ईको ने उत्तर दिया :

"अलविदा।"

इसके बाद नरसिस्सस मर गया। मृत्यु के उपरांत भी उसका मोह अपनी छाया से नहीं हटा। जब चारन उसकी आत्मा को लेकर स्टाईक्स नदी पार करके मृत्युलोक की तरफ जा रहा था उस समय भी उसने नाव के एक किनारे से नीचे झुककर जल में अपनी परछाँई देखनी चाही।

जंगल की उन सुंदरियों ने उसकी मृत्यु पर शोक किया। वे बहुत रोईं भी क्योंकि वे सभी उसे बहुत प्यार करती थीं। आखिरकार उन्होंने सरोवर के तट पर उसके शव की अंतिम क्रिया करनी चाही परन्तु जब वे वहाँ पहुँचीं तो शव उन्हें नहीं मिला। उन्होंने उसे ढूँढ़ा परन्तु उन्हें शव के बजाय एक बिल्कुल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नया फूल वहाँ खिलता हुआ मिला जो अत्यंत सुंदर और सुगंध से पूर्ण था। उन्होंने विरही की याद में उस फूल का नाम नारसिस्सस ही रख दिया जो आज तक उसकी याद दिलाता है।

'ईको' आज भी जंगलों, निर्जन स्थानों, पहाड़ की कंदराओं और चोटियों पर भटकती फिरती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रूप की ज्वाला

राजा पिलियस का विवाह मत्स्य कन्या थैटिस के साथ निश्चित हो गया। सारे संसार और ओलिम्पस में यह समाचार बिजली की गति से फैल गया। पिलियस यूनान का परम पराक्रमी राजा था। थैटिस अनिंद्य सुंदरी थी जिसके सौंदर्य को देखकर स्वयं ज्यूपिटर विचलित हो उठा था। यदि उसका विवाह पिलियस जैसे महान् योद्धा के साथ निश्चित न हुआ होता तो ज्यूपिटर उसे भी आयो और योरोपा की भाँति जरूर ही हर कर ले जाता। इसके अतिरिक्त पिलियस पर ज्यूपिटर वैसे भी कृपा रखता था क्योंकि वह उसकी पूर्ण विधि से पूजा और भक्ति किया करता था। ग्रीष्म ऋतु में जब मध्याह्न का सूर्य ठीक सिर पर होता, पिलियस सदा ज्यूपिटर का नाम लेकर मोटे बैलों की बलि देता। इन सभी कारणों से अपने हृदय में थैटिस के लावण्य से विचलित होने के बावजूद कोई भी त्रुटि न पा सकने के कारण ज्यूपिटर मन मसोस कर रह गया था। उधर सारे संसार में थैटिस के विवाह के उपलक्ष में खुशियाँ मनाई जाने लगीं। महासमुद्र अपने अंदर रहने वाली मत्स्य कन्या के विवाह पर अत्यंत प्रसन्न हुआ। आकाश में जब पूर्ण चंद्र उदय हुआ वह ज्वार-भाटों के रूप में पृथ्वी की ओर आलोड़न-विलोड़न करता हुआ बढ़ने लगा। सर्वत्र आनंद छा गया। विवाह के उपरांत प्रीतिभोज में मनुष्यों के अतिरिक्त सभी देवता और देवियों को भी आमंत्रित किया गया था। स्वयं समुद्रराज भी अनेकानेक सुंदरी मत्स्य कन्याओं को लेकर, सुगंधित तैलों से जलती हुई उल्काओं के प्रकाश से जगमगाते हुए पिलियस के उस अद्भुत भवन में आया था। विचित्र वाद्य ध्वनि हो रही थी जिनके शब्द से वातावरण संगीतमय और मधुर बना हुआ था। ज्यूपिटर स्वर्ण-कवच और रत्नजटित मुकुट पहिने अंगरक्षकों से घिरा हुआ ऊँचे सिंहासन पर बैठा हुआ था। उसके हाथ में सारे विश्व को कँपा देने वाला वज्र था जिसके केवल एक बार तनिक हिलने से ही आकाश में बिजली कौंध जाती थी। देवताओं का राजा ज्यूपिटर स्वयं अपने तेज से जगमगा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहा था। उसके आसपास देवतागण अपने ऊँचे आसनों पर बैठे थे। उसके बगल में ओलिम्पस की रानी सुंदरी जूनो रत्नजटित आभूषणों से अलंकृत और भव्य वस्त्रों से आच्छादित होकर स्वयं अपूर्व शोभा को प्राप्त हो रही थी। ज्यूपिटर के सम्मुख चाँदी के सिंहासन पर उसकी पुत्री मिनर्वा बैठी थी। वह युद्ध की देवी इस समय भी अपनी चमचमाती हुई ढाल को लिये बैठी थी। ज्यूपिटर की इस पुत्री का जन्म किसी स्त्री की कोख से नहीं हुआ था। वह अपने पिता के सिर में से पैदा हुई थी। वह उसी समय पूर्ण युवती हो गई थी। अपने पिता की ढाल लेकर एकदम वह आखेट के लिए चल दी थी। इंद्रधनुषी रंग-बिरंगे और सुगंधित पुष्पों से आच्छादित विस्तृत सिंहासन पर ज्यूपिटर के दाहिनी ओर झींने और किंचित वस्त्रों से अपने दमकते हुए यौवन को छिपाने की वृथा चेष्टा करती हुई वासना की देवी फेनिला वीनस त्रिभुवन को अपनी मुस्कराहट से गुदगुदाती हुई, अपनी मांसल, स्निग्ध और गौर नग्न बाहों को ऊपर की ओर उठाकर छत्र से नीचे लटकती हुई मालाओं को पकड़े विभोर बैठी थी। समुद्र के श्वेत फेनों से उसका निर्माण हुआ था। वह महाश्वेता इसी कारण अत्यन्त लावण्यमयी थी। समुद्र ने उसे जब तीर की ओर फेंका था तो जैफायर पवन पर बिठाकर उसे ओलिम्पस ले गया। तब तक विश्व में ऐसी सौन्दर्यमयी देवी नहीं देखी गई थी। देवतागण उसे पाने के लिये लालायित हो उठे थे। वीनस की प्रत्येक श्वास में वासना का अंधड़ चलता था और उसने ओलिम्पस और संसार को वासनामय बना दिया था।

ऐरिस सुदूर आकाश में स्थित ओलिम्पस में आज अकेली बैठी थी। वह कलह की देवी थी। पिलियस ने सभी को अपनी दावत में बुलाया था, केवल उसी को छोड़ दिया था। अपमान की ज्वाला में ऐरिस जली जा रही थी। उसने नीचे की ओर पृथ्वी पर देखा। मदिरा से मत्त देवी तथा देवता नृत्य और संगीत में विभोर होकर अट्टहास कर रहे थे। आनंद का स्रोत बह रहा था। ऐरिस यह सब सहन न कर सकी। अकेली बैठी हुई उसने इस अपमान का बदला लेने का निश्चय किया। उसने तुरंत एक योजना बनाई और नीचे की ओर उड़ी। एक सोने के सेव पर उसने लिखा :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"सर्वश्रेष्ठ सुंदरी के लिये"

और उसे चुपचाप ऊपर से पिलियस के महल में खाने की मेज पर गिरा दिया और तुरंत अदृश्य हो गई।

कलह का बीज बो दिया गया। वह फल लुढ़कता हुआ पिलियस के सामने पहुँचा। उसकी चमक से सभी के नेत्र चौंधिया गये। आश्चर्यचकित होकर सब के नेत्र उसकी ओर घूम गये। पिलियस ने उसे उठा लिया और उस पर अंकित शब्दों को उच्च स्वर से पढ़ा और तुरंत उठाकर उसे ज्यूपिटर के सामने रख दिया। अब हँसी के फौव्वारे लोप हो चुके थे। प्रत्येक स्त्री ने आत्मश्लाघा से गर्वित अपने ही को सर्वश्रेष्ठ सुंदरी समझ कर उस फल की ओर अपना हाथ बढ़ाया। तुरंत संघर्ष छिड़ गया। सुंदरी ललनायें उसे पाने के लिये हंसग्रीवा के सदृश अपनी गोरी और मांसल भुजाओं को फैलाये ज्यूपिटर की ओर बढ़ीं। जूनो ने उसी समय अपने सुडौल कंधों से वस्त्र हटा दिये। उल्काओं के प्रकाश में उसकी सोने की सी काया दमकने लगी। उसकी देखादेखी प्रत्येक स्त्री वस्त्रों को हटाकर अपना शरीर दिखाने लगी। वस्त्रों में से अजस्र यौवन फूट निकला। मनुष्य और देवता सभी विचलित हो उठे। सर्वश्रेष्ठ सुंदरी-पद के लिये भयानक संघर्ष होने लगा। स्त्रियाँ एक दूसरी को देखकर जलने लगीं। उनके मुँह से अंगारे निकल रहे थे, परन्तु जब जूनो ने अपनी नग्न जंघाएँ दिखाईं तो प्रायः सभी स्त्रियाँ उसके अपूर्व सौंदर्य को देखकर पीछे हट गईं। इस समय सचमुच ही वह सौंदर्य की गरिमा बनी खड़ी थी। जूनो गर्व से मुस्कराई। उसने फल की ओर हाथ बढ़ाया परन्तु उसी समय दो और कोमल हथेलियाँ उसके साथ आगे बढ़ीं। वह चौंक कर पीछे हटी। उसने देखा मिनर्वा और वीनस हाथ बढ़ाये खड़ी थीं। उसका स्वप्न भंग हो गया। निश्चय ही उसने उन्हें अब तक देखा ही न था। अपने भ्रूभंग से और अंग चालन से मिनर्वा पुरुषों के हृदय को हर रही थी। वीनस की उच्छ्वसित श्वाँसों से वासना मानो फूत्कार कर रही थी। झीने पारदर्शी वस्त्रों में से वह फेनिल नायिका प्रायः पूर्ण नग्न दीख रही थी। उसके नेत्रों में एक विचित्र वासनामयी ज्योति थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ज्यूपिटर निर्णय देने में असमर्थ हो गया। तीनों अनिंद्य सुंदरियाँ थीं। उनमें से किसी एक को सर्वश्रेष्ठ कहकर बाकी दो को भला किस प्रकार अपमानित कर सकता था। जूनो की ईर्षा से वह परिचित था। इसके अतिरिक्त अपनी स्त्री से वह डरता भी था। यह बात दूसरी थी कि अब तक वह हजारों स्त्रियों से गुप्त संबंध स्थापित कर चुका था। परन्तु वह सब उसने जूनो से छिपाकर ही किया था। मिनर्वा उसकी पुत्री थी। भला उसको वह कैसे असंतुष्ट करता। और सुंदरी वीनस जिसका शरीर पारदर्शी वस्त्रों से अब भी दमक रहा था और जिसके यौवन को देखकर वह भीतर ही भीतर व्याकुल हो उठा था, भला उसको वह कैसे हरा सकता था। देर तक वह सोचता रहा और इस बीच अपने नाना अंगों को निर्लज्जतापूर्वक प्रदर्शित करती हुई जूनो, मिनर्वा और वीनस आपस में झगड़ती रहीं। अंत में ज्यूपिटर बोला :

"हे सुंदरियों ! तुम्हारा निर्णय मैं नहीं कर सकता। इडा पर्वत पर पैरिस नामक एक भेड़ों का चरवाहा रहता है। मर्त्यलोक का निवासी होते हुए भी सौंदर्य का वह प्रवीण पारखी है। वह स्वयं अत्यंत रूपवान पुरुष है। उसके समान सुंदर पुरुष इस समय सारे संसार में और कोई नहीं है। वह तुम तीनों को नहीं जानता। इसलिए न्यायपूर्ण निर्णय देगा। तुम तीनों उसके पास जाओ।"

पैरिस वास्तव में चरवाहा न था। ट्रौय के राजा प्राइम और रानी हैक्यूबा का वह सुंदर पुत्र जब पैदा हुआ था तब आकाशवाणी हुई थी जिसमें कहा गया था कि यह पुत्र आगे चलकर ट्रौय के नाश का कारण बनेगा। और इसी कारण रोती हुई हैक्यूबा की गोद से उसे छीन कर प्राइम इडा पर्वत की चोटियों पर छोड़ आया था। एक दयालु चरवाहे ने उस निर्जन स्थान में उस सुंदर शिशु को देखकर हृदय से लगा लिया था और तब से वह उसी के घर में पलने लगा। आज वह अपने पालने वाले पिता की भेड़ों को चराया करता था। पैरिस सुगठित शरीर वाला अत्यंत रूपवान पुरुष था जिसको देखते ही राजकुमारों की सी गरिमा का भास होता था। जब जूनो, मिनर्वा और वीनस उसके पास पहुँचीं वह भेड़ों के बीच में एक ऊँचे वृक्ष की छाँह में बैठा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाँसुरी बजा रहा था । वह इतना तन्मय था कि संगीत की स्वर लहरियों से उसकी आँखें बंद हो गई थीं । तीनों स्त्रियाँ चुपचाप उसके सामने जाकर खड़ी हो गईं । वह फल उन्होंने उसके सामने रख दिया । जब संगीत रुका और पैरिस ने आँखें खोलीं तो अपने सामने तीन अत्यंत लावण्यमयी कोमलांगी स्त्रियों को देखकर वह आश्चर्य से उन्हें देखने लगा और तभी उसकी दृष्टि उस फल की ओर गई । उसने उसे उठा लिया । उस पर लिखे शब्दों को पढ़कर तो मानो वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया । उसने आँख उठा कर उन्हें बारी-बारी से गौर से देखा । बड़ी कठिन समस्या थी । तीनों ही अपूर्व सुंदरियाँ थीं । राजसी वस्त्रों में से मादक सौंदर्य बिखेरती हुई बंकिम भ्रू चालन करती हुई जूनो मानो सौंदर्य की देवी बनी खड़ी थी । सूर्य के प्रकाश में चमचमाती हुई ढाल को भी फाड़कर मानो मिनर्वा का यौवन फूट निकलना चाहता था । धधकते और उफनते यौवन ने मानो सारी सीमाओं को तोड़कर वीनस के शरीर से विस्फोट करने का निश्चय कर लिया था । प्रेम के मंत्रों से अभिमंत्रित उसकी सुवर्णमयी रशना, क्षीण कटि के नीचे विशाल नितंबों पर उसके अंग चालन के साथ क्वणन कर रही थी । वीनस की उष्ण श्वासों से वातावरण मधुमय हो रहा था । वन-उपवन में सौंदर्य मानो मुक्त हस्तों से बिखेर दिया गया था । पैरिस कुछ निश्चय न कर सका, कभी वह जूनो की जंघाओं को देखता तो कभी मिनर्वा के उन्नत स्तनों को और जैसे ही वह किसी निश्चय पर पहुँचना चाहता कि वीनस के नितंबों का उभार उसके पूर्व निश्चय को खंड-खंड बिखेर देता । विकट समस्या थी । वह फल को हाथ में लिये देर तक बैठा रहा । तभी मिनर्वा ने पेड़ की ओट होकर उसके कानों में फुस-फुसाकर कहा :

"मुझे फल दे दे, मैं तुझे संसार का सर्वश्रेष्ठ बुद्धिमान और ज्ञानी पुरुष बना दूँगी ।"

जूनो ने दूसरी ओर से उसी प्रकार कहा :

"मैं तुझे संसार का सम्राट बना दूँगी, अतुल धन और ऐश्वर्य से तेरे खजाने भर दूँगी । तेरे समान पराक्रमी संसार में और कोई न होगा, फल मुझे दे दे ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब वह दोनो हट गई तो अत्यंत उच्छ्वसित शब्दों से पैरिस को कामोद्वेलित करती हुई अनन्य सुंदरी वीनस से वासना का बवंडर छोड़ते हुए और अर्द्ध निमीलित नेत्रों से वासनोन्मुख होकर कहा :

"त्रिभुवन की वासना की केन्द्रीभूत सर्वश्रेष्ठ कोमलाङ्गी स्त्री मैं तुझे दूँगी। तू फल मुझे दे दे।"

इतना कह कर उसके हृदय पर उष्ण श्वाँसों का प्रहार करती हुई वह हट गई।

पैरिस ने एक बार तीनों बातों को सोचा। क्या करेगा वह उस ज्ञान और बुद्धि को पाकर जो उसके जीवन को नीरस बना देगी। क्या वह अपने सारे जीवन को गूढ रहस्यों और विषयों को सोच-सोच कर ही बिता देगा? उसने अनुभव किया कि उसका सारा यौवन बीत चुका है। उसके मुख पर अनेकानेक रेखाएँ उभर आई हैं। उसके केश अब सुंदर नहीं रहे हैं। वे रूखे-रूखे से होकर अब श्वेत हो गये हैं। वह ज्ञान का भार लिये बैठा है और उसके चारों ओर अगणित नर-नारियाँ नतमस्तक होकर बैठे हैं. . .परन्तु अब वह यौवन पार कर चुका है। हठात् वह चौंक उठा, नहीं, नहीं ! नहीं चाहिये मुझे वह ज्ञान जिसमें यौवन की अजस्र तरंगें शिथिल होकर पानी के बुलबुले की भाँति फूट जायँ। वह दूसरी ओर सोचने लगा। वह एक ऊँचे सुवर्णमय सिंहासन पर बैठा है। उसके चरणों के पास बड़े-बड़े राजाओं के मुकुट रखे हैं। उसके इंगित मात्र पर दैत्याकार योद्धागण प्राणों की आहुति देने को तैयार हैं। उसकी एक मुस्कान के साथ संसार पुलकित हो उठता है और जब क्रोध से उसकी भौं कमान की भाँति खिंच जाती है, सारी पृथ्वी हाहाकार करने लग जाती है। उसके सामने सारे संसार के योद्धा नत मस्तक बैठे हैं। संसार की सारी निधियाँ उसके अधीन हैं। नाना सुंदरियाँ अपने कटाक्षों से उसे अपनी ओर आकर्षित करने की चेष्टा कर रही हैं। उसका नाम पताका बनकर आकाश में फरफरा रहा है। उसके भय से पर्वतों की कंदरायें गूँजने लगती हैं और समुद्र थर्रा उठता है। सब कुछ है। अनिंद्य सुंदरियों के मांसल शरीर उसके हाथों का स्पर्श पाने को लालायित हो उठे हैं। परन्तु इतना सब कुछ होते हुए भी अपने पराक्रम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की और ऐश्वर्य की गरिमा में चूर वह अपने आप में एक विचित्र अपूर्णता का भाव अनुभव कर रहा है। उन सुंदरियों की कांचनमयी नग्न देहों को देखकर भी उसके हृदय में वासना का अंधड़ नहीं चलता। समीरण उसे शुष्क लगता है और मंद मलयानिल उसके पौरुष को विचलित नहीं करता। उसकी आँखें मानो उस सौंदर्य से तृप्त नहीं होतीं। वह तो जैसे उस अज्ञात सौंदर्य को खोजने में व्यस्त है जिसे वह देख तो नहीं सकता परन्तु जिसका किंचित आभास उसे अवश्य मिल गया हो। उसकी तृष्णा नहीं मिटती, यौवन सीमाओं को तोड़ कर मानो हाहाकार कर उठा हो, अभी और, अभी और, हृदय को शांति नहीं मिलती। और तभी दूर उस क्षितिज के उस पार नीले आवरण को हटाती हुए एक सुंदरी तरुणी उसकी ओर आलस्य निमीलित नेत्रों से देखती है, वह तन्मय होकर उसकी ओर ठगा सा देखता रह जाता है। धीरे-धीरे वह अनुभव करता है कि उसकी आत्मा अब प्रसन्न है। उसे अनुभव होता है मानो मिलन यामिनी आ गई है! वह जिसे ढूँढ़ रहा था वह उसे मिल गई है।

यह वह सौंदर्य है जिसके सामने सूर्य और चंद्र का प्रकाश भी फीका मालूम पड़ता है और उसके होंठों से बरबस अस्फुट शब्द फूट निकलते हैं 'आह यही तो' और वह उस ओर हाथ उठा कर दौड़ता है। परन्तु तभी जूनो का दिलाया हुआ साम्राज्य बालू के महल के समान बिखर कर फैल जाता है। इंद्रधनुष के रंगों से आलोकित स्वर्ण मेखला के नूपुरों से क्वणन करती हुई वह नितम्बिनी वीनस के प्रेम और वासना के साम्राज्य की प्रतीक बन कर आई है जिसे मिनर्वा और जूनो दोनों ही दिलाने में असमर्थ हैं। पैरिस का यौवन उसे कचोटने लगा। उसने तुरंत निश्चय किया और वह स्वतः बोल उठा : "मुझ वासनामयी सर्वश्रेष्ठ सुंदरी ही चाहिये क्योंकि उसी के पा लेने से आत्मा विभोर हो उठती है।"

पैरिस तंद्रा से जागा। उसने देखा तीनों देवियाँ अब भी वैसी ही खड़ी हैं। उसने फल उठाया और वीनस को दे दिया।

जूनो और मिनर्वा तुरंत आकाश में उड़ गईं। वह मन में अत्यंत क्रुद्ध हो उठी थीं। मन ही मन उन्होंने निश्चय किया कि समय आने पर वह इस अपमान का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बदला अवश्य लेंगी परन्तु प्रत्यक्ष में उन्होंने अपने क्रोध की भावना प्रगट नहीं होने दी। वीनस खुशी से नाच रही थी। वह बोली :

"पैरिस तू निश्चय ही संसार का सबसे भाग्यवान पुरुष है। मैं तुझसे बहुत प्रसन्न हूँ. . .तू नहीं जानता कि तू कौन है। मैं तुझे तेरी वास्तविकता बताती हूँ। तू सुन. . . .ट्रौय के राजा प्राइम का तू पुत्र है। आकाशवाणी के कारण, कि तू बड़ा होकर ट्रौय को नष्ट करा देगा, उसने तुझे इडा पर्वत पर छोड़ दिया था। परन्तु तब से वह और तेरी माता हैक्यूबा दुख से संतप्त हैं। तू ट्रौय वापस जा। वह तुझे देखकर अपने सारे दुखों को ही नहीं बल्कि उस आकाशवाणी को भी भूल जायँगे। तेरे साथ हुए अब तक के अन्यायों के बदले में तुझे अपने हृदय से लगाकर वह तेरा स्वागत करेंगे और जब वह तुझे कुछ देने की प्रतिज्ञा करें तो तू उनसे ग्रीस जाने के लिये एक जहाजी बेड़ा मांग लेना। इसके बाद ही मैं आ जाऊँगी। और तुझे तेरी अभीष्ट, संसार की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी के पास तुझे ले चलूँगी. . .उठ क्योंकि वह सुंदरी भी मेरे प्रभाव से तुझ जैसे प्रेमी को पाने के लिये अधीर हो उठी है।"

इतना कहकर वीनस ओलिम्पस की ओर उड़ चली।

× × ×

ट्रौय में धूम मच गई। वृद्ध राजा प्राइम और उसकी रानी हैक्यूबा को उनकी खोई हुई निधि मिल गई थी। उस समय प्राइम उपवन में बैठा हुआ सुगंधित पुष्पों की बहार ले रहा था।

प्रातःकाल की सुनहरी सूर्य रश्मियाँ ताल के स्थिर जल पर ऐसे चमक रही थीं जैसे वर्षाकाल में आकाश के मध्य इंद्रधनुष चमकता हो। नीहार से घास भींग रही थी। ऐसे ही समय में साधारण चरवाहे का भेष धारण किये पैरिस ने उसके सामने जाकर अभिवादन किया। उसकी राजकुमारों की सी छवि, उसका तेजस्वी मुख और डीलडौल देखकर राजा प्राइम एक झलक में ही समझ गया कि वह कोई साधारण चरवाहा नहीं था। वह बोला :

"नवयुवक तुम कौन हो ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पैरिस ने कहा :

"मैं इडा पर्वत पर पला हुआ राजा प्राइम और रानी हैक्यूबा का श्रीमंत पुत्र हूँ। परन्तु मैंने माता का दूध न पीकर मादा भेडियों का दूध पिया है। सुना है राजा और रानी ने केवल आकाशवाणी सुनकर ही अत्यंत निर्मोही बनकर मुझे इडा पर्वत पर भेड़ियों का भोजन बनाकर नितांत अकेला छोड़ दिया था....", पैरिस अब उत्तेजित हो उठा था। अपने प्रति किये गये अन्याय की ठेस इस समय उसे भीषण वेदना दे रही थी। आकर्ण आरक्त मुख से वह वीर उस समय तेजपुंज की भाँति शोभा को प्राप्त हुआ। ओजस्वी वाणी से वह कहता गया :

"....परंतु भेड़िये मनुष्य की भाँति निर्दयी नहीं निकले। उन्होंने मुझे अपने शरीर का रस पिलाकर अपार पौरुष दिया है...."

"पुत्र!! पैरिस! मेरे बेटे!"

राजा प्राइम चीत्कार कर उठा। वह उठा और पलक मारते दौड़कर पैरिस से लिपट गया। वृद्ध राजा के नेत्रों से अविरल अश्रुधारा बह रही थी। उसका गला रुँध गया था, जिसके कारण उससे बोला भी नहीं जा रहा था। कभी-कभी केवल अस्फुट स्वर से वह 'हा पुत्र, हा पुत्र' कह देता था। पैरिस अपने पिता का प्रेम देखकर क्षण भर में ही अपने सारे क्रोध को भूल गया। सेवकों ने तुरंत रानी हैक्यूबा को समाचार दिये। सुनते ही वह भागी और 'मेरे लाल' कहकर पैरिस से लिपट गई। और तब सेवकों ने सारे महल में यह संवाद सुना दिया। संवाद महल के तोरण से उठा और आकाश में चढ़ कर संपूर्ण ट्रौय में बिखर गया। पैरिस का लौटना सभी को विद्युत गति से मालूम हो गया और तब ठट्ठ के ठट्ठ नागरिक राजकुमार का दर्शन करने महल की ओर बढ़ चले। भीड़ के कोलाहल से आकाश फटने लगा। सैनिकों ने पंक्ति बाँध कर राजकुमार का अभिवादन किया। उनके वज्रकंठों से निकले हुए निर्घोष ने दिशाओं को कंपित कर दिया। पैरिस ने देखा कठोर मुद्राओं में सैनिक ऊँचे-ऊँचे चमकदार फलक वाले भाले लिये खड़े थे। सूर्य के प्रकाश में धातु के बने उनके कवच और शिरस्त्राण चमचमा रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अद्भुत वेला थी, राजाज्ञा से तुरंत पैरिस को राजसी वस्त्रों और रत्नजटित सुवर्णमय आभूषणों से विभूषित किया गया। उसकी सिंह कटि पर माणिक्य जटित मेखला बाँधी गई और प्रशस्त वक्षस्थल पर हीरक हार चमचमाने लगा। सिर पर हीरे जड़े किरीट को पहिन कर वह ऐसा शोभायमान हुआ जैसे क्षितिज के पर्दे को फाड़कर ऊषा काल का सूर्य निकल आया हो। नगर के तोरणों और अंतर्कोट के सभी द्वारों पर उस समय भारी नगाड़े बज रहे थे। भेरी निनाद से वातावरण कंपित था। आज ट्रौय का एक महान् दिवस था। राजा और रानी ने सभी के बीच पैरिस से अपने किये हुए अपराध की क्षमा माँगी। वे बोले :

"निश्चय ही तेरे साथ हमने अन्याय किया था। परन्तु जो होना था सो हो चुका। आज इस मनोरम वेला में हम शपथपूर्वक कहते हैं कि उस अन्याय के बदले में अब तू जो चाहे हमसे माँग ले। तेरी हर एक इच्छा की पूर्त्ति की जायगी।"

पैरिस ने सुना और उस भुवनमोहिनी वासनामयी देवी वीनस का स्मरण हो आया। उसके कहे अनुसार प्रत्येक बात सच होती चली आ रही थी। भविष्य में प्राप्त होने वाली संसार की सर्वश्रेष्ठ कामिनी का ध्यान आते ही उसके हृदय में गुदगुदी होने लगी और एक नवीन स्पन्दन का उसने अनुभव किया। वह विभोर होकर खोया-खोया सा उस समय के बारे में सोच रहा था।

तभी हैक्टर आया। वह राजा प्राइम के अन्य कई पुत्रों में से एक था। पैरिस की भाँति सुंदर और स्वस्थ वह युवक दैत्याकार था। उसने उसका हार्दिक स्वागत किया। पैरिस को यह सब बहुत अच्छा लगा।

संध्या समय समुद्र तीर की ओर गई हुई कैसेण्ड्रा लौटी। वह अनिंद्य सुंदरी प्राइम की कई पुत्रियों में से एक थी। उसने जब पैरिस को देखा तो अपने पिता से उदास होकर बोली :

"अच्छा होता यदि यह न लौटता, इससे भी अच्छा यह होता कि यह कहीं मर गया होता क्योंकि यहाँ रह कर तो यह निश्चय ही संपूर्ण ट्रौय का नाश कर देगा। हे पिता अब भी समय है इसे निकाल दो।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्राइम ने सुना, हैक्यूबा ने सुना, हैक्टर ने सुना परन्तु किसी ने उसकी बात पर ध्यान न दिया, उल्टे डाँट कर उसे चुप करा दिया गया।

एक बार कैसेण्ड्रा समुद्र तीर पर बैठी हुई अपनी सखियों सहित फेनों से नहा रही थी। पूर्ण चंद्र आकाश में खिला हुआ पृथ्वी पर अमृत बरसा रहा था। महाश्वेता नीले नेत्रों वाली कैसेण्ड्रा सखियों के बीच हंस की शोभा को भी लजाती प्रतीत हो रही थी और ऐसे ही समय में सुंदर देवता एपोलो ने आकाश मार्ग से जाते उसे देखा। और वह तुरंत उस पर मोहित हो गया। तत्पश्चात् बहुत समय तक कैसेण्ड्रा एपोलो की प्रिया बनी रही, उन दिनों जब कि एपोलो कैसेण्ड्रा के रूप और यौवन के प्रवाह में बहता था उसने एक दिन प्रसन्न होकर उसे भविष्य-वाणी करने का वरदान दे दिया था परन्तु बाद में जब वह उसके यौवन को भर-पूर भोग चुका और उससे थक गया तो ऐरिस द्वारा कराये गये कलहों के कारण वह कैसेण्ड्रा से असंतुष्ट हो गया। और तब उसे अपने वासनोन्मत्तावस्था में दिये गये उस वरदान के लिये पश्चात्ताप हुआ। उसे बहुत खेद हुआ कि वह साधारण मनुष्यों की भाँति भावनाओं में बहक गया था। झगड़े के अंत में जब वह उसे छोड़ के चला, तो दिया गया वरदान देवता होने के नाते वह वापस ले नहीं सकता था। इसलिए वह उसे पुट देकर बिगाड़ अवश्य गया। उसने कहा :

"भविष्यवाणी तो तू अवश्य कर सकेगी परन्तु तेरी बातों का किसी को विश्वास न होगा।"

और इसी कारण आज भी उसकी बात किसी ने नहीं मानी थी।

इसी प्रकार कई महीने बीत गये। राजमहल में अगाध आनंद का स्रोत बहता रहा। एक दिन वीनस के कहे अनुसार पैरिस ने प्राइम से एक समुद्री बेड़ा अपने लिये माँगा। पुत्र की हर एक इच्छा को पूर्ण करते हुए उसने सौ जहाजों का एक बेड़ा दे दिया। पैरिस उसे पाकर बहुत संतुष्ट हुआ। तत्पश्चात् माता-पिता और बंधु-बांधवों की आज्ञा लेकर वह सेना का संचालन करता हुआ जहाजी बेड़े को लेकर समुद्र की छाती को चीरता हुआ चल पड़ा। उसने ग्रीस की ओर पाल तान दिये। वीनस की मैत्री के कारण समुद्री देवता पौसीडौन ने उसका मार्ग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुगम बना दिया। डौलफिन और ट्रेटन मछलियों पर चढ़ी हुई किसी भी समुद्री सुंदरी ने शंख बजाकर उसके मार्ग में बाधा नहीं डाली। जैफायर द्वारा चालित अनुकूल हवाओं से वह सही दिशा की ओर बढ़ता चला गया। एज़ियन समुद्र को पार करता हुआ कुछ ही दिनों पश्चात् वह ग्रीस के तट पर जा पहुँचा। वीनस पूर्व निश्चय के अनुसार वहाँ उसे मिली। वह उससे बोली :

"यहाँ से स्पार्टा जा, वहाँ तुझे राजा मैनीलौस मिलेगा। वह तेरा स्वागत करेगा। और वहीं तुझे मेरे दिये गये वरदान के अनुसार संसार की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी मिलेगी।" इतना कहकर वह अंतर्धान हो गई।

जब पैरिस मैनीलौस के दर्बार में पहुँचा और उसने अपना परिचय दिया तो राजा ने ट्रौय के शाहजादे का खड़े होकर स्वागत किया। उसने उसे अपने पास सिंहासन पर बिठाया और नाना प्रकार के मनोरंजनों से उसको संतुष्ट किया।

गंभीर मुद्रा में बैठा हुआ पैरिस एक विचित्र आनंद का अनुभव कर रहा था। दूसरे ही दिन मैनीलौस उसे महल के अंदर ले गया और उसका परिचय उसने अपनी स्त्री से कराया। जब पैरिस ने हैलन को देखा तो वह एक बार जड़वत् हो गया। संसार की सर्वश्रेष्ठ रूपसी को देखकर उसके नेत्र चौंधिया गये। ऐसी सुंदरता आज तक न कहीं देखी ही गई थी न सुनी ही गई थी। पैरिस ने देखा और निश्चय किया कि अब तक जिन स्त्रियों को वह सुंदर कहता आया था वह सभी हैलन के सम्मुख ऐसी प्रतीत होती थीं जैसे सूर्य के सम्मुख जुगनू दिखता हो। बरबस उसके होंठों से स्वर फूट निकला :

"अब तक जो कुछ था वह कुछ नहीं, जो कुछ है सो यही है।"

उस समय पैरिस विस्फारित नेत्रों से उस रूपवती स्त्री के सौंदर्य रस को इस प्रकार पी रहा था कि उसे परिस्थिति का भी ध्यान न रहा। भाग्यवश मैनीलौस ने यह बात लक्ष्य नहीं की क्योंकि वह अपने स्वभाव के अनुसार दीवालों पर टँगे अनेकानेक जानवरों के सिरों की ओर देख रहा था। परन्तु चतुर हैलन के तीक्ष्ण नेत्रों से उसकी वह आतुरता न छिप सकी। उसने देखा कि पैरिस की आँखों में एक विचित्र प्रकार की चमक आ गई थी और वह वंकिम कटाक्ष करती हुई मुस्करा दी। पैरिस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके प्रेमजाल में फँस चुका था और यदि उस समय वह अकेली होती तो निश्चय ही वह उसके पैरों पर गिर पड़ता।

हैलन ने मैनीलौस को अपने स्वयंवर में पसंद करके ही पति चुना था परन्तु कुछ ही दिनों में वह उससे ऊब चुकी थी। वह उच्छृङ्खल स्वभाव की स्त्री थी जिसे सदा नवीनतम वस्तु भाया करती थी। वह अत्यंत कामातुरा थी जो विलास और शृंगार को जीवन का मुख्य साधन समझा करती थी। मैनीलौस वीर अवश्य था परन्तु वह प्रेम के नित नये साधनों को अपनी स्त्री के हेतु जुटाने में असमर्थ था। फिर वह इतना रूपवान भी न था। उसमें धार्मिक प्रवृत्ति अधिक होने के कारण वह अपना अधिक समय देवताओं की बलि चढ़ाने में ही व्यतीत किया करता था। उस समय जब कि ग्रीष्म की मधुर ऋतु में रंग-बिरंगे फूलों से आच्छादित उपवन में भुवनमोहिनी हैलन, वीनस के उत्पाती पुत्र क्यूपिड के शरों से आहत होकर केलि की कामना करती हुई उसे देखती तो वह उसे न मिलता। उसे बलि देने में तन्मय देखकर उसका मन उचाट हो जाता और वह किसी अन्यत्र स्थान में जाकर पर-पुरुष की बाट जोहती थी। परन्तु मैनीलौस राजा था और उसके भय से भला कौन उसकी रानी से प्रेम करने की धृष्टता कर सकता था। ऐसे ही असंतोष में समय बीतता जाता था।

अब जब हैलन को पैरिस मिला तो वह विभोर हो गई। उस जैसा सुंदर, बलिष्ठ युवक पाकर वह उससे प्रेम करने को आतुर हो उठी।

× × ×

संगमर्मर के बने ताल में नीला जल संध्या के रक्तिम आलोक में चमचमा रहा था। वह इतना स्वच्छ था कि नीचे तह में गिरा हुआ हैलन का सुवर्ण वलय भी स्पष्ट चमक रहा था। कभी-कभी जैफायर द्वारा चालित पवन से वह हिल उठता और लहरें इधर से उधर फैल जातीं। उस सुनहले प्रकाश में ताल को घेरे हुए उपवन के वृक्ष मानो प्रेमियों को काम की ओर प्रेरित कर रहे थे। सोपानों पर अर्ध निमीलित नेत्रों से देखती हुई हैलन पैरिस की बलिष्ठ देह को देख-देखकर उच्छ्वसित श्वांस छोड़ रही थी और अनायास ही उसके सुंदर हाथ पुष्पों को तोड़-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तोड़कर फेंक रहे थे। कभी वह पुष्प पैरिस के मुँह पर लगते तो कभी उसके प्रशस्त वक्ष पर और पैरिस उस सौंदर्य की प्रतिमा को अपलक नेत्रों से देखता हुआ तन्मय हो रहा था। मैनीलौस कुछ दिनों से स्पार्टा से दूर आखेट के लिये गया हुआ था। जाते समय उसने पैरिस को भी आमंत्रित किया था। परन्तु हैलन के प्रेम में बद्ध पैरिस ने उससे बहाना बनाकर अपना पीछा छुड़ा लिया था। अब जब वह नहीं था, चंचल हैलन अपने प्रेमी से विहार करने में थकती न थी। वासना में रत वह स्त्री पैरिस को पल भर भी न छोड़ती थी और पैरिस स्वयं उस जैसी भुवनमोहिनी को पाकर जैसे धन्य हो गया था। हैलन ने हंसग्रीवा सदृश अपनी दोनों मांसल भुजाओं को ऊपर तान कर अँगड़ाई ली जिससे उसकी बाँहों की संधियों में सुनहली रोमावलियाँ चमक उठीं। पैरिस का अङ्ग-प्रत्यङ्ग उसे पा लेने के लिये तप्त हो उठा। उसी समय मधुर मुस्कान बिखेरती हुई वह बोली :

"प्रियतम ! समय अनुकूल है। हमें ऐसी योजना बनानी चाहिये कि कभी एक दूसरे से न बिछुड़ें....तुम्हें पाकर मैं ऐसा प्रतीत करने लगी हूँ जैसे मैं तुम्हारे लिये ही सृजन की गई थी....तुम्हें...." वह और अधिक न कह सकी क्योंकि उसी समय पैरिस ने आकर उसे अपने अंक में दबा लिया। उसके शरीर की मादक उष्णता का स्पर्श पाकर वह पागल हो उठा....

× × ×

कुछ दिनों बाद जब मैनीलौस लौटा तो हैलन स्पार्टा में उसे नहीं मिली। वह उन्मत्त सिंह की भाँति उसे चारों ओर ढूंढ़ने लगा और जब उसे मालूम हुआ कि मित्रता की संधि को तोड़कर पैरिस उसकी स्त्री को लेकर भाग गया है तो वह क्रोध से काँपने लगा। उसने उसी समय प्रतिज्ञा की कि वह इस अपमान का बदला उससे अवश्य लेगा। वह बोला :

"मैं इसी समय ट्रौय जाऊँगा और अपनी स्त्री को उस दुष्ट पैरिस से छुड़ाकर लाऊँगा। मैं हैलन के बिना नहीं रह सकता और उस धोखेबाज पैरिस को दंडित किये बिना नहीं रह सकता।"

उसने तुरंत अपने दूतों को आज्ञा दी कि वह सभी दिशाओं में फैल जायँ और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैलन को छुड़ाने के लिये आसपास के सभी राजाओं को आमंत्रित करें। ये सभी राजा वह थे जो टिन्डेरियस के यहाँ हैलन के स्वयंवर में उपस्थित थे और जो अब भी उस रूपसी के लिये जान देने को तैयार रहते थे। जब हैलन मैनीलौस को वर चुकी थी तो उन सभी ने उस समय शपथ ली थी कि जब कभी हैलन पर आपत्ति आयेगी वह सभी उसके लिये अपने प्राणों तक की आहुति हँस-हँसकर दे देंगे। दूत जब चले गये तो मैनीलौस रात-दिन परिश्रम कर जहाजी बेड़ा तैयार कराने लगा।

इसी तरह कई महीने बीत गये। धीरे-धीरे राजा लोग अपनी-अपनी सेनाएँ लेकर स्पार्टा में एकत्रित होने लगे। मैनीलौस उनकी मर्यादापूर्वक अभ्यर्थना करता हुआ उन्हें अपने विशाल महल में ठहराता था।

सभी राजा एकत्रित हो गये। परन्तु सारे ग्रीस में विख्यात दो प्रचण्ड पराक्रमी वीर अब तक नहीं आये थे। एक इथाका का राजा यूलिसीस (ओडैसियस) था और दूसरा था एकिलीस जो राजा पिलिअस और समुद्र-कन्या थेटिस का पुत्र था।

यूलिसीस को अब हैलन का कोई आकर्षण बाकी नहीं रह गया था। निश्चय ही वह उस सौंदर्य की देवी की उपासना दिल ही दिल अब भी करता था परन्तु जब से हैलन ने उससे विमुख होकर मैनीलौस को वर लिया था, वह भी उसकी अधिक परवाह नहीं करता था। उसने लौटकर एक अत्यंत कमनीय सुंदरी पैनीलोप से विवाह कर लिया था जिसे वह हृदय से प्रेम करता था। पैनीलौप बड़ी पतिव्रता स्त्री थी जो अपने पति को जी-जान से भी ज्यादा चाहती थी। उनके हाल ही में एक पुत्र भी उत्पन्न हुआ था जिसका नाम टैलीमाचास था। ऐसे सुखद वातावरण को छोड़कर यूलिसीस कहीं नहीं जाना चाहता था। इसीलिए वह पहली बार जब मैनीलौस के दूत उसे बुलाने गये तो उन्हें टाल गया। परन्तु जब दूसरी बार दूत फिर पहुँचे तो उनसे बचने के लिये उसने पागलपन का बहाना बनाया। उसने हल में एक गधा और एक बैल जोता और समुद्र तट पर रेत जोतते हुए कूंडों में नमक बोने लगा। इस तरह वह यह सिद्ध करना चाहता था कि वह पागल था। परन्तु दूतों को शक हुआ। उन्होंने उसकी जाँच करने की ठानी। उन्होंने झट से टैली-

९

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माचास को उठाकर हल की फाल के सामने सुला दिया कि देखें अब वह क्या करता है। यूलिसिस ने अपने नवजात प्यारे पुत्र को फाल के इतने पास देखकर झट से जानवरों को दूसरी ओर मोड़ दिया और इस प्रकार उसकी असलियत खुल गई। अब उसे मजबूरन उनके साथ जाना पड़ा क्योंकि वह पवित्र शपथों से बद्ध था। भारी हृदय से उसने अपनी सुंदरी यौवना स्त्री और अपने नवजात शिशु से विदा ली और ट्रौय की ओर अपने चुने हुए सैनिकों को लेकर चल पड़ा।

एकिलीस स्वयं तो निर्भीक था परन्तु उसकी माँ थेटिस उसे युद्ध में भेजना नहीं चाहती थी। उसने बहुत पहिले मंदिर में देववाणी सुन रखी थी कि उसका यह पुत्र ट्रौय की चहारदिवारी के नीचे युद्ध में मारा जायगा। और तभी जब एकिलीस शिशु ही था उसने उसके शरीर को शस्त्रों की मार से जादू द्वारा रक्षा करने का उपाय किया। वह उसे बहुत ही अधिक चाहती थी। स्टाईक्स नदी के पवित्र जल में उसने उस शिशु को एड़ी पकड़ कर एक बार डुबाकर बाहर निकाल लिया। सारा अंग पत्थर के समान पक्का हो गया परन्तु जहाँ से उसे पकड़ा गया था वही हिस्सा कमजोर रह गया था। बाद में एक बार फिर देववाणी हुई थी और उसमें स्पष्ट रूप से उसने सुना था कि जब उसका पुत्र मरेगा उसी एड़ी पर वार पाकर मरेगा। इसीलिए वह उसे युद्धभूमि में और खासकर ट्रौय तो भेजना ही नहीं चाहती थी। उसने उसे औरतों की तरह वस्त्र पहिना कर अपने हितैषी एक राजा के यहाँ छिपा दिया था। जब मैनीलौस के दूत पहुँचे तो एकिलीस उन्हें वहाँ नहीं मिला। हताश होकर उन्होंने राजा को आकर सारा समाचार सुना दिया। राजा मैनीलौस न अबकी बार दो दूत उसे ढूँढ़ने भेजे परन्तु वह भी निराश होकर वापस लौट आये।

एकिलीस जैसे महान् योद्धा के बिना मैनीलौस तथा उसके साथियों ने जाना उचित नहीं समझा। भला ऐसा वीर कैसे छोड़ा जा सकता था? परन्तु वह तो कहीं मिलता ही न था। मैनीलौस ने चिंता प्रकट की। वह बोला :

"एकिलीस के बिना सेना अधूरी है . . . . भला वह कैसे मिले?" और तभी यूलिसीस ने उत्तर दिया :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"मैं उसे ला सकता हूँ परन्तु कुछ समय अवश्य लगेगा।"

"हम प्रतीक्षा करेंगे. . . ." उत्सुकतापूर्वक सभी ने एक स्वर से उत्तर दिया।

यूलिसीस चल पड़ा। उसने एक सौदागर का भेष बनाया और अपनी पीठ पर एक गठरी लिये वह शहर-शहर उसे ढूँढ़ने लगा। बहुत दिनों घूमने के उपरांत वह एक ऐसे नगर में पहुँचा जहाँ उसे शक था कि एकिलीस छिपा हुआ था। उसने अपनी चतुर बुद्धि से और टोह लेने की बुद्धि से यह तो पता लगा ही लिया था कि थेटीस ने अपने पुत्र को कहीं औरत का भेष बनाकर छिपा रखा है। जब वह राजा के महल में पहुँचा तो उसे चारों ओर से सुंदरी युवतियों ने घेर लिया। वह बैठ गया और तब उसने अपनी गठरी खोलकर उसमें बँधी नाना प्रकार की वस्तुओं का प्रदर्शन किया। उसमें स्त्री तथा पुरुष दोनों के मन पसंद आने वाली कई चीजें निकलीं। बेशकीमती जवाहिरातों से जड़े अत्यंत स्वर्णाभरणों को देखकर युवतियाँ प्रसन्नता से किलकारियाँ मारती हुई उसके सामानों पर टूट पड़ीं और उनका मूल्य पूछने लगीं। किसी ने अच्छे वस्त्र उठाये तो कोई बहुमूल्य पात्रों को देखने लगी। परन्तु उनमें एक युवती ऐसी थी जो केवल छुरों और तलवारों कों ही देख रही थी। यूलिसिस समझ गया कि वह एकिलीस था। उसने उसे अलग एक स्थान में बुलाया और उससे कहा :

"हे वीर! तुम्हें इस प्रकार स्त्रियों के कपड़े पहिने देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है। तुम्हारा जैसा वीर तो सारे ग्रीस में भी नहीं मिल सकता फिर भला यह कहाँ तक उचित है कि तुम अपनी माता के कारण यहाँ स्त्रियों की भाँति छिपे पड़े कायरता दिखाते रहो। आज देश के सभी राजा ट्रौय की ओर जा रहे हैं और तुम कापुरुषों की भाँति यहाँ पड़े हो! उठो और फेंक दो इस स्त्री वेष को और उन्मत्त सिंह की भाँति शिरस्त्राण और कवच से सजो। लंबा भाला और लंबी तलवार ही तुम्हारे हाथों की शोभा है न कि यह चूड़ियाँ जो तुमने पहिन रखी हैं. . . .उठो और भेड़ियों की भाँति शत्रु पर टूट पड़ो. . . ."

एकिलीस जन्मजात वीर था। वह और अधिक नहीं सुन सका। उसने तुरंत वह वस्त्र उतार फेंके और उसी क्षण कवच और शिरस्त्राण से सज्जित होकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अस्त्र-शस्त्रों को लेकर वह यूलिसीस के साथ उस ओर चल पड़ा जहाँ मैनीलौस तथा अन्य राजा गण जहाजी बेड़ा सन्नद्ध किये उसकी प्रतीक्षा में खड़े थे।

एकिलीस की प्रतीक्षा में अब तक एक सहस्र जहाज़ समुद्र में तीव्र गति से बढ़ने को सन्नद्ध खड़े थे। परन्तु अब जब वह मिल गया और अपने चुने हुए धनुर्धरों को लेकर वहाँ आ पहुँचा तो हवा रुक गई। ऐसा प्रशांत वातावरण हो गया कि जल में हिलोरें भी नहीं पड़ती थीं। भला जहाज क्योंकर समुद्र में छोड़े जा सकते थे? हवा होती तभी तो पालों में भरकर उन्हें आगे बढ़ाती परन्तु वहाँ तो निश्चल वायु-मंडल था।

इसी तरह दिन पर दिन बीतने लगे और जब महीने पर महीने बीतने लगे तो सभी लोग घबरा गये। मैनीलौस, एकिलीस, यूलिसीस, एगैमैम्नोन तथा अन्यान्य वीर योद्धाओं ने जहाज के यांत्रिक कैलचास को आ घेरा और उससे बोले:

"हे कैलचास! तुम सर्वज्ञ हो, तुम्हें अवश्य ही यह मालूम होगा कि आजकल हवा एकदम क्यों बंद है। बताओ हमसे क्या अपराध हो गया है कि प्रकृति हमसे क्रुद्ध हो गई है। हम अभी उसका प्रायश्चित्त करने को तैयार हैं।"

कैलचास ने गहरी साँस छोड़ दी और उदास स्वर से बोला:

"बात बहुत ही खतरनाक है जिसे कहते हुए मुझे भय लगता है....परन्तु अब जब तुम लोग पूछते ही हो तो सुनो....ओलिम्पस की देवी डायना तुम पर क्रुद्ध हो उठी है....तुम्हारे सैनिकों ने गलती से अनजाने में डायना के कुछ वन्य पशुओं को मार डाला है जो उसको अत्यंत प्रिय थे। इसी कारण उस देवी ने प्रस्थान में रोड़ा अटकाया है।"

"हतभाग्य!" मैनीलौस ने हताश होकर माथा पीट लिया।

"परन्तु इसका उपाय क्या है? किस भाँति रूठी हुई देवी फिर से प्रसन्न होगी?" यूलिसीस ने पूछा।

"वह मत पूछो," कैलचास ने सशंक नेत्रों से चारों ओर देखकर उत्तर दिया।

"बताओ....अवश्य बताओ," मैनीलौस ने कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कैलचास थोड़ी देर चुप रहा, फिर बोला :

"मैनीलौस के भाई, मैसीनी राज्य के शासक एगैमैम्नौन की सुंदरी पुत्री ईफिग्निआ की बलि देनी होगी।"

"ईफिग्निआ !!!" मैनीलौस चिल्लाया।

"हाँ वही," कैलचास ने शांत स्वर से कहा. "डायना के पशुओं का बदला उसी के रक्त से दिया जा सकेगा।"

"और कोई उपाय," यूलिसीस ने पूछा।

"नहीं," दृढ़ स्वर से कैलचास ने उत्तर दिया।

मैनीलौस सिर पकड़ कर वहीं बैठ गया। एगैमैम्नौन उस धक्के को सह न सका। भावी आशंका से वह घबरा गया और उसकी आँखों के सामने उसकी सुंदरी पुत्री की शक्ल नाचने लगी। वह उत्तेजित होकर आँसू बहाता हुआ अपना सिर पीटने लगा। भला इतनी भोली और सुंदरी युवती की बलि कौन निर्दयी दे सकता था ? वह ऐसी कमनीय युवती थी कि उसे प्राप्त करने के लिये सारे ग्रीस के युवक लालायित थे, वह जिसके सौंदर्य को देखकर क्यूपिड काम बाणों को रोक ही नहीं सकता था। भला इस प्रकार कैसे मारी जा सकती थी ? "नहीं, नहीं ऐसा नहीं हो सकता," मैनीलौस जोर से चिल्लाया। सभी स्तब्ध खड़े थे। सभी के नेत्र एगैमैम्नौन पर जमे हुए थे। एगैमैम्नौन के सामने अब केवल दो ही रास्ते थे। पुत्री का जीवन अथवा देवताओं का संतोष। वह बड़ी देर अर्द्ध मूर्च्छित अवस्था में पड़ा रहा। तत्पश्चात् वह उठा। उसकी मुद्रा अत्यंत कठोर लग रही थी। उसने दूत को एकांत में ले जाकर कुछ समझाया। दूत ने उसके समझाये अनुसार क्लाईमैन्स्ट्रा से जाकर कहा :

"परम प्रतापी एगैमैम्नौन की आज्ञा से मैं यहाँ आया हूँ। उन्होंने अपनी पुत्री ईफ़िग्निआ को इसी क्षण अपने पास इसलिये बुलाया है क्योंकि वह उसका विवाह परम वीर सुंदर एकिलीस से करना चाहते हैं। अतएव तनिक भी देर किये बिना ईफ़िग्निआ अभी मेरे साथ चले।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्लाईमैन्स्ट्रा तथा ईफ़िग्निआ यह सुखद समाचार सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुये और तुरंत ही ईफ़िग्निआ जाने को उद्यत हो गई। सुंदरी क्लाईमैन्स्ट्रा स्वयं अपने हृदय में एकिलीस से प्रेम करती थी। उसको यह समाचार सुनकर थोड़ी ईर्षा अपनी युवती पुत्री से अवश्य हुई परन्तु फिर भी उसने अपनी प्रसन्नता ही प्रगट की।

हृदय में यौवन की तरंगों से फूली न समाती हुई ईफ़िग्निआ अपने पिता एगैमैम्नौन के पास पहुँची। वह उस वीर और सुंदर पुरुष एकिलीस को पाने की लालसा में उन्मत्त हो उठी थी। जिसके बारे में इतना सब कुछ सुन रखा था वही आज उसे मिलने वाला था। वह प्रेम में विभोर हो उठी थी।

परन्तु जब कठोर एगैमैम्नौन ने उससे बिना बोले हुए उसे निर्दयी पुजारियों को सौंप कर यह कहा:

"ले जाओ इसे और देवताओं को प्रसन्न करो।"

तो वह घबरा गई। उसके प्रेम के महल हवा में बिखर गये। वह एकदम हक्की-बक्की सी रह गई। कहाँ एकिलीस और कहाँ यह कठोर और निर्दयी पुजारी लोग! वह अधिक सोच भी नहीं सकी। वह चिल्लाई:

"हे पिता! तुम मुझे इन्हें क्यों देते हो? क्यों देते हो मुझे इन हत्यारों को? कहाँ है मेरा मँगेतर और कहाँ हो रही है मेरे विवाह की तैयारियाँ. . . .पिता! पिता!!"

परन्तु एगैमैम्नौन कुछ नहीं बोला। वह वज्र कठोर हो गया था। वह जैसे उसके बोल सुन ही नहीं रहा था। पुजारियों ने उसी समय उसे पकड़ लिया और उसे घसीट कर डायना के मंदिर की ओर ले चले। वह चिल्लाई:

"मुझे बचाओ! मुझे बचाओ! हे स्पार्टा के वीरों मुझे बचाओ! हे प्यारे एकिलीस! मैं तो तुम्हारे हेतु घर से आई थी, मुझे बचाओ, ये लोग मेरी हत्या करना चाहते हैं. . . ."

परन्तु कोई नहीं बोला क्योंकि देवता रुष्ट थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निर्दयी पुजारियों ने उसे बलपूर्वक घसीट कर डायना के मंदिर में ले जाकर पटक दिया। आल्टर पर उसका सिर रक्खा गया और तुरंत खड्ग का प्रहार किया। सुंदरी ईफ़िग्निआ का रुंड कटकर डायना की मूर्ति के चरणों में जा पड़ा। रक्त के फव्वारे निकलने लगे और वह कंचन की सी मांसल काया थोड़ी देर तड़प कर निश्चल हो गई। डायना ने उस सिर को उठाया और उसका ताजा रक्त अपनी जिह्वा से चाट लिया। ईफ़िग्निआ की चीत्कारों से वायुमंडल काँपने लगा और उसके पवित्र रुधिर से ग्रीस की भूमि सदा के लिये कलंकित हो गई। देवता प्रसन्न हो गये और उसी समय हवा छूट निकली। स्पार्टा के योद्धाओं ने जयनाद किया। हर्ष की लहर चारों ओर छा गई। पुत्री का बलिदान देकर एगैमैम्नौन अपने भाई की स्त्री को ढूंढ़ने चल दिया।

अब तक दो वर्ष तैयारियों में व्यतीत हो चुके थे। अब एक हज़ार जहाज़ों को लेकर मैनीलौस अनुकूल हवाओं के साथ समुद्र की छाती को चीरता हुआ चल पड़ा। सभी लोगों में एक अदम्य साहस उमड़ पड़ा था। जहाज़ ट्रौय की ओर वायु वेग से बढ़े चले जा रहे थे।

ट्रौय की ऊँची चहारदीवारी पर खड़े ट्रोजन्स ने सुदूर क्षितिज पर एक बहुत बड़े जहाजी बेड़े को अपनी ओर तीव्र गति से आते देखा तो उन्होंने अपने सेनापति हैक्टर को इसकी सूचना दी। यह हैक्टर राजा प्राइम का एक पुत्र था और बड़ा यशस्वी और वीर था। उसने तुरंत आज्ञा दी कि सेना उसके साथ समुद्र तीर पर चलकर आक्रमणकारियों को पृथ्वी पर उतरने से रोके। ऐसा ही हुआ। पूरे समुद्र तट को घेरे हुए ट्रोजन्स दूर-दूर तक फैल गये। परन्तु जब ग्रीस के योद्धा निकल आये तो वह उन्हें देखकर घबरा गये। ग्रीक्स इतने अधिक थे कि ट्रोजन्स ने उनकी इतनी अधिक संख्या का कभी ख्याल भी नहीं किया था। परन्तु जब हैक्टर ने ललकारा तो वह युद्ध करने में दक्ष सैनिक अद्‌भुत साहस से उन शत्रुओं पर टूट पड़े। घमासान युद्ध होने लगा। समुद्र तट पर रक्त से रेत भींग गई। परन्तु ग्रीक लोगों की इतनी अधिक संख्या थी कि ट्रौय के सैनिक उनको रोक न सके। ग्रीक्स ने उन्हें पीछे हटा दिया। वे लोग भागकर नगर की चहारदीवारी के अंदर घुस गये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और मजबूत फाटक बंद कर लिये गये। अब वे लोग नगर के परकोट पर चढ़ कर शत्रु से युद्ध करने लगे जो नगर के बाहर पड़े थे। नौ साल तक घेरा पड़ा रहा और युद्ध होता रहा। समुद्र तीर से परकोट कुछ ही मील के फ़ासले पर था और इसी भूमि में निरंतर युद्ध होता रहा। किसी की भी जीत न हो पाती थी। मुहासरा भयानक था तो प्रत्युत्तर भी कठोर था। न ग्रीक्स पीछे हटते थे न ट्रोजन्स ही लड़ते थकते थे। ऐसा प्रतीत होने लगा था कि यह युद्ध सदा से होता आया है और सदा इसी प्रकार होता नी रहेगा। वह ऐसा युद्ध था जिसका ओर-छोर पाना ही जटिल समस्या बन गया था।

और तब एक दिन पराक्रमी एकिलीस की एगैमैम्नौन से लड़ाई हो गई। इसी लड़ाई के कारण ग्रीक्स को भारी हानि पहुँची। ऐसा हुआ कि एक दिन जब ग्रीक्स ने पास में ही एक शहर को लूटा और उसका विध्वंस किया तो वहाँ की कई नवजवान स्त्रियों को वंदी भी बनाया। इनमें से दो युवतियाँ अत्यंत सुंदरी थीं।

एक का नाम क्राईसिस था और दूसरी का नाम ब्राईसिस। वह दोनों युवतियाँ अत्यंत रूपवती और आकर्षक थीं। दोनों ही कन्याएँ थीं और यौवन से पूर्ण अङ्ग-प्रत्यङ्गों से सुगठित थीं। उनके गौर मांसल शरीरों से मानो यौवन फूट निकलना चाहता था। शुभ्र कमल के समान स्निग्ध और कोमल अंगों वाली यह स्त्रियाँ अत्यंत लावण्यमयी थीं जिनके शरीरों से मादक सुगंध निकला करती थीं। योद्धाओं ने उन्हें लाकर अपने सेनानायकों को भेंट स्वरूप दिया। क्राइसिस एगैमैम्नौन को मिली और ब्राईसिस एकिलीस को। दोनों वीरों ने उन सुकुमारी स्त्रियों को पाकर प्रसन्नता प्रकट की और उनके साथ विहार करने लग गये।

परन्तु क्राईसिस एपोलो के एक मंदिर के पुजारी की पुत्री थी। उसे जब अपने पुत्री के दुर्भाग्य का पता चला तो वह सीधा ग्रीक लोगों के बीच आया और उसने एगैमैम्नौन से मिलने की इच्छा प्रकट की। उसे कोई महत्त्वपूर्ण व्यक्ति समझ कर सैनिक एगैमैम्नौन के सामने ले गये जहाँ पहुँचकर उसने अपनी पुत्री को वापस माँगा। उसने अपने साथ लाये हुए बहुत से धन को भी सामने हरजाने के स्वरूप रखा और वह प्रार्थना करते हुए बोला :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हे ग्रीक लोगों के प्रतापी राजा मेरी पुत्री मुझे वापस दे दो।" परन्तु उसे फटकार दिया गया। एगैमैम्नौन किसी भी हालत में उस सुन्दरी को देने को सहमत नहीं था। उसने वह धन तो रख लिया परंतु क्राईसिस को देने से सफा इंकार कर दिया। वल्कि अपने सैनिकों को आज्ञा दी कि उस बुड्ढे को धक्के मार कर बाहर निकाल दिया जाय। वुड्ढा वहुत रोया, झींका, गिड़गिड़ाया परन्तु किसी ने उसकी कुछ न सुनी। उल्टे सैनिकों ने उसका उपहास किया और मारा-पीटा भी। वह अत्यंत अपमानित होकर जब वापस आया तो क्रोध से उसका सारा शरीर काँप रहा था। वह उसी हालत में सीधा एपोलो के मंदिर में घुस गया और दोनों थर-थर हाथ आकाश की ओर उठाकर चिल्लाकर बोला :

"हे देवताओं के देवता। ओलिम्पस में भी ऐसा कोई नहीं है जो तेरा अपमान कर सके। मैं तो पुजारी हूँ फिर भला क्या कारण है कि साधारण ग्रीक्स ने मेरा इतना उपहास किया है ? क्या कारण है कि मेरी युवती पुत्री के साथ उन्होंने बलात्कार किया है ? यदि आप मुझसे सचमुच ही प्रसन्न हैं तो उन दुष्टों को दंड दें और मेरे अपमान का बदला उनसे लें। मुझे मेरी पुत्री वापस दिलादे..

सुंदर देवता एपोलो उसकी करुण पुकार सुनकर द्रवित हो उठा। उसने तुरंत एक अदृश्य तीर ग्रीक्स की ओर चला दिया। तीर का वहाँ जाकर लगना था कि सेना में महामारी की बीमारी फैल गई और धड़ाधड़ आदमी मरने लगे। दो दिन के अंदर ही इतने आदमी मर गये कि सर्वत्र हाहाकार फैल गया। इतनी लाशें इकट्ठी हो गईं कि रात-दिन चिता सुलगा करती थी। एगैमैम्नौन मैनीलौस तथा अन्य सेनानायकों ने चिंता की और अब वह आपस में सलाह करने लगे। सभी ने निश्चय किया कि एक साथ ही ट्रोजन्स और इस महामारी का मुकाबला नहीं कर सकते। किसी भी भाँति इस बीमारी से तो बचना ही होगा। ऐसा सभी ने निश्चय किया और तब उन्होंने एक बार फिर जाकर कैलचास को घेरा और उससे उस बीमारी का कारण पूछा। कैलचास ने सुना और बड़ी देर तक वह आँखें मूँदे सोचता रहा, तत्पश्चात् वह अनमने भाव से बोला :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"समाचार अत्यंत गंभीर है परंतु क्योंकि यह राजा से संबंध रखता है अतएव मैं स्पष्ट भाषण से डरता हूँ. . . .यह एगैमैम्नौन से संबंध. . . ."

"कोई परवाह नहीं," एगैमैम्नौन बीच ही में बोल उठा, "तुम बेधड़क होकर सच्ची बात कह डालो।" यह सुनकर कैलचास बोला :

"एपोलो ने स्वयं यह आपत्ति हम लोगों पर भेजी है। वह हमसे क्रुद्ध हो गया है क्योंकि हमने उसके पुजारी की कन्या का हरण किया है। क्राईसिस उस पुजारी की पुत्री है और उसके साथ निश्चय ही हम लोगों ने अत्याचार किया है। यदि वह अब भी अपने पिता के पास न भेजी गई तो सभी की मृत्यु अभी निश्चित है. ."

ग्रीक्स ने उस मांत्रिक सर्वज्ञ की गूढ़ बातें सुनी और सभी मान गये क्योंकि कैलचास सचमुच ही देवताओं के बारे में बहुत कुछ जानता था। पूरी सेना तथा सेनानायकों का एकमत हो गया कि क्राईसिस को उसी दम वापस उसके पिता के पास भेज दिया जाय। अब एगैमैम्नौन के पास सिवा उसे वापस भेजने के और कोई उपाय बाकी नहीं रह गया था। वह बोला :

"एपोलो ने मुझसे मेरी सुंदरी रखैल छीन ली है। मैं भी सेनापति होने के नाते ब्राइसिस को एकिलीस से अपने लिये छीने लेता हूँ" और बाज की तरह झपटकर उसने पास ही खड़ी उस युवती को अपनी ओर पकड़ कर घसीट लिया। एकिलीस ने सुना और धक सा रह गया। जब ब्राइसिस को घसीटा गया तो वह अपमान की ज्वाला में जलने लगा और क्रोध से उसके नथने फड़कने लगे। उसका हाथ स्वतः तलवार की मूठ पर चला गया। एगैमैम्नौन की इस हरकत से सभी स्तब्ध हो गये थे। भला एकिलीस से उसकी रखैल छीनने का साहस किसे हो सकता था ? जो कुछ हुआ ठीक नहीं हुआ था। इसका तो परिणाम निश्चय ही बहुत घातक होगा। इधर ऐकिलीस चौड़े फलक का विकराल खाँडा लेकर एगैमैम्नौन की ओर देखकर गुर्राया और तब भयानक परिस्थिति उत्पन्न हो गई। उसने ब्राईसिस को अपनी ओर वापस खींच लिया—निश्चय ही खून खराबा हो जाता परन्तु उसी समय ओलिम्पस से देवी मिनर्वा अदृश्य रूप में वहाँ आई और एकिलीस के बगल में खड़ी हो गई। वह केवल उसी को दिख रही थी। उसने आकर उसका उठा हुआ हाथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पकड़ लिया। वह उससे मधुर स्वर से बोली :

"मुझे जूनो ने भेजा है, अपनी तलवार म्यान में कर लो, एगैमैम्नौन को इस समय मारो मत, चाहो तो उसका साथ छोड़ दो....उससे बदला लेने के कई और उपाय भी तो हैं!!"

एकिलीस ने अपने उभड़ते हुए क्रोध को दबाया और तलवार नीची कर ली, परन्तु वह क्रोधोन्मत्त था, वह बोला :

"मैं स्वयं तुम्हारे साथ नहीं आया हूँ जो तुम्हारी धौंस झेलूँ। मेरा ट्रोजन्स ने कुछ नहीं बिगाड़ा था। मैं तो तुम्हारी प्रार्थना करने पर ही आया था और यह जानते हुए भी कि मैं यहा ट्रौय की चहारदीवारी के नीचे मारा जाऊँगा...मुझसे मैनीलौस ने इसरार किया था..." और फिर वह शेर की तरह झपट कर एगैमैम्नौन के सामने जा पहुँचा और चिल्लाया :

"तुम ब्राईसिस को भले ही मुझसे छीन लो अगर तुम यही चाहते हो, परन्तु सुन लो कि इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा। मैं भी प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुम्हारा साथ छोड़ दूँगा। तुम्हारे साथी यहीं ट्रौय की इस दीवाल के नीचे तड़प-तड़प कर मरेंगे। हैक्टर की प्यासी तलवार इनके लहू से लाल हो जायगी, तुम स्वयं घबराये फिरोगे और सारे संसार में तुम्हारे लिये और तुम्हारी सेना के लिये बचने का कोई स्थान नहीं मिलेगा—क्योंकि तुम ग्रीस के सबसे बड़े योद्धा का अपमान करते हुए नहीं शर्माते....मैं तुम्हारे बर्ताव पर तुम्हारे ऊपर थूकता हूँ..." और घृणा से उसने थूक दिया। तत्पश्चात् अपने मित्र पैट्रोक्लस को साथ लेकर वह उसी समय वहाँ से चल दिया। अपने खेमे में आकर वह एगैमैम्नौन के निर्णय की प्रतीक्षा करने लगा।

परन्तु उसे अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। संध्या समय ही एगैमैम्नौन ने अपने दो विश्वस्त अनुचरों को बुलाकर कहा :

"ऐकिलीस के खेमे में जाओ और ब्राईसिस को हाथ पकड़ कर ले आओ। यदि ऐकिलीस रोके तो तुम लोग झगड़ा मत करना। सीधे मेरे पास चले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आना. . . .और तब मैं स्वयं सेना लेकर उसके पास जाऊँगा. . !"

जब वह अनुचर आये और ब्राईसिस को पकड़ कर ले जाने लगे तो ऐकिलीस ने कोई विरोध नहीं किया। वह बैठा समुद्र की ओर देख रहा था। ब्राईसिस ने जाते-जाते एक बार मुड़ कर उसे देखा। वह उसे छोड़कर नहीं जाना चाहती थी। ऐकिलीस उससे आँख नहीं मिला सका। उसका क्रोध उमड़ रहा था। उन दोनों सैनिकों को मार गिराना उसके लिये बाँयें हाथ का खेल था परन्तु देवताओं के भय से वह कुछ न कर सका। चुपचाप उस असह्य अपमान को पी गया। देर तक वह उसी प्रकार बैठा रहा। परन्तु अंत में उसका धैर्य छूट गया। उसके नेत्रों से अपमान के कारण आँसू निकल आये। वह समुद्र की ओर दोनों हाथ फैलाये चिल्लाकर अपनी माता थैटिस को संबोधन करते हुए चिल्लाया :

"यह निश्चय है माता कि मेरी मृत्यु जवानी में ही लिखी है परन्तु क्या मैं सम्मानपूर्वक भी नहीं रह सकता ? . . . .ज्यूपिटर ने इस अधिकार से मुझे क्यों वंचित कर दिया ? अगर वह नहीं चाहता तो क्या मजाल थी कि एगैमैम्नौन मेरी आँखों के सामने से ब्राईसिस को ले जाता ?"

थैटिस उस समय अपने वृद्ध पिता देवता निरिअस से समुद्र के पेंदे में बैठी बातें कर रही थी। वह स्वयं देवी थी और सुंदरता में अद्वितीय थी। अपने प्यारे पुत्र की पुकार सुनकर वह विद्युत गति से उठी और समुद्र के ऊपर निकल आई। उसने देखा वीर ऐकिलीस आज अपमान की ज्वाला में जलता हुआ रो रहा था। उसका हृदय विक्षोभ से उमड़ आया। वह दौड़ी और अपने बेटे से चिपट गई। उसने उसे अपनी बाँहों में लेकर प्यार किया और सांत्वना दी। ऐकिलीस ने उसे सारा हाल बताया तो वह चिंता में पड़ गई। तत्पश्चात् वह बोली :

"हे पुत्र मैं अभी ओलिम्पस ज्यूपिटर के पास जाती हूँ और तेरे हेतु उससे सहायता मागूँगी।. . . .इस बीच तू खामोश रह और किसी से कुछ न कह. . . अपने खेमे में ही रहा कर. . . .एगैमैम्नौन की ओर से युद्ध भी मत कर. . .।"

इतना कहकर थैटिस अपने सुनहले पंख फैलाकर ओलिम्पस की ओर उड़ गई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आशाओं और निराशाओं के बीच गोते लगाता हुआ ऐकिलीस अपने खेमे के अंदर घुस गया।

× × ×

ओलिम्पस का राजा ज्यूपिटर ट्रौय के युद्ध के विषय में तटस्थ रहना चाहता था। उसे मालूम था कि अन्य देवी तथा देवतागण पक्षपात कर रहे हैं परन्तु वह स्वयं बीच में पड़ना ही नहीं चाहता था। दिल से वह ट्रोजन्स को अवश्य चाहता था क्योंकि वह बाकी देवताओं को न पूजकर केवल उसी में भक्ति रखते थे। उनके यहाँ उसके मंदिरों में सदा भीड़ लगी रहती थी और बलियाँ तो इतनी दी जाती थी कि उनकी गंध से वह सदा अघाया रहता था। इसके अतिरिक्त संसार की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी हैलन भी ट्रौय में उसे स्वयं पूजती थी जिसके सुखद स्पर्श से वह रोमांचित हो उठता था। वह दिल ही दिल उसकी छवि देखकर सुख पाया करता था। परन्तु प्रत्यक्ष में वह ट्रौय की ओर बोलते डरता था क्योंकि उसकी स्त्री जूनो उन लोगों के विरुद्ध थी, जब से पैरिस ने वह सुंदरता का फल वीनस को दे दिया था। वह उसके तथा उसके नगर का नाश करने पर उतारू हो गई थी। इसी प्रकार मिनर्वा भी ट्रोजन्स की शत्रु थी क्योंकि उसको भी वह फल नहीं दिया गया था। इन्हीं सब झगड़ों के कारण ज्यूपिटर ने अपने विलास में व्याघात डालना उचित न समझ कर निष्पक्ष रहना ही ठीक समझा था। परन्तु जब उसकी पुरानी प्रेमिका थैटिस उसके सामने आकर खड़ी हुई तो वह कामी देवता विचलित हो उठा। थैटिस अत्यंत रूपवती देवी थी जिसका यौवन उसके शरीर से फूटा पड़ता था। उसके मांसल गौर शरीर से मादक गंध निकला करती थी। वह वस्त्रों से अस्तव्यस्त जब वहाँ पहुँची तो ज्यूपिटर उसके उस रूप को देखकर चंचल हो उठा। उसे अपने पुराने प्रेम की याद कचोटने लगी। उसने इधर-उधर देखा और जब निश्चय हो गया कि जूनो आसपास में नहीं थी तो उसने उसे अपने पास बिठा लिया। थैटिस बोली :

"हे जगत् के पिता! मेरे पुत्र का इस प्रकार अपमान हो रहा है और तुम हो कि चुप बैठे देख रहे हो! क्या तुम्हें मेरे प्रेम की कुछ भी याद नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रही है ?....." और वह रोने लगी। उसका गला रुँध गया। ज्यूपिटर द्रवित हो उठा। वह प्यार से उसे अंक में दबाता हुआ बोला :

"प्रिये ! भला मैं तुम्हें भूल सकता हूँ ?....तुम्हारे साथ किया हुआ विहार तो मुझे रह-रहकर तड़पाया करता है....परन्तु इस मामले में तो मैं निष्पक्ष ही रहना चाहता था, इसलिए बीच में कुछ नहीं बोला था...."

थैटिस ने उसकी कमज़ोरी का लाभ उठाते हुए अपना शरीर उसके अंक में ढीला छोड़ दिया और अपनी हंसग्रीवा सदृश बाँहें उसके गले में डालती हुई मदविह्वल नेत्रों से उसकी ओर कटाक्ष किया। तत्पश्चात् वह उच्छवसित श्वास से बोली :

"मेरा पुत्र जवानी में ही मर जायगा क्योंकि उतनी ही आयु लेकर वह जन्मा था। वह ग्रीस का सबसे बड़ा योद्धा है। उसके समान वीर कहीं भी नहीं है। फिर भला एगैमैम्नौन ने किस प्रकार से उसकी वस्तु छीन ली ? वह सुंदरी ब्राइसिस जो उसे युद्ध में लूटी हुई इनाम के बतौर मिली थी उससे क्यों छीन ली गई ?....इतना अपमान आज तक किसी वीर योद्धा का नहीं हुआ है। मैं इसे तनिक भी सहन नहीं कर सकती। अब तुम्हें अवश्य मेरी मदद करनी होगी....युद्ध की दशा बदल दो। ग्रीस के योद्धाओं पर आपत्ति के बादल भेजो जो उन पर मँडराने लगें। ट्रौय जीतने लगे और जब तक मेरे पुत्र के अपमान का बदला न ले लिया जाय तब तक ग्रीक लोगों की निरंतर हत्या होती रहे...." थैटिस उत्तेजित हो उठी थी। उसकी धमनियों में रक्त तेजी से बहने लगा था जिससे उसका शरीर एकदम गर्मा गया। वह उष्ण स्पर्श ज्यूपिटर को बहुत भला लगा। वह स्वयं उस रूप को देखकर तथा उस स्पर्श से उत्तेजना से भर गया था। उसने इच्छामात्र से अपने चारों ओर बादलों का घेरा बना लिया और वह प्रेम में रत हो गया।

जब थैटिस उठ कर जाने को उद्यत हुई तो ज्यूपिटर ने उसको प्रसन्न करने के लिये एक उपाय सोचा जिससे वह चुपचाप ग्रीक्स को हानि पहुँचा सके। यह तो वह जानता ही था कि बिना एकिलीस की सहायता लिये हुए ग्रीक लोग ट्रोजन्स

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से नहीं जीत सकते थे और अब जब कि एकिलीस उनसे विमुख हो गया था तो उन्हें लड़ा उनका नाश ही कराना था। उसने एगैमैम्नौन् को स्वप्न में यह जताया कि अब जब कि महामारी रुक चुकी थी, यही मौका था जब कि ग्रीक लोग ट्रौय पर हमला बोल दें। एगैमैम्नौन ने जब उस स्वप्न को देखा तो वह उसे देवताओं की आज्ञा समझ कर उसी समय सेना लेकर ट्रौय पर टूट पड़ा। उसकी हार निश्चित थी परन्तु वह इसे भला क्या समझ पाता ? भयानक युद्ध होने लगा और ग्रीक लोग कट-कटकर धराशायी होने लगे। उनका इस प्रकार ह्रास होते देखकर थैटिस के नेत्र खुशी से चमकने लगे और उसने कृतज्ञतापूर्वक अपने प्रेमी ज्यूपिटर की ओर देखा और मुस्करा दी। उसी समय दूर जूनो आती दिखाई दी और ज्यूपिटर ने उसे चुपके से भाग जाने को इशारा कर दिया। थैटिस बादलों से छिपी हुई वहाँ से गायब हो गई और ज्यूपिटर ने हँस कर अपनी पत्नी का स्वागत किया।

× × ×

इधर एकिलीस अपने मित्र के साथ खेमे में पड़ा हुआ था और उधर ट्रौय की चहारदीवारी के नीचे भयानक युद्ध छिड़ रहा था। मनुष्य मनुष्य की हत्या करते थकता ही न था। घायलों के आर्त्तनाद से आकाश फट रहा था। रक्त की नदी बह रही थी। जगह-जगह लाशों पर गिद्ध तथा कौवे मँडरा रहे थे। वह उनके मांस को खींच-खींच कर खाते थे और रण की विभीषिका पर मानो उत्सव मनाते हुए इधर से उधर कूद रहे थे। युद्ध उस समय लोमहर्षण था। परकोटे पर चढ़े हुए ट्रोजन्स ऊपर से गर्म तेल नीचे खड़े ग्रीक्स पर उँड़ेल देते थे। पत्थरों की निरंतर वर्षा हो रही थी। सारा वायुमंडल रक्तरंजित हो रहा था। आकाश में धनुषों से छूटे हुए तीर ऐसे छा गये थे कि अंधकार छा रहा था। भाले हवा में उड़ रहे थे। मैनीलौस हत्या करता हुआ शत्रुओं का मर्दन कर रहा था।

उसी समय दरवाज़ा खुला और उसमें से एक सुंदर व्यक्ति बाहर आया। फाटक पीछे से बंद कर लिया गया। यह आनेवाला व्यक्ति चीते की खाल के बने वस्त्र पहिने अत्यंत सुगठित तथा तेजयुक्त लग रहा था। उसकी चुस्त पोशाक में से उसका अद्भुत गठन प्रदर्शित हो रहा था। उसकी सिंह-कटि के बगल में चौड़े

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फलक का खड्ग लटक रहा था। सिर से ऊँचा भाला मध्याह्न के सूर्य में चमचमा रहा था। उसका शिरस्त्राण और कवच लोहे का था जो प्रकाश में जगमगा रहा था। लंबा धनुष कंधे पर चढ़ाये और तूणीर में तीरों को लगाये वह भयानक लग रहा था। उसका उस समय का रूप अद्वितीय था। वह तेज़ी से आगे बढ़ा और ग्रीस सेना के सामने पहुँच कर उसने उन्हें ललकारा। उसी समय परकोटे पर खड़े सैनिकों ने जयनाद किया :

"युवराज पैरिस की....जय!!!"

ग्रीक्स ने देखा कि वही पैरिस था जो मैनीलौस की पत्नी को भगा लाया था। वही था वह पैरिस जिसके साथ आज ग्यारह वर्षों से संसार की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी हैलेन अखंड विलास में रत थी। निश्चय ही वह पुरुष धन्य था जिसे इतना बड़ा गौरव प्राप्त हुआ था। एक बार को सभी के नेत्र उसके स्वर्गिक तेज को देखकर चौंधिया गये। उसी समय पैरिस चिल्लाया, उसने तलवार म्यान से बाहर निकाल ली। वह निकलकर ऐसे चमकने लगी जैसे बादलों के बीच से विद्युत तड़प गई हो। वह गरज कर बोला :

"मैं पैरिस! प्राइम और हैक्यूबा का औरस पुत्र चुनौती देता हूँ कि कोई भी ग्रीक मेरे सामने आकर मुझसे युद्ध करे।....यदि डरते हो तो भाग जाओ और अगर साहस हो तो सामने आ जाओ। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि आज मेरी तलवार के सामने कोई भी जीवित बचकर नहीं जायगा।"

वह कह चुका ही था कि पीछे से सैनिकों को ढकेलता हुआ मैनीलौस मैदान के बीच आ गया। वह उस समय रौद्र रूप से उद्दीप्त हो रहा था। लाल-लाल आँखों से अग्नि निकल रही थी। उसकी दाढ़ी और मूँछें हवा में फरफरा रही थीं। वह हाथ में भाला लिये पैरिस की ओर लपका। वह अपने जानी दुश्मन से बदला लेने को उतावला हो उठा था। वह जिसने उसे धोखा दिया था और उसकी स्त्री को लेकर भाग आया था, जिसने उसे इतना अपमानित किया था इस समय उसके इतने पास खड़ा उसी को ललकारे और वह चुपचाप देखता रह जाय। असंभव, वह इसका बदला अवश्य लेगा। मैनीलौस शेर की तरह दहाड़ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लगा। उसका वह भयानक रूप देखकर पैरिस डर गया और पीछे भागा। उसकी सारी वीरता कायरता में परिणत हो गई। साहस उसे छोड़ गया और वह अपने प्राणों को बचाने के हेतु ट्रौय के फाटक की ओर भागा। मैनीलौस ने घृणा से अट्टहास किया और एक तीर उस भागते हुए शत्रु पर पीछे से छोड़ा परन्तु निशाना चूक गया। पैरिस फाटक के अंदर घुस गया परन्तु उसी समय ट्रोजन्स ने उसे धक्का मार कर फिर बाहर निकाल दिया। वह लोग उससे आंतरिक रूप से घृणा किया करते थे क्योंकि उसी के कारण तो इतने वर्षों से ट्रौय पर आपत्ति आई हुई थी। न वह हैलन को लेकर वहाँ आता और न यह युद्ध होता——यह बात सभी की जुबान पर रहती थी। अब जो उन्होंने उसे भागकर छिपते देखा तो उन्हें उसकी कायरता पर बहुत शर्म आई तथा साथ ही साथ क्रोध भी, वे बोले :

"हे पैरिस ! जब तुम बाहर निकले थे तब हमने तुम्हारा नाम लेकर जयजयकार किया था। तुमने उसी समय युद्ध के लिये ग्रीक्स को ललकारते हुए प्रतिज्ञा भी की थी कि तुम कभी पीछे न हटोगे....अब तुम्हारा इस प्रकार भागना बहुत ही लज्जाजनक विषय है। तुम अंदर नहीं आ सकते। अब तो तुम्हें बाहर जाकर अपनी प्रतिज्ञा निभानी ही होगी....।"

युद्ध अब रुक गया था। ग्रीक्स और ट्रोजन्स दोनों ने अपने-अपने हथियार डाल दिये थे। कोई भी युद्ध से राजी नहीं था। बीच में मैनीलौस और पैरिस को लेकर दोनों दल अलग-अलग खड़े हो गये। झगड़ा वास्तविकता में उन्हीं दोनों का तो था ही। वही तो थे हैलन के प्रेमी अथवा पति, उन्हीं को क्यों न आपस में निपट लिया जाय। सभी को यह बात जँच गई। तुरंत आपस में उन्होंने उस द्वन्द्व युद्ध की शर्तें तैयार कर लीं और एक दूसरे पक्ष के सम्मुख रखीं। यदि पैरिस जीत जायेगा तो ग्रीक्स वापिस चले जायेंगे और हैलन अपने नये प्रेमी की ही बनी रहेगी। और अगर वह हार गया तो मैनीलौस ही उसका पति माना जायगा। वही उसे या उसके धन का पाने का हकदार होगा। उस हालत में ट्रोजन्स उन्हें अर्थात् ग्रीक्स को हर्जाने के स्वरूप और भी धन देंगे। पवित्र शपथों द्वारा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन शर्तों की पुष्टि की गई और तब हैलन के दोनों पति मैदान के बीच लड़ने के लिये छोड़ दिये गये।

उसी समय जब युद्धभूमि में द्वन्द्व की वार्ता हो रही थी सुंदरी हैलन परकोटे पर उस स्थान पर आई जहाँ राजा प्राइम अपने अन्य पुत्रों सहित बैठा था। वह देखने आई थी कि उसका कौन सा पति विजयी होता है। वृद्ध राजा प्राइम ने उसका प्रेमपूर्वक स्वागत किया और अपने बगल में ही आसन पर बिठाया। परन्तु ट्रौय के अन्यान्य वृद्धों ने उसे देखकर मुँह बिचकाया क्योंकि वही तो थी उस सारे उत्पात की जड़। हैलन प्राइम के पास बैठ कर पुराने ग्रीक योद्धाओं को उँगली उठाकर उसे दिखाने लगी और सभी के बारे में कुछ न कुछ कहती जाती थी। उसका यौवन अखंड था और सभी देखने वालों के सिर स्वतः उसके सामने झुक जाते थे। लोग आपस में फुसफुसाकर कहते थे : "यह तो निश्चय ही कोई ओलिम्पस की देवी है। ग्रीक्स इसी को लेने इतनी दूर से ट्रौय आये हैं।" हैलन ने उनकी यह बातें सुनीं परन्तु उसका ध्यान उस ओर न था। वह तो अपने दोनों पतियों की ओर देख रही थी और यह जानने को उत्सुक थी कि देखें उनमें कौन विजयी होता है।

बाहर मैदान में तेजी से समाचार फैल गया "संसार की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी स्वयं युद्ध देखने आई है" और सभी के नेत्र उसकी ओर मुड़ गये। पैरिस ने अपनी प्रियतमा को देखा और वह नवीन स्फूर्ति से भर उठा। मैनीलौस ने अपनी स्त्री को देखा और वह क्रोध से पागल हो उठा। उसने गरज कर अपने प्रतिद्वन्दी को ललकारा। वह चिल्लाया :

"पहिले तू वार कर...."

और पैरिस ने ताक कर भाला उस पर फेंका। मैनीलौस बगल में कूद गया। वार निष्फल गया। अब मैनीलौस की बारी थी। उसने अपना बलिष्ठ हाथ ऊपर उठाया और घुमाकर अपना भाला छोड़ दिया। वह मृत्यु का प्रतीक विकराल फलक वाला भाला विद्युत गति से वायु को चीरता हुआ पैरिस पर आ गिरा। पैरिस ने बचने की बहुत चेष्टा की परन्तु वह बच न सका। भाला भीमवेग से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसकी ढाल को फाड़ता हुआ उसके वस्त्रों से टकराया जिससे वह चीते की खाल भी फट गई। उसकी नोक थोड़ी उसके शरीर में भी घुस गई और रक्त भी चमक आया। परन्तु वह बच गया। उसका उस विकराल प्रहार से बचना चमत्कार सा प्रतीत होने लगा। हैलन साँस बाँधे उस अद्भुत युद्ध को देख रही थी। अपना वार खाली जाते देख मैनीलौस ने झपट कर अपना चौड़े फलक वाला खड्ग पैरिस के सिर पर दे मारा परन्तु वह उसके लौह शिरस्त्राण से लगकर टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़ा। पैरिस अब भी घायल नहीं हुआ था। मैनोलौस हताश हो गया। वह चिल्लाया :

"हे ज्यूपिटर ! मुझसे इतना विमुख क्यों हो गया है तू ? देख मेरा शत्रु मेरे दोनों प्रहारों से अभी तक जीवित है।"

और तब क्रोधोन्मत्त होकर वह उस पर टूट पड़ा और उसने उससे हाथापाई शुरू कर दी। उस वेग में उसके हाथ पैरिस के शिरस्त्राण के ऊपरी भाग में लगे। घोड़े के बालों की बनी कलँगी आ गई जिसे पकड़ कर उसने उसे अपनी ओर जोर से खींचा। वह उसे घसीट कर ग्रीक सेना की ओर लाने लगा। पैरिस का शिरस्त्राण ठोढ़ी पर बँधा था। जब ऊपर से वह खींचा गया तो नीचे से वह सरक कर उसके गले पर आ गया और जब उस पर जोर लगा तो उसका गला दबने लगा। वह इतनी जोर से खिंचा कि शीघ्र ही उसकी शक्ति क्षीण हो गई। मैनीलौस ने और खींचा तो वह मृतप्राय हो गया। निश्चय था कि अब विजय मैनीलौस की ही होगी परन्तु उसी समय एक अद्भुत घटना घटी। इससे पहिले कि मैनीलौस उसे लेकर अपने लोगों तक पहुँचता वीनस अदृश्य रूप से अपने प्रियपात्र की मदद को आ पहुँची। वह उसका इस प्रकार मरना बिल्कुल सहन नहीं कर सकती थी। उसने तड़ाक से पैरिस के उस गले के बंधन को तोड़ दिया। गला खुलते ही पैरिस सँभल गया। अब वह अड़कर खड़ा हो गया। परन्तु इतनी देर तक साँस के घुट जाने से वह अब भी अपने आपको पूर्ण रूप से सँभाल नहीं पाया था। उस समय भी मैनीलौस ही जीतता दिखाई दे रहा था। वीनस ने झट से इच्छाशक्ति से पैरिस के चारों ओर घना कुहासा छा दिया और जब उसके अंदर वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिल्कुल अदृश्य हो गया तो वह उसे पलक मारते ट्रौय के अंदर उसके महल में ले आई जहाँ उसने उसे आराम से लिटा दिया। उधर जब कुहासा हटा तो मैनीलौस ने देखा प्रतिद्वंद्वी गायब हो गया था। उसके हाथ में केवल पैरिस का शिरस्त्राण लटक रहा था। वह क्रोध की सभी सीमाओं को लाँघ चुका था। घायल सिंह की भाँति वह उसे चारों ओर ढूँढ़ने लगा परन्तु जब वह कहीं नहीं मिला तो वह ट्रोजन्स के बीच घुस गया और उसका नाम ले लेकर चिल्लाने लगा। ट्रोजन्स स्वयं हैरान थे कि पलक मारते पैरिस सबकी दृष्टि से कहाँ लोप हो गया। यदि कहीं उस समय वह उन्हें मिल जाता तो निश्चय ही वह उसे पकड़ कर मैनीलौस को दे देते क्योंकि वह उससे आंतरिक घृणा जो करते थे।

एगैमैम्नौन उसी समय खड्ग उठाकर बोला : "प्रत्यक्ष है कि मैनीलौस जीत गया है, पैरिस जीतता तो यहाँ रणभूमि में होता। वह भाग गया, यही मैनीलौस की विजय का प्रमाण है। अब हैलन हमारी हुई। लाओ उसे हमें दे दो और हम भी वचनानुसार सभी अपनी सेना लेकर वापस चले जायेंगे।"

ग्रीक्स ने सुना और मैनीलौस का जयजयकार किया। ट्रौय की सेना ने उस जयनाद को सुनकर स्वयं भी मैनीलौस की प्रशंसा की। वह युद्ध से उकता गये थे। उन्हें एगैमैम्नौन का निर्णय न्याययुक्त प्रतीत हुआ था। निकट था कि युद्ध समाप्त हो जाता और हैलन ग्रीक्स को दे दी जाती परन्तु उसी समय देवताओं ने बीच में पड़ कर उस समझौते की परिस्थिति का अंत कर दिया। जूनो युद्ध का अंत कभी नहीं होने देना चाहती थी। वह तो ट्रौय का नाश चाहती थी। पैरिस जब तक न मर जाता भला उसे कब शांति मिलती। उसने झट से मिनर्वा को युद्धभूमि में भेजा जो एक साधारण ट्रोजन का वेष धरकर सेना में मिल गई। वहाँ एक मूर्ख सैनिक को देखकर वह उससे बोली :

"यही अवसर है जब तू महान् बन सकता है। यदि तेरे तीर से परम प्रतापी मैनीलौस मारा गया तो तू अमर यश और कीर्त्ति प्राप्त कर सकेगा। इतने बड़े योद्धा को मार कर तेरा नाम सूर्य की भाँति सारे संसार में चमक उठेगा.... उठा धनुष और मौका मत चूक...."

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस सैनिक की सोचने की शक्ति तो कुछ थी ही नहीं, इतना बड़ा मान पाने की लालसा से वह बहक गया। उसने एक तीर तरकस से निकाला और धनुष पर चढ़ा कर मैनीलौस की ओर छोड़ दिया। मैनीलौस के कवच पर जाकर वह बड़ी जोर से लगा और टूट गया। मैनीलौस को तो उससे कोई चोट नहीं पहुँची परन्तु सेनाओं में वैमनस्य फिर फैल गया। ग्रीक्स ने समझा कि ट्रोजन्स ने उनके साथ धोखा किया है। वह एकदम उन पर टूट पड़े। बस फिर घमासान युद्ध छिड़ गया। रक्त फिर से बहने लगा और जहाँ-तहाँ 'मारो-काटो' के गगनभेदी नारे सुनाई पड़ने लगे। परन्तु अबकी बार युद्ध में भाग लेने वाले केवल ग्रीक्स और ट्रोजन्स ही नहीं थे क्योंकि ओलिम्पस के देवी-देवतागण भी अपने-अपने प्रिय पात्रों के साथ पक्षपात करते हुए उसी युद्ध में उतर आये थे और भाँति-भाँति से उनकी सहायता कर रहे थे।

अपने-अपने स्वार्थों के कारण ओलिम्पस के देवी-देवतागण युद्ध में भाग लेने लगे। जनो और मिनर्वा ने वीनस को ही इस सारे झगड़े का कारण ठहराया। जूनो बोली :

"इसी ने सबसे पहिले झगड़ा बढ़ाया था। जब मैनीलौस ने पैरिस को पकड़ ही लिया था तो भला इसे क्या पड़ी थी कि उसे कोहरे में छिपाकर वहाँ से ले आई। अवश्य ही वह पैरिस का पक्ष ले रही थी और जब वह पक्ष लेगी तो हम भी लेंगी।"

"और दोष एपोलो का भी है", मिनर्वा ने सहारा दिया, "यह भी हैक्टर को बचाने के लिये भागा-भागा फिरा करता है. . . .निश्चय ही हम लोग भी अपने मित्रों की खुले आम मदद करेंगी. . . ."

ज्यूपिटर चुप रहा। वह किसी ओर भी नहीं बोलना चाहता था। देवताओं ने अब खुले आम लड़ाई में भाग लेने की सोची। जूनो, मिनर्वा और नैप्चून ग्रीक्स की ओर हो गये और वीनस, मार्स, एपोलो और डायना ट्रोजन्स की ओर से लड़ने लगे। भयानक से भयानक युद्ध में भी उन्होंने लड़ाई लड़ी और घायल भी वे काफी हो गये। वह निश्चय ही उन चोटों से मर जाते यदि वे देवता होने के नाते अमर न होते।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

युद्ध के शुरू में ग्रीक्स जीतते प्रतीत हुए। एकिलीस हालाँकि युद्ध में भाग नहीं ले रहा था फिर भी उन्हीं का पक्ष भारी पड़ रहा था। उन दिनों डायोमिडीस उनका नेतृत्व कर रहा था। वह बड़ा भयंकर योद्धा था। वह दैत्याकार पुरुष कठोर मुद्राओं वाला था और हत्या करते थकता न था। उसका साथी एजाक्स सेना के दूसरे भाग का संचालन कर रहा था। उस समय ऐसा लोमहर्षण युद्ध हुआ कि ट्रोजन्स की लाशों से युद्ध-भूमि ढँक गई। स्वयं डायोमिडीस ने इतने आदमी मारे कि वह ट्रोजन्स के लिये आतंक बन गया। वह जिधर से भी तलवार घुमाता हुआ निकल जाता उधर ही भगदड़ मचने लग जाती। ट्रोजन्स हथियार डाल-डालकर भागने लग गये थे। एक बार उसके सामने वीनस आ गई और उसने उसकी सुंदरता की तनिक भी परवाह न करते हुए उस पर तलवार का सीधा वार किया। वीनस का हाथ फट गया और वह डरकर पीछे भागी। बात यह थी कि उसका पुत्र ईनिअस उस समय डायोमिडिस से लड़ रहा था। ईनिअस उसके मुकाबले में बहुत हल्का बैठा। और निकट था कि डायोमिडिस उसे काट डालता कि वीनस उसे बचाती हुई बीच में कूद पड़ी। उसी समय मौका पाकर ईनिअस भाग खड़ा हुआ। अपने शिकार को इस प्रकार भागते देखकर डायोमिडिस आपे से बाहर हो गया और उसने खड्ग का सीधा वार वीनस ही पर कर डाला। वह उस चोट से बुरी तरह आहत हो गई और दर्द से कराह उठी। वह भागी और सीधी ओलिम्पस पहुँची और वहाँ पहुँच कर फफक-फफक कर रोने लगी। ज्यूपिटर ने उसकी वह हालत देखी तो हमदर्दी के बजाय वह उसे देखकर हँसा। वह बोला :

"हे सुंदरी ! युद्ध और झगड़ों से तुम भला जैसी सुकुमारियों को क्या लेना-देना है. . . .तुम तो प्रेम करो, ब्याह रचाओ. . .वासना के प्रवाह बहने दो. . . . इन कामों को मार्स और मिनर्वा के लिये ही छोड़ दो. . . .तुम तो कामोन्मत्त होकर वासना में डूबी रहो. . . .अपने उच्छ्वसित श्वाँसों से वायुमंडल में मादक ऊष्मा भर दो. . . .।" और वह हँसता हुआ उसका परिहास करने लगा।

डायोमिडिस रण-तांडव कर रहा था। उसके सामने से जीवित बचकर कोई नहीं जाता था। एक स्थान पर वह युद्ध के देवता मार्स से जा भिड़ा। उस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समय मार्स हैक्टर के पास खड़ा था और उसकी रक्षा कर रहा था। डायोमिडिस की रक्षा स्वयं जूनो कर रही थी। मार्स पर उसने भयंकरतापूर्वक आक्रमण किया और उस पर पूरे वेग से लंबा भाला फेंका। मार्स बगल में कूदा तो सही पर भाला उसके कवच को फाड़कर उसके शरीर में जा लगा और मांस में घुस गया। रक्त बहने लगा और मार्स पीड़ा से बुरी तरह चिल्लाया। वह ऐसा गरजा कि ऐसा मालूम होने लगा जैसे सहस्रों आदमी एक साथ खड़े होकर चिल्ला रहे हों। उस महारव से आकाश फट गया, पर्वत शिखर काँपने लगे और पृथ्वी हिलने लगी। क्षण भर को वीर डायोमिडिस भी भौंचक खड़ा रह गया। परन्तु मार्स उसके बाद वहाँ नहीं ठहर सका। वह डरकर ओलिम्पस की ओर भागा। वह जो मर्त्यलोक के प्राणियों पर युद्ध के संकट भेजकर उन्हें कटवाकर मरवाने में आनंद लिया करता था स्वयं जब घायल हो गया तो तनिक भी दुख नहीं झेल सका। पृथ्वी को अपने ऊपर वज्र कठोर पदाघातों से कँपाता हुआ वह पीछे भागा। रुधिर उसके शरीर से ऐसा गिर रहा था जैसे पर्वत से सिंदूर झर रहा हो। आकाश में पहुँच कर वह अपने गृद्ध पंखों को फैला कर ओलिम्पस की ओर उड़ गया।

उस समय ज्यूपिटर सुंदरी देवियों के हाथों से मदिरापान कर रहा था। मार्स उसके सामने जाकर चिल्लाया :

"हे पिता ! इन मानवों की हरकतें देखो। अब यह आपस में ही हत्या करते संतोष नहीं पाते बल्कि हम देवताओं को मारना चाहते हैं। मैं हैक्टर से खड़ा बातें कर रहा था कि मुझे उस नीच डायोमिडिस ने इतना घायल कर दिया. . . ." वह और अधिक बोल नहीं सका। उसका काफी रक्त बह गया था। वह गिरा और मूच्छित हो गया।

ज्यूपिटर को जाहिरा उससे कोई हमदर्दी नहीं थी क्योंकि वह तो स्वयं तटस्थ रहने का ढोंग कर रहा था। परन्तु आंतरिक भाव से उसे दुख हुआ। उसने तुरंत आज्ञा दी कि मार्स तथा वीनस के घावों की मरहमपट्टी की जाय और उत्तम जड़ी-बूटियों द्वारा उसने उनका इलाज करवाया। उसकी औषधियाँ अमूल्य थीं और स्वर्गीय थीं जिनके लगाते-लगाते घाव अच्छे हो गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब मार्स रणभूमि से भागा तो ग्रीक्स के हौसले बहुत बढ़ गये। उन्होंने ट्रोजन्स को इतना मारा कि प्रतीत होने लगा कि वह अब जीते तब जीते। ट्रौय में हाहाकार मच गया। उस शोर को सुनकर ज्यूपिटर ने अपने स्वर्ण सिंहासन से नीचे झाँक कर देखा और उसे थैटिस को दिया हुआ वचन याद आ गया। उसने सोचा इस तरह तो ट्रोजन्स हार जायँगे. . . . नहीं ऐसा नहीं होना चाहिये. . . . कम से कम तब तक तो नहीं जब तक एकिलीस रणभूमि में न उतर आवे और तब उसने गरज कर आज्ञा छोड़ी :

"तमाम देवी-देवतागण एकदम ओलिम्पस में वापिस आ जायँ। कोई भी बाहर न जाय। यदि कोई मेरी इस आज्ञा का उल्लंघन करेगा तो. . ." वह तनिक रुका और फिर चारों ओर दृष्टि घुमाकर बोला :

". . . . तो मैं उसको अपने वज्र से आहत करूँगा अन्यथा उस बिना तह वाले अंधकारपूर्ण गड्ढे में टारटारस फेंक दूँगा। . . . खबरदार जो किसी ने मेरी आज्ञा को तोड़ने का साहस किया।"

सभी देवी तथा देवतागण उसके भयंकर गर्जन को सुनकर डर के मारे पृथ्वी से ओलिम्पस को चले आये। ज्यूपिटर की आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस किसी को नहीं होता था। अब जब वह सब वहाँ आ गये तो ज्यूपिटर ओलिम्पस से चला और पृथ्वी पर आया। वह इडा पर्वत के शिखर पर बैठ कर ट्रौय का युद्ध देखने और वहीं से चुपचाप ट्रोजन्स को मदद भी पहुँचाने लगा। उसने बहाने से वीनस और एपोलो को भी वहीं बुला लिया और उन्हें पैरिस और हैक्टर की रक्षार्थ भी नियुक्त कर दिया। अब युद्ध फिरने लगा। ग्रीक्स पिटने लगे। हैक्टर के हृदय में एक नवीन स्फूर्ति ने उत्पन्न होकर उसे दैवी शक्ति प्रदान की। वह दल के दल ट्रोजन्स को लेकर आगे बढ़ा और ग्रीक्स का निर्मम बध करने लगा। उसके रौद्र-रूप के सम्मुख जो आता वही मृत्यु के मुख में चला जाता। उसने हमले पर हमले बोल दिये। भयंकर मारकाट से मैदान ग्रीक्स की लाशों से पाट दिया गया। परन्तु फिर भी उसकी रण विभीषिका कम न होती थी। वह उन्हें मारता-काटता समुद्र की ओर ढकेलने लगा। उसने निरंतर कई युद्धों में विजय प्राप्त की।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह शत्रुओं को पीछे हटाता हुआ बिल्कुल ईजियन समुद्र के तट तक ले आया और अब भी उसका पराक्रम बढ़ता ही जा रहा था। ग्रीक्स घबराने लगे और प्राणों को लेकर इधर से उधर भागने लगे। उनके चीत्कारों से आकाश गूँजने लगा। कई लोगों ने तो हथियार डाल दिये और वह तुरंत उस युद्ध से बिदा लेकर वापस जाने को उतावले हो गये। ग्रीक्स के पूरे पड़ाव में गहरी चिंता फैल गई। सर्वत्र हाहाकार मच उठा और निराशा ही निराशा उनपर मँडराने लगी।

उस समय जब सभी ग्रीक्स भागने की सोच रहे थे एक वृद्ध योद्धा आगे आया। उसका नाम नैस्टर था। वह वयोवृद्ध था और बुद्धि में भी सभी ग्रीक्स में अधिक था। उसकी सभी इज्जत करते थे। वह बोला :

"हारकर वापस जाने से तो अच्छा यही होगा कि हम लोग यहीं मर जायँ . . . . हे ग्रीस के योद्धाओं ! तुम वीरों की संतान हो। तुम्हारी धमनियों में देवताओं का पवित्र रक्त बह रहा है। तुम्हारे खड्ग की मार से शत्रु भाग जाते हैं फिर इतने अधीर क्यों होते हो। कायरों का कर्त्तव्य तुम्हारे लिये निंदनीय है। उठो और एक बार फिर अपने शौर्य्य से शत्रुओं के दाँत खट्टे कर दो. . . .हैलन हमारी है।"

और सचमुच ही उसके उन ओजस्वी शब्दों में जादू भरा था क्योंकि ग्रीक्स फिर व्यूह रचने लगे। अब उन्हें प्राणों का मोह नहीं रह गया था। उन्हें अपने ही पूर्व निश्चय पर अब ग्लानि हो रही थी। परन्तु तभी वृद्ध नैस्टर फिर बोला :

"परन्तु हम बिना एकिलीस के आये कुछ भी न कर सकेंगे। हमें उसे मनाना ही होगा क्योंकि वहीं सारे ग्रीस में अद्वितीय योद्धा है। यदि वह रूठा ही रहा तो हमारा प्रयत्न निष्फल है. . . ."

यह बात अब सभी को जँच गई। एगैमैम्नौन को अब अपनी भूल मालूम हुई। उसने सचमुच ही उस जगत्प्रसिद्ध वीर एकिलीस का अपमान किया था। वह पश्चात्ताप करने लगा। वह उस सुंदरी ब्राइसिस को उसे वापस करने को तैयार हो गया। साथ में उसने बहुत से बहुमूल्य उपहार भी उसे देने को कहा। सभी ने मिलकर तब सलाह की और यूलिसीस तथा दो अन्य सरदारों को इसलिए नियुक्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किया गया कि वह तीनों जाकर एकिलीस को मनावें। ब्राइसिस तथा उन उपहारों को उसे दे दें तथा उससे एगैमैम्नौन की ओर से क्षमा प्रार्थना करें और युद्ध में भाग लेने को निमंत्रित करें।

संध्या समय यूलिसीस अपने साथियों सहित युद्धभूमि से बहुत दूर गड़े एकिलीस के खेमे में पहुँचा। ब्राइसिस आगे-आगे चल रही थी। उस सुंदरी को उस समय कटि भाग तक नग्न कर दिया गया था। जब वह लेटे हुए एकिलीस के पास पहुँची तो उसने मुड़कर उसे देखा परन्तु उसी समय उसकी दृष्टि यूलिसीस तथा उसके साथी सरदारों पर जा पड़ी, उसने अपना मुँह फेर लिया। यूलिसीस बोला :

"हे एकिलीस ! जिस कार्य के लिये तुम इतनी दूर आये थे वह तो अभी तक अधूरा ही पड़ा है। इस तरह इस समय तुम्हारा रूठना अच्छा नहीं है। यदि तुम एक स्त्री के पीछे इतने क्रुद्ध हो गये हो तो लो यह ब्राइसिस तुम्हारी सेवा में उपस्थित है। इसके अतिरिक्त एगैमैम्नौन को अपने किये पर पश्चात्ताप भी बहुत हो रहा है। वह तुमसे क्षमा की याचना करता है। देखो तुम्हारे लिये उसने बहुमूल्य भेंट भी भेजी हैं। इन्हें स्वीकार करके हम सभी को कृतार्थ करो. . . ; देखो तुम्हारे बिना ग्रीक सेना की कैसी दुर्गति हो रही है। आज हम लोगों पर ट्रोजन्स जुल्म ढा रहे हैं और तुम हो कि तुम्हें कुछ सुनाई ही नहीं देता. . . .। उठो हे एकिलीस ! और रणभूमि में कौशल दिखाओ। तुम्हारे सामने स्वयं देवतागण भी नहीं ठहर सकेंगे। आज सारे संसार में ऐसा वीर कोई नहीं है जो थैटिस के पुत्र एकिलीस को जीत सके।"

परन्तु इन सब बातों का एकिलीस पर कोई असर नहीं हुआ। वह आराम से करवट लेकर लेट गया और बोला :

"मुझे ट्रौय से कोई मतलब न कभी था और न अब है। एगैमैम्नौन की ओर से मैं कतई नहीं लड़ना चाहता।" तत्पश्चात् उसने ब्राइसिस की ओर देखते हुए कहा :

"इसकी अब मुझे आवश्यकता नहीं है। इसके शरीर को एगैमैम्नौन ने छुआ है, भोगा है, यह मेरे अब किसी काम की नहीं रह गई है। इसे वापस ले जाओ। जब यह मुझे पुरस्कार में मिली थी तब अवश्य यह मानने योग्य थी परन्तु अब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसमें कोई महत्व नहीं रह गया है. . . .इसके साथ इस धन को भी लेते जाओ क्योंकि मुझे एगैमैम्नौन का भेजा हुआ कुछ भी नहीं चाहिये। मैं उससे घृणा करता हूँ। मैं उससे कभी संतुष्ट नहीं हो सकता. . . ."

फिर थोड़ी देर चुप रहकर वह पुनः बोला :

". . . .और फिर ट्रोजन्स से युद्ध भी बेकार है क्योंकि स्वयं देवाधिदेव ज्यूपिटर उसकी मदद कर रहा है। इससे तुम सभी को चाहिये कि तुम जहाजों में चढ़कर अपने देशों को वापस लौट जाओ। इसी में तुम्हारी कुशल है। मैं स्वयं शीघ्र ही अपने देश वापस लौटने की सोच रहा हूँ।"

यूलिसीस उदास हृदय लिये वहाँ से लौट गया। जब उसने यह सारा समाचार ग्रीक्स को सुनाया तो चारों ओर उदासी छा गई। एगैमैम्नौन दुख से आँसू बहाने लगा। सभी की निगाहें उसी पर जमी हुई थीं। वही तो वह मूर्ख था जिसने परम वीर एकिलीस को रुष्ट कर दिया था। उसी समय भीमकाय डायोमिडिस उच्च स्वर से बोल उठा :

". . . .करने दो एकिलीस को आराम। भले ही वह लड़ने न आवे परन्तु हम कायर बनकर लौटने वाले नहीं हैं. . . .हम लड़ेंगे. . . .अवश्य लड़ेंगे. . . . जो कायर हैं वह वापस लौट जायँ. . . ."

और वह विकराल खाँडा ताने खड़ा हो गया। उसकी बातें सुनकर ग्रीक्स में एक बार फिर उत्तेजना भर गई और वह मरने-मारने पर उतारू होकर जयनाद करने लगे। जूनो, मिनर्वा और नैप्चून उन्हें ओलिम्पस से उदास नेत्रों से देख रहे थे।

परन्तु ग्रीक्स के किये कुछ न बना। ट्रोजन्स उन्हें बराबर दबाने लगे। बार-बार वह उन पर आक्रमण करते और मार डालते थे। ट्रोजन्स की तलवारों के सामने ग्रीक्स काई की भाँति फट जाते और भागने लगते थे। परकोटे के ऊपर से ट्रोजन्स के तीर और विष से बुझे भाले मेघवर्षा के समान उन पर आकर गिरते और उन्हें मृत्यु की शैय्या पर सुला देते थे। भीषण रणसंहार हो रहा था। बिना एकिलीस के आये उनका अब बचना भी असंभव सा प्रतीत होने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उधर वीनस ने अमूल्य और अप्राप्त औषधियों से पैरिस को फिर बलिष्ठ बना दिया था और वह अपनी प्रिया हैलन के साथ अखंड विलास में रत था। कभी-कभी वह दोनों परकोटे पर भी आते और वहाँ से पैरिस अपने पक्ष के वीरों को बढ़ावा देता था। संसार की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी हैलन के मधुर कटाक्षों से ट्राजन्स में नवीन स्फूर्त्ति भर उठती थी और तब वह इतनी बहादुरी के साथ लड़ते थे कि ग्रीक सेना के लिये काल बन जाते थे। उस भुवनमोहिनी से एक मुस्कान पाने के लिये वह प्राणों की बाजी लगा रहे थे। जूनो पैरिस और हैलन को आनंद भोगते देखकर ईर्षा से जल रही थी। और उधर जब ग्रीक सैनिक भारी संख्या में कट-कट कर गिरते थे तो जूनो क्रोध से भनभना उठती थी। वह मजबूर थी क्योंकि अब तो चाह कर भी ट्रौय के विरुद्ध कुछ षड्यंत्र नहीं कर सकती थी। ट्रोजन्स और खासकर पैरिस को जीतता देखकर वह कुढ़ी जा रही थी। आखिर जब उससे और अधिक सहन नहीं हो सका तो उसने मन ही मन एक उपाय सोचा। देर तक वह सोचती बैठी रही और तब अपनी युक्ति पर स्वयं प्रसन्न होती हुई वह उठी और अपने महल में चली गई।

वह श्वेत संगमर्मर के बने स्नानगार में गई जहाँ सुवासित जल भरा रखा था। स्वामिनी की इच्छा जानकर दासियों ने उसके वस्त्र खोल दिये। तत्पश्चात् व उसे कोमल किसलयों से मल-मलकर सुगंधित जल से नहलाने लगीं। जूनो का शरीर स्वर्ण की भाँति दमक रहा था। जब उसने देर तक जलक्रीड़ा कर ली तब वह अमृत से नहाई जिससे उसके शरीर में एक नवीन यौवन का स्पंदन उत्पन्न हो गया। वह पुलकित हो उठी। उसने जब अपने नग्न शरीर को दर्पण में देखा तो स्वयं ही अपने पर रीझ उठी। वह अद्वितीय सुंदरी प्रतीत हो रही थी। दासियों ने उसकी सारी देह में इत्र लगाया और अंग संधियों से सुगंधित पुष्पों का पराग मल दिया। एक दासी जो हावभाव से अत्यंत चतुर लग रही थी, एक लंबा सुवर्ण का कंघा लेकर उसके सोने के रंग तथा रेशम से भी कोमल केशों का विन्यास करने लगी। उसने उसकी कई चोटियाँ गूँथी और फिर दो को छोड़कर बाकी सभी उठाकर सिर के अग्रभाग में बाँध दीं। सुंदर जूड़ा जब बन गया तो चारों ओर से सुगंधित पुष्पों से लपेट दिया गया। अमूल्य वस्त्रों से सजी हुई वह स्त्री जगमगाते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आभूषणों की ज्योति में बहुत ही लुभावनी मालूम होती थी, तत्पश्चात् वह वीनस के पास गई और बोली ;

"हे सखि ! मैं पृथ्वी पर अपने मित्रों से मिलने जा रही हूँ। वह मेरे बहुत पुराने आत्मीयजन हैं जो अकारण ही आपस में लड़ पड़े हैं। मैं चाहती हूँ कि वह लोग आपस में फिर प्रेम करने लग जायँ। फिर से वह सारे झगड़ों को छोड़कर आपस में वासनापूर्ण रहने लग उठें क्योंकि उनमें एक तो स्त्री है और एक पुरुष। हे वीनस तुम मुझे ऐसी कोई वस्तु दो जिसे देखते ही पुराना प्रेम भड़क उठे और सारे वैमनस्य दूर हो जायँ।"

वीनस ने उसकी बात सच जानकर उसे एक जादू की पेटी दे दी जो थी सोने की, पर उस पर प्रेम और वासना के मंत्र अंकित थे। उसे देखते ही प्रेमियों में वासना की इच्छा प्रबल हो उठती थी। स्त्रियाँ उच्छ्वसित श्वासों के बीच अपने प्रेमियों से फुसफुसाकर बातें करने की लालसा करने लगती थीं। जूनो ने उसे धन्यवाद दिया और उसे लेकर चल दी।

अब वह अपने चाँदी जैसे पंख फैलाये पृथ्वी की ओर उड़ी। आकाश मार्ग पर होती हुई वह नीचे उतरी और इडा पर्वत के शिखर के पास ही जाकर खड़ी हुई। इस बीच उसने वीनस का दिया हुआ वह सोने का कमरबंद पहन लिया था। वह मंथर गति से चलती हुई अपने अंग के उभारों को हिलाती हुई ज्यूपिटर के सामने जा पहुँची और मुस्कराने लगी। ज्यूपिटर ने जो उसे उस हालत में देखा तो वासना की एक विचित्र और तीव्र चाह उसके हृदय में उत्पन्न हो गई। वह स्वयं चकित था कि आज वह अपनी स्त्री को देखकर इतना विह्वल क्यों हो उठा था क्योंकि उसमें तो आकर्षण प्रायः अब रहा ही नहीं था। वह आज उसे उतनी ही लुभावनी लग रही थी जैसे वह उसे प्रथम बार लगी थी। उस समय वह उससे इतना अधिक आकर्षित हुआ था कि उसके माता-पिता की नज़र बचाकर वह उसे जंगल में ले गया था जहाँ उसने उससे स्वर्गिक सुख छिपकर लूटा था। ज्यूपिटर को इस समय वही प्रेम याद आ गया था और अब जब कि जूनो उसकी स्त्री कई वर्षों से हो चुकी थी उसे आज वैसी ही कुमारी प्रतीत हो रही थी। वह विभोर हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उठा और उसने उसकी ओर दोनों बाहें फैला दीं। जूनो अपने अङ्गों को मंथर गति से लचकाती हुई लज्जा से नतशिर कभी-कभी बंकिम भ्रूविलास करती हुई उसके पास आई और उसने अपने मादक शरीर को ओलिम्पस के राजा की बाहों में डाल दिया। ज्यूपिटर ने अत्यंत कामातुर होकर उसे गाढ़ आलिङ्गन में खींच लिया। ट्रौय के युद्ध को और मर्त्य लोक के प्राणियों की आत्माओं के न्याय को तथा अपने तमाम कर्त्तव्यों को भूलकर वह जूनो से काम वासना में रत हो गया। सुनहले बादलों का एक टुकड़ा आकाश में उड़ता हुआ आया और उसने उन दोनों को चारों तरफ से तथा ऊपर से घेर लिया। पृथ्वी उनके स्पर्श से पुलकित हो उठी और नर्म हो गई। लौंग, क्रोकस और हियासिंथ जैसे सुगंधित पुष्पों की शैय्या पर वह दोनों अखंड विलास में तल्लीन हो गये। एक दूसरे में गुँथे हुए वह दोनों प्रेमी वासना की मादक ऊष्मा में सुख भोगने लगे। सारे संसार की गति अस्तव्यस्त हो गई। जब तक ज्यूपिटर होश में आवे ट्रौय के युद्ध की गति ही बदल गई थी। जीतते हुए ट्रोजन्स की ओर से विजयलक्ष्मी हटकर अब ग्रीक्स की ओर आ गई थी। ग्रीक्स अब चढ़े बैठ रहे थे। उन्होंने ट्रोजन्स को इतना दबा लिया था कि ऐसा लगता था कि ट्रौय अब गिरा तब गिरा। उस समय वह निश्चय ही हार जाते यदि ज्यूपिटर उस तन्द्रा से न जागता। जब उसका नशा उतरा और उसने वास्तविकता को देखा तो उसे जूनो पर बड़ा क्रोध आया। उसने पूरी तरह समझ लिया कि जूनो ने उसके साथ धोखा किया था। उसने रोषपूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देखा जो अब भी वस्त्रों से अस्तव्यस्त कोमल पुष्पों की शैय्या पर थकी पड़ी थी। उसके मादक नेत्र अब भी अलसाये हुए थे। उसकी कमर पर अब भी वीनस का दिया हुआ कमरबंद था जिसने ज्यूपिटर को एक बार फिर तंद्रा में डाल दिया। परंतु हठात् वह फिर जागा और अब उठ कर खड़ा हो गया और उस पर बरस पड़ा। वह बोला:

"तूने मुझे भ्रम में डालकर मुझसे धोखा किया है। मैं तुझे इसका कठोर दंड दूंगा...."

जूनो उसकी उस मुद्रा को देखकर डर गई। वह दीन स्वर में बोली:

"मैंने तुम्हें कोई धोखा नहीं दिया है। मैं तो तुम्हारे प्रेम में पागल होकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम्हारी याद में तड़पती हुई ओलिम्पस से यहाँ तक खिंची चली आई थी। हे प्रियतम ! मैं तो तुम्हारे प्रेम में सदा तड़पा ही करती हूँ। तुम ही मुझे दूर-दूर रखते हो. . . ." और उसने रोने का कृत्रिम प्रयत्न भी किया। आँसू उसकी आँखों में भर आये जिन्हें देखकर ज्यूपिटर का क्रोध शांत रहा। वह उसकी बातें सच समझा परन्तु तब उसने उसे आज्ञा दी कि वह ओलिम्पस वापस चली जाय। अब जाने के सिवा जूनो के पास कोई चारा न था। अपनी इस विजय पर वह मन ही मन फूली न समा रही थी परन्तु जब उसे मालूम हुआ कि अभी तक ट्रौय बिल्कुल हरा नहीं है तो वह हताश हो गई। जब वह चली गई तो ज्यूपिटर ने युद्ध की ओर ध्यान दिया। हारते हुए ट्रोजन्स में फिर उसने अपनी इच्छाशक्ति से स्फूर्ति भर दी। वह तुरन्त अपने आप में कई गुनी शक्ति अनुभव करने लग गये। अब जो वह अर्राकर ग्रीक सेना पर टूटे तो पाँसा ही पलट गया। ग्रीक सेना जो अभी तक जीत रही थी इस अचानक आक्रमण को देखकर आश्चर्यचकित ही नहीं बल्कि आतंकित भी हो गई। वे उनके भालों से छिदकर मरने लगे। थोड़ी ही देर में ट्रोजन्स ने उन्हें इतना मारा, इतना काटा कि उनके पैर उखड़ गये और वह पीछे भागे। ट्रोजन्स ने उनका पीछा किया और तब तक वह उन्हें मारते रहे जब तक कि प्रत्येक जीवित ग्रीक अपने जहाजों में जाकर न छिप गये। उस नर संहार से सारा समुद्र तट ग्रीक सैनिकों की लाशों से पट गया था। विजयी ट्रोजन्स उन्मत्त स्वर से विजय का गीत वज्रकंठों से गाते हुए अपने नगर में वापस आ गये। उनके उस स्वर में विजय की घोषणा थी जो सारे आकाश में व्याप्त हो गई। जूनो ने उसे ओलिम्पस में सुना और वह क्रोध से जल भुन गई।

एकिलीस के परम मित्र पैट्रोक्लीअस ने जब उसके खेमे में प्रवेश किया वह आँसुओं से भींग रहा था। अविरल गति से अश्रु उसके नेत्रों से झर रहे थे। वह समय का संकट जान गया था। एकिलीस को संबोधन करते हुए वह बोला :

"हे एकिलीस ! तू मेरा मित्र अवश्य है परन्तु तू नितांत निर्दयी है। तेरा हृदय पहाड़ से भी अधिक कठोर है क्योंकि तू स्वदेश के लोगों को मरते देखकर भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विचलित नहीं होता। आज जब ग्रीक्स मृत्यु की विकराल दाढ़ों में पिस रहे हैं और उन्हें तेरी सहायता की आवश्यकता है तो तू आराम से यहाँ ऐसा लेटा है जैसे तेरा उनसे कोई संबंध ही न हो। उस जीने में भला क्या मज़ा है जब किसी के साथी मर रहे हों। देख, डायोमिडिस, एगैमैम्नौन तथा यूलिसीस जैसे धनुर्धर घायल होकर धराशायी हो गये हैं। इस समय ग्रीक्स को केवल तेर नेतृत्व की आवश्यता है। यदि तू फिर उनमें पहुँच जाय तो निश्चय ही युद्ध की दिशा बदली जा सकती है. . . .'' इतना कहकर वह थोड़ी देर रुका मानों वह उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हो। परन्तु जब एकिलीस कुछ भी न बोला तो उसे क्रोध हो आया और वह उच्च स्वर से बोल उठा :

"आज गिरे योद्धा कल फिर खड़े हो जायेंगे। परन्तु हे एकिलीस तेरे मन का मैल कभी नहीं धुल पायेगा। तुझे धिक्कार है जो तू अब भी चुप है। मैं निश्चय ही तेरा जैसा कभी नहीं बनना चाहता।''

ऐकिलीस ने अपने मित्र को बड़े गौर से देखा। परन्तु न तो उसने उसे उत्तर ही दिया और न उसने अपना विचार ही बदला। वह उसी प्रकार आराम से लेटा रहा और जब उसने कुछ नहीं कहा तब पैट्रोक्लीअस ने उसे और दबाया तो वह बोला :

"एगैमैम्नौन की मैं थोड़ी भी सहायता नहीं करना चाहता। मुझसे बार-बार ट्रॉय के युद्ध की बात न छेड़ो। मुझे उन लोगों में कोई रुचि नहीं है।'' वह पैट्रोक्लीअस को अपने भाई के समान समझता था और उसका मान भी बहुत करता करता था परन्तु इस मामले में उसने उसकी एक न सुनी।

पैट्रोक्लीअस को उसकी उदासीनता तथा हठ अच्छा नहीं लगा खासकर तब जब कि भागे हुए ग्रीक्स के जहाजों में भी ट्रोजन्स आग लगा रहे थे। वह दूर उन आग की लपटों को देखकर अधीर हो उठा। वह बोला :

" . . . .तो मैं ही जाऊँगा. . . .मैं तुम्हारे रिक्त स्थान को पूरा करूँगा और लड़ूँगा. . .मुझे अपना कवच और शिरस्त्राण दे दो जिसे पहिने जब मैं युद्ध-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भूमि में घुसूँगा तो लोग समझेंगे कि एकिलीस आ गया है और तब वे लोग भय से भागने लगेंगे ....''

एकिलीस ने उसे अपना कवच दे दिया। जब पैट्रोक्लीअस उसे पहिन कर युद्ध-भूमि में पहुँचा तो ऐसा ही हुआ। उस कवच और शिरस्त्राण पहिने योद्धा को विद्युत गति से रणभूमि में घुसे देखकर सभी ने समझ लिया कि जगत-विख्यात एकिलीस आ गया है। उसका वक्षस्थल सुवर्ण की मोटी कामदार चद्दर से मढ़ा हुआ था और शिरस्त्राण भी सोने से अलंकृत था। वह दिव्य ज्योति वाला कवच देवताओं द्वारा एकिलीस को मिला हुआ था जिसे पहन कर वह कभी नहीं हार सकता था। उसे देखकर ग्रीक्स ने जय निनाद किया। वज्रघोष आकाश में गूँज गया और ट्रोजन्स ने आश्चर्य से देखा कि आने वाले की गति वायु के समान थी। प्रशस्त वक्षस्थल तथा सुगठित शरीर वाले पैट्रोक्लीअस के शरीर पर वह दिव्य कवच अलौकिक लग रहा था। किसी को भी पता नहीं चला कि वह एकिलीस नहीं था। ग्रीक्स में नया उत्साह भर उठा। उनकी खोई हुई शक्ति फिर से वापस आ गई। वह लोमहर्षण युद्ध करने लगे। पैट्रोक्लीअस ने भयंकर युद्ध किया। उसने ट्रोजन्स की लाशों से मैदान पाट दिया, तत्पश्चात् वह उनकी लाशों पर चढ़कर हत्या करने लगा। उसका कवच और शिरस्त्राण ट्रोजन्स के रुधिर से लाल हो गया। उसके नेतृत्व में ग्रीक्स ऐसा लड़े कि समुद्र तीर से एक बार फिर उन्होंने ट्रोजन्स को पीछे ढकेला और ट्रौय की चहारदीवारी के नीचे ले आये। अब फिर युद्ध पूर्ववत् होने लगा। योद्धा इस समय पागल सिंहों की भाँति गुंथ कर युद्ध कर रहे थे। ज्यूपिटर ने देखा तो तुरन्त हैक्टर में नवीन उत्साह भर दिया। वह भूखे बाघ की तरह पैट्रोक्लीअस पर टूटा और उसने उसके मोढ़े पर अपना भाला दे मारा। उस भीषण आघात से पैट्रोक्लीअस गिर गया। उसी समय झपट कर हैक्टर ने प्रचंड तलवार उसके हृदय में मूँठ तक घुसेड़ दी। पैट्रोक्लीअस तड़पा और क्षण भर में मर गया। ट्रोजन्स ने एकिलीस को मरा समझा और वह शेर हो गये। ग्रीक्स के छक्के छूट गये। जब एकिलीस ही मर गया तो भला ट्रोजन्स से कौन जीत सकता है ऐसा सोचकर उनका सारा साहस जाता रहा। वह भागे और ट्रोजन्स

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने उनका पीछा किया। भीषण नर संहार हुआ और उस युद्ध में जितने ग्रीक्स मरे उतने अभी तक कभी नहीं मरे थे। हर्षोल्लास से पागलों की तरह चिल्लाते हुए हैक्टर ने उसका कवच फाड़ डाला। उसने वह सुवर्ण मंडित कवच और मुकुट अब स्वयं पहिन लिया और गर्व से उन्नत ललाट होकर अपने चारों ओर देखा, ट्रोजन्स ने जयजयकार किया और युद्ध की आग और भड़क उठी। परन्तु शिरस्त्राण के खुलते ही यह बात तीर की तरह फैल गई कि मरने वाला एकिलीस नहीं वरन् उसका परम मित्र पैट्रोक्लीअस था।

जब दूत ने जाकर एकिलीस को यह समाचार दिया तो वह दुख से भूमि पर गिर पड़ा। वह इतना व्यथित हो उठा कि बिलख-बिलख कर रोता हुआ वह धूल में लेट गया। उसने अपने सिर पर राख डाल ली और अपने बालों को नोच डाला। तभी वह दूत फिर बोला :

"पैट्रोक्लीअस वीरगति को प्राप्त तो हुआ ही है पर आगे की बात...."

"क्या है आगे की बात??" अधीर होकर एकिलीस चिल्लाया।

"हैक्टर तुम्हारा कवच और शिरस्त्राण पहिने रणभूमि में हुंकारता हुआ घूम रहा है। वह कहता है....", दूत ने उत्तर दिया।

"क्या कहता है वह ?" आग्नेय नेत्रों से एकिलीस ने पूछा।

"कि एकिलीस......" दूत हिचकिचाया।

"बस...." एकिलीस ने हाथ उठाकर उसे रोक दिया।

जब दूत चला गया एकिलीस ने अपना सारा शरीर और सिर राख से मल लिये और रोने लगा। आज उसका हृदय विक्षुब्ध हो उठा था। उसको इस प्रकार रोता देख कर उसकी माता थैटिस उसके पास आई। उसने उससे पूछा :

"हे पुत्र ! अब भला तू किसलिये रोता है। ज्यूपिटर की कृपा से क्या ट्रोजन्स अब नहीं जीत रहे हैं ? सब तेरे ही भले के लिये तो हो रहा है। देखो ग्रीक्स पर कितना बड़ा संकट छा गया है। पुत्र ! तू उदास न हो....उठ और आनंद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मना क्योंकि तेरे शत्रु एगैमैम्नौन की हार हो रही है।"

एकिलीस ने आह खींची और बोला :

"यह सच है कि ज्यूपिटर ने मेरे ही लिये यह सब किया है। परन्तु इसी झगड़े में पैट्रोक्लीअस मर गया है। वह मेरा परम मित्र था। उसको मैं अपने सगे आत्मीय की भाँति प्रेम करता था। इसके अतिरिक्त मेरा दिव्य कवच भी खो गया है.... अब मुझे अपने जीवन की कोई परवाह नहीं है। मैं जीना भी नहीं चाहता क्योंकि पैट्रोक्लीअस के बिना अब मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता...." फिर थोड़ी देर चुप रहकर वह हाथ ऊपर उठाकर चिल्लाया :

"मैं जब तक हैक्टर को अपने हाथ से नहीं मार लूँगा तब तक चैन नहीं लूँगा। मैं पैट्रोक्लीअस की मृत्यु का बदला लूँगा....यदि मैं हैक्टर को नहीं मार सका तो आत्महत्या कर लूँगा", और उसी समय वह अपना भाला लेकर युद्धभूमि की ओर जाने को उद्यत हो गया। वह अधीर सिंह की भाँति लड़ने के लिये मतवाला होकर घूमने लगा। थैटिस ने उसे उस हालत में देखकर चिंतित होकर उसे रोका और वह बोली :

"हे पुत्र ! तेरा इस भाँति बिना कवच धारण किये युद्धभूमि में जाना हितकर नहीं है। तू मेरे कहने से कल प्रातःकाल तक यहीं रुका रह। मैं अभी ओलिम्पस जाकर वल्कन से तेरे लिये नया कवच माँगूँगी और जब तू उसे पहन लेगा तो निश्चय ही अजेय हो जायगा।"

तत्पश्चात् अपने सुनहले पँख फैलाकर वह ओलिम्पस की ओर उड़ गई। फेनिला सुंदरी वीनस के कुरूप बौने और कुबड़े पति वल्कन के पास वह थोड़ी ही देर में जा पहुँची। उस समय वह बेडौल परन्तु अत्यंत पराक्रमी देवता अपनी लोहसारी में बैठा हुआ घन चला रहा था। उसकी कठोर चोट के नीचे लोहे की मोटी चादर एक ही बार में तलवार की धार की तरह तीक्ष्ण बन जाती थी। लोहा लाल हो उठा था और लोहसारी की भट्ठी को देखकर भय लगता था। वह इतनी बड़ी थी कि संपूर्ण पृथ्वी उसमें समा सकती थी। थैटिस को आते देखकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसने अपना हाथ रोककर उसकी ओर देखा। थैटिस ने पास आकर उससे अपना मंतव्य कहा। वह बोली :

"मेरे पुत्र एकिलीस के लिये एक दिव्य कवच, ढाल और शिरस्त्राण चाहिये। उसका सुवर्ण मंडित कवच और शिरस्त्राण लूट लिया गया है। दुष्ट हैक्टर उसे पहिने डोल रहा है। हे वल्कन तेरी बड़ी कृपा होगी यदि रात भर में मुझे यह सब बना कर दे दे।"

और जब वल्कन ने नया धातु लेकर लोहसारी की भट्ठी में रखा तो बड़ी कृतज्ञतापूर्वक थैटिस ने उसकी ओर देखा और मुस्कराई। वल्कन सारी रात परिश्रम करता रहा। जब लौह कवच तथा शिरस्त्राण बनकर तैयार हो गये तब उसने उन पर सुवर्ण मढ़ दिया और सबके उपरांत उसे दिव्य मंत्रों से पूरित किया। सब काम कर चुकने के बाद उसने वह कवच, शिरस्त्राण और ढाल थैटिस को दिये जो उन्हें लेकर उसी क्षण पृथ्वी की ओर उड़ चली।

एकिलीस ने जब वह अद्भुत कवच देखा तो उसकी आँखों में एक विचित्र चमक आ गई और जो क्रोध इतने दिनों से दबा हुआ था अब ज्वालामुखी की भाँति विस्फोट करके बाहर निकल आया। उसने अपने वक्ष पर वह चौड़ा कवच चढ़ाया और सिर पर ऊँची कलँगी वाला शिरस्त्राण पहन लिया। तत्पश्चात् ढाल, तलवार और भाले से सजकर मत्त गजेंद्र की भाँति वह रणभूमि की ओर चल पड़ा। आज वह शपथ ले चुका है कि वह हैक्टर को मार कर ही रहेगा।

एकिलीस सर्वप्रथम एगैमैम्नौन के खेमे की ओर चला जहाँ उस समय सभी प्रमुख सेनापति एकत्रित थे। मैनीलौस, यूलिसीस इत्यादि वहीं बैठे मंत्रणा कर रहे थे। एकिलीस को आया देखकर वह सभी अपने आसनों से उठ खड़े हो गये। उस समय वह देवताओं जैसा सुंदर और प्रतिभाशाली लग रहा था जिसे देखकर उन सभी के हृदयों में उसके प्रति श्रद्धा जाग उठी। उसी समय एकिलीस एगैमैम्नौन को संबोधन करते हुए बोला :

"हे एगैमैम्नौन मुझे अपने किये का दुख है। जब मेरे देश के लोग मृत्यु से खेल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहे थे उस समय मैं पड़ा विश्राम करता रहा। सचमुच ही उन बातों को सोचकर अब मुझे ग्लनि का अनुभव हो रहा है। मुझे उस स्त्री ब्राइसिस के पीछे इतना कलह कभी नहीं करना चाहिये था। हे मित्र मुझे क्षमा करो क्योंकि अब मैं अपने कर्त्तव्य को समझ कर लड़ने आ गया हूँ।"

ग्रीक सेनापति का हृदय उसके उस संभाषण को सुनकर उमड़ आया। वह विनीत स्वर से बोला :

"एक ब्राइसिस के पीछे मुझे स्वयं तुम्हें अपमानित नहीं करना चाहिये था। मैं भी अपनी गलती का भारी पश्चात्ताप कर रहा हूँ। आखिर लूट में आई हुई स्त्री में क्या विशेषता है ? उसे तो कोई भी भोग सकता है और जो सर्वभोग्या है भला उसके पीछे वीर आपस में लड़ने लगें तो निश्चय ही यह लज्जाजनक का विषय है। परन्तु हे वीर ! उसमें तुम्हारा या मेरा तनिक भी दोष नहीं था। यह तो कलह की देवी ऐरिस के किये उत्पात थे। उसी को इस प्रकार की विकट परिस्थिति उत्पन्न करने में विशेष आनन्द आता है.... यह सौभाग्य है कि हम लोगों पर से उसका प्रभाव अब हट गया है। आओ हम सब मिलकर अब शत्रु पर पूर्ण विजय प्राप्त करें।"

जब एकिलीस अपने दिव्य रथ में खड़ा होकर चपल तुरंगों को हाँकता हुआ रणभूमि के मध्य भाग में आया उस समय प्रभात के सूर्य की किरणों में उसका अद्भुत कवच सुवर्ण की भाँति चमक कर आलोक फैला रहा था। उसके प्रत्येक अंग-चालन से वह कठोर साहसी और विकराल योद्धा प्रतीत हो रहा था।

एकिलीस का नाम लेकर बारंबार ग्रीक्स जय-जयकार करने लगे। वह प्रचंड योद्धा आज ट्रोजन्स की मृत्यु बनकर आया था। उसने तरकस से चौड़े फलक का तीर निकाला और अपने विकराल धनुष पर उसे चढ़ाया, प्रत्यंचा को बलिष्ठ बाहु से आकर्ण खींचकर ट्रौय की ओर छोड़ दिया। युद्ध प्रारंभ हो गया। उसका बाहुबल और पराक्रम अद्वितीय था। उसकी मार से कोई भी जीवित नहीं बचता था। जिधर से होकर उसका रथ दौड़ता उधर ही मैदान साफ होता था। ग्रीक सैनिकों और सेनानायकों का साहस सागरों को लाँघ रहा था। वह अद्भुत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कौशल से लड़ रहे थे। एकिलीस बढ़ा चला जा रहा था और ट्रोजन्स उसकी मार से पीछे हटते चले जाते थे। भीषण संग्राम हो रहा था। ऐसा प्रतीत होने लगा था कि युद्ध का अंत अवश्य हो जायगा। ट्रोजन्स पिट रहे थे। एकिलीस के नेतृत्व में ग्रीक्स उन्हें गाजर-मूली की भाँति काट रहे थे।

एकिलीस के रथ पर अदृश्य रूप से मिनर्वा भी चढ़ी हुई थी। उसने निश्चय कर लिया था कि चाहे जो भी हो वह उसकी रक्षा अवश्य करेगी। आज तो जैसे उसे ज्यूपिटर का भय ही नहीं रह गया था। उसने तर्क किया—जब एपोलो हैक्टर की सहायता कर सकता है तो मैं भला अपने प्रियपात्र की सहायता क्यों न करूँ। फिर आज तो हैक्टर को मारना है। और वह है उसी दुष्ट पैरिस का भाई जिसने सुंदरता का फल उसके सामने ही वीनस को दे दिया था—वह अवश्य ही उससे बदला लेगी।

एकिलीस ट्रोजन्स को आज जैसे निगल रहा था। उन्हें इतने पास देखकर उसका क्रोध भड़क उठा था। उसका वह क्रोध पृथ्वी को फाड़कर निकले हुए लावा की भाँति था जो अपने प्रवाह में संपूर्ण ट्रौय को ही डुबाकर जला डालना चाह रहा था। ट्रोजन्स की लाशों पर उसके घोड़े दौड़ रहे थे। वह उन्मुक्त सिंह की भाँति रण में विचर रहा था। वह आज हैक्टर से लड़ना चाहता था। उसी की तो उसे आज हत्या करनी थी, परन्तु वह उसे कहीं मिल नहीं रहा था। एपोलो ने उसे पहिले ही से सावधान कर दिया था कि वह उसकी पहुँच से बहुत दूर रहे।

युद्ध अब फिर ट्रौय की दीवार के नीचे हो रहा था। ग्रीक्स का दबाव बढ़ता जा रहा था। एकिलीस पागल हाथी की भाँति ट्रोजन्स को मसल-मसल कर मार रहा था। आखिर ट्रोजन्स के पैर उखड़ गये और अधिक लड़ने में असमर्थ होकर वे भागे और फाटकों में होकर नगर परकोटे के अंदर घुसकर उन्होंने अपने प्राणों की रक्षा की। उस समय केवल हैक्टर ही बाहर रह गया। उसमें एक विचित्र स्फुरण हुआ और उसने पीछे भागने से इंकार कर दिया। उसका पिता राजा प्राइम दीवाल पर से चिल्लाया :

"पुत्र! अंदर आ जाओ! तुम्हारे प्राण अमूल्य हैं। एकिलीस भयंकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शत्रु है। तुम उसके प्रहार को न झेल सकोगे।"

परन्तु उसने उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह तो लड़ना चाहता था। जब पिता बारंबार चिल्लाने लगा तो उसे क्रोध हो आया। वह गरज कर बोला :

"आज की हमारी हार का कारण मैं हैक्टर हूँ। मुझे चाहिये था कि पहिले ही एकिलीस को दबा लूँ क्योंकि मैंने ऐसा नहीं किया। उसने हमारे वीरों को सदा के लिये पृथ्वी पर सुला दिया है। ऐसी हालत में मैं ट्रौय के नर और नारियों को किस प्रकार मुँह दिखा सकूँगा। यही नहीं, अब तो मुझे आत्म-सम्मान के हेतु लड़ना ही होगा। अब तो मैं एकिलीस को मार कर ही नगर में प्रवेश करूँगा। अन्यथा वीरों की भाँति युद्धभूमि में ही प्राण-त्याग कर दूँगा. . . .हे पिता मुझे वीरों की भाँति जीने दो. . . .मुझे वीरों की ही भाँति मरने दो . . . ."

सामने से रथ बढाये एकिलीस उसी की ओर आ रहा था। हैक्टर सन्नद्ध हो गया। एकिलीस उसे देखकर रथ से उतर आया और तब उसकी ओर पैदल बढा। उसका अद्भुत कवच उस समय अग्नि की भाँति चमचमा रहा था। जब वह हैक्टर से थोड़ी दूर रह गया तो हैक्टर चिल्लाया :

"मैं हैक्टर, प्राइम का पुत्र प्रतिज्ञा करता हूँ कि आज रणभूमि से नहीं हटूँगा। आज यहाँ से वापस या तो मैं ही जाऊँगा या तूँ ही अकेला जा सकेगा। हम में से एक की मृत्यु आज अवश्यंभावी है। यदि देवताओं ने मुझ पर कृपा की और मैंने तुझे मार डाला तो मैं वचन देता हूँ कि मैं तेरे मृत शरीर को तेरे साथियों को दे दूँगा। उसके साथ किसी भी प्रकार अपमान का व्यवहार नहीं किया जायगा। यदि मैं मारा गया तो वीरों की भाँति वचन दे कि तू भी मेरे शरीर को मेरे संबंधियों को दे देगा. . . .जोर से बोल जिससे मैं तेरा उत्तर स्पष्ट सुन सकूँ।"

क्रोध में चलते हुए एकिलीस ने जब यह सब सुना तो घृणा से उसके होंठ सिकुड़ गये। वह शुष्क स्वर से गंभीरतापूर्वक बोला :

"ओ कायर हैक्टर! मुझसे व्यापारियों की भाँति सौदा करने का प्रयत्न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न कर। शेरों और साधारण मनुष्यों के बीच कभी समझौते नहीं हुआ करते। भेड़ियों से भेड़ों की कभी मित्रता नहीं हुआ करती। फिर भला तेरा और मेरा क्या संबंध हो सकता है। मैं तुझे मार कर अपने मित्र का बदला लूँगा—सँभल जा क्योंकि अब तू मेरे हाथों से नहीं बच सकता।"

इतना कहकर उसने एक विकराल फलक वाला भाला हैक्टर की ओर ताक कर फेंका परन्तु वह झुक गया। वार निष्फल चला गया। अब हैक्टर की बारी थी। उसने अपना भाला ताना और चिल्लाकर बोला :

"अरे नीच ! तेरे मरने से तो निश्चय ही पृथ्वी हल्की हो जायगी। आज मैं तुझे मारकर ट्रौय के इस युद्ध को ही सरल बनाये देता हूँ।"

उसने इतनी तेजी से भाला ऐकिलीस के मारा कि वह बगल में कूदकर भी उससे बच नहीं सका। भाला उसके कवच से टकराया परन्तु अंदर नहीं घुस पाया। निश्चय ही यदि वह वल्कन का दिया हुआ कवच न पहिने होता तो इस वार से जीवित न बच पाता।

हैक्टर चिल्लाया :

"दूसरा भाला मुझे दो !!!"

परन्तु न तो युद्धभूमि में ही और न परकोटे पर ही कोई ट्रोजन उस समय मौजूद था। सभी भय से छिप गये थे और उसे मरने के लिये अकेला छोड़ दिया था। एकिलीस अब सँभल चुका था। हैक्टर फिर गरजा :

"दूसरा भाला दो !!!" परन्तु अब की भी किसी ने उसे शस्त्र नहीं दिये। उसने मुड़ कर ट्रौय की ओर देखा और वहाँ किसी को न पाकर हताश हो गया। अफसोस के साथ वह बोला :

"सब कुछ खो गया। अब मृत्यु मुझे बुला रही है. . . .बचने का अब कोई उपाय ही नहीं है," परन्तु फिर भी उसने मैदान नहीं छोड़ा। तलवार खींच कर वह खड़ा हो गया। वह चपल चरणों से आगे बढ़ा। परन्तु एकिलीस कवच और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ढाल से रक्षा करता हुआ सन्नद्ध था। उसके हाथ में उसका लंबा भाला चमक रहा था। विद्युत गति से उसका हाथ पीछे की ओर गया। शरीर ने बल खाया और उसने वह भाला ताककर हैक्टर की ओर फेंक दिया। हैक्टर बचने को कूदा परन्तु अबकी बार उसका अंत आ गया था। भाला उसके गले में घुस गया। वह उस अनुसंधान का शिकार हो गया था। हैक्टर घायल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। वह वीर उस समय ऐसा गिरा जैसे बिजली के प्रचंड प्रहार से पर्वत का शिखर खंड-खंड होकर गिर पड़ा हो। एकिलीस घृणा से मुँह सिकोड़े उसके पास आया और उसने धूल में गिरे हुए उस परमवीर योद्धा की ओर तिरस्कारपूर्वक देखते हुए कहा :

"हे नीच ! मेरे मित्र पैट्रोक्लिअस की मृत्यु का बदला अब मैंने ले लिया है। तू कुत्ता था। सो अपनी मौत मर रहा है। अब तेरे शरीर को कुत्ते नोच-नोच कर खायेंगे क्योंकि तू इसी योग्य है।"

हैक्टर मर रहा था। उसके गले से उसका रक्त अजस्र धाराओं में बह रहा था। उसने वह वीभत्स स्वर सुने और आँखें खोलीं ; वह भर्राए कंठ से बोला :

"हे एकिलीस यह वीरों का काम नहीं है कि शत्रु शरीर को कुत्तों द्वारा अपवित्र कराये। तुम मेरे मृत शरीर को मेरे संबंधियों को दे देना. . . ."

"हर्गिज नहीं," एकिलीस गर्ज उठा, "संसार में ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो तेरे शरीर को उस दुर्गति से बचा सके।" उसकी प्रतिहिंसा वीभत्स रूप धारण कर चुकी थी।

हैक्टर ने मरते-मरते उसके बोल सुने। आखिरी बार उसने बोलने के लिये मुँह खोला। उसकी शक्ति अत्यंत क्षीण हो चुकी थी। पीड़ा से उसके प्राण छटपटा रहे थे। वह क्षीण स्वर से फटी आवाज में बोला :

"एकिलीस ! सोच ले तू क्या कह रहा है। तू इस समय क्रोधोन्मत्त है, अतएव भला-बुरा सब कुछ भूल चुका है। वीर पुरुष मनुष्य से मृत्यु के उपरांत वैर नहीं रखते। तेरा हृदय इस समय वज्र सदृश कठोर हो गया है और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुझमें सोचने की शक्ति खो गई है। निश्चय ही जीत की खुशी ने तुझे दर्पपूर्ण कर दिया है। यदि तूने मेरे शरीर का अपमान किया तो देवता तुझसे रुष्ट हो जायँगे और तब चाहे तू कितना ही वीर और बलवान क्यों न हो तू उनके क्रोध से बच नहीं सकेगा....विदा....।" और इतना कहकर वह मर गया।

एकिलीस ने उसके कंठ से अपना भाला खींच लिया और उसके वस्त्रों पर उसका रक्त पोंछ दिया। तत्पश्चात् उसने उसका कवच और शिरस्त्राण उतार कर फेंक दिया और एक रस्सी से उसका पैर अपने रथ के पृष्ठ भाग में बाँध लिया। अब वह रथ पर चढ़ गया और उसने अपने वेगवान घोड़ों के चाबुक मारी। घोड़े पूरी रफ्तार से भाग चले और हैक्टर का मृत शरीर उसी रथ के पीछे धूल में घिसटता रहा। वह क्षत-विक्षत हो गया और लहू से भींग गया। धूल में ऐसा लिपट गया कि अब उसको पहिचाना भी नहीं जाता था। एकिलीस ने उसकी लाश को लेकर ट्रौय के परकोटे के तीन चक्कर उसी प्रकार लगाये। घोड़े पूरे वेग से भाग रहे थे। ऊपर से जिसने भी ट्रौय के उस सेनापति की दुर्दशा देखी वह त्राहि-त्राहि कर उठा। राजा प्राइम, रानी हैक्यूवा, उसकी स्त्री एंड्रोमाचे तथा अन्य ट्रोजन्स जिसने भी उसे उस हालत में देखा सभी जोर-जोर से रोने लगे। ट्रौय के तीन चक्कर लगाने के बाद एकिलीस उस लाश को धूल में घसीटता हुआ अब ग्रीक शिविर की ओर जा रहा था। यह देखकर ट्रोजन्स और भी बुरी तरह चिल्लाकर रोने लगे। सभी लोग कहने लगे, 'तो क्या महान् हैक्टर का दाह संस्कार भी विधिवत् न हो सकेगा? क्या वह परम वीर इसी भाँति दुर्गति को प्राप्त होगा?' एंड्रोमाचे फफक-फफक कर रो रही थी। उसकी माता हैक्यूवा का बुरा हाल था। राजा प्राइम के नेत्रों से आँसू इस प्रकार झर रहे थे जैसे स्वर्ग से अमृत की वर्षा हो रही हो। ट्रोजन्स को अपने ऊपर बहुत ही अधिक ग्लानि हो रही थी कि हैक्टर को दूसरा भाला देने के लिये उनमें से कोई भी मौजूद क्यों न था। क्यों सभी डर कर छिप गये थे जब कि वह अकेला ट्रौय के सम्मान के लिये शत्रु से लड़ रहा था।

सारा ट्रौय रो रहा था। हैक्टर की लाश टुकड़े-टुकड़े हो गई थी। उसका सिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चूर-चूर हो गया था। उसके शरीर पर रक्त और धूल की कीच सी छाई हुई थी। उसका वह सुंदर मुख अब कुरूप हो गया था। ओलिम्पस से देवतागणों ने जब यह वीभत्स क्रिया देखी तो क्रोध से उनका रक्त खौलने लगा। मृत शरीर से बैर साधना तो न्यायोचित नहीं था। भला देवता उसे किस प्रकार सहन कर सकते थे। एपोलो के क्रोध का आज वारापार नहीं था। उसके प्रिय हैक्टर की जो दुर्दशा की गई थी उसे वह बिल्कुल सहन नहीं कर सकता था। उसका जी चाह रहा था कि वह स्वयं जाकर एकिलीस की हत्या कर दे परन्तु ज्यूपिटर के भय से वह ऐसा नहीं कर सका। वह अधीर हो उठा और तब वह ज्यूपिटर के पास गया। उसने उससे प्रार्थना की कि वह उस वीभत्स कार्य को रोके, परन्तु उसने उसकी बात पर कुछ ध्यान नहीं दिया। वह तो अब भी सुंदरी थैटिस के प्रेम और वासना से प्रेरित हो रहा था। जा-बेजा तरीकों से वह थैटिस को प्रसन्न रखना चाहता था। इसी तरह कई दिन निकल गये। अब हैक्टर की लाश सड़ने लग गई थी। उसकी दुर्गंध से ओलिम्पस में सड़ाँध फैलने लगी और सारा वातावरण दूषित हो गया। तब इकट्ठे होकर सभी देवताओं ने ज्यूपिटर से बारंबार प्रार्थना की और उसे इस बात पर मजबूर कर दिया कि वह एकिलीस को धमकाकर हैक्टर की लाश ट्रोजन्स को दिला दे।

ज्यूपिटर ने तुरंत दो देवदूत राजा प्राइम और एकिलीस के पास भेज दिये। उन्होंने जाकर उन दोनों में एक विचित्र प्रेरणा उत्पन्न कर दी। एक ने प्राइम को उकसाया कि वह एकिलीस के पास जाकर अपने पुत्र की लाश माँगे। दूसरे ने एकिलीस को इतना उदार बना दिया कि वह प्राइम की प्रार्थना स्वीकार कर ले।

दूसरे ही दिन भोर के समय राजा प्राइम केवल एक सेवक के साथ रथ पर चढ़ कर ग्रीक्स शिविर की ओर चला। ट्रोजन्स और तमाम सेना उसके उस अद्भुत साहस और अनोखी सूझ को देखकर आश्चर्यचकित रह गये। ट्रोजन्स चिल्लाये :

"प्राइम लौट आओ !! शत्रुके शिविर में इस प्रकार अकेले जाना मृत्यु का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आवाहन करना है. . . ."

ग्रीक्स ने हर्षोल्लास किया और उसे घेर लिया। परन्तु प्राइम डरा नहीं। वह सीधा रथ को बढ़ाता हुआ एकिलीस के शिविर के सम्मुख पहुँचा। वहाँ जाकर उसने रथ रोका और अपने सेवक द्वारा वह सभी अमूल्य भेंट उसमें से उतरवाई जो वह एकिलीस के लिये लाया था। सेवक ने बारी-बारी से वह सभी सामान उतार कर उस शिविर के द्वार पर रख दिया। उसमें बारह अद्भुत और अमूल्य पोशाकें, सुनहले चोगे, मुलायम कंबल और बगुले के समान श्वेत चादरें तथा चमकीले वस्त्र थे। सुवर्ण के तोड़े, चाँदी के नक्काशीदार बड़े-बड़े पात्र तथा एक अत्यंत सुंदर मणि-माणिकों से जटित स्वर्ण का प्याला भी उनमें था। यह ज्योतिर्मय प्याला थ्रेस देश का अमूल्य उपहार था जिसे किसी समय अपने यौवन में प्राइम ने थ्रेस विजय के समय प्राप्त किया था। जब सब वस्तुएँ सजा दी गईं प्राइम जान की परवाह न करते हुए एकिलीस के शिविर में घुस गया और सामने ही बैठे उसके चरणों पर गिर कर रोने लगा। वह घुटनों के बल बैठ कर उसके हाथों को चूमता हुआ रोता हुआ बोला:

"यह सब मैं तुम्हारे लिये लाया हूँ। इसे स्वीकार करो। पर मुझे मेरे पुत्र की लाश दे दो. . . .।" उसका गला रुँध गया और आँसू निरंतर झर रहे थे। तनिक अपने को सँभाल कर वह फिर बोला:

"हे अभिजातकुल के युवराज! अपने वृद्ध पिता के तुम ही सुख हो। तुम्हारे पिता का गौरव अमर है क्योंकि तुम जैसा पुत्र उसने पाया है। वह भाग्य-शाली है क्योंकि अभी तक तुम जीवित हो। परन्तु मेरा पुत्र मारा जा चुका है. . . . वह ट्रॉय की रक्षा करते हुए वीरतापूर्वक युद्ध भूमि में मारा गया है. . .मैं तुम्हारे पास आज भिखारी बन कर उसका शरीर माँगने आया हूँ। हे एकिलीस! दुख ने आज मुझसे वह काम करा लिया है जो कदाचित् मुझे कभी नहीं करना चाहिये था। मैंने तुम्हारे. . . .अपने पुत्र के हत्यारे के हाथों को चूमा है जो एक जघन्य पाप है. . . .परन्तु मैं मजबूर हूँ। मुझे हैक्टर का शरीर चाहिये. . . .," और वह फफक-फफक कर रोने लगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एकिलीस उसकी गिड़गिड़ाहट और दुख देखकर द्रवित हो उठा। वृद्ध राजा प्राइम के श्वेत केश तथा दीन दशा को देखकर उसका कठोर हृदय भी पसीज गया। उसने उसका हाथ पकड़ कर धीरे से उसे उठाया और ससत्कार अपने पास बिठा लिया। तत्पश्चात् कोमल वाणी से वह बोला :

"हे राजा ! यहाँ बैठो !" परन्तु तभी उसे अपने मित्र पैट्रोक्लीअस की याद हो आई और वह पुनः कठोर हो गया। वह सोचने लगा। थोड़ी देर बाद उसने अपने विचारों की बाढ़ को संयमित किया। वास्तविक परिस्थिति द्वारा भावनाओं को दबा लिया। वह बोला :

"....मेरा आत्मीय से बढ़कर मित्र पैट्रोक्लीअस भी मर गया है। मुझे भी तुम्हारी ही तरह कठोर दुख ने घेर लिया है....परन्तु अब सब्र के अतिरिक्त हम दोनों के पास कोई चारा नहीं है। तुम अपने पुत्र के शरीर को ले जा सकते हो।"

तत्पश्चात् उसने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि वह हैक्टर के शरीर को स्नान करायें और सुगंधित तेलों से उसे सुवासित करें और जब वह शुद्ध हो जाय तो उसे राजसी वस्त्र पहिनाये जायँ। इसके अनंतर उसने प्राइम से पूछा :

"इसकी अंत्येष्टि करने के लिये तुम्हें कितने दिन चाहिये ? हम कितने दिन युद्ध को रोक दें ?"

राजा प्राइम रोते-रोते बोला :

"हम लोग परकोटे में घिरे रह रहे हैं। तुम्हारी सेना के भय से कोई भी बाहर नहीं निकलता है। पहाड़ों से लकड़ियाँ लाने में काफी समय लग जायगा। यदि आज्ञा हो तो इस समय मैं निश्चय करूँ क्योंकि बिना बारह दिनों के प्रबंध असंभव सा प्रतीत होता है। हम लोग इस पूरे समय शोक मना लेंगे और इस बीच युद्ध नहीं कर सकेंगे। तत्पश्चात् ही यदि आवश्यकता हुई तो पुनः युद्ध प्रारंभ करेंगे...."

"ऐसा ही होगा," एकिलीस ने उत्तर दिया, "बारह दिनों तक हम लोग युद्ध

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को रोक देंगे, तब तक ट्रौय के निवासी अपने राजकुमार की अन्त्येष्टि करें।"

राजा प्राइम जब हैक्टर के मृत शरीर को लेकर ट्रौय लौटा उस समय सारा महानगर अपने राजकुमार को देखने के लिये एकत्रित हो गया। राजा प्राइम की आज्ञा से वह एक बहुत बड़े कमरे में स्वर्ण शैय्या पर सुलाया गया जहाँ सभी ने आकर उसको उदास मन से विदा दी। इसी बीच राजाज्ञा से सैनिक पहाड़ों से लकड़ियाँ लाने भेज दिये गये थे।

राजा प्राइम और हैक्यूबा अपने उस वीर पुत्र को देखकर किसी भी भाँति अपने आपको अधीर होने से रोक नहीं पा रहे थे। रह-रह कर वह रोने लगते थे। हैक्टर के मृत शरीर को प्रायः सभी देखने आये और सभी ने अपनी समवेदना प्रगट की। जब संसार की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी हैलन आई तो वह उसे देखकर ही रो पड़ी। वह करुण स्वर से बोली :

"हे मेरे प्यारे भाई तुम मुझे जीवन से भी अधिक प्यारे थे। मुझे तुम सभी ट्रोजन्स से अधिक प्रिय थे। हे हैक्टर तुम ट्रौय के रत्न थे। कितना अच्छा होता यदि तुम्हारे बजाय मैं मृत्यु को प्राप्त हो जाती।...आज बारह वर्ष हो गये हैं जब पैरिस मुझे यहाँ लाया था। तब से अब तक प्रायः सभी ने मुझे भला-बुरा कहा है। कई लोगों ने मेरे मुँह पर ही मेरा अपमान किया है कि मेरे ही कारण यह युद्ध हो रहा है। मुझे सभी ने ताने दिये हैं। परन्तु एक तुम ही अकेले वीर थे जिसने आज तक मुझसे एक भी कठोर शब्द कभी नहीं कहा। उल्टे ऐसा कहने वालों को तुमने डाँटकर चुप ही कराया था क्योंकि तुमने कभी नहीं चाहा कि मेरे मन को क्लेश हो।... संपूर्ण ट्रौय में मेरे लिये तुम्हारे समान दयालु और कोई नहीं था....आह! तुम्हारे बजाय मैं ही क्यों न मर गई।" वह अधिक कह भी नहीं सकी क्योंकि दुख और आँसुओं ने उसका कंठ अवरुद्ध कर दिया था।

पूरे नौ दिन तक भारी शोक मनाया गया। सारे ट्रौय म मृत्यु की सी उदासी फैल गई थी। दसवें दिन हैक्टर का शरीर दिव्य चिता पर लिटा दिया गया। तत्पश्चात् तुरुही बजने लगी। भारी नगाड़ों पर चोट दी गई जिससे उनसे निकला हुआ भारी रव आकाश को गुंजाने लगा। उसी समय चिता में आग लगा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दी गई। वह धू-धू करके जल उठी। देखते ही देखते उसकी लपटें आकाश को छूने लगीं। वह परम वीर उन लपटों में राख बन रहा था। राजा और प्रजा सभी चीत्कार कर उठे और गला फाड़ कर रोने लगे। चिता पूरे दिन और पूरी रात भयंकरता से जलती रही। जब ग्यारहवें दिन मीठी और बहुमूल्य मदिरा से वह चिता बुझाई गई तो हैक्टर का दिव्य शरीर राख बन चुका था जिसे ससम्मान सुवर्ण के पात्रों में भर लिया गया। तत्पश्चात् उसे एक गहरी कब्र में गाड़ा गया और उस स्थान पर चट्टानों का एक पहाड़ बना दिया गया। बारहवें दिन जब सब लोग ट्रौय को लौटे तो राजा ने उन्हें मृतभोज दिया। अंत्येष्टि समाप्त हो गई थी और एक बार फिर ट्रोजन्स युद्ध भूमि में आ गये।

प्रभात के सूर्य में एकिलीस का दिव्य कवच चमचमा रहा था। वह लंबा भाला तथा अनूठी तलवार लिये रणभूमि में मत्त गजेंद्र की भाँति घूम रहा था। ग्रीक्स उसके नेतृत्व में भीषण युद्ध कर रहे थे। उदास हृदय ट्रौय के निवासियों के हृदय में क्षोभ तथा एक बदले की तीव्र भावना ने भी घर कर लिया था। सुंदरी हैलन की आँखें रो-रोकर सूज गई थीं। वह लाख चाहती थी कि हैक्यूबा को सांत्वना दे परन्तु वह स्वयं अपने पर ही संयम नहीं कर पा रही थी। पैरिस ने उसे ढाँढ़स दिया। वह आज परकोटे पर खड़ा था। वह शांत खड़ा था तथा दूर लड़ रहे एकिलीस की ओर एकटक देख रहा था। हठात् उसका हाथ तरकश पर गया और उसने एक तीर उसकी ओर छोड़ दिया। ऐकिलीस के जब वह तीर लगा वह क्रुद्ध हो उठा। रथ को तेजी से हाँकता हुआ वह परकोटे के समीप आ गया और उसने पैरिस को युद्ध के लिये ललकारा। पैरिस अब अपने आप को क्षण भर के लिये भी न रोक सका। उसे अपने भाई की मृत्यु का गहरा धक्का लगा था। उसने हाथ उठाकर प्रतिज्ञा की। वह गरज कर बोला :

"ओ नीच एकिलीस ! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब इस युद्धभूमि में या तो तू ही जीवित रहेगा अथवा मैं। तेरा गर्व खंडित करने के लिये मैं आ रहा हूँ। यदि तू थैटिस का ही पुत्र है तो युद्ध भूमि में मेरे सम्मुख भागना मत. . . .सँभल जा कुत्ते क्योंकि मैं अब तुझे जीवित कदापि नहीं छोड़ सकता।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पैरिस नगर के सिंह तोरण से रथ सजाये बाहर निकला। वह देवताओं की भाँति शोभा को प्राप्त हो रहा था। उसने अपनी गगनभेदी रणभेरी बजाई। ट्रौय के योद्धाओं में नवीन उत्साह भर गया। उसकी प्रिया हैलन तोरण के ऊपर खड़ी उसे देख रही थी।

एकिलीस उसे घृणा से देखता हुआ उसकी ओर रथ दौड़ाता हुआ आया। वह बोला :

"प्राइम यदि अबकी बार अपने दूसरे बेटे की लाश माँगने आयेगा तो निश्चय ही मैं उसे नहीं दूँगा। हे पैरिस ! क्या तू भी हैक्टर के पास पहुँचने को उतावला हो उठा है. . . .कुत्ता भी शेरों से लड़ना चाहता है. . . .", और उसने वीभत्स अट्टहास किया।

पैरिस क्रुद्ध हो उठा और गरज कर बोला :

"तूने धोखे से मेरे भाई परम वीर हैक्टर को मारा था। उसने जब भाला माँगा था उस समय उसे अस्त्र नहीं मिले थे। हे एकिलीस ! तेरा वीरता का गर्व व्यर्थ है। तूने निरस्त्र को मार कर यश कमाने का निष्फल प्रयत्न किया है। परन्तु आज तेरे सम्मुख तेरा काल खड़ा है। आज तू मेरे हाथों से बचकर नहीं जा सकता। तूने कायरतापूर्वक उस पवित्र मृत शरीर को तीन बार ट्रौय के चारों ओर खींचा था परन्तु मैं तेरे जीवित शरीर को ट्रौय के चारों ओर कायरतापूर्वक प्राण बचाते हुए भागते देखूँगा. . . .ले सँभल जा. . . ."

और तब पैरिस ने अपना भाला उसकी ओर साध कर फेंका। एकिलीस विद्युत गति से बगल में कूद गया परन्तु उस अमोघ अस्त्र की मार से उसका रथ चूर-चूर हो गया।

एकिलीस पृथ्वी पर गिर गया। पैरिस ठठाकर हँसा और बोला :

"उठ और दूसरे रथ पर आरूढ़ हो क्योंकि मैं निहत्थे पर वार नहीं करता. ."

परन्तु एकिलीस तब तक खड़ा हो गया था। अब वह क्रुद्ध सर्प की भाँति फुफकारता हुआ खड्ग लेकर पैरिस की ओर झपटा। पैरिस स्वयं खड्ग लेकर रण-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भूमि में उतर आया। आकाश में बिजली कौंध गई और तभी पैरिस की तलवार एकिलीस की तलवार पर बजने लगी। आज अदृश्य रूप में एपोलो पेरिस की रक्षा कर रहा था। तलवारें टकरातीं और उनमें से अग्नि फूट निकलती थी। दोनों ही वीर व्याघ्रों की भाँति लड़ रहे थे। उस समय वह दोनों ही अद्भुत संग्राम कर रहे थे। तलवारें बिजली के समान चारों ओर घूम रही थीं। उनके पंतरे अवर्णनीय शोभा को प्राप्त हो रहे थे। देर तक युद्ध होता रहा। ऐकिलीस स्वेद-श्लथ हो गया। आज तक उसने ऐसे कठिन प्रतिद्वंद्वी से कभी युद्ध नहीं किया था। एकाएक वह दाहिनी ओर झुका और उसने पैरिस की बगल में घातक प्रहार किया। उसी समय उसकी संरक्षिका मिनर्वा ने अदृश्य रूप से पीछे से पैरिस को आगे की ओर धक्का देना चाहा। परन्तु एपोलो सन्नद्ध था। उसने मिनर्वा का हाथ पकड़ लिया। पैरिस ने एकिलीस के खड्ग पर अपना खड्ग दे मारा। एकिलीस का खड्ग खंड-खंड होकर गिर पड़ा। अब पैरिस उसकी ओर जो झपटा तो थैटिस का पुत्र भागा। आगे-आगे ऐकिलीस और उसका पीछा करते हुए पैरिस भागने लगा। पैरिस इस समय दाहिने हाथ में भाला ताने हुए था। एकिलीस प्राणों को लिये भागा चला जा रहा था। वह एक क्षण को कहीं रुका तो उसी समय उसे पैरिस मार डालेगा। यह सभी जानते थे। ऐकिलीस काफी आगे निकल गया था। पैरिस ने देखा शत्रु हाथ से निकला जा रहा है। उसने निशाना साध कर उसकी ओर पूरे वेग से अपने विकराल धनुष पर बाण चढ़ाकर वार किया। एपोलो अदृश्य रूप से उसे ले चला और ठीक एड़ी में वह जाकर उसके लगा। वही स्थान एकिलीस के सारे शरीर में भेद्य था क्योंकि उसी स्थान को पकड़कर उसकी माता ने उसके सारे शरीर को स्टाईक्स के पवित्र जल में डुबाकर बाहर निकाला था। भाला एड़ी में घुस गया और एकिलीस पृथ्वी पर गिर गया। पैरिस ने उसका कवच और शिरस्त्राण फाड़ डाला और जब उसके नेत्र एकिलीस से मिले तो वह विजय के गर्व में मुस्करा उठा। वह उससे बोला :

"अब तेरे शव को कुत्ते नोच-नोच कर खायेंगे. . . .बोल क्या कहता है ?"

एकिलीस ने सुना और गिड़गिड़ाया :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"ऐसा न करो. . . .मुझे अपने किये का भारी पछतावा है।" पैरिस ने सुना और वह अट्टहास करने लगा। तत्पश्चात् वह बोला :

"मैं तेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े करवा कर चील और कौवों को खिलाऊँगा . . . .कायर !" और उसने उस पर घृणा से थूक दिया। एकिलीस का रक्त काफी निकल चुका था। वह मृतप्राय हो गया था। उसने क्षीण स्वर से कुछ कहने का प्रयत्न किया परन्तु वह बोल नहीं सका। पैरिस फिर बोला :

"तू कायर था, इसीलिए तूने नीच कार्य किया था। मैं वीर हूँ। मैंने अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण रूप से निभाया है. . . .मैं मृत शरीरों से शत्रुता नहीं करता . . . .मैं ऐसा कोई नीच काम नहीं करूँगा। भले ही तेरा शरीर ग्रीक्स ले जायँ मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।" पैरिस अपने रथ पर चढ़ कर चला गया। एकिलीस ट्रौय की चहारदीवारी के नीचे दम तोड़ने लगा। उसके जन्म के समय हुई भविष्यवाणी सच हो गई। जब पैरिस चला गया ट्रोजन्स ने उस लाश को घेर लिया और वह उसके अपमान करने का प्रयत्न करने लगे परन्तु तभी प्रचंड योद्धा यूलिसीस और व्याघ्र के समान फुर्तीले एजाक्स ने वहाँ जाकर उसकी रक्षा की। यूलिसीस ने उस समय ऐसा युद्ध किया जो चिरस्मरणीय हो गया। उसने अकेले ही ट्रोजन्स को भगा दिया। एजाक्स एकिलीस की लाश लेकर ग्रीक शिविर की ओर चला।

ज्यूपिटर अब भी ग्रीक लोगों से संतुष्ट नहीं था। वह अब भी उनका नाश करने पर उतारू था। उसने ऐसी प्रतिक्रिया की कि ग्रीक्स में आपस में ही फूट पड़ गई। एकिलीस के कवच और शिरस्त्राण पर उनमें आपस में झगड़ा मच गया। ग्रीक लोग उस कवच और शिरस्त्राण को बहुत बड़ी निधि मानते थे क्योंकि वह एकिलीस जैसे बहादुर के थे। यह निश्चय हुआ कि उसे पाने के हकदार केवल दो थे। एक यूलिसीस दूसरा एजाक्स। तत्पश्चात् गुप्त मतदान से यह भी तय हो गया कि वह अमूल्य निधि यूलिसीस को ही दिया जाय।

एजाक्स इस निर्णय को सुनकर क्रुद्ध हो उठा। उसने यह अपना अपमान समझा और प्रतिज्ञा की कि वह इसका बदला लेगा। एगैमैम्नौन और मैनीलौस दोनों की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही हत्या करने का उसने निश्चय किया। वह अपने सेवक से बोला :

"इस गुप्त मतदान में इन्हीं दोनों ने मेरे विरोध में मत दिये हैं। यह बात मैं निश्चयात्मक रूप से कह सकता हूँ। मैं इन दोनों को जीवित नहीं छोड़ूंगा।"

उसी रात वह नंगी तलवार लेकर उन्हें मारने चला, परन्तु मार्ग में ही उसे एक विचित्र पागलपन ने धर दबाया। उसके सामने से एक गाय गुजरी और उसने क्रुद्ध होकर उसे बीच से काट डाला। तत्पश्चात् वह एगैमैम्नौन और मैनीलौस को तो बिल्कुल भूल गया और लगा मारने मवेशियों को जो पास ही चर रही थीं। वह इतना पागल हो गया था कि उसने पूरे झुंड को मार डाला। रक्त से पृथ्वी भींग गई और मवेशियों की लोथों से पृथ्वी पट गई। इतनी जबरदस्त हत्या की गई थी कि मवेशी डकरा-डकरा कर इधर-उधर भागते थे परन्तु उसने एक को भी जीवित नहीं छोड़ा। गायों के रँभाने और उनकी भगदड़ से ग्रीक्स जाग गये। उल्कायें लेकर वह बाहर दौड़े। आश्चर्यचकित सब लोगों ने देखा कि एजाक्स निर्मम हत्या कर रहा है। उन्होंने उसे पुकारा पर वह किसी की बात समझता ही नहीं था। उसने उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया। ग्रीक्स ने उसे चारों ओर से घेर कर पकड़ लिया। वह पागलपन में आँखों को विचित्र प्रकार से घुमाता हुआ कपड़े फाड़ने लगा। एक शिविर के खंभे से वह मज़बूती के साथ बाँधकर पटक दिया गया। ग्रीक्स को अब इस बात का बड़ा संतोष हो रहा था कि उन्होंने वह दिव्य कवच और शिरस्त्राण एक पागल को नहीं दिया था।

जब रात बीती और पूर्व में एक सिंदूरा फूटा एजाक्स का वह क्षणिक पागलपन जाता रहा। उसकी संज्ञा लौट आई थी। उसने देखा वह खंभे से बँधा पड़ा है। उसने अपने चारों ओर देखा पर वहाँ कोई नहीं था, वह सोचने लगा—

"मैं तो एगैमैम्नौन और मैनीलौस को मारने निकला था। उस समय घना अंधकार छा रहा था। फिर भला मैं यहाँ कैसे आ गया। यहाँ मुझे बाँध क्यों दिया गया है।" उसी समय यूलिसीस शिविर के अन्दर आया और उसे देखकर बोला : "पागल...."

एजाक्स यूलिसीस से पहिले ही असंतुष्ट था। इस प्रकार का संबोधन उससे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुनकर वह क्रोध से चिल्ला उठा। परन्तु उसी समय एक और ग्रीक वहाँ आ गया और उसने यूलिसीस के इशारे पर उससे उसके रात के पागलपन की सारी बातें कहकर सुनाईं। सुनकर एजाक्स दुख से भर गया। उसे अब जीने की तनिक भी इच्छा नहीं रही। उसने अपना सिर पृथ्वी पर दे मारा और मर गया। जहाँ उसका रक्त गिरा उस स्थान पर एक नया पुष्प खिल आया। उसका नाम हियासिंथ पड़ा।

एकिलीस मर गया, एजाक्स मर गया। अब ग्रीक्स को जीत की कोई आशा नहीं रही। ट्रौय पर विजय प्राप्त करना अब असंभव प्रतीत होने लगा था। उन्हीं दिनों उन्होंने एक भविष्यवाणी करने वाले व्यक्ति को भी पकड़ा था। उसने कहा :

"बिना हर्क्युलीस के जहरीले बाणों के आये ट्रौय पर विजय पाना असंभव है।"

यह सुनकर ग्रीक्स की रही सही आशा भी जाती रही। अब वह मैनीलौस को खुलकर गालियाँ देने लगे कि उसी के कारण इतनी भारी विपदा उन पर आई थी। वह तो यहाँ तक कहने लगे कि मैनीलौस हैलन के योग्य ही नहीं था। यदि वही इतना सुंदर और योग्य होता तो भला सुंदरी हैलन उसे छोड़कर भागती ही क्यों ?

एगैमैम्नौन, यूलिसीस तथा मैनीलौस उदास होकर शिविर में बैठे थे। उन्हें अब आगे का कोई मार्ग स्पष्ट ही नहीं दिखता था। हर्क्युलीस के विषैले तीर क्योंकर मिलेंगे यही गूढ़ समस्या थी। उन्होंने उसी ज्योतिषी द्वारा यह सुन रखा था कि वह केवल एक आदमी के पास हैं जिसका नाम फ़िलौक्टिटीस है। हर्क्युलीस सैंटायर की विषैली कमीज़ पहिन कर जब मरा था तब वह उन तीरों को उसी को दे गया था।

दस वर्ष पूर्व जब मैनीलौस अपने जहाज़ी बेड़े को लेकर ट्रोजन्स से हैलन को छुड़ाने निकला था उसके साथ यह व्यक्ति फिलौक्टिटीस भी था। जब वे लोग लैम्नौस नामक द्वीप में पहुँचे थे उस समय फिलौक्टिटीस के पैर में एक बहुत बड़ा घाव हो गया था जो हाल के हाल ही सड़ने भी लग गया था। कुछ दिन तो बेड़ा उसकी प्रतीक्षा में रुका था परन्तु जब कई दिन हो गए और उसका पैर अच्छा होने के स्थान पर दिनोंदिन बिगड़ता ही गया तो मजबूरन उन्होंने उसे वहीं छोड़ दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह खेदपूर्ण बात अवश्य थी परन्तु और हो भी क्या सकता था। वे लोग तो ट्रौय के विरुद्ध युद्ध करने निकले थे अब भला एक व्यक्ति के पीछे इतने महान् और मुख्य कार्य को किस भाँति स्थगित करके उसके लिये वहाँ समुद्र के बीच उस अपरिचित द्वीप में पड़े रहते। उसके बाद फिलौक्टिटीस का कोई समाचार प्राप्त नहीं हुआ था।

मैनीलौस ने सिर हिलाया। वह बोला :

"उन तीरों का पाना असंभव है। पूरे दस वर्ष पहिले फिलौक्टिटीस को हम लोगों ने लैम्नौस में छोड़ा था और तब उसका एक पैर सड़ने भी लग गया था। वह तो निश्चय ही अब तक मर गया होगा...अब कुछ नहीं हो सकता....।"

"अब लौट चलना चाहिये," एगैमैम्नौन बोला। परन्तु यूलिसीस अधिक आशा वाला व्यक्ति था। वह बोला :

"मैं आज ही जहाज़ लेकर लैम्नौस जाऊँगा और यदि वह जीवित होगा तो उससे उन तीरों को मैं हर भाँति से लाने का प्रयत्न करूँगा....तब तक तुम लोग मोर्चा लगाये यहीं डटे रहो...ज्यूपिटर चाहेगा तो सभी कार्य ठीक होंगे..।"

उसके ओजस्वी शब्दों में एगैमैम्नौन और मैनीलौस को नवीन आशा की झलक मिली। यूलिसीस एक तीव्र गति से चलने वाले जहाज़ पर बैठ कर लैम्नौस की ओर चल दिया। उसके ज़ाने के उपरांत ग्रीक सेना केवल ट्रौय का घेरा डाले पड़ी रही। युद्ध तो प्रायः बंद ही था।

जब यूलिसीस भयंकर समुद्र को पार करता हुआ लैम्नौस पहुँचा तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा क्योंकि वहाँ उसे फिलौक्टिटीस जीवितावस्था में मिला। उसका पैर अब भी सड़ रहा था बल्कि घाव पहिले से भी बड़ा हो गया था। यूलिसीस ने उसे देखकर समवेदना प्रकट की परन्तु उसने उसकी ओर से आँखें फेर लीं। यूलिसीस बोला :

"हे मित्र तुम मुझे देखकर आँखे क्यों फेरते हो? देखो मैं ट्रौय से तुम्हारे पास आया हूँ। क्योंकि...."

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"किसलिये....?" बीच में ही फ़िलौक्टिटीस बोल उठा।

"हे मित्र अधीर न होओ और ध्यान धरकर सुनो।" और तब यूलिसीस ने उसे आदि से अंत तक सारी कथा कहकर सुनाई। अंत में वह बोला :

"हर्क्युलीस के उन विषैले तीरों के बिना ट्रौय नहीं जीता जा सकता। तुम उन्हें मुझे दे दो।"

फ़िलौक्टिटीस सब सुनकर मुंह बनाकर बोला :

"जब मुझे इस भयानक निर्जन स्थान में तुम लोग छोड़ गये थे तब तुमने मेरी कोई आवश्यकता नहीं समझी थी। आज उन बातों को मानो युगों बीत गये हैं। पूरे दस वर्ष तक मैं यहाँ प्रकृति की मार से पीड़ित होकर पड़ा हूँ। मेरे पैर की पीड़ा ने मुझे मृतप्राय कर रखा है....तुम लोगों ने जो जघन्य काम मेरे साथ किया और स्वार्थ में भरे हुए मुझे यहीं मरने के लिये छोड़ गये तो मैं तुम्हें अब कभी क्षमा नहीं कर सकता। तीर मैंने छिपा कर रख दिये हैं जो किसी को कभी नहीं मिलेंगे। तुम चाहो तो मुझे मार सकते हो पर तीरों को मैं नहीं दूँगा। मुझे मैनीलौस के नाम से घृणा है, एगैमैम्नौन के नाम पर मैं थूकता हूँ...तुम जाओ....लौटकर यही शब्द उन लोगों से कह देना।"

यूलिसीस उसका उत्तर सुनकर हताश हो गया। इतनी दूर की भयानक यात्रा निष्फल हो गई। उसे उस रोगी पर क्रोध भी बहुत हुआ और उसने यह भी सोचा कि उसे मार डाले पर फिर जब उन तीरों की याद आई तो वह चुप हो गया। उसे मारने के उपरान्त तो वह अद्भुत शर मिल ही नहीं सकते थे। अतएव उसका जीवित रहना उतना ही आवश्यक था जितना उन शरों का मिलना। वह वहीं रात बिताने ठहर गया।

उसी रात हर्क्युलीस फ़िलौक्टिटीस के स्वप्न में आया। उसने उससे कहा :

"ऐसा सुनहला अवसर फिर तुझे कभी नहीं मिलेगा। यूलिसीस के साथ ट्रौय को जा, वहाँ तुझे प्रसिद्ध वैद्य मैकाओन मिलेगा जो तेरे पैर को निमिष मात्र में ठीक कर देगा। वह अद्भुत वैद्य है जैसा कि उसका पिता था...."

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रातःकाल यूलिसीस की खुशी का ठिकाना नहीं था जब फिलौक्टिटीस ने उससे सप्रेम ट्रौय चलने की बात कही। फ़िलौक्टिटीस बोला :

"हे यूलिसीस मैं तेरे साथ ट्रौय जाने को तैयार हूँ। मैं हर्क्युलीस के विषैले तीर भी साथ लेकर चलूँगा और हर तरह से तुम लोगों की मदद करने के लिये भी तैयार रहूँगा। परन्तु एक शर्त है...."

"क्या है वह शर्त ?....तेरी हर शर्त पूरी की जायगी," उतावले स्वर से यूलिसीस बोला।

"वह यह कि....," फ़िलौक्टिटीस बोला : "....वहाँ पहुँचकर मेरे पैर का इलाज मैकाओन से करा दोगे।"

स्नेहसिक्त स्वर से यूलिसीस ने उसकी पीड़ा अनुभव करते हुए उत्तर दिया : "अवश्य मेरे मित्र, अवश्य, वह तेरी सेवा में तत्पर खड़ा रहेगा..."

× × ×

मैकाओन ने फ़िलौक्टिटीस का दस वर्ष पुराना पैर का नासूर कुछ ही दिनों में अच्छा कर दिया। वह अत्यंत योग्य वैद्य था जिसे हज़ारों प्रकार की जड़ी-बूटियों के गुण-अवगुण सब मालूम थे। अब फ़िलौक्टिटीस स्वस्थ हो गया था। वह निरंतर दुख से पीछा छूटा जान कर बहुत खुश हुआ। वह ग्रीक्स के प्रति उदार भावनाएँ रखने लगा। उसने स्वतः अब उनकी ओर से लड़ना चाहा और जब उन्होंने उसके प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया तो वह अपने उन्हीं विषैले बाणों से ट्रौय पर आक्रमण करने लगा। उसने कई वीर योद्धाओं को मार डाला। जहाँ उसके वह तीर लगते उसी स्थान पर गहरा घाव होकर तीव्र विष फैल जाता और फिर लाख प्रयत्न करने पर भी वह मनुष्य बच नहीं पाता था। मध्याह्न के समय मुख्य तोरण पर पैरिस सैन्य का निरीक्षण करने आया। उसी समय फ़िलौक्टिटीस ने उस पर इकट्ठे आठ-दस तीर नीचे से छोड़ दिये जो सभी जाकर उसके शरीर में गड़ गये और उनके विष से वह उसी क्षण गिरा और मर गया। इस प्रकार उस युद्ध का प्रमुख नेता मारा गया। वही तो था जिसने हैलन को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भगाया था। वही तो था जिसके कारण दस वर्षों से लोमहर्षक संग्राम हो रहा था। आज उसे मरा देखकर ग्रीक शिविर में खुशियाँ मनाई जाने लगीं। ट्रोजन्स उसके मारे जाने से दुखी थे अवश्य परन्तु वह मन में उसके प्रति कटु भावना भी रखते थे क्योंकि युद्ध आखिरकार वही तो लाया था। हैलन जब उसके मृत शरीर के पास आई तो दुख के कारण पत्थर जैसी हो गई। उससे न रोया ही जाता था और न वह कुछ बोल ही पाती थी। वह उससे लिपट गई और शून्य नेत्रों से उसकी ओर देखती रही। लगता था वह पागल हो जायगी अथवा उसके हृदय की गति बंद हो जायगी। हैक्यूबा ने उसे उस हालत में देखकर उसे कोसना प्रारंभ कर दिया जिससे उसका ध्यान तनिक बँट गया। और फिर तो वह फफक-फफक कर रोने लगी। वह अपने प्रियतम के शरीर से चिपट गई और उसे नाना प्रकार से संबोधन करते हुए रोने लगी। राजा प्राइम अब भी जीवित था। परन्तु वह वृद्धावस्था तथा दुख के कारण झुक गया था। पैरिस के मरने के बाद वह पागलों की भाँति रोने लग गया था।

परन्तु इन सभी बातों के होते हुए भी ट्रौय नहीं टूटा। मज़बूत चहारदीवारी के अंदर वीर पुत्रों, साहसी योद्धाओं तथा योग्य संचालकों की संरक्षण में ट्रौय अब भी अजेय था। ग्रीक्स के सभी प्रयत्न निष्फल हो गये थे। ट्रौय अब भी गर्व से सिर ऊँचा किये खड़ा था।

युद्ध का ग्यारहवाँ वर्ष लग गया था। हज़ारों लाखों आदमी मर चुके थे। ग्रीक्स को अब ट्रौय जीतने की कोई आशा नहीं रही। जब वे लोग निराश होकर वापस लौट जाने की सोच रहे थे और चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा दिखाई देता था कि उसी समय यूलिसीस ने एक सुझाव रखा। उसने कहा :

"मित्रो! इस प्रकार घेरा डालकर पड़े रहने से ट्रौय कभी नष्ट होता प्रतीत नहीं होता। दस वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और इस काल में संसार के कई प्रसिद्ध योद्धा रण में मारे गये हैं। हमें ट्रौय में घुसने का उपक्रम करना चाहिये। ट्रौय में अब वीर नायक कोई जीवित नहीं बचा है। हैक्टर और पैरिस दोनों ही मारे जा चुके हैं। अब तो यदि हम किसी प्रकार इस परकोटे के अंदर घुस जायँ तो विजय-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लक्ष्मी हमारी होगी अन्यथा हमारा लौट जाना ही हितकर होगा. . . .मेरी राय में. . ." इतना कहकर वह चुप हो गया। तत्पश्चात् उसने अपनी योजना धीमे स्वर से विस्तारपूर्वक कह सुनाई जिसे सुनकर सभी खुशी से फड़क उठे। उन्होंने उसी समय से यूलिसीस के कहे अनुसार काम करना प्रारंभ कर दिया।

एक बहुत बड़ा लकड़ी का घोड़ा बनाया गया जिसके नीचे की ओर चार पहिये भी लगाये। घोड़ा अंदर से पोला था जिसमें कई आदमी छिप गये। अर्द्धरात्रि के समय जब ट्रौय सो रहा था वह चुपचाप उस घोड़े को घसीट कर मुख्य तोरण के बाहर चहारदीवारी के नीचे छोड़ कर समुद्र तीर पर पहुँचे। और जब भोर का समय आया तो पालों को तान कर जहाज़ों को लेकर वापस चल दिये। थोही दूर पर समुद्र के अंदर एक छोटा पहाड़ था जिसके पीछे वह जाकर छिप कर बैठ गये।

भोर के समय जब ट्रोजन्स परकोटे पर आये तो उन्होंने दूर क्षितिज में पाल तान कर जाते हुए कई जहाज़ देखे। सामने मैदान साफ था। कहीं भी कोई ग्रीक दिखाई नहीं देता था। उन्होंने समझा युद्ध समाप्त हो गया। वह हर्षातिरेक होकर जय निनाद करते हुए एक दूसरे से प्रीतिपूर्वक मिलने लगे। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उन्होंने देखा कि मुख्य तोरण के बाहर एक बहुत बड़ा लकड़ी का घोड़ा खड़ा है। तुरंत यह समाचार सारे ट्रौय में फैल गया। झुंड के झुंड नागरिक उसे देखने नगर के बाहर चल दिये। युद्ध समाप्त हो चुका था। स्त्री और पुरुष आनंद मनाने लगे और उच्च स्वर से गाते हुए उत्सव मनाने लग गये। तोरण द्वार खोल दिये गये और दल के दल नागरिक घोड़े के चारों ओर खड़े होकर उसे देखने लगे। सभी को उस घोड़े को देखकर हैरानी थी और किसी की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। उन्होंने चारों ओर से गौर से देखा परन्तु उसमें कहीं जोड़ भी प्रतीत नहीं होता था जो उसके वहाँ होने का कुछ तो कारण निकाल पाते। वह जब इस प्रकार उसे देख रहे थे एक ग्रीक सैनिक पास ही एक झाड़ी से निकल कर समुद्र की ओर भागा। ट्रोजन्स उसके पीछे भागे और तुरंत उसे पकड़ लाये। ग्रीक सैनिक भय से काँपने लगा। ट्रोजन्स उसे पकड़ कर अपने राजा प्राइम के सम्मुख ले गये। ग्रीक राजा देखते ही उसके पैरों पर गिर पड़ा। अपने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घुटनों के बल बैठकर उससे बोला :

"हे राजा मेरा नाम सिनोन है और मैं मैनीलौस की सेना का एक पदाधिकारी हूँ। उन लोगों ने मेरे साथ इतने अधिक अत्याचार किये थे कि मैं उनका साथ छोड़ आया हूँ। मुझे उन लोगों से आंतरिक घृणा हो गई है और अब मैं ग्रीक कहलाना भी नहीं चाहता...."

इतना कहकर वह क्षण भर को रुका। वह सैनिक चतुर था और यूलिसीस का परम भक्त था। यूलिसीस ने स्वयं उसे यह सब सिखाया था कि वह प्राइम के सामने जाकर इस प्रकार का अभिनय करे। वह सैनिक फिर बोला :

"जब उन लोगों ने जान लिया कि ट्रौय अजेय है तो वापस जाने को तैयार हो गये। चलते-चलते उन्हें एक विचित्र बात सूझी और वह यह कि देवताओं के नाम पर बलि देते चलें। मुझे इस बात का पता चल गया और तब मैं वहाँ से भागा और सारी रात दलदल में छिपा रहा....अब साहस करके आया हूँ...."

वह और आगे कुछ नहीं कह सका क्योंकि दुख और पीड़ा के कारण उससे बोला भी नहीं जा रहा था। राजा प्राइम ने पूछा :

"और इस घोड़े का क्या अर्थ है ?" तो वह नतमस्तक होकर बोला :

"ग्रीक्स बहुत दुष्ट लोग हैं। जब जीवित वह ट्रोजन्स का कुछ भी नहीं बिगाड़ सके तो उन्होंने यह घोड़ा देवी मिनर्वा के नाम पर बनाया। तत्पश्चात् जानबूझ कर इसे बलि नहीं चढ़ाया। वह जानते थे कि इस प्रकार इसे छोड़ देने से ट्रोजन्स इसको जला देंगे और कभी मिनर्वा के मंदिर में उसे नहीं पहुँचावेंगे जिससे वह देवी क्रुद्ध हो जायगी। यदि वह क्रुद्ध हो जाय तो ट्रौय का नाश निश्चित है। उन्हें इस बात का भी पूरा विश्वास था कि तुम लोग इसे जलाकर नष्टभ्रष्ट कर दोगे और तब मिनर्वा का क्रोध तुम पर मृत्यु बनकर उतरेगा....इतना बड़ा भी यह घोड़ा इसीलिए बनाया गया है कि तुम लोग इसे मिनर्वा के मंदिर तक न ले जा सको। हर तरह से वह उस देवी को तुम्हारे विरुद्ध युद्ध करने के लिये इसे यहाँ छोड़ गये हैं....ग्रीक्स निश्चय ही अत्यंत कुटिल और घातक लोग हैं। मैंने उनके इस काम को जब बुरा कहा तो मुझे ही बलि देना चाहा था पर ज्यूपिटर की कृपा से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने भागकर अपने प्राण बचाये।"

सिनोन ने यह सब इतने भोले बनकर कहा कि ट्रोजन्स को उसकी बातें सच प्रतीत हुईं। सिनोन बड़ा चालाक सैनिक था जिसने यूलिसीस के सिखाने से कई बार इस पूरे वक्तव्य को दुहरा-दुहरा कर अभ्यास किया था। अब वह इतनी सफलता से बोला कि सभी को उसकी बातों का विश्वास हो गया। केवल हैक्टर की बहिन कैसैन्ड्रा ने उसका विरोध किया परन्तु उसके शाप के कारण उसकी बातों पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। लाओकून जो एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था उसने ग्रीक की बातों पर अविश्वास करते हुए उसका तीव्र विरोध किया। वह बोला :

"ट्रौय के निवासियों सावधान ! ग्रीक्स के उपहारों को मत अपनाओ। यह घोड़ा अवश्य ही कोई गहरा धोखा देने की चाल है. . . .इसे यहीं छोड़ दो या जला दो. . . .ट्रौय के अंदर इसे कभी नहीं ले जाना. . . ." परन्तु उसी समय समुद्र के अंदर से दो भयानक साँप निकले। उनके मुख से विष लावा की भाँति उमड़ रहा था। वह इतनी तेजी से बढ़े आये कि कोई भाग भी नहीं सका। उन्होंने सबके देखते-देखते लाओकून को घेर लिया और वे उसके लिपट गये। पास ही लाओकून के दो पुत्र खड़े थे। साँपों ने पूछ बढ़ाकर उन्हें भी घेरे में लेकर दबा लिया। कड़क की आवाज़ स्पष्ट सुनाई दी और वे तीनों गिरे और मर गये। साँपों ने उन्हें इतना दबाया कि उनकी हड्डियाँ तक चूरचूर हो गईं। तत्पश्चात् वे दोनों भुजंग वहाँ से चले और मिनर्वा के मंदिर में घुस गये। ट्रोजन्स भय से थर-थर काँपने लग गये थे। अब उन्हें पूरा विश्वास हो गया कि जो कुछ उस ग्रीक ने कहा था सब सच था। वे नतमस्तक हो गए और उन्होंने घोड़े को नगर के अंदर मिनर्वा के मंदिर में ले जाने का निश्चय कर लिया।

ट्रोजन्स खुशी के गीत गाते हुए उस घोड़े को नगर के अंदर खींचने लगे। आगे-आगे सुंदर युवतियाँ नृत्य करतीं हुई चलीं। जिस ट्रौय में अभी तक शत्रु प्रवेश नहीं कर पाया था उसी महानगर में अब वह घोड़े के अंदर छिप कर घुस गये। ट्रोजन्स ने उस विशाल घोड़े को खींचकर मिनर्वा के मंदिर के सामने खड़ा कर दिया। वह घोड़ा इतना बड़ा था कि कई स्थानों में जहाँ वह अटका इमारतें तक तोड़कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके लिये मार्ग बना दिया गया था। इतने वर्षों बाद युद्ध की समाप्ति पर ट्रोजन्स आज खुशी से नाच-नाच कर पागल हो रहे थे।

रात के गहरे सन्नाटे में जब ट्रौय के निवासी मदिरा पीकर आनंद में सो रहे थे उस घोड़े को अंदर से खोल कर ग्रीक योद्धा धीरे से नीचे उतरे। वह गिनती में कुल बीस थे। दबे पाँव चलते हुए वह नगर के तोरणों पर पहुँचे और वहाँ उन्होंने सोते हुए द्वारपालों की चुपचाप हत्या कर दी। तत्पश्चात उनमें से एक परकोटे पर जा चढ़ा। ग्रीक सेना वापस आ चुकी थी। ट्रौय की दीवाल के नीचे सभी सैनिक सन्नद्ध खड़े थे। उन्होंने नीचे वालों को इशारा किया और सुरंग द्वार खोल दिये। ग्रीक सेना हरहराकर अंदर घुसने लगी। घोड़े हिनहिनाने लगे और सैनिकों के कवचों पर उनके कठोर अस्त्र-शस्त्र खड़खड़ाने लगे। जब सब अंदर घुस आये नगर-द्वारों में आग लगा दी गई। अब उस गहन सन्नाटे को तोड़ता हुआ उनका भेरी निनाद सुनाई दिया और ग्रीक सैनिक ट्रौय की जनता पर टूट पड़े। उन्होंने एक ओर से नगर को जलाना शुरू किया तथा उन्हें मार्ग में जो मिलता उसकी निर्मम हत्या प्रारंभ कर दी। ट्रोजन्स बेखबर सोये हुए थे। इस अचानक आक्रमण सहने में असमर्थ वह चिल्लाने लगे और प्राणों को लेकर इधर-उधर भागने लगे। भीषण कोलाहल मच गया। मरने वालों के चीत्कारों से आकाश फटने लगा और सबके ऊपर ग्रीक्स का अट्टहास सुनाई देता था। ग्रीक्स अबाल, वृद्ध सभी की हत्या कर रहे थे। उन्होंने बच्चों को उछाल-उछाल कर नीचे तलवार लगाकर काटा। स्त्रियों को नग्न कर दिया और उनके साथ सैनिकों ने भीषण बलात्कार किया। जिस स्त्री ने तनिक भी विरोध किया उसे मौत के घाट उतार दिया गया। कईयों के स्तन काट लिये तथा उन्हें चाबुकों से इतना मारा कि उनकी खाल उड़ गई। आग बढ़ती जा रही थी। उसी समय आँधी छूटी और अग्नि का वेग दूना हो गया। हरहराकर लपटें जल रही थीं। मकान गिर रहे थे। लकड़ी धू-धू कर जल रही थी जिसकी लपटें आकाश में ऊपर उठ-उठ कर महानगर के ध्वंस की सूचना सारे संसार में फैला रही थी। प्रलय का दृश्य उपस्थित था। मरने वालों के चीत्कार करुण थे, पर आततायियों के अट्टहास उनके ऊपर चढ़कर बोल रहे थे। सभी ओर सर्वनाश हो रहा था। राजा प्राइम,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनकी रानी हैक्यूबा, उनकी पुत्री कैसैन्ड्रा सभी को सैनिकों ने पकड़ लिया। राजा और रानी को तो उसी समय उठाकर अग्नि में फेंक दिया पर कैसैन्ड्रा और अन्य सुंदर राजघराने की स्त्रियों के साथ बलात्कार किया गया और वह दासियाँ बनाने के हेतु बाँध ली गईं। हैक्टर की स्त्री भी दुर्दशा को प्राप्त हुई। संसार की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी हैलन प्रशांत खड़ी थी। सैनिकों ने उसे देखा और हतप्रभ रह गये। परन्तु फिर साहस बाँधकर वह उसे पकड़ कर अपने राजा मैनीलौस के पास ले जाने को उद्यत हुए। परन्तु उसी समय देवी वीनस वहाँ आई और उसने सैनिकों से उसे छुड़ाया। अब वह उसे स्वयं राजा मैनीलौस के पास ले गई।

मैनीलौस ने जब अपनी स्त्री को इतने वर्षों के बाद पाया तो क्रोध से तलवार लेकर उसे मारने झपटा परन्तु तभी जब उससे उसकी आँखें मिलीं तलवार उसके हाथ से खिसककर भूमि पर गिर पड़ी। हैलन अब भी संसार की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी थी। उसकी आँखों में एक विचित्र चमक थी जिसके सम्मुख कोई पुरुष अपने को संयत नहीं रख सकता था। बारह वर्षों के उपरांत मैनीलौस ने उसे आज देखा था और अब भी इतना भोग-विलास करने के उपरांत भी वह वैसी ही पवित्र, स्वच्छ और लावण्यवती दिखाई देती थी। वीनस ने आशंका देखकर अपने पुत्र क्यूपिड का स्मरण उसी समय किया जिसने आते ही अदृश्य रूप से एक कामबाण मैनीलौस के हृदय में मार दिया। वह तुरंत हैलन के प्रति प्रेम और वासनामय हो उठा और उसने उसे पकड़ कर हृदय से लगा लिया।

जब भोर हुई ट्रौय समाप्त हो चुका था। जहाँ गगनचुंबी अट्टालिकाएँ खड़ी थीं वहाँ अब केवल राख के ढेर थे। सारा नगर जल रहा था। इमारतें टूटकर बिखर गई थीं ; मनुष्यों की अधजली लोथों से सड़कें, गलियाँ तथा चतुष्पथ भरे पड़े थे। रक्त से सारी भूमि लाल हो रही थी। लाशों पर गिद्ध मँडरा रहे थे। सारा नगर स्मशान की भाँति सुनसान तथा भयानक लग रहा था। जहाँ कल तक एक महानगर विद्यमान था आज वहाँ केवल राख के ढेर थे। पुरुष और बच्चे सब मार दिये गये थे। कोई जीवित नहीं था। प्रौढा और वृद्धा स्त्रियाँ भी जला दी गई थीं। केवल जवान और सुंदर स्त्रियाँ सैनिकों ने बाँध कर दासियों की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भाँति बेचने तथा विलास करने के लिये रख ली थीं। उनके वस्त्र तमाम फाड़ डाले गये थे और वह उन नग्न स्त्रियों पर मनचाहे अत्याचार करते हुए उन्हें ठेलकर अपने जहाजों की ओर ले जा रहे थे। महानगर ट्रौय धूल में मिल गया। ग्रीक्स लौटे और उन स्त्रियों को लाकर जहाजों में भर लिया। उनकी करुण चीत्कारों से पहाड़ तक हिल उठते थे परन्तु वर्बर ग्रीक्स पर उनका कोई असर नहीं हुआ। ज़हाजों के लंगर उठा लिये गये और दस वर्ष पूर्व आये हुए ग्रीक योद्धा वापस चल दिये। हैलन खामोश थी पर मैनीलौस उसे पाकर विभोर हो उठा था। वह बार-बार जहाज के उस एकांत कक्ष में उससे प्रणय की याचना कर रहा था।

जब समुद्र के बीच वह एक हजार जहाजों का बेड़ा पहुँचा तो ओलिम्पस के देवताओं ने उन्हें दंड देने का निश्चय किया। उनके इस प्रकार ट्रौय को भस्म करने से वे लोग उनसे क्रुद्ध हो उठे थे। ग्रीक्स ने युद्ध में विजय प्राप्त कर लेने के उपरांत उन्हें बलि भी नहीं दी थी। वे उन्हें भूल गये थे। इतना अपमान देवताओं का हुआ, भला वे इसे किस प्रकार सहन करते। इसके अतिरिक्त मिनर्वा को अपना अपमान और भी असह्य था। उसी ने तो उनकी इतनी मदद की थी। वही तो उन दो साँपों को समुद्र से लाई थी और लाओकून तथा उसके दोनों पुत्रों को उसी ने तो उनसे मरवाया था और फिर उन्हें सब के देखते-देखते अपने मंदिर में ले जाकर उसी ने तो छिपा दिया था। वह ऐसा न करती तो भला ट्रौय के निवासी सिनोन की बातों में आते ही क्यों ? और जब उसकी मूर्ति से एक ट्रौय की स्त्री आ चिपटी थी तो ग्रीक्स की यह धृष्टता उसे असह्य थी जब उन्होंने उस स्त्री को वहाँ से खींच कर बुरी तरह काट डाला था। वह यह सब सहन करने को बिल्कुल तैयार नहीं थी। जब वह स्त्री उसकी शरण में आ गई थी तो ग्रीक्स को चाहिये था कि वे उसे छोड़ देते। अब वह उन्हें दंड देने पर तुल गई। नैप्चून से मिनर्वा ने कहा :

"हे सागर के देवता ! तूफान छोड़ दो। वह गरज-गरज कर इन दुष्टों के जहाजों पर प्रहार करे और बेड़े को छिन्न-भिन्न कर दे।"

नैप्चून ने भयंकर तूफ़ान छोड़े और मेनीलौस का बेड़ा डाँवाडोल होने लगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन्होंने बचने का भरसक प्रयत्न किया पर तूफ़ान क्षण-प्रतिक्षण बढ़ता ही जाता था। जहाजों में कोलाहल मचने लगा। भीषण चीत्कारों से समुद्र फटने लगा परन्तु उसी समय नीचे से जल में भयानक विस्फोट हुआ और जहाज़ तितर-बितर हो गये। कई तो उसके वेग में डूब भी गये बाकी तूफ़ान के साथ छितर गये। अब उनका आपस का साथ छूट गया और प्रत्येक जहाज़ गहन समुद्र की छाती पर केवल अकेला थिरकने लगा। आधी से अधिक सेना उस भयंकर तूफ़ान में डूब गई। मैनीलौस और हैलन तूफ़ान के साथ मिश्र देश की सीमा पर जा पहुँचे जहाँ से स्पार्टा जब वह लौटे तब तक वर्षों व्यतीत हो गये थे। यूलिसीस दस वर्षों तक समुद्र के बीच भटकता रहा और तब कहीं इथाका वापस पहुँचा था।

ट्रौय नष्ट हो चुका था पर ग्रीस भी बहुत दुर्बल हो गया था।

इस प्रकार कलह की देवी एरिस के कारण पृथ्वी पर भयानक विपत्ति छा गई थी। इतना सर्वनाश जब हो चुका तब कहीं वह प्रसन्न हो पाई। ओलिम्पस के देवतागण भी उसी के कारण इतने व्यस्त और दुखी हो गये थे। परन्तु वह तो कलह की देवी थी। उससे बदला लेनें का प्रश्न ही नहीं उठता था। स्वयं देवताओं का राजा ज्यूपिटर भी उससे डरता था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यूलिसीस की सूझ

ट्रौय का अंत हो चुका था। जहाँ किसी समय सुंदरियों का मधुर हास्य गूंजा करता था आज वहाँ राख के ढेर लगे हुए थे। ग्रीक्स के अत्याचार से वह नगर पूरी तरह ध्वंस होकर सुनसान हो गया था। ग्रीक्स जब वहाँ का सारा धन, ऐश्वर्य और सुंदर यौवन से उद्दीप्त स्त्रियों को पकड़ कर चले तो वह मन ही मन अपनी विजय पर बहुत प्रसन्न थे। वह कभी गीत गाते थे तो कभी नृत्य करते थे और उनके बर्बर अट्टहासों से वातावरण कठोर बन जाता था। परन्तु जब वह अपने जहाजी बेड़े को लेकर बीच समुद्र में पहुँचे देवताओं ने उन पर कोप किया। मिनर्वा जिसने उनकी पूरे ट्रौय के युद्ध में सहायता की थी अब उनसे अप्रसन्न इस कारण हो गई थी कि चलते समय उन्होंने उसे बलि नहीं दी थी। उसी के कहने से सागर सम्राट नैप्चून ने उन पर भारी तूफान छोड़ दिये जिससे उनका बेड़ा टूट गया और जहाज़ इधर-उधर हवा के प्रवाह के साथ बहने लग गये। अधिकांश तो उनमें से डूब गये और जो बचे उनका आपस में कोई सूत्र नहीं रहा। उसी तूफान में बहते हुए यूलिसीस का जहाज़ समुद्र के बीच स्थित एक टापू से जा लगा। यूलिसीस तथा उसके साथियों ने इतने दिनों बाद भूभाग पर पहुँचने की खुशियाँ मनाई और जहाज़ को खींच कर तट की रेत से टिका दिया और लंगर नीचे डाल दिया। टापू निर्जन था तथा दूर अंदर की ओर उसमें घने पेड़ लहलहा रहे थे। यूलिसीस को वह स्थान बहुत पसंद आया और वह गीत गाता हुआ अपने साथियों सहित वहीं विश्राम करने तथा कुछ दिन ठहरने की नीयत से उतर पड़ा। वे लोग इतने दिन पानी के बीच रहते थक गये थे और अब जब वह वहाँ पहुँच गये तो उन्हें वह थकान और भी अधिक लगने लगी। भूख से वह अत्यंत व्याकुल थे, अतएव पास ही चरते हुए एक बकरे को उन्होंने मारकर तुरंत आग पर डाल दिया। पत्थर पर पत्थर मारकर सूखी लकड़ियाँ बटोर कर उन्होंने आग जला ली थीं। जब तक मांस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पक नहीं गया वह अधीरतापूर्वक बैठे रहे और जब वह तैयार हो गया तो वह उस पर टूट पड़े और निमिष मात्र में उसे खा गये। परन्तु उससे उनकी क्षुधा नहीं मिटी। तुरंत थोड़े से बकरे, बैल और पकड़े गये और उन्हें भी मारकर भूना गया।

जब सब लोग खा पी चुके तो यूलिसीस बारह आदमियों को साथ लेकर उस टापू के अंदर चला। वह जानना चाहता था कि वहाँ कौन रहता था और वह स्थान कैसा था। उन्हें बहुत दूर नहीं जाना पड़ा क्योंकि पास ही उन्हें एक गुफा का मुहाना दिखाई दिया। मार्ग के दृश्य अत्यंत सुंदर थे। चारों ओर घनी हरियाली छा रही थी। ऊँचे-ऊँचे वृक्षों पर नाना प्रकार के स्वादिष्ट और पके हुए फल लटक रहे थे जिन्हें यूलिसीस और उनके साथियों ने मन भर खाया। जब वह उस गुफा के मुहाने पर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वह एक बहुत ही मज़बूत दरवाज़े से बंद था। परन्तु वह दरवाज़ा केवल भिड़ा हुआ था, उसमें कोई ताला नहीं लग रहा था। यह स्पष्ट था कि कोई न कोई उसमें अवश्य रहता था, अतएव यूलिसीस ने मैत्रीभाव से उसे वहीं खड़े होकर आवाज़ दी। परन्तु जब अंदर से कोई नहीं बोला तो उसने और कई आवाज़ें फिर लगाईं ; जब फिर भी कोई नहीं बोला तो उसने समझ लिया कि उस गुफा का मालिक शायद कहीं बाहर गया हो। उसने वहीं ठहरकर उसकी राह देखना उचित समझा और तब वह अपने बारह साथियों सहित उस दरवाज़े को खोलकर उस गुफा के अंदर जाकर आराम से बैठ गया। उसके साथी भी जाकर उस विस्तृत गुफा में बैठ गये और कोई-कोई तो थकान के कारण लेट भी गये और प्रतीक्षा करने लगे। यूलिसीस तथा उसके साथियों को तनिक भी यह मालूम नहीं था कि वे कितने भयंकर लोगों के बीच आ फँसे थे।

× × ×

सृष्टि के प्रारंभ में जब देवाधिदेव ज्यूपिटर टिटन्स के साथ सर्वोच्च अधिकारों के लिये संग्राम में रत था उस समय टारटारस के गहरे गड्ढों में से एक विशेष प्रकार के एक आँख के दानव पृथ्वी पर अपनी सहायता के लिये बुला लिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थे। ये लोग साईक्लोप्स कहलाते थे और देखने तथा कर्त्तव्यों में बहुत ही भयंकर थे। उस समय वे केवल तीन थ जिनके नाम ब्रौंटिस (गर्जन) स्टिरोप्स (विद्युत) तथा आर्गिस (बिजली की चमक) थे।

इन भयंकर दानवों को पृथ्वी पर रहने की आज्ञा शरू में नहीं दी गई थी। परन्तु अब ज्यूपिटर इन पर प्रसन्न हो गया था। कारण यह था कि ये दानव कड़कने, चमकने और गजने वाले वज्र बनाना जानते थे जिनके द्वारा ज्यूपिटर को अपने शत्रुओं पर विजय पाने में बहुत सहायता प्राप्त हुई थी। ज्यूपिटर जब उस वज्र को लेकर घुमाने लगता तो आकाश में विद्युत कौंध जाती, बादल गरजने लगते और शत्रु एक ही चोट में धराशायी हो जाता था। दस साल तक ज्यूपिटर ने उस अमोघ अस्त्र से शत्रुओं का संहार किया था। जब युद्ध समाप्त हो गया और ज्यूपिटर विजयी हुआ तो साईक्लोप्स की निरंतर सेवा से प्रसन्न होकर उसने उन्हें पृथ्वी पर ही रहने की आज्ञा प्रदान कर दी। समुद्र के बीच एक निर्जन द्वीप उन्हें रहने के लिये दे दिया गया।

पहिले-पहिले वह केवल तीन ही थे परन्तु धीरे-धीरे उनकी संतान बढ़ने लगी। समय बहता गया और यही तीन दानव सौ हो गये। ये सभी अत्यंत भयंकर और विशालकाय थे। उन सभी के एक आँख थी जो उनके मस्तक के बीचोबीच एक गाड़ी के बराबर वड़ी थी। वह जब बोलते थे तो बादलों की सी गड़गड़ाहट होती थी। मनुष्य उन्हें देखकर भय से त्रस्त रहते थे परन्तु ज्यूपिटर उनसे प्रसन्न रहता था। उनके उस द्वीप पर स्वतः फल तथा अनाज बहुतायत से पैदा होते थे। ज्यूपिटर ने उन्हें बकरियाँ और भेड़ भी काफ़ी दे रखी थीं। वे उन्हें चराते और उनका दूध पीकर आनंद मनाया करते। उनका केवल यही काम था कि व नित्य नये-नये वज्र बनावें और ज्यूपिटर को लगातार देते रहें। एक बार जब वल्कन को ज्यूपिटर ने पृथ्वी पर क्रुद्ध होकर फेंक दिया था, उस समय इन्हीं साईक्लोप्स ने उसकी लोहसारी बनवाई थी।

संसार बहुत आगे बढ़ गया था। ज्यूपिटर अब सारे विश्व का राजा हो गया था। संसार के लोग सभ्य हो गये थे। वे लोग घरों में रहने लग गये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थे। परन्तु ये दानव अभी तक गुफाओं में ही रहते थे। उनका जंगलीपन अभी तक वैसा ही था। वह अब भी बहुत भयानक थे जिनका नाम सुनकर ही संसार के निवासी भय से थर्रा उठते थे। ये लोग उस द्वीप में रहते थे जिसमें अब यूलिसीस अपने साथियों को लेकर पहुँचा था।

× × ×

धीरे-धीरे शाम हो गई। गुफा में रखे दूध और तमाम खाद्य पदार्थों को जी भरकर यूलिसीस और उसके साथियों ने खाया। उसी समय पृथ्वी काँपने लगी, आँधियाँ चलने लगीं और वातावरण गंभीर और भयानक हो गया। भेड़ें भागती हुई आईं और गुफा में घुस गईं। वह इतनी अधिक थीं कि उनका गिनना असंभव प्रतीत होता था। उनके पीछे-पीछे एक विशालकाय जीव ने गुफा में पदार्पण किया। यूलिसीस ने संध्या के उस धुंधलके में देखा कि वह चालीस हाथ ऊँचा दानव था। जिसके मस्तक के बीच में एक बहुत ही बड़ी आँख थी जो एक गाड़ी के बराबर बड़ी थी। वह आँख जलते हुए अंगारे की भाँति लाल और चमकदार थी। उसके एक हाथ में बहुत सी सूखी लकड़ियाँ थीं जो वह जंगल से समेट कर लाया था। दिन भर भेड़ें चराने के उपरांत वह इस समय अपने घर लौटा था। वह इतनी लकड़ियाँ एक ही हाथ से उठा लाया था कि वह कम से कम दस गाड़ियों में भरी जा सकती थीं; उसके उस भयानक रूप और विशाल काया को देखकर यूलिसीस व उसके सभी साथी डर के मारे गुफा में एक ओर साँस बाँधे छिप गये थे। दानव ने वह गट्ठर इतनी जोर से भूमि पर दे पटका कि उसकी आवाज़ से ये लोग प्रायः बहरे हो गये थे। सारी गुफा गूँजने लग गई थी। तत्पश्चात् उसने आग जलाई। इतनी बड़ी भट्ठी उसने तैयार की कि सारी गुफा उजाले से चमकने लगी। उस उजाले में वह साईक्लोप बैठ कर भेड़ों तथा बकरियों का दूध दुहने लगा। और तभी उसकी दृष्टि यूलिसीस तथा उसके साथियों पर पड़ी। साथ ही उसे अपने दूध के पात्र खाली दिखाई दिये जिन्हें वह प्रातःकाल भरे छोड़ गया था। वह क्रोध से भर उठा और बोला :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"तुम लोग कौन हो ? तुम लोग चोर हो या व्यवसायी हो और यहाँ क्यों आये हो...?" और जब इन्होंने उसे कोई उत्तर नहीं दिया तो वह हँसा। उसकी उस हँसी से पहाड़ गूँजने लगे और कंदरायें प्रतिध्वनित होकर हाहाकार करने लगीं। पृथ्वी हिलने लगी और पहाड़ों के शिखर टूट कर बिखर गये। यूलिसीस और उसके साथियों की भय से आँखें मिच गईं। भयानक साइक्लोप अजगर के समान जीभ होठों पर फेरता हुआ और अपने पेट पर एक हाथ फेरता हुआ उनकी ओर लोलुप दृष्टि से देखता रहा। तत्पश्चात् वह झटके से उठा और उसने एक बहुत ही बड़ी चट्टान ढकेल कर गुफा का मुहाना बंद कर दिया जिससे कोई भी बाहर न निकलने पावे।

वीर यूलिसीस ने अब छिपकर बैठना उचित न समझा। वह साहस एकत्रित करके आगे आ गया। वह स्वयं तथा अपने साथियों को उस भयानक दानव से बचाना चाहता था। वह बोला :

"हम लोग ट्रौय के युद्ध से वापस लौट रहे थे कि समुद्र के बीच भयानक तूफान आया जिससे हमारा जहाज़ इधर आ गया। मेरा नाम 'नो-मैन' (कोई आदमी नहीं) है। यह सब मेरे साथी हैं।"

परन्तु वह असभ्य दानव यह सब सुनकर केवल हँसा जिससे गुफा फिर गूँजने लगी। उसने उनसे कोई शब्द हमदर्दी अथवा प्रेम का नहीं कहा। यूलिसीस ने फिर हिम्मत की। वह बोला :

"हमारे साथ तुम सद्व्यवहार करो और प्रेमपूर्वक क्यों नहीं बोलते ?"

"प्रेम !.....सद्व्यवहार !" वह दानव चिल्लाया और तभी उसने बैठे ही बैठे हाथ बढ़ाकर यूलिसीस के दो साथियों को पकड़ लिया। उसने उनके सिरों को गुफा की भीतर की दीवाल से दे मारा जिससे वह तुरंत मर गये। तत्पश्चात् वह उन्हें वहीं बैठकर कच्चा ही खाने लगा। वह भयानक रूप से उन्हें हड्डी समेत चबा-चबाकर खा रहा था। उसे ऐसा करते देखकर यूलिसीस और उसके साथी भय से काँपने लगे। दानव ने जब उन्हें खा लिया तब ऊपर से तीन बड़ी नाँद भरकर दूध पिया। इसके बाद वह वहीं पृथ्वी पर लेटकर सो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गया। उसके खुर्राटों से गुफा गरज रही थी। ऐसा लगता था जैसे बादल गरज रहे हों। आग बुझ चुकी थी और गुफा में गहरा अँधकार छा रहा था। यूलिसीस इत्यादि ने रात जागकर काटी क्योंकि ऐसे भयानक व्यक्ति के साथ रहकर भला किसी को नींद किस प्रकार आ सकती थी। जब वह दानव सो रहा था तो एक बार यूलिसीस तलवार लेकर उसे मार डालने उठा भी था परन्तु तभी उसकी दृष्टि उस भारी चट्टान की ओर गई जिसे वह दस आदमी भी मिलकर नहीं हटा सकते थे। यदि दानव मारा गया तो निश्चय ही हम सभी इसी में सड़कर मर जायँगे। ऐसा सोचकर यूलिसीस ने उदास हृदय से तलवार म्यान में कर ली थी।

भोर हुई और दानव सोकर उठा। उठते ही उसने भेड़ों का दूध निकाला। जब कई नाँदें भर गई तो उसने यूलिसीस के असहाय दो आदमियों को और पकड़ा, उनको भी दीवार से दे मारा और दूध में डुबो-डुबो कर खा गया। ऊपर से कई नाँद भरकर दूध पिया। जब पेट भर गया तो वह उठा। उसने एक हाथ से ही उस चट्टान को एक ओर हटा दिया और अपनी भेड़ें बाहर निकालीं। तत्पश्चात् बाहर से उस चट्टान को लगाकर वह भेड़ें चराने चल दिया।

अब यूलिसीस और उसके साथी थोड़ी देर के लिये निश्चित हो गये। सारे दिन वे लोग योजनायें बनाते रहे कि किस प्रकार उस भयंकर दानव से छुटकारा मिले। यह प्रत्यक्ष था कि यदि जल्दी ही कोई उपाय न सूझा तो दो-दो, चार-चार करके वह उन्हें तीन-चार दिनों में खत्म कर देगा। उससे लड़ना तो असंभव था क्योंकि उसका मुकाबला हो ही नहीं सकता था। युक्ति से ही छुटकारे की संभावना हो सकती थी। उस दिन समय काटे नहीं कट रहा था। भय और प्रतीक्षा के कारण वह एक दिन युगों जितना लंबा प्रतीत होने लगा था। युक्ति पर युक्ति सोची जा रही थी पर कोई भी सफलता दिलाती प्रतीत नहीं हो रही थी। तीसरे पहर के करीब यूलिसीस को एक घातक युक्ति सूझी। गुफा के एक कोने में जैतून की लकड़ी का बना एक भारी और मोटा मुग्दर रखा था। वह बहुत मज़बूत था। यूलिसीस ने अपने मित्रों सहित उसका एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हिस्सा छीलकर तेज और नुकीला बना लिया। फिर आग जलाकर उसे जलाया और वह नोक पक्की कर ली। सब कुछ कर चुकने के बाद उसे वहीं एक कोने में छिपा दिया। अब वह लोग साईक्लोप के आने की प्रतीक्षा देखने लगे।

संध्या हुई और पृथ्वी फिर हिलने लगी। तूफ़ान फिर छूटने लगे और दानव वापस लौटा। उसने चट्टान हटाकर पहिले भेड़ों को अंदर किया फिर स्वयं भीतर घुस आया। चट्टान फिर बंद कर दी गई। कल ही की भांति उसने आग जलाई और भेड़ों का दूध दुहा। जब वह इन सभी कामों से छुट्टी पा गया उसने दो आदमियों को और पकड़ा और उन्हें खाने लगा। मनुष्यों को खाते समय वह उन्हें इतनी जोर से चबा रहा था कि उनकी हड्डियाँ उसकी दाढ़ों में बोल रही थीं। इसके बाद उसने ढेर सा दूध पिआ और फिर सोने ही वाला था कि यूलिसीस ने साहसपूर्वक उसको भेड़ की खाल में भरी तेज शराब दी। यह वह शराब थी जो वे लोग अपने साथ लाये थे। यूलिसीस बोला :

"हे दानव यह अच्छी शराब हम तेरे ही लिये लाये हैं। इसे पीकर मांस को अच्छी तरह हलक से नीचे उतार।" साईक्लोप ने वह ले ली और तीन ही चार घूंट में उस मशक भर शराब को पी गया। शराब उसे अत्यंत स्वादिष्ट लगी। वह प्रसन्न होकर यूलिसीस से बोला :

"यह तो सचमुच ही बड़ी स्वादिष्ट वस्तु है। क्योंकि तूने ही यह मुझे दी है इसलिए तेरे साथ भी मैं कुछ भलाई करना चाहता हूँ। मैं तुझे आखीर में खाऊँगा, यही छूट मैं तुझे अब देता हूँ।"

इसके बाद वह साईक्लोप पौलीफ़ीमस पड़कर सो गया। उसके खुर्राटों से पहाड़ फिर गर्जन करने लगे।

यूलिसीस और उसके साथी चुपके से उठे और उन्होंने वह जैतून का मुग्दर आग में रखकर उसका नुकीला हिस्सा इतना जलाया, इतना जलाया कि वह लाल हो गया। तत्पश्चात् उन सभों ने मिलकर उसे उठा लिया और वेग से उस दानव की आँख में घुसेड़ दिया। चर्म जलने की तेज़ चर्राहट हुई और लट्ठा उसकी आँख में आधा घुस गया। तीव्र पीड़ा से साईक्लोप जाग गया और एक भयंकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गर्जन करके वह उठ बैठा। परन्तु अब वह अंधा हो चुका था। पीड़ा अत्यधिक थी और साईक्लोप बुरी तरह चिल्लाने लगा। उसकी उस दहाड़ से सारा पर्वत प्रदेश भयानकता से गूँजने लगा जिसे सुनकर पड़ोस के अन्य साईक्लोप उसकी गुफा के सामने आकर उससे चिल्लाने का कारण पूछने लगे। परन्तु वह चिल्लाये ही जाता था। आखिर वह अधीर हो उठे और उन्होंने पूछा :

"हे पौलीफ़ीमस तुम्हारे साथ अंदर कौन है ?"

तो वह अंदर से चिल्लाया : "नो मैन (कोई आदमी नहीं है)।"

साईक्लोप लोग समझे कि वह पागल हो गया है और अपने-अपने घर चले गये। उनके घर भी पास में उतनी-उतनी ही बड़ी गुफाएँ थीं।

उसे उन मानवों पर बहुत क्रोध आया। वह भयानक पीड़ा से ग्रस्त था। अब उसने उन्हें पकड़ कर मार डालना चाहा पर उसे दिखाई कुछ नहीं देता था। वह अधाधुंध हाथ-पाँव चलाने लगा। पर यूलिसीस व उसके साथी लोग उसकी पहुँच के बाहर इधर-उधर कूदते हुए अपने को उसकी चपेट से बचाते रहे। वह भाग कर उन पर टूट पड़ता और तभी वह सामने से जरा हट जाते। अंधा साईक्लोप सामने की दीवार से टकरा जाता और उसका शरीर फट जाता जिससे रक्त बहने लगता। साईक्लोप बड़ी देर तक उनको पकड़ने का निष्फल प्रयत्न करता रहा और लहूलोहान हो गया। थककर वह एक जगह बैठ गया। उसके बैठते ही यूलिसीस उठा और उसने बड़े-बड़े मेंढ़े उस गल्ले में से चुने। तीन-तीन मेंढ़ों को उसने आड़े-आड़े बाँध दिया। उसे रस्सी ढूँढ़ने की दिक्कत नहीं उठानी पड़ी क्योंकि पास ही वह एक कोने में पड़ी थी।

जब सुबह हुई तो अंदाज से रास्ता बनाता हुआ पौलीफ़ीमस गुफा के द्वार पर पहुँचा और उसने वह चट्टान एक ओर ढकेल दी। अब वह अपनी भेड़ों, मेंढ़ों और बकरियों को बाहर हाँकने लगा। जब भेड़ें बाहर निकलती थीं तो वह बैठकर उनकी पीठ पर हाथ फेरकर निश्चित करता जाता था कि उन पर कोई सवार होकर बाहर तो नहीं जा रहा है। परन्तु यूलिसीस ने बाहर निकलने का दूसरा ही उपाय किया था। एक-एक आदमी तीन-तीन बँधी भेड़ों के पेटों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से आड़ा लेटकर नीचे की ओर से लटक गया था। दानव को पता भी न चला और इस प्रकार यूलिसीस और उसके सभी साथी बाहर निकल गये। पौलीफ़ीमस केवल उनकी पीठ छूकर देख रहा था। जब तमाम भेड़ें बाहर निकल गईं तो दानव को इतमीनान हो गया कि कोई आदमी बाहर नहीं निकला है।

अब उसने वह बड़ी चट्टान गुफा के मुँह पर फिर अड़ा दी। उस समय यूलिसीस और उसके साथी अपने अन्य साथियों के पास समुद्र तट की ओर भागे जा रहे थे। उन्होंने वहाँ पहुँचते ही जहाज़ को लंगर उठाने के लिये कहा। पर उन साथियों ने पूछा :

"बात क्या है जो इतनी जल्दी भागे जाते हो ?"

"व्यर्थ समय नष्ट न करो. . . .तुरंत जहाज़ चला दो. . . .और वायु वेग से यहाँ से भागो. . . .बातें सब मार्ग में होंगी," यूलिसीस चिल्लाया। तुरंत भगदड़ मच गई और वे लोग जहाज़ में अपना-अपना सामान बटोर कर चढ़ने लगे। इतनी जल्दी करते हुए भी उन्हें पाव घड़ी समय लग ही गया। जब जहाज़ पानी में आगे बढ़ा उस समय एक आदमी पीछे रह ही गया। वह अभागा जाने अब तक कहाँ था। जहाज़ को दूर जाते देखकर वह चिल्लाया और उसने इशारे भी किये परन्तु उसकी आवाज़ किसी ने भी नहीं सुनी। यूलिसीस उस समय तक बहुत दूर निकल गया था। वह आदमी चिल्लाकर हताश हो गया और वहीं बैठ गया। तभी उसने अनुभव किया कि पीछे से पृथ्वी हिल रही है और तूफान चले आ रहे हैं। भय मिश्रित आश्चर्य से उसने पीछे मुड़कर देखा और जो कुछ उसने देखा उससे उसका खून जम गया। उसने देखा एक विकराल भयानक दानव समुद्र तीर की ओर बढा चला आ रहा है जिसके माथे के बीच एक बहुत बड़ा गड्ढा है। उसके प्रत्येक पग पर पृथ्वी काँप रही थी और उसकी साँसों से तूफ़ान छूट रहे थे। दानव एक बड़े वृक्ष से टकरा गया जिससे वह वृक्ष उखड़ कर पृथ्वी पर गिर गया। तत्पश्चात् वह दानव तनिक मुड़ा और एक गड्ढे में गिर गया। उसके चोट लग गई और वह भयानक रूप से कराहने लगा। वह आदमी समझ गया कि यही वह साईक्लोप था जिसे यूलिसीस ने अंधा कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिया था। वह छिपा हुआ एक पत्थर की ओट में बैठ गया और वहीं से उस विशालकाय प्राणी को देखने लगा। जब वह पास आ गया तो उसने देखा उसके मस्तक के बीच गाड़ी के बड़े पहियें के बराबर एक गोला गड्ढा था जिससे रक्त और मांस बाहर लटक रहा था। दानव समुद्र में उतर गया और जहाँ अथाह पानी था वहाँ वह केवल घुटनों तक ही डूबा था।

इसके उपरांत उस आदमी ने और भी कई साईक्लोप उस द्वीप पर देखे पर वह सब अंधे नहीं थे। वह आदमी वहाँ कई वर्षों तक रहा और बड़ी कठि-नाई से उन भयंकर दानवों से छिपा रहा। वह दिन भर छिपा रहता था और केवल रात्रि के समय जब साईक्लोप्स सो जाते थे तब बाहर निकल कर वह अपने भोजन की व्यवस्था किया करता था। जंगल से फल तथा अनाज इत्यादि तोड़कर या कभी एक-आध शिकार करके वह अपना पेट भरता था।

बहुत वर्षों के उपरांत एक और जहाज़ उस द्वीप के तट पर आकर लगा। उसमें ट्रौय के कुछ भागे हुए योद्धा थे। ये लोग उस समय भाग आये थे जब ट्रौय का नाश होने लगा था। उनका नेता ईनिअस था जो वीनस का पुत्र था। वह देवी का पुत्र अवश्य था परन्तु मर्त्यलोक का प्राणी था। वे लोग उस समय समुद्र में हैस्पीरिया अथवा इटली नामक देश को ढूँढ़ते फिर रहे थे क्योंकि देव-ताओं ने उन्हें यही आज्ञा दी थी कि वह वहीं जाकर राज्य स्थापित करे। यहाँ ठहरकर उन्होंने पड़ाव डालना चाहा। परन्तु उसी समय यूलिसीस का वह साथी जो वर्षों से यहाँ छिपकर रह रहा था उनके पास आया और उसने उनसे शीघ्राति-शीघ्र वहाँ से भाग चलने को कहा। उसने उनसे साईक्लोप्स के बारे में सब कुछ बता दिया था। सुनकर ईनिअस ने तुरंत जहाज़ वहाँ से आगे ले चलने की आज्ञा दी। वह आदमी भी साथ ले लिया गया और जहाज़ तीव्र गति से गहरे जल की ओर बढ़ गया। उसी समय अंधा पौलीफ़ीमस भागा हुआ समुद्र तट पर आया और जल में घुस गया। नाँद भर-भर कर वह अपनी आँख का गड्ढा धोने लगा। ईनिअस के साथी उसे दूर से देखकर भय से चिल्ला पड़े। पौलीफ़ीमस उनकी आवाज़ सुनकर चैतन्य हो गया और वह गर्जता हुआ जहाज़ को पकड़ने आगे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बढ़ा। परन्तु आगे इतना गहरा पानी था कि उस भयानक दानव को भी वहाँ जाने का साहस नहीं हुआ। वह लौट आया। किनारे जाकर उसने शब्द का अनुसंधान करते हुए पहाड़ की बड़ी-बड़ी चट्टानें उस ओर फेंकी। जहाज़ तेजी से बढ़ता जा रहा था। चट्टानें बहुत बड़े धमाके से जल में गिर रही थीं जिनसे जल आकाश में बहुत ऊँचा उठ जाता था। एक चट्टान तो जहाज़ के बिल्कुल पास आकर गिरी और उसने बहुत सा पानी जहाज में भर दिया जिसे ईनिअस के आदमियों ने बाहर निकाला।

इस प्रकार ईनिअस भी उन भयंकर राक्षसों से बच गया। यूलिसीस जिस समय अपने देश इथाका पहुँचा, ईनिअस इटली के तीर पर जा पहुँचा था। वहाँ जाकर देवताओं की आज्ञानुसार उसने रोम का राज्य स्थापित किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ईनिअस की महायात्रा

ट्रौय का अंत आ चुका था। ईनिअस ने देखा कि यहाँ रहना अब मृत्यु को स्वयं अपने पास बुलाना है। उसी समय उसकी माता सुंदरी वीनस ने उससे कहा :

"आज ही अपने साथियों को लेकर यहाँ से निकल चल। मैं तुझे इस काम में पूरी मदद दूँगी। तेरे भाग्य में कुछ और ही बदा है. . . . सुदूर पश्चिम दिशा में किसी दिन तू एक नये राज्य की नींव डालेगा जो आगे चलकर सारे संसार को अपने नीचे कर लेगा। उस देश का नाम हैस्पीरिया (इटली) है। उठ और देरी न कर।"

उसी रात वह अपने कई साथियों को लेकर समुद्र मार्ग से चल पड़ा। उसके साथ बहुत से ट्रौय के निवासी थे जो इतने वर्षों लड़ते-लड़ते थक गये थे और अब यात्रा करना चाहते थे। ईनिअस ने ट्रौय छोड़ते समय अपने पिता और पुत्र को भी अपने साथ ले लिया था । उसकी स्त्री एक ही दिन पहिले वहीं ट्रौय में मर चुकी थी। उसकी मृत्यु ने भी उस पर काफी असर किया था और अब वह वहाँ बिल्कुल ही नहीं रहना चाहता था।

जब वे समुद्र के बीच जहाज़ पर बैठकर पालों को हवा के अनुकूल ताने चले जा रहे थे उस समय उन्हें उस हैस्पीरिया के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं था कि वह कहाँ है। कई दिन अज्ञात समुद्र की भीषण तरंगों पर उठते-गिरते आखिरकार वे एक भूभाग से आ लगे। उन्होंने समझा कि वे अपने निश्चित स्थान पर आ गये थे। परन्तु बाद में मालूम हुआ कि वह देश हार्पीज़ का था। जब ये लोग उतर कर अंदर जाने लगे तो हार्पीज़ ने उन पर भयानकता से आक्रमण किया। यह बहुत बड़े और भयानक चोंचों तथा पंजों वाले विशाल-काय परिंदे थे जो इतनी दुर्गंध फैला देते थे कि मनुष्य साधारणतया उस बदबू से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जीवित नहीं रह सकता था। यह परिंदे निर्भीक और क्रूर प्रकृति के थे जो मांस को पलभर में भक्षण कर जाते थे। ईनिअस और उनके साथियों ने बड़ी वीरता से उनका मुकाबला किया। वे लोग तलवार लेकर उन पर टूट पड़े और थोड़ी ही देर में उन्होंने यह जान लिया कि उनका पक्ष भारी था। वे उन्हें मार ही डालने वाले थे कि बीच में ओलिम्पस की देवी आईरिस आ गई और उसने उस युद्ध का नक्शा ही बदल दिया। हारते हुए हार्पीज़ जीतने लगे और तब उन्होंने उन लोगों को इतना मारा, इतना घायल किया कि वे उस टापू को छोड़कर भागने को मजबूर हो गये। भागकर उन्होंने अपने जहाज़ के लंगर उठाये और समुद्र में चल दिये। हार्पीज़ ने इस थोड़े समय में ही उनका बुरा हाल कर दिया था।

बहुत दिनों तक समुद्र में चलने के उपरांत एक दिन प्रभात की शुभ्र वेला में ईनिअस एक मनोहर टापू के तट पर जा लगा। उसके सैनिकों ने जयनाद किया। ईनिअस जब उतर कर अंदर गया तो उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब उसे वहाँ हैक्टर की पत्नी ऐंड्रोमाचे मिली।

जब ट्रौय का ध्वंस हुआ था तो यह स्त्री ऐकिलीस के पुत्र निओप्टोलिमस को लूट में मिली थी। उसका नाम फैरंस भी प्रसिद्ध था। यही वह क्रूर मनुष्य था जिसने सबके देखते-देखते राजा प्राइम को आल्टर पर सिर रखा कर मार डाला था। निओप्टोलिमस ने ऐंड्रोमाचे को अपने पास थोड़े ही दिन रखा, तत्पश्चात् वह उससे ऊब गया। उसने हैलन की बेटी हर्मथोन से प्रेम संबंध स्थापित कर लिया और तब ऐंड्रोमाचे को छोड़ दिया। ऐंड्रोमाचे ने तब ट्रौय के ज्योतिषी हैलेनस से विवाह कर लिया और उसके साथ वह इसी टापू पर चली आई थी। तब तक उधर ऐकिलीस का पुत्र भी मर चुका था। हर्मथोन के साथ वह बहुत ही थोड़े दिनों तक सुख भोग सका था। यहाँ इस टापू पर वे लोग निष्कंटक राज्य करते थे। ऐंड्रोमाचे ने ईनिअस व उनके साथियों का भव्य स्वागत किया। वह उन्हें अपने महल में ले गई और उसने उन्हें आत्मीयों की भाँति सप्रेम अपने पास रखा। उनके आदर में एक बहुत बड़ी दावत की और नाना प्रकार से उनको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रसन्न रखने का प्रयत्न किया।

ऐंड्रोमाचे का यह पति जो ज्योतिषी था उन्हें आगे की यात्रा का पथ बताने लगा। उसने उनसे कहा :

"हे ईनिअस ! तुम एक नये राज्य की नींव डालने वाले हो। हैस्पीरिया के परले सिरे पर ही जाकर रुकना क्योंकि पास के तट में तो तुम्हारे शत्रु ग्रीक लोग रहते हैं। तुम्हें पश्चिमी तट पर पहुँचना है। लंबी यात्रा तो तुम्हें अवश्य करनी होगी परन्तु वहाँ तुम सुरक्षित रहोगे। तुम्हें किसी भी हालत में सिसली और (इटली) हैस्पीरिया के बीच अपना जहाज़ नहीं ले जाना चाहिये क्योंकि यहीं तुम्हें वह भयानक नहरें पार करनी पड़ेंगी जिनकी रक्षा स्कैंच और चैरिब्डिस करते हैं। यह चैरिब्डिस बहुत ही खतरनाक हैं, ये मल्लाहों को तथा समूचे जहाज़ को खा जाती हैं. . . .यहीं यूलिसीस के छः आदमी मारे गये थे।"

तत्पश्चात् कुछ दिनों तक वहाँ विश्राम करने के बाद वे लोग चल दिये। अब ईनिअस ने मार्ग का बहुत ध्यान रखा। वह सिसली का चक्कर देकर ही आगे बढ़ा। जब वह सिसली के धुर दक्षिण में पहुँचा तो वहाँ एक टापू दिखाई दिया। यह वही साईक्लोप्स वाला स्थान था। ईनिअस को उसके बारे में मालूम ही न था। ऐंड्रोमाचे के पति ने ही उसे उनके खतरे से सूचित किया था। उस टापू पर उनका जहाज़ सूर्यास्त के समय पहुँचा और वह निस्संकोच तथा निर्भय होकर वहाँ पड़ाव डालने लगे। शीघ्र ही उन्होंने सारी व्यवस्था कर ली और वहाँ उतर कर भोजन इत्यादि करके रात को सो गय। वह इतने थके हुए थे कि शीघ्र ही सो गये अन्यथा यदि गाना इत्यादि गाते तो कदाचित् रात्रि में ही साईक्लोप्स द्वारा खतरा खा जाते।

भोर के बहुत पहिले एक हतभाग्य मनुष्य ईनिअस के पास आया और उसके पैरों पर गिर पड़ा। उसने घुटनों पर गिर कर उससे गिड़गिड़ा कर कहा :

"भागो. . . ."

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ईनिअस न आश्चर्य से उसकी ओर देखा तो वह हाँफता हुआ उतावले स्वर से बोला :

"भागो. . . .यहाँ से जितनी जल्दी हो सके भागो. . . .यह साईक्लोप्स का देश है। वे बहुत भयंकर हैं। अपनी खैरियत चाहते हो तो भागो जल्दी. . . .जल्दी. . . .जहाज के लंगर उठाओ. . . .बंधन काट दो।"

ईनिअस घबराया क्योंकि उसने भी साईक्लोप्स का नाम सुन रखा था कि वह कितने भयंकर थे। उसने तुरंत जहाज़ बढ़ाने की आज्ञा दी। भगदड़ मच गई, खेमे समेट लिये गये तथा जो अन्य सामान रात्रि में बेफिक्री के साथ उतार लिया गया था, अब समेटा जाने लगा था। बिना शोरगुल किये चुपचाप सब काम होने लगा—सबों को अपने प्राणों की पड़ी थी। सामने ही वह विचित्र जंगली आदमी खड़ा था जिसने उन्हें भय से अग्रसूचित किया था। वह कमजोर था और ऐसा लगता था जैसे वर्षों से भूखा था। उसकी दाढ़ी-मूँछें तथा केश जानवरों की भाँति बढ़े हुए थे। वह कमजोरी से पीला पड़ रहा था। उसने कहा कि वह यूलिसीस का साथी था जो धोखे से पीछे रह गया था। वह इतने वर्षों तक साईक्लोप्स से छिपकर बड़ी मुश्किल से रह रहा था। उस टापू पर सौ साईक्लोप्स रहते थे जिनमें से यदि एक भी उसे देख लेता तो निश्चय ही खा जाता। परन्तु वह दिन भर छिपा रहता और केवल रात में ही बाहर निकलता था। रात में ही वह फल इत्यादि से अपनी भूख मिटाता या कभी एक आध बकरा मारकर खा लेता था। अंत में उसने कहा :

"साईक्लोप्स के एक आँख मस्तक के मध्य में होती है जो रथ के बड़े पहिये के बराबर बड़ी होती है।"

ईनिअस के साथियों ने भी शीघ्रातिशीघ्र सब तैयारी कर ली और जहाज़ पर चढ़कर चल दिये। उन्होंने अपने साथ उस आदमी को भी ले लिया था। वह बहुत दूर अभी नहीं गये थे कि पीछे से पौलीफ़ीमस समुद्र तट पर अपनी आँख का गड्ढा धोने आया। उसमें से अब भी खून बहता था। उसने जो जहाज़ के पतवारों के चलने का शब्द सुना तो वह क्रुद्ध होकर उसी ओर समुद्र में पूर्ण वेग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से चला। वह निश्चय ही उन्हें डुबो देता यदि जहाज़ उस समय तक काफ़ी आगे न निकल गया होता। आगे जल इतना अधिक गहरा था कि उस दानव को भी जो कि पहाड़ के शिखर की भाँति ऊँचा था आगे बढ़ने का साहस नहीं हुआ।

परन्तु ईनिअस पर अभी देवता प्रसन्न नहीं हुए थे। जब वह सिसली की प्रदक्षिणा करता हुआ आगे बढ़ रहा था दूसरी मुसीबत आ खड़ी हुई। भयंकर तूफ़ान आ गया जो पहिले तो धीमा था फिर इतना भयानक हो गया कि ईनिअस व उसके साथियों ने उससे बचने की आशा बिल्कुल छोड़ दी। वह ऐसा जबर्दस्त तूफ़ान था कि लहरें जब ऊपर उठतीं तो आकाश में स्थित तारों को छू लेतीं और तब दो लहरों के बीच समुद्र की तह दिखाई देने लग जाती थी। उन्होंने तुरंत समझ लिया कि यह साधारण स्वतः चलने वाला तूफ़ान नहीं था बल्कि किसी दैवी क्रोध का जीता जागता उदाहरण था।

(ज़िअस) ज्यूपिटर की स्त्री जूनो अब भी ट्रौय के हर एक आदमी से नफ़रत करती थी। वह उन्हें कहीं भी कुशल देखकर उनसे बदला लेने की कोशिश करती थी। पैरिस उसका असली शत्रु था जिसने उसे सुंदरता की प्रतियोगिता में हरा-कर फल वीनस को दिया था। वह तो अब मर चुका था फिर भी वह उसी के कारण प्रत्येक ट्रोजन से घृणा करती थी। यह तूफ़ान इस समय उसी के द्वारा भेजा गया था। ईनिअस से घृणा करने के दो कारण और थे। एक तो यह कि वह वीनस का पुत्र था, दूसरे यह कि वह जानती थी कि यह एक नये राज्य रोम की स्थापना करने के लिये इटली की ओर जा रहा था। वह नहीं चाहती थी कि ट्रोजन खून का कोई आदमी इतना बड़ा काम करे। उसने ईओलस को फुसलाया। यह तूफ़ानों का राजा था जिसने जूनो के कहने से पहिले यूलिसीस के जहाज को डूबने से बचाया था। जूनो ने उससे कहा कि यदि वह इस ट्रोजन जहाज़ को समुद्र में डुबाकर खत्म कर देगा तो वह उसे अपनी सबसे अधिक सुंदरी जल-कन्या देगी। ईओलस ने इस लालच से वह भयंकर तूफ़ान भेजा था। परन्तु समुद्र का सम्राट नैप्चून इन सभी बातों को जानता था। वह जूनो का भाई था और उसकी सारी कमजोरियों को समझता था। वह इस प्रकार व्यर्थ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निरपराधों के खून से समुद्र को रँगना नहीं चाहता था। परन्तु ज्यूपिटर की भाँति वह भी जूनो को प्रत्यक्ष में कभी रुष्ट नहीं करता था। वह बड़ी सावधानी से उससे संबंध बनाये रखता था। उसने उससे तो कुछ नहीं कहा पर एक डाँट उसने अपने अधीन ईओलस को दी। उसने उससे कहला भेजा:

"तुरंत इस तूफ़ान को रोक दो अन्यथा दंड दिया जायगा।" और साथ ही सारा बवंडर शांत हो गया। जूनो को पता भी न चला कि यह सब क्यों हो गया। ट्रोजन्स फिर बच गये और अब वह उत्तरी अफ्रीका के तट पर जा लगे।

इस स्थान के पास ही कार्थेज था जो जूनो का अत्यंत प्रिय था। वह संसार में सबसे अधिक इन्हीं लोगों को चाहती थी। अब जब ईनिअस कार्थेज के इतने पास आ चुका था तो जूनो ने सोचा कि किसी प्रकार उसे वहीं पहुँचाया जाय। कार्थेज राज्य को एक स्त्री ने स्थापित किया था। इसका नाम डिडो था जो एक सुंदरी तरुणी थी जिसका पति मर चुका था। ईनिअस जब ट्रौय से चला था उसकी स्त्री मर चुकी थी। जूनो ने अब यह चाहा कि उन दोनों का आपस में संबंध स्थापित हो जाय जिससे ईनिअस कार्थेज में रह जाय और नया राज्य बनाने में असफल हो। उसकी यह इच्छा निश्चय ही पूरी हो जाती यदि इसी समय वीनस प्रयत्न न करती। वह भी उन दोनों का मिलन अवश्य चाहती थी परन्तु दूसरी ही तरह से। वह उसे केवल एक स्त्री और पुरुष का स्वच्छंद मिलन भर देखना चाहती थी जिसमें ईनिअस पर कोई प्रतिबंध न होने पावे और जब चाहे वह उसे छोड़कर चला जा सके। वह सीधी ओलिम्पस गई और ज्यूपिटर के पास जाकर बोली:

"मेरे पुत्र के भाग्य में जब यह लिखा है कि वह नया राज्य कायम करे तो फिर अब जूनो के कुचक्र उस पर क्यों लागू हो रहे हैं? वह डीडो से विवाह न करे केवल उसे रखैल के तौर पर रखे. . . .यही तो मैं चाहती हूँ," इतना कहते-कहते उसके सुंदर नेत्रों में आँसू भर आये, ज्यूपिटर हँसा और बोला:

"सुंदरी इतनी चिंतित क्यों होती हो? जैसे तुम चाहती हो उसी प्रकार सारा कार्यक्रम निर्धारित है। तुम्हारा पुत्र अवश्य रोम का राज्य स्थापित

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करेगा।" और तब उसने उठकर उसके आँसू पोंछ डाले और उसे प्यार से आलिङ्गन में लेकर सांत्वना दी। वीनस तब प्रसन्न हो गई। पुलकित हृदय लिये वह ओलिम्पस से लौटी पर फिर भी अपने अभीष्ट को शीघ्र सिद्ध करने के लिये उसने अपने पुत्र क्यूपिड को साथ ले लिया। वह यह बात जानती थी कि डीडो सुंदरी तो थी पर कठोर हृदय वाली स्त्री थी जिसने अपने अगणित प्रेमियों को ठुकरा दिया था। वीनस इसे इस कारण से भी नीचा दिखाना चाहती थी। यदि कोई स्त्री प्रेम करने से हिचकिचाती थी तो वीनस इसे अपना अपमान समझती थी। उसने क्यूपिड से कहा:

"ऐसा तीर मार हे पुत्र कि डीडो कामातुर हो उठे।"

"मैं प्रतिज्ञा करता हूँ...." क्यूपिड ने तुरंत उत्तर दिया "कि वह ईनिअस को देखते ही उस पर मर मिटने को तैयार हो जायगी।"

एक अज्ञात प्रेरणा से अब तक ईनिअस जहाज़ लेकर कार्थेज के किनारे जा लगा था। वह अपने विश्वस्त साथियों और अभिन्न मित्र ऐकाटीस को लेकर इस नये स्थान को देखने चला। जहाज़ से उतर कर पड़ाव डाला गया और जब वे लोग खा-पी चुके तथा अन्य कामों से निश्चिंत हो गये तब ईनिअस ने उनसे कहा:

"मित्रो! हम लोग एक बहुत लंबे समय से साथ-साथ सागर की थिरकती हुई लहरों पर बहे चले जा रहे हैं....तुम्हारे प्रेम के सहारे ही मैंने जीवन की कठोर यातनाओं को सहा है। हम आशा बाँधे हुए बढ़े चले आये हैं और इसी भाँति बढ़े चले जायेंगे....आओ अब साथ-साथ इस नये स्थान को देखें...।"

और तब वे लोग द्वीप के अंदर चले। थोड़ी ही दूर जाने के उपरांत वीनस एक शिकारी स्त्री का रूप धारण करके उनसे मिली। उसने उन्हें उस स्थान का नाम तथा वहाँ की विशेषतायें बताईं। वह बोली:

"हे यात्री! तुम सामने वाले मार्ग से आगे बढ़ो। घने जंगलों को पार करने के बाद तुम कार्थेज नामक नगर में पहुँचोगे जहाँ की रानी डीडो तुम्हारा भव्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्वागत करेगी। वह नगर कला का विशेष केन्द्र है और संसार में प्रसिद्ध है। तुम चलो....मैं तुम्हें मार्ग दिखाती चलूँगी।"

ईनिअस व उसके साथी आगे चले। वह उस शिकारी स्त्री के कथन को सुनकर बहुत प्रभावित हुए थे। घने जंगलों को पार करने के उपरांत वह कार्थेज के बाहरी द्वार पर पहुँचे। वीनस ने उन्हें बादलों से चारों ओर से ढँक लिया था। जब वह महानगर के द्वार के अंदर घुसे उन बादलों के कारण वह किसी को नहीं दिखे। रास्ते चौड़े-चौड़े थे और उसके दोनों ओर गगनचुंबी अट्टालिकाएँ बनी हुई थीं; नगर अत्यंत सुंदर था जहाँ दूकानों पर स्त्री-पुरुष बहुमूल्य वस्तुएँ खरीद रहे थे। ये लोग चुपचाप अदृश्य रूप से चले जा रहे थे। आगे जाकर एक विशाल और दिव्य मंदिर के सामने जाकर ये लोग रुके। उसी समय अंदर से रानी डीडो बाहर आ रही थी। उसको सैकड़ों दासियों ने घेर रखा था जो उसके आगे-पीछे चल रही थीं; उनके गोरे मांसल शरीरों पर वज्र खचित स्वर्णाभूषण चमचमा रहे थे। उनके चलने से उनकी रशनाओं की किंकिड़ियाँ बज रही थीं और वलय आपस में टकराकर मधुर शब्द पैदा कर रहे थे। उनके बीच में दिव्य वस्त्रों और आभूषणों से अलंकृत सुवर्ण छत्र लगाये सुंदरी रानी डीडो गंभीर मुद्रा में चली आ रही थी।

उसी समय ईनिअस और उसके मित्र ऐकैटीस की दृष्टि मंदिर के विशाल प्राङ्गण की दीवालों की ओर गई, जहाँ नाना प्रकार के चित्र प्रस्तर पर खुदे हुए थे। ईनिअस ने उन्हें गौर से देखा। वह चित्र सब ट्रौय के युद्ध के थे। एक चित्र में वृद्ध राजा प्राइम अपने पुत्र हैक्टर की लाश एकिलीस के सामने घुटनों के बल बैठकर माँग रहा था। एक दूसरे चित्र में सुंदरी हैलन पैरिस के गले में बाँहें डाले खड़ी थी। ईनिअस का उत्साह उन्हें देखकर दूना हो गया। उसने समझ लिया कि यहाँ के निवासी ट्रौय के लोगों से कितना प्रेम करते हैं। जब रानी मंदिर के बाहर आई उसी समय सामने खड़े ईनिअस के चारों ओर का बादल गायब हो गया। डायना की भाँति सुंदरी रानी डीडो ने अपने सम्मुख एपोलो जैसा सुंदर ईनिअस खड़ा देखा। उसी समय बादलों की ओट होकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उत्पाती क्यूपिड ने कामबाण रानी के हृदय पर कसकर मार दिया। रानी एक दम उस रूपवान योद्धा पर रीझ उठी और उसके हृदय में उसके प्रति काम और वासना जाग उठी। इतने दिनों बाद उसे एक प्रेमी मिला था जिससे मिलने को वह आतुर हो उठी। ईनिअस ने उसे अपना परिचय अत्यंत नम्र स्वर में दिया और अपनी यात्राओं की सभी कठिनाइयों के बारे में उसे बतलाया। सब सुनकर रानी ने गहरी श्वास छोड़ी और तब वह आदर सहित उसे अपने महल में ले गई जहाँ उन सभी का सत्कार किया गया। रानी ने उनके सत्कार में एक बहुत बड़ी दावत दी। वह बोली :

"मित्रों मैं स्वयं आपदा को जानती हूँ। अपने जीवन के कटु अनुभवों ने मुझे आपत्तिग्रस्त मित्रों के साथ सद्व्यवहार करना सिखा दिया है।" तत्पश्चात् उसने बताया कि वह स्वयं उत्तरी अफ्रीका से भागकर आई थी क्योंकि वहाँ उसका भाई उसे मार डालना चाहता था।

दावत के बाद ईनिअस ने अपने ओजस्वी भाषण में रानी को अपनी पूरी कथा सुनाई। उसने ट्रौय के भयंकर युद्ध का वर्णन ऐसा किया कि रानी के रोंगटे खड़े हो गये। उसे रोमांच हो आया। तत्पश्चात् उसने अपनी समुद्र यात्रा को विस्तारपूर्वक कहकर सुनाया। जब उसने उस विशालकाय अंधे पोलीफ़ीमस का जिक्र किया तो रानी भावना में बह गई और उसने उस एपोलो जैसे सुंदर युवक को प्रशंसापूर्ण नेत्रों से देखा। उसकी आँखों में उस समय वासना छलछला रही थी। निश्चय ही वह उस पर उस समय इतनी अधिक रीझ गई थी कि वह अपनी स्थिति को छिपा नहीं सकी। यदि क्यूपिड द्वारा वह कामबाण से नहीं भी बींधी जाती तो भी इस समय वह उससे प्रेम किये बिना हरगिज़ नहीं रहती। फिर अब तो बात ही और थी। वह उससे लिपट जाने को आतुर हो उठी। जब भाषण समाप्त हुआ रानी अपने आपको और अधिक रोकने में असमर्थ एकान्त पाकर उसके पास आ खड़ी हुई और उसने उससे प्रेम याचना की। ईनिअस ने उस सुंदरी को अपने हृदय से लगा लिया।

दूसरे ही दिन रानी ने यह घोषणा करा दी कि ईनिअस कार्थेज में उसी के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु फिर भी उसे ज्यूपिटर के आश्वासन का पूर्ण विश्वास था। वह जानती थी कि ज्यूपिटर का कहा झूठा नहीं हो सकता। वास्तविक बात यह थी कि ज्यूपिटर को वीनस उसकी स्त्री जूनो से भी अधिक समझती थी। जब ईनिअस डीडो के साथ काफ़ी समय तक रह लिया और उसकी तृष्णा उसके प्रति इतनी अधिक न रही तो एक दिन उसने उसके पास मर्करी को भेजा। यह देवताओं का दूत था जो मन की गति से चलता था। मर्करी ने जाकर उससे (ईनिअस) उस समय ज्यूपिटर का संदेश कहा जब वह एकांत में उपवन में बैठा था। मर्करी एकदम उसके सामने प्रगट हुआ और उसे अचंभे में डालकर बोला :

"तू कब तक यहाँ समय नष्ट करेगा ? आँखें खोल और जो कार्य तुझे करना है उसके हेतु शीघ्र प्रस्थान कर," मर्करी ने ये शब्द कठोर स्वर में उसे धमकाते हुए कहे थे। इससे पहिले कि ईनिअस उत्तर देने के लिये मुँह खोले वह फिर उसी स्वर में बोला :

"देवाधिदेव ज्यूपिटर की आज्ञा से मैं मर्करी तेरे पास तुझे तेरा कर्त्तव्य याद दिलाने आया हूँ। उठ और वह काम कर जो तुझे करना है। तुझे रोम के राज्य की नींव डालनी है. . . .वह राज्य जो सारे संसार पर आधिपत्य करेगा . . . .जिसके झंडे के नीचे सारी दुनिया भय से थर्राया करेगी. . . .," और इतना कहकर मर्करी अन्तर्धान हो गया।

ईनिअस भय और विस्मय से व्याकुल हो उठा। उसे देवता की आज्ञा माननी ही होगी। उसे जाना ही होगा, यह वह समझ गया। उसका मन उसे कचोटने लगा। हाय, यह सुख, यह विशाल साम्राज्य ! यह सब छूट जायगा। यह सुख की शैया जिस पर वह परम सुंदरी डीडो को बाँहों में लेकर सोता है, यह सब छोड़कर अनंत और अज्ञात समुद्र में एक बार फिर सैनिकों को लेकर चला जाना होगा। उसका मन विद्रोह कर उठा। नहीं वह कदापि नहीं जायगा। वह उस सुख को छोड़कर जिसे वह इतनी कठिनाई के उपरांत प्राप्त कर सका है यों क्षण भर के स्वप्न की भाँति नहीं छोड़ देगा। परन्तु ज्यूपिटर ? उसकी आज्ञा का उल्लंघन भला किस प्रकार हो सकेगा ? नहीं, नहीं उसे जाना ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समान सम्मान पाने का अधिकारी होगा क्योंकि वह उसका प्रेमी है और उसका संबंध रानी से स्थापित हो चुका है। उसने ईनिअस से कहा : "प्रियतम ! यह कार्थेज और स्वयं मैं तुम्हारी दासी हूँ....तुम इच्छानुसार यहाँ भोग करो।"

ईनिअस राजा बनकर कार्थेज के महलों में रहने लगा। वह जो जहाज़ों पर चढ़कर दर-दर भटकता फिरता था और दुख से पीड़ित था अब डीडो की छत्र-छाया में आनंदपूर्वक रहने लगा। वह उसके यौवन से बहुत प्रभावित हुआ। डायना जैसी सुंदरी रानी डीडो उसे प्रसन्न रखने का हर प्रकार से उपक्रम करती थी। उसने अपना राज्य, धनधान्य, आभूषण, दास-दासियाँ यहाँ तक कि स्वयं अपने आप को भी उसके चरणों में डाल दिया था। वह उस सुंदरी के साथ भोग करता हुआ संसार को भूल गया। वह अपनी यात्रा की कथायें आज्ञा से नहीं बल्कि प्रार्थना करने पर सुनाता था। रानी उसे साथ लेकर कभी वन-उपवनों में बिहार करने जाती तो कभी वह उसका जी सुंदरी नर्तकियों द्वारा बहलाने का प्रयत्न करती। ऐसा प्रतीत होता था जैसे वह एक क्षण भी उसके बिना जीवित नहीं रह सकती थी। ईनिअस उसके प्रेम से इतना दब गया था कि उसके हृदय में कोई नवीन कार्य करने का उत्साह अब बाकी नहीं रह गया था।

अधिकार, ऐश्वर्य, सुख और मदमाती सुंदरी स्त्री इन चारों को पाकर ईनिअस की और कोई चाह नहीं रही। अब हैस्पीरिया जाकर नया राज्य स्थापित करने का भी उसका विचार जाता रहा। यही राज्य क्या बुरा है जो नया बसाने का कष्ट किया जाय, वह ऐसा सोचता। इतने धन और सुख को छोड़ कर अब अज्ञात समुद्र में दुबारा जीवन को खतरे में डालना उसको अब नहीं जँचा। सबके ऊपर जब सुंदरी डीडो का ध्यान आता तो उसका हृदय दुखने लगता। उस अनिंद्य सुंदरी को वह किसी भी भाँति छोड़ने को तैयार नहीं था। जूनो प्रसन्न थी कि उसकी चाल सफल हो गई थी।

वीनस अब अपनी भूल पर पछता रही थी। न वह क्यूपिड को मजबूर करती कि वह उस स्त्री की वासनाओं को उभाड़े न आज यह नौबत आती।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु फिर भी उसे ज्यूपिटर के आश्वासन का पूर्ण विश्वास था। वह जानती थी कि ज्यूपिटर का कहा झूठा नहीं हो सकता। वास्तविक बात यह थी कि ज्यूपिटर को वीनस उसकी स्त्री जूनो से भी अधिक समझती थी। जब ईनिअस डीडो के साथ काफ़ी समय तक रह लिया और उसकी तृष्णा उसके प्रति इतनी अधिक न रही तो एक दिन उसने उसके पास मर्करी को भेजा। यह देवताओं का दूत था जो मन की गति से चलता था। मर्करी ने जाकर उससे (ईनिअस) उस समय ज्यूपिटर का संदेश कहा जब वह एकांत में उपवन में बैठा था। मर्करी एकदम उसके सामने प्रगट हुआ और उसे अचंभे में डालकर बोला :

"तू कब तक यहाँ समय नष्ट करेगा ? आँखें खोल और जो कार्य तुझे करना है उसके हेतु शीघ्र प्रस्थान कर," मर्करी ने ये शब्द कठोर स्वर में उसे धमकाते हुए कहे थे। इससे पहिले कि ईनिअस उत्तर देने के लिये मुँह खोले वह फिर उसी स्वर में बोला :

"देवाधिदेव ज्यूपिटर की आज्ञा से मैं मर्करी तेरे पास तुझे तेरा कर्त्तव्य याद दिलाने आया हूँ। उठ और वह काम कर जो तुझे करना है। तुझे रोम के राज्य की नींव डालनी है....वह राज्य जो सारे संसार पर आधिपत्य करेगा ....जिसके झंडे के नीचे सारी दुनिया भय से थर्राया करेगी....," और इतना कहकर मर्करी अन्तर्धान हो गया।

ईनिअस भय और विस्मय से व्याकुल हो उठा। उसे देवता की आज्ञा माननी ही होगी। उसे जाना ही होगा, यह वह समझ गया। उसका मन उसे कचोटने लगा। हाय, यह सुख, यह विशाल साम्राज्य ! यह सब छूट जायगा। यह सुख की शैया जिस पर वह परम सुंदरी डीडो को बाँहों में लेकर सोता है, यह सब छोड़कर अनंत और अज्ञात समुद्र में एक बार फिर सैनिकों को लेकर चला जाना होगा। उसका मन विद्रोह कर उठा। नहीं वह कदापि नहीं जायगा। वह उस सुख को छोड़कर जिसे वह इतनी कठिनाई के उपरांत प्राप्त कर सका है यों क्षण भर के स्वप्न की भाँति नहीं छोड़ देगा। परन्तु ज्यूपिटर ? उसकी आज्ञा का उल्लंघन भला किस प्रकार हो सकेगा ? नहीं, नहीं उसे जाना ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समान सम्मान पाने का अधिकारी होगा क्योंकि वह उसका प्रेमी है और उसका संबंध रानी से स्थापित हो चुका है। उसने ईनिअस से कहा : "प्रियतम ! यह कार्थेज और स्वयं मैं तुम्हारी दासी हूँ....तुम इच्छानुसार यहाँ भोग करो।"

ईनिअस राजा बनकर कार्थेज के महलों में रहने लगा। वह जो जहाज़ों पर चढ़कर दर-दर भटकता फिरता था और दुख से पीड़ित था अब डीडो की छत्र-छाया में आनंदपूर्वक रहने लगा। वह उसके यौवन से बहुत प्रभावित हुआ। डायना जैसी सुंदरी रानी डीडो उसे प्रसन्न रखने का हर प्रकार से उपक्रम करती थी। उसने अपना राज्य, धनधान्य, आभूषण, दास-दासियाँ यहाँ तक कि स्वयं अपने आप को भी उसके चरणों में डाल दिया था। वह उस सुंदरी के साथ भोग करता हुआ संसार को भूल गया। वह अपनी यात्रा की कथायें आज्ञा से नहीं बल्कि प्रार्थना करने पर सुनाता था। रानी उसे साथ लेकर कभी वन-उपवनों में विहार करने जाती तो कभी वह उसका जी सुंदरी नर्तकियों द्वारा बहलाने का प्रयत्न करती। ऐसा प्रतीत होता था जैसे वह एक क्षण भी उसके बिना जीवित नहीं रह सकती थी। ईनिअस उसके प्रेम से इतना दब गया था कि उसके हृदय में कोई नवीन कार्य करने का उत्साह अब बाकी नहीं रह गया था।

अधिकार, ऐश्वर्य, सुख और मदमाती सुंदरी स्त्री इन चारों को पाकर ईनिअस की और कोई चाह नहीं रही। अब हैस्पीरिया जाकर नया राज्य स्थापित करने का भी उसका विचार जाता रहा। यही राज्य क्या बुरा है जो नया बसाने का कष्ट किया जाय, वह ऐसा सोचता। इतने धन और सुख को छोड़ कर अब अज्ञात समुद्र में दुबारा जीवन को खतरे में डालना उसको अब नहीं जँचा। सबके ऊपर जब सुंदरी डीडो का ध्यान आता तो उसका हृदय दुखने लगता। उस अनिंद्य सुंदरी को वह किसी भी भाँति छोड़ने को तैयार नहीं था। जूनो प्रसन्न थी कि उसकी चाल सफल हो गई थी।

वीनस अब अपनी भूल पर पछता रही थी। न वह क्यूपिड को मजबूर करती कि वह उस स्त्री की वासनाओं को उभाड़े न आज यह नौबत आती।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु फिर भी उसे ज्यूपिटर के आश्वासन का पूर्ण विश्वास था। वह जानती थी कि ज्यूपिटर का कहा झूठा नहीं हो सकता। वास्तविक बात यह थी कि ज्यूपिटर को वीनस उसकी स्त्री जूनो से भी अधिक समझती थी। जब ईनिअस डीडो के साथ काफ़ी समय तक रह लिया और उसकी तृष्णा उसके प्रति इतनी अधिक न रही तो एक दिन उसने उसके पास मर्करी को भेजा। यह देवताओं का दूत था जो मन की गति से चलता था। मर्करी ने जाकर उससे (ईनिअस) उस समय ज्यूपिटर का संदेश कहा जब वह एकांत में उपवन में बैठा था। मर्करी एकदम उसके सामने प्रगट हुआ और उसे अचंभे में डालकर बोला :

"तू कब तक यहाँ समय नष्ट करेगा ? आँखें खोल और जो कार्य तुझे करना है उसके हेतु शीघ्र प्रस्थान कर," मर्करी ने ये शब्द कठोर स्वर में उसे धमकाते हुए कहे थे। इससे पहिले कि ईनिअस उत्तर देने के लिये मुँह खोले वह फिर उसी स्वर में बोला :

"देवाधिदेव ज्यूपिटर की आज्ञा से मैं मर्करी तेरे पास तुझे तेरा कर्त्तव्य याद दिलाने आया हूँ। उठ और वह काम कर जो तुझे करना है। तुझे रोम के राज्य की नींव डालनी है. . . .वह राज्य जो सारे संसार पर आधिपत्य करेगा . . . .जिसके झंडे के नीचे सारी दुनिया भय से थर्राया करेगी. . . .," और इतना कहकर मर्करी अन्तर्धान हो गया।

ईनिअस भय और विस्मय से व्याकुल हो उठा। उसे देवता की आज्ञा माननी ही होगी। उसे जाना ही होगा, यह वह समझ गया। उसका मन उसे कचोटने लगा। हाय, यह सुख, यह विशाल साम्राज्य ! यह सब छूट जायगा। यह सुख की शैया जिस पर वह परम सुंदरी डीडो को बाँहों में लेकर सोता है, यह सब छोड़कर अनंत और अज्ञात समुद्र में एक बार फिर सैनिकों को लेकर चला जाना होगा। उसका मन विद्रोह कर उठा। नहीं वह कदापि नहीं जायगा। वह उस सुख को छोड़कर जिसे वह इतनी कठिनाई के उपरांत प्राप्त कर सका है यों क्षण भर के स्वप्न की भाँति नहीं छोड़ देगा। परन्तु ज्यूपिटर ? उसकी आज्ञा का उल्लंघन भला किस प्रकार हो सकेगा ? नहीं, नहीं उसे जाना ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होगा। वह भय से काँपने लग गया। एक ओर डीडो का मांसल शरीर जिसके आलिङ्गन में वह मधुर ऊष्मा का अनुभव करता था दूसरी ओर देवताओं का क्रोध! वह कुछ भी निश्चय नहीं कर सका।

सारी रात बीत गई। डीडो के साथ वह लेटा रहा। उस विस्तृत और ऊँचे महल के वातायन से पूर्ण चंद्र का प्रकाश डीडो के सुंदर वस्त्रों से अस्तव्यस्त शरीर पर पड़ रहा था। एक चाँद के प्रकाश में दूसरा चाँद चाँदी की भाँति चमक रहा था। डीडो सो रही थी। उसका भोला और मासूम चेहरा देख देखकर ईनिअस का कलेजा मुँह को आ रहा था। क्या कहेगी यह सुंदरी जब ईनिअस उससे जाने के लिये कहेगा। कैसे देखेगा वह उन आँसुओं को जो उन रस भरे नेत्रों से झरने लगेंगे?

भोर हुई और वह शैया से उठ गया। उसके उस विचित्र परिवर्तन को भोली डीडो अब तक नहीं जान पाई थी। ईनिअस सीधा अपने आदमियों के पास गया और उसने उन्हें एक ही साँस में आज्ञा दे डाली। वह बोला:

"जहाज़ी बेड़ा शीघ्र तैयार करो। हम शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करने को लालायित हैं....हाँ, परन्तु यह कार्य बिल्कुल ख़ामोशी से हो....सावधान यह बात कोई जानने न पाये।"

परन्तु डीडो आखिर वहाँ की रानी थी। जब समुद्र तट पर जहाज़ तैयार होने लगे, ठोंका-पीटी होने लगी और नये-नये पाल जहाज़ों पर चढ़ाये जाने लगे तो उसके निजी सेवकों ने आकर उसे सारी सूचना दे दी। वह सुनकर धक्क सी रह गई। उसने शीघ्र अपने प्रेमी को बुलवाया। जब ईनिअस आया तो उसकी निगाहें उससे मिल नहीं रही थीं। डीडो ने उसे प्रेमपूर्वक कोमल शैया पर बिठाया और फिर स्वयं उसके बगल में बैठ गई। तत्पश्चात् वह उससे बोली:

"क्या तुम मुझे छोड़ जाओगे? बोलो....क्या अब मैं तुम्हें अच्छी नहीं लगती?" और इसके पहिले कि ईनिअस उत्तर दे वह रोने लगी। उसके नेत्रों से आँसू झरने लगे। वह हिचकियाँ लेने लगी। फिर बोली:

"मेरे आँसुओं की ओर देखो मेरे प्रियतम! इस हाथ को देखो जो मन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम्हें दिया था।....क्या तुम सचमुच ही मुझे ठोकर मार कर चले जाओगे.. ..? यदि कभी मैं तुम्हारे लायक थी, और कभी भी मेरी कोई भी वस्तु तुम्हें पसंद थी तो मुझे ऐसा तड़पती छोड़कर न जाओ...मैं तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकूँगी।"

ईनिअस पत्थर की मूर्ति बना बैठा था। मन ही मन वह ज्यूपिटर से प्रार्थना कर रहा था कि वह मर्करी को एक बार फिर वहाँ भेजे जो अब की बार जाने से मना कर दे। परन्तु देवता इतना सरल और दयालु कहाँ था? डीडो रोते रोते फिर बोली :

"तुम बोलते क्यों नहीं प्रियतम! क्या तुम वह मधुर रातें भूल गये जब हमने मिलकर यौवन का स्रोत अजस्र धाराओं में बहाया था? तुमने ही तो कई बार मुझसे कहा था कि डीडो तुम्हारी जैसी सुंदरी को पाकर मैं धन्य हो गया हूँ। फिर भला अब क्या हो गया है जो मुझे तड़पती मछली की भाँति छोड़कर जा रहे हो? देखो प्रियतम! अभी मेरा यौवन उद्दीप्त है। अभी वीनस का दिया हुआ मेरा रूप अकलंक है। मुझे छोड़कर कहीं मत जाओ.."

ईनिअस ने अब कठोर हृदय बनाकर अपने को अत्यधिक संयम में रखते हुए उत्तर दिया :

"हे सुंदरी ऐसा न कहो। तुम्हारे साथ रहकर निश्चय ही मैंने अनंत सुख पाया है। मैं अब इस बात से इंकार नहीं करता। तुम्हें इस बात का भी शक नहीं होना चाहिये कि तुम्हारा सौंदर्य कम हो गया है। अतएव मैं तुमसे ऊब गया हूँ। नहीं, ऐसा कदापि नहीं है। तुम्हारे यौवन में अब भी मादक ऊष्मा है जिसने मुझे इतना मदहोश कर दिया है कि अब मैं देवताओं द्वारा निर्धारित कार्य करने में भी हिचकिचा रहा हूँ। मैंने तुम्हें हमेशा प्यार किया है और अब भी करता हूँ। परन्तु मैं मजबूर हूँ। मुझे जाना ही होगा। देवताओं के राजा ज्यूपिटर की आज्ञा का उल्लंघन मैं नहीं कर सकता। मुझे हैस्पीरिया जाकर एक नये राज्य की स्थापना करनी है। ऐसा ही विधि में लिखा है जो तुम्हारे और मेरे प्रयत्न से बदला नहीं जा सकता है....मुझे जाना ही होगा...."

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होगा। वह भय से काँपने लग गया। एक ओर डीडो का मांसल शरीर जिसके आलिङ्गन में वह मधुर ऊष्मा का अनुभव करता था दूसरी ओर देवताओं का क्रोध! वह कुछ भी निश्चय नहीं कर सका।

सारी रात बीत गई। डीडो के साथ वह लेटा रहा। उस विस्तृत और ऊँचे महल के वातायन से पूर्ण चंद्र का प्रकाश डीडो के सुंदर वस्त्रों से अस्तव्यस्त शरीर पर पड़ रहा था। एक चाँद के प्रकाश में दूसरा चाँद चाँदी की भाँति चमक रहा था। डीडो सो रही थी। उसका भोला और मासूम चेहरा देख देखकर ईनिअस का कलेजा मुँह को आ रहा था। क्या कहेगी यह सुंदरी जब ईनिअस उससे जाने के लिये कहेगा। कैसे देखेगा वह उन आँसुओं को जो उन रस भरे नेत्रों से झरने लगेंगे?

भोर हुई और वह शैया से उठ गया। उसके उस विचित्र परिवर्तन को भोली डीडो अब तक नहीं जान पाई थी। ईनिअस सीधा अपने आदमियों के पास गया और उसने उन्हें एक ही साँस में आज्ञा दे डाली। वह बोला:

"जहाज़ी बेड़ा शीघ्र तैयार करो। हम शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करने को लालायित हैं....हाँ, परन्तु यह कार्य बिल्कुल ख़ामोशी से हो....सावधान यह बात कोई जानने न पाये।"

परन्तु डीडो आखिर वहाँ की रानी थी। जब समुद्र तट पर जहाज़ तैयार होने लगे, ठोंका-पीटी होने लगी और नये-नये पाल जहाज़ों पर चढ़ाये जाने लगे तो उसके निजी सेवकों ने आकर उसे सारी सूचना दे दी। वह सुनकर धक्क सी रह गई। उसने शीघ्र अपने प्रेमी को बुलवाया। जब ईनिअस आया तो उसकी निगाहें उससे मिल नहीं रही थीं। डीडो ने उसे प्रेमपूर्वक कोमल शैया पर बिठाया और फिर स्वयं उसके बगल में बैठ गई। तत्पश्चात् वह उससे बोली:

"क्या तुम मुझे छोड़ जाओगे? बोलो....क्या अब मैं तुम्हें अच्छी नहीं लगती?" और इसके पहिले कि ईनिअस उत्तर दे वह रोने लगी। उसके नेत्रों से आँसू झरने लगे। वह हिचकियाँ लेने लगी। फिर बोली:

"मेरे आँसुओं की ओर देखो मेरे प्रियतम! इस हाथ को देखो जो मन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम्हें दिया था।....क्या तुम सचमुच ही मुझे ठोकर मार कर चले जाओगे.. ..? यदि कभी मैं तुम्हारे लायक थी, और कभी भी मेरी कोई भी वस्तु तुम्हें पसंद थी तो मुझे ऐसा तड़पती छोड़कर न जाओ...:मैं तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकूँगी।"

ईनिअस पत्थर की मूर्ति बना बैठा था। मन ही मन वह ज्यूपिटर से प्रार्थना कर रहा था कि वह मर्करी को एक बार फिर वहाँ भेजे जो अब की बार जाने से मना कर दे। परन्तु देवता इतना सरल और दयालु कहाँ था? डीडो रोते रोते फिर बोली:

"तुम बोलते क्यों नहीं प्रियतम! क्या तुम वह मधुर रातें भूल गये जब हमने मिलकर यौवन का स्रोत अजस्र धाराओं में बहाया था? तुमने ही तो कई बार मुझसे कहा था कि डीडो तुम्हारी जैसी सुंदरी को पाकर मैं धन्य हो गया हूँ। फिर भला अब क्या हो गया है जो मुझे तड़पती मछली की भाँति छोड़कर जा रहे हो? देखो प्रियतम! अभी मेरा यौवन उद्दीप्त है। अभी वीनस का दिया हुआ मेरा रूप अकलंक है। मुझे छोड़कर कहीं मत जाओ.."

ईनिअस ने अब कठोर हृदय बनाकर अपने को अत्यधिक संयम में रखते हुए उत्तर दिया:

"हे सुंदरी ऐसा न कहो। तुम्हारे साथ रहकर निश्चय ही मैंने अनंत सुख पाया है। मैं अब इस बात से इंकार नहीं करता। तुम्हें इस बात का भी शक नहीं होना चाहिये कि तुम्हारा सौंदर्य कम हो गया है। अतएव मैं तुमसे ऊब गया हूँ। नहीं, ऐसा कदापि नहीं है। तुम्हारे यौवन में अब भी मादक ऊष्मा है जिसने मुझे इतना मदहोश कर दिया है कि अब मैं देवताओं द्वारा निर्धारित कार्य करने में भी हिचकिचा रहा हूँ। मैंने तुम्हें हमेशा प्यार किया है और अब भी करता हूँ। परन्तु मैं मजबूर हूँ। मुझे जाना ही होगा। देवताओं के राजा ज्यूपिटर की आज्ञा का उल्लंघन मैं नहीं कर सकता। मुझे हैस्पीरिया जाकर एक नये राज्य की स्थापना करनी है। ऐसा ही विधि में लिखा है जो तुम्हारे और मेरे प्रयत्न से बदला नहीं जा सकता है....मुझे जाना ही होगा...."

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"नहीं, तुम नहीं जा सकते," रोते-रोते रानी डीडो ने आर्त्त स्वर से चिल्लाकर कहा।

"तुम भूलती हो," ईनिअस अब सँभल कर बोला :

"तुम भूलती हो जभी ऐसा कहती हो। तुम्हारा और मेरा विधिपूर्वक विवाह नहीं हुआ है....मैं अब तक तुम्हारा प्रेमी बन कर ही यहाँ रहा हूँ। मैंने तुम्हारे शरीर को भोगा है, तुमने मेरे शरीर को भोगा है। इसके अतिरिक्त वैवाहिक संबंध हमारे बीच स्थापित नहीं हुए हैं जो तुम्हारा मुझ पर या मेरा तुम पर कोई अधिकार हो गया हो। हमें पूरी स्वतन्त्रता है कि चाहे जब एक दूसरे को छोड़ दें। तुम अब तक मेरी रखैल थीं और अब मैं देवताओं की आज्ञा से उन्हीं के कार्य के हेतु तुम्हारा परित्याग करता हूँ....अब रोओ मत क्योंकि यह आँसू हमारे बिछुड़ने को और कठिन बनाते हैं....इससे अच्छा है कि तुम मुझे सहर्ष विदा दो।"

रानी डीडो ने मन मसोस कर उसकी बातें सुनीं। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि ईनिअस जो कल तक उसे इतना चाहता था आज एक ही दिन में इतना कैसे बदल गया। और एकाएक उसे अब उस पर क्रोध हो आया। क्रुद्ध सर्पिणी की भाँति वह अब फुफकार उठी। वह बोली :

"धोखेबाज़, तुम सचमुच ही निर्दयी हो ! तुम भिखारी की भाँति मेरे राज्य में आये थे मैंने तुम्हें अपनाया। तुम भूखे थे और मैंने तुम्हें भोजन दिया। तुम्हारे पास अपना कुछ भी नहीं था और मैंने तुम्हें....तुम्हें अपना राज्य, अपना सौभाग्य....अपना शरीर सब कुछ दे दिया....और अब...." वह और अधिक न कह सकी। आँसुओं से तथा दुख से उसका अंठ अवरुद्ध हो गया। वह फफक कर रो उठी और वहाँ से भाग गई। एकांत में जाकर तकिये में मुँह छिपाकर वह रोने लगी। उसका हृदय फटा जा रहा था। उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया था। ईनिअस पत्थर की मूर्ति बना धीरे-धीरे परन्तु दृढ़ चरणों से समुद्र तीर की ओर चल पड़ा।

उसी रात ट्रोजन्स कार्थेज छोड़ कर चल दिये। ईनिअस कठोर हो गया था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसे देखकर अब ऐसा लगता था जैसे यह मनुष्य मनुष्य नहीं वरन पत्थर की मूर्ति है जिसका हृदय भी कदाचित् पत्थर ही का है। न वह हँसता था न वह बोलता ही था। रह-रहकर उसके हृदय की ज्वाला उष्ण श्वास बनकर उसके मुँह से आह बनकर निकल जाती थी। वह मस्तूल के पास खड़ा था। उसका ऐसा रूप हो रहा था कि उसके साथी भी उसे देखकर डर जाते थे। वह कार्थेज के छोड़े हुए समुद्र तीर की ओर देख रहा था। उसने दूर से देखा तीर पर उल्काएँ जल रही हैं और उनके बीच एक बड़ी अग्नि जल रही है। वह समझ नहीं सका वह क्या था।

रानी डीडो अगर चाहती तो ट्रोजन्स कार्थेज छोड़कर नहीं जा सकते थे। उसकी केवल एक आज्ञा से वह सभी बंदी बना लिये जाते। स्वयं ईनिअस बंदी रहता और तब डीडो उससे अधिकारपूर्वक वासनामय केलि कर सकती थी। परन्तु उसने कुछ भी नहीं कहा। वह चुप रही। परन्तु वह उसके बिना न जी सकी। उसने आत्महत्या कर ली। वह सुंदर काया नष्ट हो गई। सारा कार्थेज रोने लगा। उस समय जो बड़ी अग्नि दूर से ईनिअस ने देखी थी वह और कुछ नहीं—रानी डीडो की चिता थी जिसकी लपटें आकाश तक उठ रही थीं। उसे अपने जीवन में कभी इस बात का पता नहीं लगा कि उसके प्रेम में रानी डीडो उसी पर मर मिटी थी।

× × ×

घनघोर अंधकार छाया हुआ था। निःशब्द समुद्र के अथाह जल पर ईनिअस का बेड़ा चला जा रहा था। अनुकूल हवाओं के साथ पाल ताने मल्लाह जहाजों को पश्चिम दिशा की ओर ले जा रहे थे। उनके पतवारों से जल छपाक-छपाक शब्द करता हुआ उस प्रशांत वातावरण की नीरवता को तोड़ रहा था। ईनिअस आज नहीं सो सका। वह अब मस्तूल से हटकर अपने कक्ष में आ गया। अब भी वह गहरी चिंता में डूब रहा था। रह-रहकर उसे डीडो का वह रोता हुआ मुख दिखाई देने लगता। डीडो ने सचमुच उसे बहुत प्यार किया था। सेनानायक अब बाहर गाना गाने लगे थे। उनका वज्रघोष उस समय मल्लाहों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को नई स्फूर्ति प्रदान कर रहा था। उसके उठते हुए समवेत स्वर से ताल देते हुए रक्त धमनियों में बजने लगता और ऐसा प्रतीत होता मानो यह मल्लाह सारे संसार की शक्ति को चुनौती देते हुए आगे बढ़ रहे हैं। परन्तु ईनिअस पर उस सब का कुछ भी असर नहीं था। वह वैसे ही विचार तंद्रा में खोया हुआ पड़ा रहा।

× × ×

कार्थेज से हैस्पीरिया (इटली) के पश्चिमी तट तक की यात्रा निर्विघ्न समाप्त हो गई। भयानक समुद्र को पार करते हुए वे चले जा रहे थे। पहिली यात्रा के मुकाबले में यह यात्रा कहीं सुगम थी। जब वे यात्रा प्रायः समाप्त करने ही को थे कि ईनिअस का सबसे अधिक चहेता मल्लाह पैलीनूरस चक्कर खाकर समुद्र में गिर गया। वह अचानक गिर गया था जिससे अपने आपको सँभाल भी न सका और गिरते-गिरते मर गया। ईनिअस को उसके मरने का बहुत दुख था।

इटली पहुँचते ही वह अपने अन्य साथियों को समुद्र तट ही पर छोड़कर केवल ऐकाटीस को लेकर क्यूमी नामक स्थान की एक सिबिल (सुंदरी) को ढूँढ़ने निकला। इसके बारे में उसे पहिले ही ज्योतिषी हैलेनस ने बता रखा था कि वह स्त्री बड़ी बुद्धिमान तथा ज्ञान की भंडार थी जो ज्योतिष विद्या में पारंगत थी। उसने उसे यह भी कहा था कि इटली पहुँचकर सर्वप्रथम इसी सिबिल से मिलकर उसे अपना कार्यक्रम निश्चित करना चाहिये। एक घने जंगल में एक पथरीली और अँधेरी गुफा में उसे सिबिल मिली जो चिंतामग्न बैठी थी। जब ईनिअस वहाँ पहुँचा तो उसे देखकर वह बोली :

"ट्रौय से आने वाले तुम ही तो हो ? मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा में यहाँ बैठी थी।" ईनिअस को उसकी बातें सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह उसकी ओर देखने लगा। सिबिल ने फिर कहा :

"ईनिअस तुझे गहन विद्या सीखनी पड़ेगी। वह तुझे इस संसार में कहीं नहीं प्राप्त होगी। तुझे पाताललोक जाकर अपने योग्य पिता ऐन्कीसिस से मिलना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होगा। प्रलय के समय वह मर गया था। उसकी बुद्धि के सदृश इस संसार में किसी और की नहीं है. . . .तेरे साथ मैं भी चलूँगी। परन्तु याद रख वह बहुत भयानक स्थान है. . . .वहाँ एक बार जाकर कोई वापिस नहीं आ सकता। वह विकराल मृत-आत्माओं से ठसाठस भरी हुई है। उस अँधेरे स्थान के द्वार रात-दिन खुले रहते हैं जिसमें होकर मृत आत्माओं के झुंड के झुंड निरंतर अंदर जाते रहते हैं। केवल मरकर ही वहाँ जाया जा सकता है। जीवितावस्था में तू केवल मुझको साथ लेकर ही वहाँ जा सकेगा परन्तु साथ ही एक सुनहले पेड़ की शाख भी तुझे लेनी पड़ेगी। जा, और जंगल में ढूँढ़कर सुनहले पेड़ की एक डाली तोड़कर मेरे पास ले आ।"

ईनिअस अब अपने विश्वस्त मित्र ऐकाटीस को साथ लेकर चल पड़ा। पहिले तो उसे आशा थी कि पास ही ऐसा कोई पेड़ मिल जायगा परन्तु जब वे उस घने जंगल के ऊबड़-खाबड़ कँटीले मार्ग में होते हुए काफ़ी दूर चले गये तो उन्हें निराशा ने घेर लिया। कहीं कोई सुनहला पेड़ दिखाई नहीं देता था। इसी प्रकार जब कई दिन बीत गये तो उन्हें उस पेड़ के मिलने की अब कोई आशा न रही। ईनिअस उदास हो गया। उसने ऐकाटीस से कहा :

"हे मित्र, अब जीवन व्यर्थ है क्योंकि जो वस्तु उस सिबिल ने मँगाई है वह तो कहीं मिलती नहीं फिर भला क्योंकर ज्ञान हमें प्राप्त हो सकेगा—इससे अच्छा तो यही है कि आत्महत्या कर ली जाय तो एक ही बार में तमाम चितायें मिट जायँ।"

परन्तु ऐकाटीस ने ऐसा करने से रोका। वह बोला :

"हे ईनिअस ! आत्महत्या वीरों के लिये शोभा नहीं देती, हमारा कार्य प्रयत्न करना है, यदि भाग्य में होगा तो वह पेड़ हमें मिल ही जायगा। आओ अब हम दक्षिण की ओर चलें।"

ईनिअस उसके पीछे-पीछे चलने लगा। थोड़ी ही दूर जाने के उपरांत उन्हें आकाश में उड़ती हुई दो बतकें दिखाई दीं। वह धीरे-धीरे पर फैला कर उड़ रही थीं; ईनिअस ने पहिचाना कि वह वीनस की अपनी बतकें थीं, वे लोग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी उसी प्रकार दुख और यातनाओं से पीड़ित थीं। भीड़ प्रतिक्षण बढ़ती ही जाती थी पर सिबिल और ईनिअस को उन छायाओं से कोई रुकावट नहीं आती थी। उसी समय ईनिअस ने देखा कि एक लंबी दाढ़ीवाला उदास बुड्ढा मल्लाह एक नाव को नदी पर रखे खेकर इस किनारे लाया। उसको देखते ही वह मौन छायाएँ उसकी नाव में चढ़ने को लपकीं। कई तो उस वृद्ध की मिन्नतें इशारों द्वारा कर रही थीं कि वह उन्हें नाव पर चढ़ाकर उस पार उतार दें। परन्तु वह मल्लाह उन सब को पतवार मारकर भगाने लगा। छायाएँ डरकर पीछे हट जाती थीं। ईनिअस ने विस्मय से देखा वह बुड्ढा तब अपनी मर्जी से जिसे वह चाहता उसी को पकड़ कर नाव में बिठा लेता था। सिबिल ने तब उससे कहा :

"यह नदी बड़ी गहरी और चौड़ी है जो बिना उस नाव में बैठे पार नहीं की जा सकती। वास्तव में यहाँ दो नदियों का संगम है। दुख के प्रभाव से रुदन करने वाली नदी को कैटस यहीं एचेरौन नामक दूसरी नदी से मिलती है। यह बुड्ढा चारन है और इसकी इच्छा के विरुद्ध कोई कुछ भी नहीं कर सकता। यह केवल उन आत्माओं को पार उतारता है जिनके मृत शरीर की दाह क्रिया विधिपूर्वक हुई हो। अन्य आत्माओं को यह पतवार से मारकर यहीं छोड़ जाता है जो पूरे सौ वर्षो तक यहीं बिना आराम घूमती रहती हैं। उन्हें न बैठकर विश्राम करने का स्थान है और न लेटने का। निरंतर घूमते ही रहना पड़ता है। इन दुखी आत्माओं को निरंतर यातना भोगनी पड़ती है। यह यातना सारे संसार में सबसे बड़ी यातना है परन्तु यहाँ इन पर कोई दया नहीं करता। जब पूरे सौ वर्षों की अवधि पूरी हो जाती है तो चाबुक की मार से यह घेर कर परलीफर चारन द्वारा ले जाई जाती हैं जहाँ पहुँच कर इन्हें और भी घोर यातनायें सहनी पड़ती हैं. . . .आओ अब हम चारन से उस पार उतारने के लिये कहें।"

जब ये लोग चारन के पास पहुँचे तो उसने इन्हें पार ले जाने से साफ इंकार कर दिया। वह बोला :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"जीवितावस्था में कोई भी नदी के पार नहीं जा सकता, मैं मजबूर हूँ।" परन्तु जब ईनिअस ने अपने पास की वह सुनहली डाली दिखाई तो वह रज़ामंद हो गया। उसने उन्हें पार उतार दिया। ईनियस ने यह बात खास तौर से देखी कि चारन की नाव काले जल की उस विस्तृत सतह पर तीर की भाँति पार हो गई थी और चारन ने तनिक भी कष्ट खेने में नहीं लगाया था।

उस पार उतरते ही उन्हें वही अंधकारपूर्ण कगारा मिला जो बहुत नीचा था। सिबिल उसे लेकर ऊपर चढ़ी और जब वे हेड्स के विशाल द्वार के पास पहुँचे तो तीन सिरवाला भयंकर कुत्ता सैरिब्रस उन्हें देखकर घुर्राया। परन्तु सिबिल ने झट उसके सामने केक (खाने का मीठा पदार्थ) का एक टुकड़ा फेंक दिया। उसे मालूम था कि उसको चुप कराने का यही उपाय था क्योंकि इसी प्रकार बहुत पहिले साईके ने भी हेड्स के अंदर प्रवेश करते समय सैरिब्रस को केक खिलाकर चुप कर दिया था। अब उनका सामने का मार्ग बिल्कुल साफ़ था। वह हेड्स के साम्राज्य में घुस गये। थोड़ी ही दूर जाने पर वह उस पवित्र न्यायालय के सामने जा पहुँचे जहाँ यूरोपा का पुत्र माईनोस बैठा मृत आत्माओं का न्याय कर रहा था। उसी स्थान पर वह उन्हें दंड और यातनाएँ देने की आज्ञा प्रदान करता था। सिबिल ईनिअस को लेकर तेजी से आगे बढ़ गई क्योंकि उन फैसलों को सुनने की क्षमता उन दोनों ही में नहीं थी। आगे चलकर वह एक अत्यंत सुंदर स्थान में पहुँचे जहाँ जगह-जगह घनी झाड़ियाँ और मेंहदी की कतारें उग रही थीं; यह स्थान सुंदर तो था परन्तु था मातम मनाने का स्थान जहाँ बैठकर बिरही अपने अप्राप्त प्रेमी अथवा प्रेमिका के लिये रोया करते थे। जो स्त्री अथवा पुरुष प्रेम में आत्महत्या कर लेते थे उन्हीं के लिये यह स्थान नियत था। ईनिअस ने साश्चर्य एक झाड़ी की छाँह में डीडो को बैठी देखा जो देखने में बहुत उदास प्रतीत होती थी। वह उसे देखकर रो पड़ा और उसके हृदय में पुराने प्रेम की अग्नि तीव्र गति से भड़क उठी। वह रोते-रोते बोला: "हे डीडो! हे सुंदरी! क्या मैं ही तेरी मृत्यु का कारण था?....मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि मैंने अपनी इच्छा से या जानबूझ कर तुम्हें कभी धोखा नहीं दिया.... मुझे तो मजबूरी में तुम्हें छोड़ना पड़ा।" परन्तु उसकी बातों का डीडो पर कोई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

असर नहीं हुआ। न तो उसने उसे उत्तर ही दिया और न उसने मुड़कर अथवा आँख उठाकर उसे देखा ही। वह जैसी वैठी थी वैसी ही बैठी रही। उसे मानो ईनिअस के वहाँ होने न होने से कोई सरोकार ही न था। ईनिअस की उस समय की हालत देखकर पत्थर भी पिघल जाते परन्तु डीडो पर कोई असर नहीं हुआ। ईनिअस तब तक रोता रहा जब तक वह उसे दिखाई देती रही। परन्तु सिविल उसे लेकर शीघ्र ही आगे बढ़ गई।

काफी देर तक वह दोनों चलते रहे। आखिरकार वह एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ से सड़क एक न रही बल्कि जहाँ से दो मार्ग बँट गये थे। एक मार्ग बाँयें और एक दाहिने की ओर जाता था। बाँई ओर से डरावनी आवाज़ें आ रही थीं; कभी कोई आह भरता था तो कभी कोड़े से पीटने का भयानक शब्द सुनाई देने लगता था। हथकड़ी, बेड़ी और जंजीरें भी रह-रहकर खड़खड़ा उठती थीं; ऐसा मालूम होता था कि न जाने किस गरीब के साथ कितना अन्याय हो रहा है। ईनिअस के रोंगटे खड़े हो गये और वह वहीं खड़ा का खड़ा रहा। उसी समय सिविल ने कहा:

"हे ईनिअस! अब जब तू अपने अभीष्ट के इतने पास आ गया है तो क्यों भय से पीछे हटना चाह रहा है। साहस से आगे बढ़....यह जो बाँई ओर का मार्ग है यह उस लोक को जाता है जहाँ कठोर राडैमैन्थस दुष्टों को दंड देता है। उस लोक में उसी का अखंड राज्य है। वह भी यूरोपा का पुत्र है। उस लोक में उसी का अखंड राज्य है। उधर हम लोग नहीं जायँगे....परन्तु दाहिनी ओर हरी घास से आच्छादित सुंदर साम्राज्य है। वहाँ सुख के सभी प्रसाधन विद्यमान हैं। वहाँ सुंदरतम फूलों की भाड़ियाँ हैं और सूर्य का प्रकाश हल्का नीला रंग बनकर चारों ओर प्रकाश फैलाता है। वहाँ शांति और सुख चारों ओर स्थापित है। उसी जगह तेरा पिता ऐकीसिस रहता है और अपने ज्ञान के बल से सारे लोकों का कल्याण करता रहता है....चलो हम वहीं चलें यही वह स्थान है जहाँ संसार के प्रसिद्ध कवि, पुजारी, वीर तथा नेक आदमियों की आत्माएँ रहती हैं...."

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इतना कहकर दाहिनी ओर जाने वाले रास्ते पर सिबिल चल पड़ी। उसके पीछे-पीछे ईनिअस साहस बाँधे आगे बढ़ा : थोड़ी ही दूर जाने के बाद उन्हें सुंदर उपवन और विस्तृत घास के मैदान नज़र आने लगे।

मनोहारी झीलों के किनारे सघन और हरियाली भूमि पर स्थान-स्थान पर योद्धा अपने अस्त्र-शस्त्रों की चमक से वातावरण को जोशीला बना रहे थे। पुजारियों की धर्म-रत पवित्र आत्माएँ संसार के कल्याण के हेतु चिंतातुर प्रतीत हो रही थीं। सारे लोक में एक विचित्र शांति का साम्राज्य था जिसे देखकर ईनिअस के हृदय में उत्साह हिलोरें लेने लगा। वह यहाँ आकर डीडो को बिल्कुल भूल गया। एक सघन वृक्ष की छाया में उसे अपना पिता ऐंकीसिस मिला जिसने उसे दूर से ही देखकर उसका भव्य स्वागत किया। वह हर्षातिरेक हो उठा और आनंदाश्रु उसके नेत्रों में छलक आये। ईनिअस भी उसे देखकर रोने लगा। मृत और जीवित मनुष्यों का यह नवीन प्रेम था जिसे देखकर सभी ने आश्चर्य किया। इसी प्रेम ने जीवित पुत्र को इतना अधिक प्रेरित किया था कि वह अपने मृत पिता से मिलने इस दुर्लभ स्थान में भी चला आया था।

ऐंकीसिस उसे अपने साथ लिये नामक नदी के तट पर ले गया। यह वह नदी थी जिसका जल पी लेने के उपरांत आत्मा अपने छोड़े हुए शरीर में रहकर बिताये जीवन को बिल्कुल भूल जाती थी। मनुष्य की मृत्यु के उपरांत पुनर्जन्म लेने से पहिले उसे उस जीवन को भूलने के लिये इसी नदी में से दो चुल्लू जल पीना पड़ता था। ऐंकीसिस ने ईनिअस को वह आत्माएँ भी दिखाईं जो आगे चलकर उसकी वंशज होने वाली थीं। ईनिअस ने देखा कि वे होने वाले वंशज बड़े प्रतापी और तेजस्वी थे जो एक दिन पराक्रमी रोमन्स के नाम से जगत् विख्यात शासक बनने वाले थे। वह मन ही मन उन्हें देखकर हर्षित हुआ। परन्तु ऐंकीसिस से उसकी प्रसन्नता छिपी न रही। वह बोला :

"इनसे प्रेम अथवा लगाव अभी से व्यर्थ है क्योंकि यह अभी तो अपने पूर्व जीवन को भूले नहीं हैं। जब समय आयेगा तब यह इस जल की घूंट पीयेंगे और तभी यह तुम्हारे वंशज बनकर संसार पर राज्य करेंगे. . . .अभी से कुछ

१५

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं. . . .” और उसने ऐसा हाथ हिलाया जैसे अभी से उन आत्माओं को देखने में भी समय नष्ट करना व्यर्थ था। परन्तु ईनिअस उन आत्माओं से बहुत प्रभावित था। वह ऐंकीसिस की बातें सुनकर बड़ा हताश हुआ और बोला :

"परन्तु हे पिता ! मुझे यह तो बतलाओ कि इनमें से कौन क्या बनेगा और कौन पहले और कौन पीछे जन्म लेगा ?"

ऐंकीसिस ने तब व्यौरेवार उन सब के बारे में उसे समझाया। वह बोला :

"यह संसार प्रसिद्ध रोमन्स बनेंगे जो बहुत यशस्वी होंगे। यह ऐसे-ऐसे महान् कार्य करेंगे कि संसार इन्हें देखकर दाँतों तले उँगली दबा लेगा. . . . यह सचमुच महान् बनेंगे. . . .हे पुत्र ! तू इनकी चिंता न कर।"

तत्पश्चात् उसने ईनिअस को हैस्पीरिया में बसने और राज्य स्थापित करने का उपाय भी बताया।

"तेरे ऊपर महान् संकट पड़ेगा परन्तु तुझे उन सबसे बचना पड़ेगा। उस समय मैं तेरी सहायता तो करूँगा ही परन्तु तुझे भी वीरतापूर्वक अपने साहस का परिचय देना होगा. . . ."

ईनिअस अब प्रसन्न हो गया था। उसने सचमुच ही अपने पिता से मिलकर उस अनंत ज्ञान की प्राप्ति की थी जो वह अन्यत्र नहीं पा सकता था। उसने सिबिल को अनेकानेक धन्यवाद दिया और वह वापिस चलने को उद्यत हुआ। अब वह अपने पिता से बिदा लेकर वापस चला। दोनों ही यह बखूबी जानते थे कि यह बिदाई कितनी क्षणिक थी। आखिर मरकर ईनिअस को वहीं आना था।

वापस आकर सिबिल अपनी उस गुफा में चली गई और ईनिअस अपने साथियों के पास अपने जहाज पर आ गया था। दूसरे ही दिन जहाज को लेकर वह इटली के उस स्थान में आ गये जहाँ से उन्हें राज्य की नींव डालनी थी।

× × ×

जूनो अब भी इन ट्रोजन्स के पीछे लगी हुई थी। उसका बैरभाव कम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं हुआ था वह तो किसी न किसी भाँति उनका नाश देखना चाहती थी। इटली में जहाँ ईनिअस इत्यादि आनंदपूर्वक रह सकते थे, वहीं जूनो के कारण कठिनतम आपत्तियों का सामना करना पड़ा। वह इतनी अधिक भयानक बदला लेने वाली देवी थी कि ट्रौय के महायुद्ध के उपरांत भी उसका हृदय शांत नहीं हुआ। अब फिर उसने युद्ध छिड़वा दिया।

लैटिनम नगर का राजा लैटिनस सैटर्न (मंगल) का वंशज था। एक बार उसके पिता फौनस की आत्मा ने आकर उससे कहा कि वह अपनी पुत्री का विवाह स्वदेश में न करके तब तक प्रतीक्षा करे जब तक कि कोई विदेशी उसके राज्य में आकर शरण न माँगे। उसने यह भी कहा कि वही विदेशी उसकी पुत्री को यदि ब्याहेगा तो उनसे जो वंशज चलेगा वही सारे संसार पर राज्य करेगा। लैटिनस तभी से किसी परदेशी वीर की प्रतीक्षा में दिन बिता रहा था।

जब ईनिअस अपने साथियों को लेकर इटली के पश्चिमी किनारे पर स्थित लैटिनम राज्य में उतरा तो उसने राजा लैटिनस के दरबार में दूतों द्वारा संवाद भेजा और वहाँ रहने की आज्ञा माँगी। चतुर दूत जब दरबार में पहुँचे उस समय लैटिनस शेर के बच्चों को खेल खिला रहा था। दूतों ने जाकर उसकी वंदना की और बोले :

"हे राजा! जिस प्रकार तू इन शेर के बच्चों को पालता है उसी भाँति हम नवागंतुक नाविकों की भी रक्षा कर....हम ट्रोजन्स हैं जो अपने मालिक ईनिअस के साथ ट्रौय के नाश होते समय जहाज़ में बैठ कर चले आये थे। हमारा देश ध्वंस हो चुका है। अब संसार में हमारा कोई नहीं है....हम तेरे राज्य में बसना चाहते हैं और मनुष्यों के सर्वथा मान्य अधिकार हवा, पानी और भोजन को स्वच्छन्दतापूर्वक भोगने की आज्ञा लेने तेरे पास आये हैं। हे राजा हम पर दया कर कि हम पीड़ित लोग भी तेरे राज्य में शरण प्राप्त कर सकें।"

लैटिनस यह सुनते ही हर्षातिरेक हो उठा। उस परदेशी की बात सुनते ही उसे निश्चय हो गया कि हो न हो यही वह प्रतापी व्यक्ति है जिसकी उसने इतने दिनों तक प्रतीक्षा की है। उसने उन दूतों को तुरंत अपने राज्य में बसने की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आज्ञा दे दी। तत्पश्चात् उसने अपने दूतों द्वारा ईनिअस को यह संवाद भेजा :

"राजा लैटिनस तुम्हारा मित्र है। वह जीते जी तुम्हारा कोई अहित नहीं होने देगा....मेरी पुत्री का विवाह स्वर्ग के देवताओं की आज्ञानुसार अभी तक परदेशी वीर के आगमन की प्रतीक्षा में रुका हुआ है ....मेरा विचार है कि हे ट्रोजन ! तुम्हीं वह वीर हो जो उससे विवाह करोगे। अतएव आओ, शुभ कार्य में देरी मत करो क्योंकि तुम्हारे ही कुल में जन्म लेने वाले वीर, सारे संसार पर राज्य करेंगे।"

ईनिअस ने सुना और वह आगे आने वाले सुख की कल्पना में ही विभोर हो गया। उसे उस समय यह तनिक भी नहीं मालूम था कि जूनो ने उसके विरुद्ध कितने भयंकर षडयंत्र रच दिये थे।

ज्यूपिटर की स्त्री ने हेड्स की कोप करने वाली एक देवी एलसैंटो को बुलाकर आज्ञा दी कि वह लैटिनम में भयानक युद्ध छिड़वा दे। एलसैंटो ने वह क्रूर आज्ञा सहर्ष स्वीकार कर ली और छूटते ही पहिले राजा लैटिनस की पत्नी अमाता को बहका दिया। जब यह काम हो गया और रानी अमाता अपने पति से उस विवाह संबंध को तोड़ने के लिये झगड़ने लग गई तो एलसैंटो सीधी उड़ कर रुटुलिअन राजा टर्नस के पास पहुँची और उसे उसने युद्ध के लिये उकसाया। यह राजा टर्नस बहुत दिनों से लैटिनस की सुंदरी पुत्री लैवीनिआ का प्रेमी था। वह यह बात स्वप्न में भी कभी नहीं सहन कर सकता था कि उसके रहते लैवीनिआ किसी और की स्त्री बना दी जाय। उसने जो एलसैंटो की जुबानी ईनिअस के साथ अपनी प्रिया का संबंध निश्चित होना सुना तो वह क्रोध से जलने लगा। वह राजा लैटिनस से अत्यंत क्रुद्ध हुआ और उसने उसी समय बलपूर्वक लैवीनिआ को राजा लैटिनस से छीन लाने का निश्चय कर लिया। उसने तुरंत अपनी सेना को कूच की आज्ञा दे डाली और वह युद्ध के लिये तैयार हो गया। वह उस परदेशी ईनिअस को भी मार डालना चाहता था जिससे वह उस सुंदरी के साथ निष्कंटक होकर भोग कर सके।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब एलसैंटो ने दोनों जगह आग फूँककर लड़ाई शुरू कराने की सोची। अबकी जो काम उसने किया वह निश्चय ही बहुत घातक था।

एक समृद्ध लैटिन किसान के पास एक बहुत सुंदर हिरन था। वह इतना सीधा और पालतू था कि सभी लोग उसे बहुत चाहते थे। वह दिन भर स्वतन्त्रता-पूर्वक चरता फिरता और सायंकाल अपने घर वापस आ जाता था। सभी आस-पास के किसान उसकी रक्षा करते थे और यही कारण था कि उस पर हाथ उठाने का साहस किसी को नहीं होता था। उस लैटिन किसान की एक जवान बेटी थी जो उस हिरन को बहुत ही अधिक चाहती थी। हिरन भी उससे इतना हिला हुआ था कि जब वह उसे प्यार करती, उसकी पीठ पर के सुनहले बाल काढ़ती और उसके सींगों में सुंदर सुगंधित पुष्प गूँथती तो वह उसके हाथ और मुँह चाटा करता था। यदि कभी उसके कोई पीड़ा हो जाती तो वह लड़की उसे अच्छा करने, उसकी पीड़ा मिटाने के प्रयत्न में रात-दिन एक कर देती थी। पहिले हिरन को दूध पिलाती और बाद में खाना खाती थी। उस लड़की की हालत ऐसी थी कि वह बिना उस हिरन के शायद जीवित भी न रहती। आसपास के सभी किसान इस बात को जानते थे और इसी कारण उस सुंदर हिरन को सभी चाहते थे।

दुष्टा एल्सैंटो ने क्या किया कि ईनिअस के पुत्र एस्कैनिअस और उसके शिकारी कुत्तों को उसी हिरन के पीछे लगा दिया। एस्कैनिअस जो अब तक जवान हो चुका था उस दिन जंगल में शिकार खेलने निकला। उसके साथ बड़े-बड़े खतरनाक शिकारी कुत्ते थे। हिरन उन्हें दूर चरता दिखाई दिया। एलसैंटो ने एस्कैनिअस के हृदय में ऐसी भावना उत्पन्न की कि वह धनुष बाण लिये उसी की ओर लपका। बस भागदौड़ प्रारंभ हो गई। हिरन चौकड़ियाँ भरता हुआ भागने लगा। कुत्ते पीछे भागे। बड़ी देर तक यह भाग-दौड़ होती रही परन्तु बाद में उन कुत्तों ने उसे एक ओर से खदेड़ा। हिरन अब सीधा दाहिनी ओर भागा। अब वह एस्कैनिअस के सामने से भागा। वह वायुवेग से प्राणों को लेकर भाग रहा था। इसी समय एस्कैनिअस ने धनुष पर बाण चढ़ाया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और प्रत्यंचा को कान तक खींच कर छोड़ दिया। तीर सीधा हिरन के हृदय को फाड़कर अंदर घुस गया। वह गिरा और लहूलुहान हो गया। परन्तु फिर उठा और फिर गिर गया। अब एस्कैनिअस छुरा लेकर उसकी ओर बढ़ा, यह देखकर हिरन अपनी सारी शक्ति लगाकर फिर उठा और खून टपकाता घर की ओर भाग चला। एस्कैनिअस जो उसे मार कर धीरे-धीरे आ रहा था अब चौंका। परन्तु उसकी गफलत और ढील से हिरन अब काफ़ी दूर जा चुका था। उसने दूसरा तीर उसकी ओर छोड़ा परन्तु वह उसकी बगल से होकर निकल गया, लगा नहीं। अब वह खिसियाना सा हो गया और उसके पीछे भागने लगा।

हिरन उसी हालत में अपने घर पहुँचा। उसको जो लोगों ने लहूलुहान देखा तो सभी की आँखों में खून उतर आया। उसी समय वह लड़की घर के अंदर से आई और इस अपने प्रिय हिरन को मरणासन्न देखकर पछाड़ खाकर गिर गई और रोने लगी। हिरन ने दो-एक बार पैर पटके और वहीं गिर कर उसी समय मर गया। लड़की उसके शरीर से चिपट कर रोने लगी। वह आर्त्तनाद कर रही थी और लैटिन किसानों को धिक्कार रही थी जो उसके प्रिय पशु को नहीं बचा सके थे। सभी किसान किंकर्त्तव्यविमूढ़ावस्था को प्राप्त होकर क्रोध से जल रहे थे। यदि उन्हें वह आततायी उसी समय मिल जाता तो वह उसके वहीं टुकड़े-टुकड़े कर डालते।

उसी समय एलसैटो एक साधारण स्त्री का रूप धरकर वहाँ आई और बोली :

"लैटिन किसानों ! तुम्हें डूब कर मर जाना चाहिये क्योंकि तुम्हारा जीवन ही व्यर्थ है। तुम्हारे सामने ही ट्रोजन्स ने तुम्हारे हिरन को मार डाला और तुम कापुरुषों की भाँति हाथ पर हाथ धरे बैठे हो !"

समाचार दावानल की भाँति सारे लैटिनस में फैल गया। किसान क्षोभ और क्रोध से पागल हो रहे थे। एस्कैनिअस जब हिरन को न पा सका तो वापस लौटकर अपने लोगों में आ गया था। ट्रोजन्स सभी उसे शिकार में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

असफल होने के कारण छेड़ रहे थे। उनके व्यंग को सहन न कर सकने के कारण ईनिअस का पुत्र तलवार निकाल कर क्रोधपूर्वक अबकी बार बड़ा शिकार कर लाने का दावा कर रहा था। एलसैंटो ने तुरंत यह समाचार फैला दिया कि अब ट्रोजन्स लैटिन किसानों पर आक्रमण करने का षड्यंत्र कर रहे हैं। आग तो धधक ही रही थी अब इस समाचार ने उस पर घी का काम किया। क्रुद्ध किसानों ने और सोचना या आगा-पीछा देखना बिल्कुल छोड़ दिया। वह भूखे भेड़ियों की भाँति ट्रोजन्स पर टूट पड़े और युद्ध प्रारंभ हो गया। आम चुनौती थी। जहाँ किसानों को ट्रोजन दिखाई देता वहीं भयानक युद्ध शुरू हो जाता था।

जब यह युद्ध फैल गया और दोनों ओर से योद्धा कट-कट कर गिरने लगे तो समाचार राजा लैटिनस के पास पहुँचा। सुनकर वह युद्ध रोकने की आज्ञा देने को उठा परन्तु उसी समय दूसरा समाचार उसे मिला। यह और भी भया-नक और आपत्तिजनक विषय था। राजा टर्नस अपनी सेना लेकर चढ़ आया था। राजा लैटिनस चुप हो गया। उस नाजुक समय में उसने गृहकलह को और भी खतरनाक समझ कर चुप रहना ही अच्छा समझा। उसी समय क्रुद्ध सर्पिणी की भाँति फुफकारती उसकी रानी अमाता वहाँ आ पहुँची। वह चिल्लाई : "परदेशियों की लोथों को नोच-नोच कर कौओं को खिला दो।"

राजा ने सुना और अवसर अनुपयुक्त समझ कर चुप रहने में कुशल समझी। वह अपने महल में आराम करने चला गया और ट्रोजन्स को उसने उनके भाग्य पर छोड़ दिया। उसने सोच लिया कि यदि वही वह परदेशी था तब तो अपने प्रतिद्वंद्वियों से जीत ही जायगा और तब लैवीनिया से विवाह कर लेगा और यदि यह वह नहीं है तो वह जाने और उसका भाग्य।

उस नगर में यह एक प्राचीन प्रथा थी कि नगर के मध्य भाग में स्थित देवता जेनस के मंदिर के द्वार शांति के समय सदा बंद रहा करते थे परन्तु जब युद्ध काल आता तो राजा स्वयं आकर उन्हें खोल देता था और तभी नागरिक युद्ध का असली संकेत पाकर मरने-मारने पर तुल जाते थे। अब जो राजा लैटिनस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महल में घुसा तो ऐसा भूला कि उस संकट काल में भी जेनस के मंदिर के द्वार खोलने बाहर नहीं निकला। इससे शहर में बड़ी हलचल थी। एक ओर जहाँ लड़ाई के धौंसे बज रहे थे दूसरी ओर मंदिर के द्वार बंद थे। लड़ाई होगी या नहीं होगी यह कोई निश्चित नहीं कर पा रहा था। ऐसी हालत में युद्ध खुलकर नहीं हो यहा था। जूनो ने जो यह परिस्थिति देखी तो अदृश्य रूप से वहाँ आई और उसने स्वयं ही वह द्वार झटके से खोल दिये। अब नागरिकों ने जेनस का नाम ले लेकर जय जयकार किया। सभी ओर बिजली की भाँति युद्ध का समाचार फैल गया कि अब की बार स्वयं जेनस ने ही द्वार खोले हैं। योद्धा सजने लगे। लोग हर्ष-ध्वनि करने लगे। चमचमाते हुए कवच और शिरस्त्राण पहिने तथा तलवारें, भाले, कुल्हाड़ियाँ चमकाते हुए सैनिक युद्धभूमि की ओर हुमकने लगे। विशाल वाहिनी हुंकारने लगी और परिस्थिति अत्यंत गंभीर हो गई। सभी युद्ध भूमि में मर कर स्वर्ग जाने की कल्पना में मस्त हो गये थे।

लैटिन किसान और नागरिकों ने मिलकर ट्रोजन्स पर आक्रमण किया। उधर टर्नस ने मौका देखा। उसका वास्तविक शत्रु ईनिअस था जो उसकी प्रिया लैवीनिआ पर डोरे डाल रहा था। यदि वह उसी को मार डाले तो उसका पथ निष्कंटक हो जाय। उसने अवसर का लाभ उठाने का निश्चय किया। वह अपनी संगठित सेना लेकर लैटिन्स की ओर हो गया और ट्रोजन्स पर टूट पड़ा।

अब लैटिन्स और रुटुलिअन्स दोनों मिलकर ट्रोजन्स को मृत्यु के घाट उतारने लगे। उनका पक्ष सबल था। ट्रोजन्स बहुत कम थे, उनकी हार और मौत दोनों निश्चित थी।

राजा टर्नस प्रचण्ड योद्धा था। वह अब तक कई युद्ध कर चुका था। मनुष्य का सिर काट देना उसके लिये एक बहुत ही मामूली बात थी। जब वह रणभूमि में शत्रु पक्ष को मारता तो उसके समक्ष युद्ध करने का साहस बिरले ही वीर को होता था। वह अत्यंत विकराल व्यक्ति था जो क्षण भर में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही शत्रु की लाशों से पृथ्वी को पाट देता था। उसके साथ उसका एक मित्र मैजैन्टअस और था। यह आदमी भी कठोर योद्धा था जो हत्या करने में दक्ष था। यह पहिले इट्रस्कन लोगों का नेता था। परन्तु उन लोगों पर जब इसने बहुत अत्याचार किये, क्योंकि वह स्वभाव से ही निर्दयी और क्रूर था, तो उन लोगों ने उसके विरुद्ध विद्रोह करके उसे राज्य से भगा दिया था। तब से वह राजा टर्नस के पास ही रहता था। अब युद्ध में वह भी ट्रोजन्स की निर्मम हत्या करने के हेतु यहाँ मौजूद था।

राजा टर्नस के पास एक तीसरी बड़ी शक्ति और थी। यह एक स्त्री थी जो युद्ध विद्या में पारंगत थी। इसका नाम था कैमिला। इसके पिता ने उसे छुटपने से ही जंगल में जानवरों के साथ रखकर उसका लालन-पालन कराया था। जब वह बहुत बच्ची थी तभी से उसे धनुष-बाण दे दिये गये थे। वह इतनी तेज भागती थी कि उड़ती चिड़िया भी उससे आगे नहीं जाती थी। उसका निशाना अचूक था जिससे बचना किसी भी प्राणी अथवा परिंदे के लिये असंभव था। भाला फेंकना, दोधारी कुल्हाड़ी चलाना, इत्यादि युद्ध संबंधी सभी हुनर उसके लिए मानो हँसी-खेल का विषय था। वह अधिकतर आखेट और युद्धभूमि में ही अपना समय काटती थी। विवाह के नाम से उसे चिढ़ थी। उसकी अपनी एक अलग सेना थी जिसमें उसने अपनी ही भाँति बहुत सी स्त्रियाँ एकत्र कर ली थीं। रणभूमि में यह सेना बहुत ही भीषण युद्ध करती थी। टर्नस कैमिला का मित्र था अतएव वह भी उसके साथ इस युद्ध में उसकी सहायता करने आई थी।

उस अपरिचित और नये स्थान में अब ट्रोजन्स पर भारी विपत्ति आ गई। एक ओर इतने अधिक सैनिक थे और दूसरी ओर वह थोड़े से आदमी। भला उनका मुकाबला होता भी तो कैसे। ईनिअस बड़े सोच में पड़ गया। रह-रहकर वह वीर घबरा भी जाता था। उसने तुरंत एक मिट्टी के बने सूने किले में शरण ली। अब ट्रोजन्स उसमें छिपकर हमलावरों के हमले से बचने लगे। उसी रात ईनिअस को स्वप्न में एक वृद्ध दिखाई दिया। वह बोला :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"मैं टाइबर हूँ। मेरे नाम की महानदी यहीं पास ही में बहती है। शीघ्र थोड़े से अंगरक्षकों को लेकर जहाज पर बैठ कर टाइबर में उल्टी धारा पर होता हुआ जा। थोड़ी दूर पर ही तुझे वहाँ नदी तट पर बसा हुआ उस स्थान का राजा इवैण्डर मिलेगा। वह तेरी सहायता का उपाय करेगा।"

ईनिअस ने उस स्वप्न के बारे में अपने साथियों से कहा और फिर शीघ्र ही वह कुछ सैनिक लेकर कथित स्थान की ओर चल पड़ा। प्रभात के सूर्य में जहाज़ पर चढ़े सैनिकों के लौह-कवच और शिरस्त्राण चमकने लगे। यह पहिला अवसर था जब टाइबर नदी पर सैनिक जा रहे थे। आज के पहिले कभी कोई सैनिक उस नदी पर नहीं गये थे। वह इवैंडर के पास उस स्थान की ओर जा रहे थे जहाँ संसार का सबसे महान् नगर रोम बनने वाला था। किसी को उस समय यह मालूम नहीं था कि उस जंगली जगह में किसी दिन भव्य रोम का विस्तृत राज्य बनेगा जिसके सामने दुनिया की सारी शक्तियाँ भय से सिर झुका लेंगी। शीघ्र ही ईनिअस और उसके साथी निश्चित स्थान पर उतरे जहाँ इवैंडर ने उनका भव्य स्वागत किया। इवैंडर का एक जवान लड़का था। उसका नाम पैलस था। उसने ईनिअस को वचन दिया कि वह उसके साथ सहायतार्थ युद्ध करने चलेगा। अब राजा इवैंडर ने ट्रोजन्स को साथ लेकर अपने छोटे से राज्य के दृश्य दिखाये। सामने ही टर्पियन की भीषण चट्टान थीं और उसी के पास जोव का मंदिर था जिसके पत्थरों पर दरारें पड़ गई थीं। यही वह स्थान था जहाँ आगे चल कर रोम का स्वर्णिम और चमचमाता हुआ भुवन विख्यात नगर बनने वाला था। एक स्थान पर मवेशी बँधे थे। किसी को उस समय क्या मालूम था कि उसी स्थान पर भविष्य में रोमन्स के खेल का मैदान बनने वाला था। जहाँ सारे संसार के खिलाड़ी अपने शौर्य का प्रदर्शन करके सुंदरी कन्या के हाथ से फूल पाने के लिये प्राणों तक की आहुति लगाने में हिचकने वाले न थे। राजा इवैंडर का एक बुरा सा मकान था और उसी को वह अपना महल कहा करता था। उसमें न रहने का स्थान ही था और न वह देखने में ही सुंदर लगता था। मकान क्या था बस अनगढ़ पत्थरों को जोड़-जाड़कर ऊबड़-खाबड़ दीवालें बना ली गई थीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और यहीं उस भविष्य में उठ खड़े होने वाले साम्राज्य रोम की सबसे बड़ी मीनार खड़ी होकर आकाश को चुनौती देने वाली थी। राजा इवेंडर उससे बोला :

"बहुत प्राचीन समय में यहाँ हंस और लावण्यमयी सुंदरियाँ रहती थीं ; परन्तु तब वे लोग बिल्कुल असभ्य थे। वह माँस को पकाकर खाना भी नहीं जानते थे। और तभी ज्यूपिटर के भय से भागा हुआ सैटर्न (मंगल) वहाँ आया। उसने आते ही इस स्थान पर अपना अधिकार जमा लिया। वह अत्यंत योग्य शासक था। उसने शीघ्र ही यहाँ नई व्यवस्था फैला दी। शीघ्र ही लोग जंगलीपना छोड़ कर सभ्य हो गये। सैटर्न ने नये-नये कायदे बनाये और न्याय की व्यवस्था की। वह राज्य बहुत ही अधिक न्यायप्रिय था। खाने-पीने तथा सभ्य जीवन व्यतीत करने के साधन तैयार किये गये। थोड़े ही दिनों में यहाँ से भूख और गरीबी मिट गई। सभी सुखी हो गये। राजा के पास एक विशाल सेना थी और उससे उलझने का साहस किसी को नहीं होता था। वह यहाँ का स्वर्णिम युग था। परन्तु उसके बाद यहाँ शांति न रही। क्रूर शासकों ने अत्याचार, दमन और व्यभिचार करना प्रारंभ कर दिया। लोगों की नीयतें बदल गईं। अच्छे लोगों को कोई पूछता ही न था। सभी लोग बस सोने की खोज में लगे रहते थे। सोना ही जीवन का ध्येय बन गया और मनुष्यत्व का लोप हो गया। लोग आपस में लड़ने लगे। हत्या करना और लूटमार करना यही काम दिन-रात होने लगा। कोई किसी की परवाह नहीं करता था। व्यवस्था, न्याय, धर्म सभी कुछ खो गया, लोग फिर से गरीब हो गये और भूखों मरने लगे।...मैं ग्रीस में आर्केडी नामक स्थान में रहता था। वह स्थान मुझे बहुत ही अधिक प्रिय था। पर वह मुझे छोड़ देना पड़ा क्योंकि वहाँ लोग मेरी हत्या करना चाहते थे। मैं यहाँ आ गया। मैंने इस स्थान को ऐसा ही बिगड़ा हुआ पाया था जैसा कि यह अब है। मैं बहुत गरीब हूँ। मेरे पास सेना के नाम पर केवल थोड़े से सैनिक हैं जो आखेट से जीवन व्यतीत करते हैं। मैं स्वयं भी आखेटक ही हूँ।"

ईनिअस का मन भारी-भारी होने लगा। वह सोचने लगा : 'टाइबर ने मुझे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस गरीब के पास क्यों भेजा जब यह मदद देने के लायक ही नहीं है ।'

रात हुई और ईनिअस राजा इवैंडर के उस मकान में बनी एक झोपड़ी में सोया । उसकी शैया सूखे पत्तों की थी तथा उसे ओढ़ने के लिये एक रीछ की खाल दे दी गई थी । गहरा जाड़ा पड़ा और बाहर पृथ्वी बर्फ से ढँक गई । परन्तु ईनिअस को उन पत्तों और रीछ की खाल में तनिक भी ठंढ न लगी । वह आराम से सो गया ।

भोर में चिड़ियाँ चहचहाने लगीं और ट्रोजन्स जागे । राजा अपने दो बड़े और भयानक कुत्तों को लेकर जंगल की ओर गया । वह इतना अधिक गरीब था कि उसके पास उन कुत्तों के अतिरिक्त कोई अंगरक्षक नहीं था । जब वह लौटा उसके हाथ में कई खरगोश और एक बड़ा हिरन था । वह उन्हें अतिथियों के लिये मारकर लाया था । लाकर मांस आग पर चढ़ा दिया गया । जब सब लोग खा चुके तो ईनिअस को एकांत में ले जाकर राजा बोला :

"हे वीर ! तुम जिस कार्य के हेतु यहाँ आये हो उसके संबंध में अब मेरी बात सुनो. . . ." इतना कहकर उसने एक बार खाँस कर अपने चारों ओर देखा । तत्पश्चात् वह फिर बोला :

". . . .मेरा यह छोटा सा राज्य आर्केडी. . . .क्योंकि अपने पुराने निवासस्थान से अधिक प्रेम होने के कारण इस स्थान को भी मैंने वही नाम दिया है. . . .तुम्हारी सहायता करने में असमर्थ है. . . .परन्तु यदि तुम और थोड़ी दूर टाइवर के सहारे सहारे आगे जाओ तो वहाँ तुम्हें इट्रस्कन लोग मिलेंगे । वह शक्ति में प्रबल हैं । उनके पास एक विशाल सेना है जो संगठित है । उनसे युद्ध में लड़कर अभी तक इस विस्तृत देश को कोई भी नहीं जीत सका है. . . . वह तुम्हारी मदद करने को तैयार हो जायँगे. . . .तुम वहाँ जाओ ।"

"परन्तु वह केवल हमारे कहने से सहायता भला क्यों करेंगे ?" ईनिअस ने शंका दिखाई ।

राजा हँसा और बोला :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हे ईनिअस ! उसका भी एक रहस्य है, राजा टर्नस के साथ जो प्रचंड योद्धा मेज़ंटियस है वह पहिले इन्हीं इट्रस्कन लोगों का राजा था। पहिले तो वह न्यायप्रिय बनकर कुछ दिन रहा परन्तु वह स्वभाव से ही लंपट और निर्दयी है। उसने शीघ्र ही प्रजा पर अत्याचार करने शुरू कर दिये। वह भोले-भाले नर-नारियों को बिना अपराध ही मरवा डालता था। उसने जब अत्याचार करने शुरू किये तो मानो उस पर हत्या का भूत चढ़ बैठा। वह निरीह बच्चों, स्त्रियों और वृद्धों की हत्याएँ ठंडे दिल से करा देता था। उसका दिल कभी नहीं हिचकता था। खून कराते-कराते अब उसे आनंद आने लगा था। उसने मनुष्यों को मारने की नई-नई योजनाएँ बनाईं जो इतनी भयंकर होती थीं कि सुनने वालों का कलेजा काँप उठता था। वह जीवित मनुष्यों को मुर्दे के साथ बँधवा कर पटकवा देता था। बंधन आलिंगन के रूप में होता था जिसमें हाथ से हाथ और मुँह से मुंह कस दिये जाते थे।....यह हत्या करने का अजीब तरीका उसने निकाला था। मुर्दा धीरे-धीरे सड़ता जाता था और उसके शरीर का विष मनुष्य के शरीर में धीरे ही धीरे प्रवेश करता था। वह तब तक बँधे पड़े रहते जब तक जीवित भी मृत न हो जाता। तत्पश्चात् वह अट्टहास करता हुआ उनकी आँखों को निकलवाकर अपने कुत्तों को खिलाता था। उसके इस प्रकार के अत्याचारों से सारे देश में हाहाकार फैल गया था।" राजा साँस लेने को थोड़ी देर रुका और उसने ईनिअस की ओर अर्थभरी दृष्टि से देखा। ईनिअस उस वीभत्स कथा को सुनकर मन ही मन थर्रा उठा था। उसका मुख घृणा से विकृत हो गया था। राजा इवैंडर फिर बोला :

"....आखिर ऐसा अत्याचार कब तक सहन होता ? इट्रूरिया में विद्रोह उठ खड़ा हुआ। सारे राज्य में हत्यायें होने लगीं। राज्य कर्मचारी जहाँ भी लोगों को मिलते वहीं उनकी हत्या कर दी जाती। सारे देश में आग फैल गई। सर्वत्र बगावत हो गई। लोग मेज़ेंटिअस को मार डालना चाहते थे। वह उसे पकड़ कर कठोर से कठोर यंत्रणा देना चाहते थे—वैसी ही जैसी वह औरों को देता आया था। बाग़ियों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती ही जाती थी। आखिर उन्होंने एक दिन राजमहल को चारों ओर से घेर लिया। परन्तु जब वह अंदर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घुसे तो बहुत निराश हुये क्योंकि मेज़ेंटिअस पहिले ही भाग गया था। वह जितना अन्यायी, निर्दयी और लंपट था उतना ही चतुर और चालाक भी था। उसे पहिले ही मालूम हो गया था कि लोग उसे मारने आने वाले हैं और वह सुरंग के रास्ते पहिले ही भाग गया था। तभी से वह दुष्ट टर्नस के पास रह रहा है। इट्रूरिया के लोगों का क्रोध अब भी उसके प्रति वैसा ही भड़क रहा है क्योंकि वह उन्हें छकाकर भाग गया था। वह उसे अब भी दंडित करना चाहते हैं। जहाँ भी वह उन्हें मिले वहीं वह उसे जाकर ढूँढ़ने को तैयार हैं. . . .मुझे यह सब मालूम है क्योंकि मैं उनका पड़ोसी हूँ। तुम हे ईनिअस ! अब सीधे इट्रूरिया जाओ और उनकी विशालवाहिनी को लेकर शत्रु पर टूट पड़ो। तुम निश्चित समझो वे तुम्हारी सहायता अवश्य करेंगे। तुम्हारे वहाँ जाने भर की देर है बस वे तुम्हारे साथ लग जायँगे। यहाँ से मेरा पुत्र पैलस तुम्हारे साथ युद्ध करने जायगा। वह मेरा इकलौता बेटा है परन्तु तुम्हारे लिये मैं उसे भी भेज दूँगा। उसके साथ इस देश के कुछ चुने हुए वीर भी तुम्हारी सहायतार्थ मैं भेजूँगा. . . .यह सभी मेरे इस छोटे से देश के रत्न हैं. . . .हे ईनिअस ! यह तुम्हारा अभीष्ट सिद्ध करने में बहुत सहारा लगायेंगे। यह सभी परम वीर हैं और युद्ध के देवता को प्रसन्न करने के लिये तुम्हारे साथ जायँगे. . . ."

इतना कहकर वृद्ध राजा इवेंडर ने अपने पुत्र और उन जवानों को बारी-बारी से छाती से लगा लिया। उसके नेत्र प्रेमाश्रु से गीले हो गये थे। ईनिअस ने उसे अनेकानेक धन्यवाद दिये और ट्रोजन्स सहित उसे सलामी दी। जब ट्रोजन्स और पैलस इट्रूरिया जाने लगे तो राजा ने प्रत्येक सैनिक को एक-एक तेज़ उम्दा घोड़ा चढ़ने के लिये भेंट दिया जिससे वह उस स्थान को शीघ्र पहुँच सकें। ईनिअस को अब सहायता मिलने की आशा हो चली थी।

× × ×

इधर युद्धभूमि में ट्रोजन्स का बुरा हाल था। बेचारे एक मिट्टी के किले में छिपे हुए शत्रु से बचने का उपाय कर रहे थे। परन्तु बचना संभव प्रतीत नहीं होता था। शत्रु पक्ष सबल था और आखिर उनके सामने वह कहाँ तक ठहरते।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ईनिअस के चले जाने के बाद तो उनका और भी बुरा हाल हो गया था। ईनिअस जाते समय उन्हें आज्ञा दे गया था कि किसी भी हालत में वह उस सुरक्षित स्थान को छोड़कर बाहर न निकलें। उसने यह भी आश्वासन दिया था कि वह शीघ्र ही बड़ी सेना लेकर वापस आयेगा—परन्तु अब तो उसे गये कई दिन बीत गये थे। कैसे प्राण बचाये जायँ यह एक बड़ी समस्या बन गई। ट्रोजन्स सभी परेशान थे परन्तु कुछ उपाय नहीं सूझता था। किसी प्रकार दो व्यक्ति ईनिअस के पास पहुँच सके और उससे वहाँ के सारे समाचार कहकर उसे सेना सहित शीघ्रातिशीघ्र ला सकें—यह सोचा गया। परन्तु आपत्ति तो यह थी कि चारों ओर तो रुटुलियन्स घेरा डाले पड़े थे। इसके अतिरिक्त लैटिन किसान मेज़ेंटिअस और कैमिला की सेनायें घातक आक्रमण कर रही थीं। फिर भला उनसे बचकर कौन जा सकता था। किसी को कुछ नहीं सूझ रहा था। भय अब आतंक बन चुका था और ट्रोजन सैनिकों को मृत्यु बहुत पास दिखाई देने लगी थी।

ट्रोजन्स में निसस नाम का एक अपूर्व योद्धा था। उसने कई युद्ध में अब तक भाग लिया था और ट्रौय की लड़ाई में भी वह ग्रीक्स के दाँत खट्टे कर चुका था। उसके साथ यूरालयस नामक एक युवक हमेशा रहता था। यदि निसस पहरे पर होता तो बारी न होने पर भी यूरालयस उसके पास ही खड़ा दिखाई देता था। यही हाल निसस का भी था। वह भी उसे कभी अकेला नहीं छोड़ता था। युद्ध करते समय यूरालयस और निसस सदा पास ही पास रहते थे और शत्रु से एक दूसरे को बचाने में सदा सतर्क रहते थे। यूरालयस युवक तो था परन्तु उसके हृदय में नवीन स्फूर्त्ति थी और वह चपल व्याघ्र की भाँति मारधाड़ के लिए तड़फड़ाया करता था। वह अत्यंत साहसी और वीर था और सदा निसस के लड़ने के तरीके का अनुसरण किया करता था। सारे ट्रोजन्स में यह प्रसिद्ध था कि वे दोनों एक प्राण और दो शरीर थे।

उस रात जब ट्रोजन्स सभी भारी आपत्ति से व्याकुल हो रहे थे निसस और यूरालयस किले की दीवाल पर चढ़े हुए कँगूरों में से शत्रु पक्ष का निरीक्षण कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहे थे, उस समय रुटुलियन्स और लैटिन्स सभी सोये पड़े थे। कहीं-कहीं कोई चिराग़ टिमिटिमा रहा था। निसस के मन में एक दम उत्साह भर गया। उसके मस्तिष्क में बिजली की तरह विचार कौंध गया कि उस रात के अंधेरे में जब सब सोये पड़े हैं निश्चय ही वह सब की आँख बचाकर उस घेरे से बाहर निकल जा सकता है। वह खुशी से फूल उठा और जोश में आकर उसने अपनी बात बिना सोचे-समझे अपने मित्र के सामने कह दी। सुनते ही यूरालयस उछल पड़ा। वह तुरंत साथ जाने के लिए तैयार हो गया। अब निसस को अपनी भूल का ज्ञान हुआ और साथ ही साथ पश्चात्ताप से वह भर उठा। वह स्वयं तो उस खेल को खेलना चाहता था परन्तु इतने खतरे में यूरालयस को नहीं डालना चाहता था। वह बोला :

"हे मित्र ! तुम अभी युवक हो। अभी जीवन का अधिकांश भाग तुम्हारे सामने पड़ा है। तुम ऐसे भयंकर मार्ग पर न जाओ जहाँ पग-पग पर मृत्यु मुँह बाये खड़ी है। हो सकता है जाने वाला पार निकल जाय परन्तु यदि एक भी शत्रु सचेत हो गया तो जीवन का अंत निश्चित समझो। ...." फिर थोड़ा रुक कर उसने उससे स्नेहसिक्त स्वर से कहा : ".....मेरा क्या ; ....मैंने तो काफी जीवन देख लिया है—मैंने संसार में अच्छे-बुरे दिन सभी देख लिये हैं। मैं तो जा सकता हूँ....परन्तु तुम्हें मैं साथ नहीं ले जाना चाहता। तुम यहीं रहो। मैं जाकर शीघ्र ईनिअस को सेना सहित लाता हूँ।"

परन्तु निसस जानता था कि तीर हाथ से छूट चुका था। यूरालयस उसका साथ कभी नहीं छोड़ेगा। और हुआ भी ऐसा ही। यूरालयस न मानता था न माना। वह चलने को उद्यत हो गया। निसस अब गिड़गिड़ाकर बोला :

"हे मित्र ! मेरी बिनती सुनो और यहीं रहो। यदि मैं मर गया तो तुम्हारे अतिरिक्त भला कौन क्रमपूर्वक मेरी अंत्येष्टि क्रिया करेगा....नहीं नहीं तुम मेरे साथ न चलो।"

पर यूरालयस नें हँस कर उत्तर दिया :

"हम और तुम साथ जीयेंगे और साथ मरेंगे," तत्पश्चात् आकाश देखकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह आतुरता से बोला :

"जल्दी चलो क्योंकि रात काफी जा चुकी है।" निसस अब निरुत्तर हो गया था।

जब दोनों मित्र उतर कर अंदर गये उस समय ट्रोजन सेनापतिगण आपस में गूढ़ मंत्रणा कर रहे थे। निसस ने अपना मंतव्य जब उन्हें बतलाया तो उन्होंने उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। सभी ने उन दोनों वीरों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने रुँधे कंठ से उन्हें बढ़ावा दिया और कहा कि वही वास्तव में उन अपूर्व वीरों में से थे जो उस कठिन समय में अपने भाइयों को बचाने के लिए अपने प्राणों को हथेली पर रखकर यह भयानक खेल खेलने को उद्यत हुए हैं। ट्रोजन योद्धाओं ने उन्हें लौट आने का आशीर्वाद देकर अमूल्य रत्नों से पुरस्कृत करने का वचन भी दिया। यूरालयस को देखकर सभी की आँखों में आँसू भर आये थे। वह बोला :

"अपने मित्र निसिस के साथ मैं जा रहा हूँ। मैं केवल एक आश्वासन चाहता हूँ। मेरी माता यहीं हमारे साथ है। वह मेरे बिना जीवित नहीं रहेगी.... उसका केवल मैं ही धन हूँ और मुझपर ही उसकी तमाम आशाएँ केन्द्रित हैं.... यदि मैं मर गया तो वह...." वह आगे नहीं कह सका पर इतने ही में ईनिअस का पुत्र ऐस्कैनिअस बोल उठा :

"....वह मेरी माता होगी....जब उस रात हम ट्रौय से भागे थे मेरी माता मर गई थी। मैं उसे अपनी माता के समान मानूँगा। मैं शपथपूर्वक कहता हूँ...." और वह दौड़कर यूरालयस से चिपट गया और रोने लगा। उस हृदयद्रावक दृश्य को देखकर सभी के नयन भींग गये। तत्पश्चात् ऐस्कैनिगस ने अपने हाथों से उसको सजाया और अपनी तलवार उसे दी। और जब यूरालयस और निसस किले से बाहर निकले तो वह परकोटे पर चढ़कर उन्हें तब तक निर्निमेष नेत्रों से देखता रहा जब तक वह उसे दिखे।

निसस और यूरायलस खामोशी से कदम रखते हुए शत्रु पक्ष में घुस गये। सैनिक बेखबर सो रहे थे। निसस दक्ष हस्तों से चुपचाप काटता चला जा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहा था। इतनी खामोशी और जल्दी से वह उन्हें मार रहा था कि मरने वाला आह भी न कर पाता था। उसका खड्ग विद्युत गति से सोते हुए शत्रुओं के गलों को काट रहा था। यूरायलस ने अपने मित्र की देखादेखी वैसी ही हत्या प्रारंभ कर दी। वह कतार की कतार सैनिकों को साफ़ करते आगे बढ़ते चले जाते थे और कमाल था कि कानोकान आहट न हो पाती थी। आखिर वह परले छोर पर जा पहुँचे। उन्होंने मरे सैनिकों से वह पथ भर दिया था ख़ुशी से दोनों उल्लसित हो उठे। परन्तु इस सब काम में उन्हें काफी देर हो गई थी। जब वह शत्रुओं के घेरे से बाहर निकले उस समय अरुणोदय हो गया था। निसस ने फुसफुसाकर यूरायलस से भाग चलने को कहा।

उसी समय सामने से कुछ लैटियम सैनिक घोड़ों पर चढ़कर गश्त देने उस ओर आ निकले। उन्होंने जो दो कवच और शिरस्त्राण बाल सूर्य की किरणों में चमकते देखे तो ललकार कर चुनौती दी। इस गड़बड़ में निसस एक ओर भागा और यूरायलस दूसरी ओर। उत्तर न पाकर अश्वारोही सैनिकों का शक बढ़ गया। उन्होंने देखा शत्रु भागे जा रहे थे। उन्होंने घोड़े दौड़ा दिये। घेरा डाल दिया गया। निसस तो पुराना खिलाड़ी था। विकट परिस्थिति में मन को स्थिर रखकर चतुराई करना वह जानता था। परन्तु यूरायलस अभी लड़का ही जो था। सो गलत रास्ते भागा। वह उन सवारों को दिख गया। वह उसे पकड़ने दौड़े। यूरायलस भागा परंतु घिर गया। निसस जो अब तक सुरक्षित स्थान में पहुँच गया था यूरालयस को अपने साथ न देखकर घबराया। उसने जो मुड़कर देखा तो उसका रक्त जम गया। उसने देखा लैटियम सवारों ने उसके परम मित्र को पकड़ रखा था और वह उसे मारने को उद्यत हो रहे थे। वह उस दृश्य को न देख सका। उल्टे पाँव लौट पड़ा। अब उसे अपने प्राणों का कोई मोह नहीं रह गया था। वह भागता आ रहा था और मार्ग में आनेवाले सैनिकों को काटता चला आ रहा था। उस समय वह जंगल में लगी भयानक आग की भाँति रास्ते में आने वाले सब कुछ को नष्ट करता हुआ बढ़ रहा था। यूरायलस को शत्रु की तलवार के नीचे देखकर वह चिल्लाया :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"ठहरो ! ठहरो ! उसे न मारो ! उसने कुछ नहीं किया है। मुझे मार डालो। मैंने ही हत्यायें की हैं, मैं ही अपराधी हूँ ! वह तो बेचारा निर्बोध है उसे छोड़ दो।"

अब अन्य सैनिक भी एकत्र हो गये थे। उन्होंने निसस का मार्ग रोका पर वह विद्युत गति से अपने भाले से उन सबका सफाया करता हुआ यूरायलस की ओर बढ़ रहा था। वह एक वीर पूरे शत्रुदल से लोमहर्षण युद्ध कर रहा था। वह रक्त से भींग गया था। उसके शरीर और सिर पर कई चोटें आ गई थीं परन्तु उसे जैसे उन सब की कोई परवाह ही नहीं थी। उसने उस थोड़े समय में ही शत्रु की लाशों से मैदान पाट दिया।

लैटिनम अश्वारोहियों के नायक ने उस विकराल योद्धा का वह प्रचंड पराक्रम देखा तो वह थर्रा गया। उसे यही पता न चला कि वह नये शत्रु कौन थे और कहाँ से आये थे। परन्तु इतना वह अवश्य समझ गया कि इतनी सब हत्यायें उस लड़के को छुड़ाने के हेतु हो रही हैं। अतएव वह अब यूरायलस की ओर घूमा और चिल्लाया :

"इन सब हत्याओं का बदला तेरे रक्त से लिया जायगा" और उसने अपनी तलवार उसकी ओर चलाई। उसी समय निसस दहाड़ा :

"खबरदार !! उसे न छूना....मुझे मार लो....उसे...." वह इतना ही कह पाया था क्योंकि लैटियम सरदार ने तब तक अबोध बालक यूरायलस के गले में अपना खड्ग घुसा दिया था। यूरायलस ने अंतिम बार निसस को देखा और वह गिरकर तुरंत मर गया। निसस अब जीवन, मृत्यु, शत्रु, मित्र, युद्ध सब कुछ भूल गया था। वह भूखे सिंह की भाँति उस लैटिनम अश्वारोही नायक पर टूट पड़ा और उसने उसे दो टुकड़े कर दिया। तत्पश्चात् वह साक्षात् काल बनकर उन पर टूट पड़ा। उसके सामने जो आता वही मारा जाता। निसस अब जीना नहीं चाहता था। उसका मित्र ! उसका जीवन ! उसका भाई ! मर गया था। अब वह जीकर भी करेगा क्या ? वह अंधा होकर शत्रुओं को काट रहा था। भयानक युद्ध छिड़ गया था। एक ओर वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अकेला था और दूसरी ओर सशस्त्र सैनिकों के दल के दल उससे लड़ रहे थे। अब रुटुलियम और लैटिनम योद्धाओं ने उस पर शर वर्षा प्रारंभ कर दी। तीर पर तीर छूटने लगे। निसस का शरीर उससे छलनी-छलनी हो गया। रक्त अजस्र धाराओं से बहने लगा। परन्तु वह लड़े जा रहा था। पूरे सौ तीर उसके शरीर में गड़ गये और तब वह आहत होकर यूरायलस की लाश के बगल में गिर गया। उसने एक बार अपने मित्र को जी भरकर देखा और सदा के लिये सो गया। शत्रु उसके उस अपूर्व शौर्य की मन ही मन प्रशंसा कर रहे थे। दोनों मित्र साथ जिये और साथ ही मर गये।

अपने किले पर चढ़े हुए ट्रोजन्स ने सुदूर निसस का भीषण युद्ध देखा और वह रोमांचित हो उठे। अब रुटुलियम और लैटिनम मिल कर उन पर आक्रमण करने की योजना बनाने लगे। ट्रोजन्स ने शत्रु की उस अपार भीड़ को देखा और उनके छक्के छूट गये।

ठीक उसी समय पूर्व दिशा में सुदूर धूल के बादल उठने लगे। वह प्रतिक्षण पास आते जाते थे। शत्रु-मित्र सभी ने देखा कि वह बादल बहुत बीच में फैलते चले आ रहे थे। आश्चर्यचकित होकर वह ऊपर ही देखने लगे।

आँधी की भाँति ईनिअस घोड़े को फेंकता चला आ रहा था। उसके पीछे असँख्य इट्रस्कन सेना थी जो उसके पहुँचते ही राजा मेज़ेंटिअस से बदला लेने की भावना लेकर युद्ध करने उसके साथ चल पड़ी थी। वह विशालवाहिनी समुद्र की तरंगों की भाँति अबाध और अजेय थीं। ईनिअस एक हाथ से घोड़े की लगाम पकड़े था और उसके दूसरे हाथ में उठा हुआ खड्ग सूर्य के प्रकाश में चमक रहा था। अब वे लोग बिल्कुल पास आ गये थे। उन असंख्य घोड़ों की टापों से ऐसा रोर उठा कि शत्रु का साहस जाता रहा। ट्रोजन्स ने ईनिअस को पहिचाना और हर्षातिरेक होकर उन्होंने जयनाद किया। उनका वह घोष जब इट्रस्कन सेना ने सुना तो वह भी जयघोष करने लगे। ऐसा मालूम हो रहा था कि आकाश में एक साथ सहस्रों वज्र कड़के हों। अब हाथों-हाथ युद्ध प्रारंभ हो गया था। भीषण कोलाहल सर्वत्र व्याप्त हो गया। तुरुही बजने लगी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और नरसिंहों की गूँज दूर-दूर तक सुनाई देने लगी। नगाड़ों पर धमाधम चोट पड़ रही थी जिनको सुनकर योद्धाओं का रक्त उबलने लगा था। विकराल इट्रस्कन योद्धा रुटुलियन सैनिकों को काट-काट कर फेंकने लगे। थोड़ी देर में युद्धभूमि रक्त से भींग गई और मृतकों से भूमि पट गई। रक्त और मांस की उस कीचड़ पर घोड़े हिनहिनाते इधर से उधर दौड़ रहे थे। भीषण हत्या हो रही थी। रुटुलियन योद्धा भाले पर भाले फेंक रहे थे जो इट्रस्कन उन्हें तलवार के घाट उतार रहे थे। उनकी हुंकारों से आकाश गूँज रहा था। इन सबके ऊपर घायलों का आर्त्तनाद करुण क्रंदन बनकर सुनाई दे रहा था। उन पर घोड़े दौड़ जाते थे। किसी का आधा सिर कुचल गया था तो किसी का पेट फटकर आँतें बाहर निकल आई थीं; वीभत्सा मानो प्रत्यक्ष रूप में नर्तन कर रह थी।

वीराङ्गना कैमिला घोड़े पर चढ़ी हुई भयानक संग्राम कर रही थी। उसके प्रत्येक प्रहार से दो-दो, तीन-तीन आदमी कट कर गिर जाते थे। अपूर्व था उसका रण-कौशल जिसे देखकर पुरुषों ने दाँतों तले उँगली दबा ली। उस अकेली स्त्री न अनेक इट्रस्कन और ट्रोजन योद्धाओं को मार डाला परन्तु अन्त में वह ईनिअस से आ भिड़ी। ईनिअस ने एक बार उसे घूर कर देखा और फिर उसकी ओर ताककर भाला फेंका। वह तो बचा गई पर भाला घोड़े की छाती में लगा और आर-पार हो गया। घोड़ा गिरा और उसी समय व्याघ्र की भाँति ईनिअस ने गिरती हुई कैमिला के सिर पर दोनों हाथ उठाकर सीधे खड्ग का भीषण प्रहार किया। वह बचने को मुड़ी पर प्रहार अकाट्य था। कैमिला सिर से धड़ तक दो टुकड़े हो गई। उसके मरते ही उसकी सेना भाग गई।

मेज़ैंटिअस को चारों ओर से इट्रस्कन वीरों ने घेर लिया। वह विकराल योद्धा उनको काटने लगा। वह उन्हें ऐसे काट रहा था जैसे किसान पकी फ़सल को हँसिये से काटता हो। उसकी प्रतिहिंसा प्रति क्षण बढ़ती जा रही थी। परन्तु इट्रस्कन योद्धा घृणा से उसे देखते हुए उसका पीछा न छोड़ते थे। वह बरा-बर उसे घेर कर युद्ध कर रहे थे। वह उसे जीवित पकड़ कर यातनाओं द्वारा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मारना चाहते थे। इसी कारण दूर से उस पर भाला नहीं फेंकते थे। उसी समय एक तीर ट्रोजन सैनिक के धनुष से छूट कर मेज़ैंटिअस की ओर चला। निकट ही था कि वह उसके हृदय को फाड़ कर निकल जाता कि उसी का पुत्र बीच में आ खड़ा हुआ। वह मर कर लुढ़क गया। पिता को बचाने में पुत्र ने अपने प्राण दे दिये। मेज़ैंटिअस ने देखा और शस्त्र डाल कर वह उसे उठाने दौड़ा। तुरंत इट्रस्कन लोगों ने उसे पकड़ कर बाँध लिया। जब वह पुत्र-शोक में व्याकुल होकर आर्त्त स्वर से चिल्ला रहा था, इट्रस्कन अट्टहास कर रहे थे।

एक सड़ी लाश के साथ मेज़ैंटिअस को जीवित बाँध दिया गया। उसका मुँह उस दुर्गंध भरी लाश के मुँह से मिलाकर ऐसा बाँधा गया कि मेज़ैंटिअस उस हालत में भी दया की भीख माँगने लगा। परन्तु दया न कभी उसने किसी के साथ दिखाई थी जो आज उसे मिलती, वह उसी भाँति सड़ी लाश से लिपटा पड़ा रहा और धीरे-धीरे उसके शरीर में लाश का विष उतरता रहा। वह पूरे चार दिन और चार रात उस घोर यंत्रणा को सहता रहा तत्पश्चात् जब वह मर गया। तो इट्रस्कन लोगों ने उसकी आँखें निकाल कर कुत्तों को खिला दीं और लाश को कौओं से नुचवा दिया। उनका हृदय अब शांत हो चुका था। उन्होंने अपने सबसे बड़ेबैरी से वदला ले लिया था।

ईनिअस ज्युपिटर की कृपा से इस युद्ध में अमानुषिक कार्य कर रहा था। कभी वह ओक के बड़े-बड़े वृक्षों को उखाड़ कर शत्रुदल को मथता तो कभी पहाड़ों की चोटियों को उठाकर उन पर मारता था। पचास-पचास योद्धाओं से एक साथ लड़कर वह सभी को मौत के घाट उतार रहा था। युद्ध भूमि में वह हर जगह दिखाई देता था। उसके मुँह से अग्नि की लपटें निकल रही थीं। उसके नथुने फड़क रहे थे और आँखों से अंगारे बरस रहे थे। उसका रौद्र रूप देखकर शत्रुओं के रोम-रोम भय से खड़े हो गये थे। वह साक्षात् मृत्यु की विभी-षिका बनकर युद्धभूमि में मानो शत-शत भुजाएँ लेकर लड़ रहा था। कोई नहीं था जो उसके सामने से जीवित बचकर निकल जाता।

अंत में टर्नस और ईनिअस आमने-सामने द्वंद्व युद्ध करने लगे। टर्नस विक-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राल योद्धा था। दोनों का लोमहर्षक युद्ध हुआ। शरीरों की रगड़ से विद्युत कौंध जाती थी और अस्त्र पर अस्त्र बज कर बादल के समान भयंकर गर्जन का शब्द उत्पन्न कर रहे थे। उनके चरणों से पृथ्वी आहत हो रही थी और उनके भार को उठाने में असमर्थ होकर धसक जाती थी। देर तक युद्ध होता रहा। अंत में ईनिअस ने खड्ग उठाकर वज्र प्रहार किया और टर्नस दो टुकड़े होकर धराशायी हो गया।

इट्रस्कन लोग अपने देश इट्रूरिया को लौट गये। ट्रोजन्स विजयी हुए। ईनिअस ने अब बलपूर्वक लैटियम के द्वार तुड़वा दिये और अंदर घुस गया। सुंदरी लैवीनिया से उसने विवाह किया और उसके पिता लैटिनस को कृतघ्नता के लिये मृत्युदंड दिया। ट्रोजन राज्य के अधिकारी बन गये और ईनिअस ने नये राज्य की नींव डाल दी। ज्यूपिटर का वचन सफल हो गया। वीनस प्रसन्न थी। जूनो अब भी ईनिअस का अहित चाहती थी पर ज्यूपिटर ने उसे बुलाकर आज्ञा दी कि यदि तनिक भी वह उस ओर बाधा डालने का प्रयत्न करेगी तो उसे ओलिम्पस से हमेशा के लिये निकाल देगा। निदान वह चुप हो गई।

ईनिअस का राज्य वन की आग की भाँति चारों ओर फैला। इट्रस्कन लोगों ने उसका आधिपत्य मान लिया और वह सम्राट बन गया। जहाँ इवैंडर रहता था उसी स्थान पर अपने नये राज्य की राजधानी बनाई। पैलस युद्ध में मर चुका था जिसके दुखद समाचार को सुनकर इवैंडर ने आत्महत्या कर ली थी। ईनिअस अपने उस दरिद्र परन्तु वीर और सच्चे मित्र की मृत्यु पर बहुत रोया था। उसकी याद में उसने उस स्थान को अपनी राजधानी बनाया था।

ईनिअस और लैवीनिया की संतान आगे चलकर रोमन जाति के नाम से जगत् विख्यात हुई। इसी साम्राज्य के सामने सारे संसार ने सिर झुकाये थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माँ का हत्यारा

एट्रियस के दोनों पुत्र एगैमैम्नौन और मैनीलौस जब ट्रौय के युद्ध से लौटे तो उनके जहाज़ बिछुड़ गये। समुद्र के बीच मिनर्वा के क्रोध के कारण भयानक तूफ़ान आया था जिससे पूरा जहाज़ी बेड़ा नष्ट हो गया था। ओडिसियस एगैमैम्नौन और मैनीलौस इत्यादि बड़े-बड़े योद्धा सभी एक दूसरे से अलग-अलग हो गये थे।

मैनीलौस बहुत काल बाद अपने घर पहुँचा परन्तु संतोष उसे यही था कि संसार की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी हैलन उसे फिर मिल गई थी। ओडिसियस जब भयानक यात्रा से घर लौटा उस समय वृद्ध हो चुका था। केवल एक एगैमैम्नौन ही उन सब में भाग्यशाली था जो सबसे पहिले घर पहुँच गया। तूफ़ान उसे सीधा उसी के घर छोड़ गया। उसने आते ही नगर में अग्रदूत भेजे। सारा नगर समुद्र की तरंगों की भाँति उसके स्वागत के हेतु हिल उठा और उन्होंने अपने राजा का भव्य स्वागत किया। उस समय एगैमैम्नौन सारे संसार का विजयी योद्धा प्रतीत होता था। उसका यश सारे ग्रीस में फैल चुका था। वह वही प्रचंड पराक्रमी व्यक्ति था जिसने अपने बाहुबल से ट्रौय की ईंट से ईंट बजा कर उसे ध्वंस कर दिया था। प्रजा ने श्रद्धा और भय से उसके सम्मुख सिर झुका दिये।

परन्तु प्रजा की उस भीड़ में उत्सुक चेहरे भी बहुत थे। सभी मानो एक दूसरे को मौन भाषा में कुछ संकेत कर रहे थे। कोई-कोई तो धीरे से बड़बड़ा कर कहता भी था: "उसे सब कुछ देखने को मिलेगा....उस महल में जो अभी तक नहीं हुआ अब हो रहा है....वह सभी कुछ देखेगा....यदि दीवालें बोल सकतीं तो वह उससे कह देतीं कि उसकी स्त्री क्लाईमैंस्ट्रा ने क्या किया क्या नहीं किया....!!"

जब एगैमैम्नौन राजमहल के सामने पहुँचा, तो नगर के वृद्धजनों ने वहाँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसका स्वागत किया, उस पर पुष्पवर्षा की। उन्होंने उसे इतनी लंबी यात्रा से सकुशल लौट आने पर बधाई दी। परन्तु आपस में वह भी एक दूसरे को देखकर फुसफुसा रहे थे। उनका हृदय आने वाले दुख के विचार से ही कंपित था। यह वही एगैमैम्नौन था जिसने अपनी युवती पुत्री की निर्मम हत्या की थी। उसने क्षणिक आवेश में आकर अपनी सुंदरी पुत्री की हत्या की थी....हाँ वह वही नीच हत्यारा था। उसको उस हत्या का बदला चुकाना पड़ेगा। वृद्ध नागरिक इस बात के रहस्य को जानते थे। परन्तु प्रत्यक्ष वह राजा से ऐसा कहते डरते थे। वह यह भी जानते थे कि एगैमैम्नौन के इस अमानुषिक कार्य को सुनकर उसकी स्त्री उससे विमुख हो गई थी और तभी से उसने एक पर पुरुष ईगिस्थस से अनुचित संबंध स्थापित कर लिया था। बात यहाँ तक बढ़ गई थी कि उसका वह प्रेमी अब उसी के साथ एगैमैम्नौन के ही महल में रहने लगा था। रानी को राजा के आने की सूचना पहिले ही मिल गई थी फिर भी उसने अपने उस प्रेमी को कहीं बाहर भेजने या छिपाने का प्रयत्न नहीं किया था। आज जब एगैमैम्नौन उसे यहाँ देखेगा तो हे भगवान ! कितनी हत्या होगी ? उसकी वह कल्पना भी नहीं कर पा रहे थे। भय अब आतंक बनकर उनके हृदयों में उतर गया था। वह खड़े-खड़े काँप रहे थे। भावी आशंका से वह विचलित हुए खड़े थे। आज दस वर्ष बाद वह राजा एगैमैम्नौन लौटा था और इस बीच पूरे समय उसकी स्त्री क्लाईमैस्ट्रा ने उस लंपट से प्रेम किया था। भला कैसे सहेगा राजा यह सब—अवश्य ही रक्तपात होने वाला था....ईफ़िग्निआ के रक्तपात के बदले का समय आ गया था। दस साल पहिले रानी ने अपनी प्यारी पुत्री को अउलिस में आल्टर पर बलि चढ़ते देखा था। जब वह वहाँ से लौटी थी क्रुद्ध सर्पिणी की भाँति पुत्री के हत्यारे पिता—उसके स्वयं के पति एगमैम्नौन से बदला लेने को तैयार बैठी थी। देखें कौन किसे मारता है। यही विषय भयानक समस्या बना हुआ था।

उसी समय महल के बाहरी प्राङ्गण में पत्थर के फर्श पर बादलों की भाँति गर्जन करते हुए युद्ध के रथ आगे बढ़ने लगे। प्रजा के जयनाद ने आकाश को गुँजा दिया। चारों ओर कोलाहल फैल गया। राजा एगैमैम्नौन वापस आ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गया था। अब वह उस शापग्रस्त मकान में घुसने वाला था। राजा अपने रथ के मध्यभाग में तलवार की मूँठ पकड़े सीधा खड़ा था। वह भव्य दिखाई देता था। सुवर्ण मंडित लौह कवच और शिरस्त्राण अब भी उसके शरीर पर सूर्य के आलोक में चमक रहे थे। उसके बगल में एक अत्यन्त लावण्यमयी युवती भयभीत खड़ी थी। कितनी सुंदर थी वह और कितनी घबराई हुई कि उसके हरिणी से नयन चकित दिखाई दे रहे थे। वह श्वेत प्रस्तर की एक सुंदरतम मूर्त्ति की भाँति निश्चल खड़ी थी। उसकी श्वास जल्दी-जल्दी चल रही थी जिससे उसका उन्नत वक्षस्थल उठता और गिरता प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा था। कौन थी वह सुंदरी जो इस प्रकार उस मांगलिक उत्सव के समय में भी इतनी डरी हुई थी?

हठात् रथ रुक गये। राजा नीचे उतर कर महल की सीढ़ियों पर चढ़कर दौड़ गया और चिल्लाया:

"हे विजय की लक्ष्मी मुझे इसी भाँति सदा विजयी बना।"

उसी समय मुख्य द्वार खुला और रानी क्लाईमैंस्ट्रा बाहर आई। 'वह अब भी कितनी सुंदरी दिखाई देती है,' लोगों ने सोचा। वह अपने पति को देखकर मुस्कराई। उसका सिर ऊँचा उठा हुआ था और प्रसन्नता की लहर उसके मुख पर दौड़ रही थी। उसने आगे बढ़कर एगैमैम्नौन का स्वागत किया। उसका व्यभिचार किसी से छिपा नहीं था। केवल एक ही व्यक्ति उस बात से अनभिज्ञ था और वह था उसका पति। पर भला किसमें इतना साहस था जो उसे यह रहस्य बताता? फिर भला वह क्यों डरती? क्यों शर्म से उसकी निगाहें नीची होतीं? वह उच्च कंठ से हर्षातिरेक होकर चिल्लाई:

"हे राजन्! तुम्हारा स्वागत है। तुम हमारे रक्षक हो....तुम्हारा आगमन तूफ़ान से निकलकर भूमि स्पर्श पा लेने के समान है....तुम प्यासों के लिये शीतल जल की धारा बनकर आये हो....हे प्रियतम क्लाईमैंस्ट्रा तुम्हारा स्वागत करती है।"

परन्तु एगैमैम्नौन ने उसके उस स्वागत को मानो स्वीकार नहीं किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसने उसके प्रति कोई प्रीति अथवा अनुराग नहीं दिखाया। वह चुपचाप अंदर जान लगा। परन्तु फिर उसे कैसेण्ड्रा की याद आई जो अब भी रथ में खड़ी थी। वही थी वह सुंदरी जो अब भी विस्फारित नेत्रों से क्लाईमैस्ट्रा को देख रही थी। उसे देखकर एगैमैम्नौन बोला :

"यह ट्रौय के राजा प्राइम की पुत्री है। यह मुझे जीत में मिली है और मेरी वस्तु बनकर इस महल में रहेगी। क्लाईमैस्ट्रा इसे अच्छी तरह रखेगी यह मेरी आज्ञा है।"

इतना कहकर वह अंदर चला गया। उसके पीछे-पीछे क्लाईमैस्ट्रा भी अंदर चली गई। केवल कैसेण्ड्रा वहीं खड़ी रही। भीड़ जा चुकी थी। केवल वृद्ध नागरिक अब भी बाहर खड़े थे। न जाने वह किस प्रतीक्षा में थे। उन्होंने कैसेण्ड्रा का नाम सुन रखा था कि वह भविष्य के बारे में बताया करती है। वह यह भी जानते थे कि उसका कहना अक्षरशः सत्य होता है परन्तु एपोलो के शाप से उसकी बातों पर कोई विश्वास नहीं करता।

कैसेण्ड्रा भय से चिल्लाई :

"मैं कहाँ हूँ? यह किसका घर है?"

वृद्ध बोले :

"यह एट्रिअस के प्रसिद्ध पुत्र यशस्वी एगैमैम्नौन का महल है जहाँ तुम खड़ी हो।"

"नहीं नहीं...." कैसेण्ड्रा चिल्लाई, "यह तो वह घृणित स्थान है जिसे देवता भी घृणा से देखते हैं। यहाँ मनुष्यों की हत्या होती है....देखो यहाँ की भूमि रक्तपात से लाल हो उठी है!"

वृद्धों ने भयभीत होकर एक दूसरे को देखा। यह परदेशी स्त्री उन सब पुरानी बातों को कैसे जानती है। वह आश्चर्यचकित रह गये और तभी फिर वह चिल्लाई "यहाँ तो मृत्यु की यातना में बच्चे चिल्ला रहे हैं....चीख रहे हैं....यहाँ तो पिता ने अपने बच्चों को मार कर उनके मांस से दावत खाई थी....घृणित

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्थान है यह....।" उसने घृणा से थूक दिया

वृद्धों ने सुना। उनका भय अब आतंक बन गया। थाईसिटीस के काल में हुई उस इतनी पुरानी घटना को भी जानती है यह विचित्र स्त्री। उनका आश्चर्य द्विगुणित हो गया। कैसेण्ड्रा अब भविष्य बताने लगी, उसने कहा : "आज ही दो मौतें और इस अपवित्र स्थान में होने वाली हैं....उनमें से एक मेरी होगी....परन्तु मैं मरने को तैयार हूँ! मैं मरना चाहती हूँ," इतना कह कर वह वेगपूर्वक अंदर जाने को मुड़ी। परन्तु उन वृद्धों ने उसे रोकना चाहा। कैसेण्ड्रा ने उनसे अपने आपको छुड़ा लिया और एकदम अंदर चली गई। वह दरवाजा फिर बंद हो गया। वह दरवाजा आज एगैमैम्नौन और कैसेण्ड्रा के लिये हमेशा के लिये बंद हो गया था।

अधिक देर नहीं बीती थी कि अंदर से भयानक स्वर निकला :

"आह! मैं मरा....आह! मुझे मार डाला!" वृद्धों ने बाहर वह डरावनी आवाज़ सुनी जो गूँज बनकर सारे महल में फैल चुकी थी। चारों ओर भगदड़ मच गई थी। दास-दासियाँ बेतहाशा भाग रहे थे। वृद्ध उस स्वर को पहचानते थे। उनका हृदय भय से थर्रा गया। और तभी एक स्त्री-कंठ भया-तुर कंठ से चीख उठा। फिर एकदम नीरवता फैल गई। कैसेण्ड्रा का कहा सत्य हो चुका था।

उसी समय द्वार खुला और रानी क्लाईमैंस्ट्रा हाथ में रक्तरंजित खड्ग लेकर बाहर निकली। उसका मुख, हाथ तथा तमाम वस्त्र ताजा रक्त से भींग रहे थे। परन्तु वह अविचलित थी और शांत परन्तु कठोर स्वर से बोली :

"मेरा पति वह देखो....," उसने तलवार उठाकर इशारा करते हुए कहा, "....मरा पड़ा है...मैंने उसे मार डाला है। वह दुष्ट था। और उसकी उस नई प्रेमिका का भी मैंने अंत कर दिया है....अब मैं निष्कंटक होकर तुम लोगों पर राज्य करूँगी।"

सभी ने वह निर्भीक वचन सुने। क्लाईमैंस्ट्रा तनिक भी चिंतित या घब-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राई प्रतीत नहीं हो रही थी। अपने विचारों में वह हत्यारी नहीं थी। उसने तो अपनी पुत्री के हत्यारे को दंड दिया था। फिर भला वह क्यों डरती या घबराती ?

पीछे से उसका प्रेमी ईगिस्थस बाहर आया और उसके बगल में खड़ा हो गया। लोगों ने देखा वह जोड़ी कितनी सुंदर थी परन्तु कितना रक्त था उन दोनों के सिरों पर। उन्होंने सोचा : कितने भयंकर हैं ये दोनों जो आनंद-पूर्वक खड़े हैं जैसे कुछ हुआ ही न हो। अभी-अभी एगैमैम्नौन की हत्या करके आये हैं। और तभी रानी फिर बोली :

"वह खाना खा रहा था उस समय हम दोनों ने मिलकर उसको मार डाला। हमने कोई हत्या नहीं की है बल्कि एक हत्यारे पिता से अपनी पुत्री का बदला लिया है। जो मरने के योग्य था मार डाला गया है। कैसेण्ड्रा ! वह कुतिया अपने प्रेमी के लाश पर स्वयं मरने चली आई थी। उसे भी हमने वहीं मार डाला। वह देखो दोनों मरे पड़े हैं...."

लोग भौचक्का खड़े थे। क्लाईमैंस्ट्रा अब अपने प्रेमी ईगिस्थस को संबोधन करके बोली :

"हे प्रियतम अब हमने सारे कंटक हटा दिये हैं। अब हम शांतिपूर्वक इस देश पर राज्य करेंगे....अब हत्याओं का अभिशाप इस घर से समाप्त हो गया है...."

उसने उसकी कमर में हाथ डाल दिये और उसे लेकर वह महल के अंदर घुस गई। वृद्ध भय से थर्रा गये।

क्लाईमैंस्ट्रा और ईगिस्थिस अब अखंड विलास करने लगे। एगैमैम्नौन मारा जा चुका था। अब कौन था जो उनके स्वच्छन्द मार्ग में रोड़ा अटका सकता। क्लाईमैंस्ट्रा के दो संतानें और थीं। पुत्री इलैक्ट्रा तो वहीं रहती थी परन्तु छोटा पुत्र ओरेस्टीस पहिले से ही अन्यत्र पल रहा था। क्लाईमैंस्ट्रा और उसके प्रेमी को तनिक भी नहीं सूझा कि यही ओरेस्टीस उनके लिये कितना घातक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साबित होगा। क्लाईमैंस्ट्रा तो यही चाहती थी कि एगैमैम्नौन की सारी संतानों का सफाया कर दिया जाय पर ईगिस्थस उस मासूम लड़की इलैक्ट्रा के खून से अपने हाथ रंगना नहीं चाहता था।

ओरेस्टीस ने अपने पिता की हत्या का समाचार सुन लिया था। परन्तु वह अभी छोटा था। इधर इलैक्ट्रा उसी घर में रहती थी और अपने माता और उस पर पुरुष के विलास और रँगरेलियाँ रात-दिन कुढ़कर देखा करती थी। उसका हृदय बदले की भावना से भर उठा था। वह प्रतीक्षा कर रही थी कि भाई जवान होकर आवे और पिता की हत्या का बदला ले। परन्तु अपनी ही माता की हत्या का विचार उसे साथ ही साथ कचोटता था। वह कुछ भी निश्चित नहीं कर पाती थी। अपने पिता को बहुत चाहती थी और उसका बदला अब उसे अपनी माता को मरवा कर लेना था। कितनी वीभत्स यंत्रणा थी। पिता तो मर ही गया और माता भी मारती थी। उसका प्रेमी तो निर्दोष था। उसने तो अपने हाथ से एगैमैम्नौन को नहीं मारा। परन्तु फिर विचार आता 'उसी से प्रेम होने के कारण ही तो उस स्त्री ने अपने पति को मारा था.... अवश्य वह भी अपराधी है। वह उसे भी मरवा डालेगी।' इन्हीं विचारों में खोई हुई इलैक्ट्रा बड़ी हो रही थी। क्लाईमैंस्ट्रा का व्यवहार उसके प्रति बहुत ही रूखा रहता था परन्तु वह तो अपने दिन निकाल रही थी। क्लाईमैंस्ट्रा स्वच्छंद रूप से ईगिस्थस के साथ रमण करती और अपनी पुत्री के सामने ऐसा करते उसे तनिक भी संकोच नहीं होता था। इलैक्ट्रा मन ही मन उसके विरुद्ध षड्यंत्र करने की सोचा करती और साथ ही साथ वह उसके रूप और यौवन की प्रशसा किये बिना नहीं रह सकती थी क्योंकि क्लाईमैंस्ट्रा अब भी अत्यंत सुंदरी थी।

ओरेस्टीस जब जवान हुआ तो उसके मन में भी इलैक्ट्रा की भाँति विचारों का द्वंद्व होने लगा। पिता की हत्या का बदला लेना पुत्र का कर्त्तव्य था परन्तु माता की हत्या करने से तो मनुष्य को मनुष्य और देवता सभी घृणा करने लगते हैं। उसने सोचा—वह यदि एक उत्तम कार्य करता हो तो वही कार्य माता के पक्ष में निंदनीय बन जाता है। कैसी विडंबना थी कि उसे एक न एक पाप में फँसना ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पड़ता है। यदि माता पर वह प्रहार न कर सके तो पिता की हत्या का बदला नहीं लिया जा सकता और यह एक पुत्र के लिये सबसे बड़ा अभिशाप है। वह कुछ भी निश्चय नहीं कर पाता था। उसके मन में यह बात घुन बनकर लग गई। इस विषय के अतिरिक्त वह और कुछ सोच भी नहीं पाता था। आखिर उसने डैल्फी जाने का निश्चय किया। वहाँ जाकर वह पवित्र देवता एपोलो से इसका हल पूछेगा। एपोलो दयालु है, वह अवश्य उसे उसका कर्त्तव्य और सही रास्ता दिखलायेगा। वह डैल्फी चल दिया। विचार तूफ़ानों की भाँति उसके अंदर घुमड़ रहे थे।

उसने जाकर एपोलो के आल्टर पर सिर झुकाया और अपना मंतव्य कह कर प्रार्थना की। वह नतशिर होकर ध्यानमग्न हो गया और तभी एपोलो ने उसे मेघ गंभीर ध्वनि से स्पष्ट उत्तर दिया। वह बोला :

"हे ओरेस्टीस ! खून का बदला खून से लो। उन दोनों को मार डाल क्योंकि उन्होंने एक ही समय में दो मारे थे। एगैमैम्नौन और कैसेण्ड्रा के खून पर अब तू क्लाईमैंस्ट्रा और ईगिस्थस का खून बहा दे। नये खून से पुराना खून धुल जायगा।"

ओरेस्टीस ने सुना। वह दिल थाम कर वहीं बैठ गया। अब उसका पथ निश्चित हो गया था। अब उसे अपने उसी शापग्रस्त मकान में एक बार फिर खून बहाना होगा। वह आतंक से काँपने लगा। उसने सोचा, 'अब उसे अपनी माता को मारना ही होगा। कैसे मार सकेगा वह उसे ? वह जिसने उसे गर्भ में रखकर पाला था, वह जिसके स्तनों में मुँह लगाकर उसने उसके जीवन का अंश खींचा था। नहीं....नहीं....वह उसे कदापि नहीं मार सकेगा। उस पर उसका हाथ कभी नहीं उठ सकेगा....' परन्तु फिर विचार आया 'परन्तु बाप का बदला....एपोलो की आज्ञा।' उसने अपने भावावेश को दबाया। वह कठोर दिखाई देने लगा। उसके हृदय में भीषण द्वंद्व मच रहा था और मुख पर दुख झलकने लगा। उसने अपनी निर्बलता और कोमल विचारों को दबा लिया। 'वह अवश्य क्लाईमैंस्ट्रा और उसके उस घृणित प्रेमी की हत्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साबित होगा। क्लाईमैंस्ट्रा तो यही चाहती थी कि एगैमैम्नौन की सारी संतानों का सफाया कर दिया जाय पर ईगिस्थस उस मासूम लड़की इलैक्ट्रा के खून से अपने हाथ रंगना नहीं चाहता था।

ओरेस्टीस ने अपने पिता की हत्या का समाचार सुन लिया था। परन्तु वह अभी छोटा था। इधर इलैक्ट्रा उसी घर में रहती थी और अपने माता और उस पर पुरुष के विलास और रँगरेलियाँ रात-दिन कुढ़कर देखा करती थी। उसका हृदय बदले की भावना से भर उठा था। वह प्रतीक्षा कर रही थी कि भाई जवान होकर आवे और पिता की हत्या का बदला ले। परन्तु अपनी ही माता की हत्या का विचार उसे साथ ही साथ कचोटता था। वह कुछ भी निश्चित नहीं कर पाती थी। अपने पिता को बहुत चाहती थी और उसका बदला अब उसे अपनी माता को मरवा कर लेना था। कितनी वीभत्स यंत्रणा थी। पिता तो मर ही गया और माता भी मारती थी। उसका प्रेमी तो निर्दोष था। उसने तो अपने हाथ से एगैमैम्नौन को नहीं मारा। परन्तु फिर विचार आता 'उसी से प्रेम होने के कारण ही तो उस स्त्री ने अपने पति को मारा था. . . . अवश्य वह भी अपराधी है। वह उसे भी मरवा डालेगी।' इन्हीं विचारों में खोई हुई इलैक्ट्रा बड़ी हो रही थी। क्लाईमैंस्ट्रा का व्यवहार उसके प्रति बहुत ही रूखा रहता था परन्तु वह तो अपने दिन निकाल रही थी। क्लाईमैंस्ट्रा स्वच्छंद रूप से ईगिस्थस के साथ रमण करती और अपनी पुत्री के सामने ऐसा करते उसे तनिक भी संकोच नहीं होता था। इलैक्ट्रा मन ही मन उसके विरुद्ध षड्यंत्र करने की सोचा करती और साथ ही साथ वह उसके रूप और यौवन की प्रशसा किये बिना नहीं रह सकती थी क्योंकि क्लाईमैंस्ट्रा अब भी अत्यंत सुंदरी थी।

ओरेस्टीस जब जवान हुआ तो उसके मन में भी इलैक्ट्रा की भाँति विचारों का द्वंद्व होने लगा। पिता की हत्या का बदला लेना पुत्र का कर्त्तव्य था परन्तु माता की हत्या करने से तो मनुष्य को मनुष्य और देवता सभी घृणा करने लगते हैं। उसने सोचा—वह यदि एक उत्तम कार्य करता हो तो वही कार्य माता के पक्ष में निंदनीय बन जाता है। कैसी विडंबना थी कि उसे एक न एक पाप में फँसना ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पड़ता है । यदि माता पर वह प्रहार न कर सके तो पिता की हत्या का बदला नहीं लिया जा सकता और यह एक पुत्र के लिये सबसे बड़ा अभिशाप है । वह कुछ भी निश्चय नहीं कर पाता था । उसके मन में यह बात घुन बनकर लग गई । इस विषय के अतिरिक्त वह और कुछ सोच भी नहीं पाता था । आखिर उसने डैल्फी जाने का निश्चय किया । वहाँ जाकर वह पवित्र देवता एपोलो से इसका हल पूछेगा । एपोलो दयालु है, वह अवश्य उसे उसका कर्त्तव्य और सही रास्ता दिखलायेगा । वह डैल्फी चल दिया । विचार तूफ़ानों की भाँति उसके अंदर घुमड़ रहे थे ।

उसने जाकर एपोलो के आल्टर पर सिर झुकाया और अपना मंतव्य कह कर प्रार्थना की । वह नतशिर होकर ध्यानमग्न हो गया और तभी एपोलो ने उसे मेघ गंभीर ध्वनि से स्पष्ट उत्तर दिया । वह बोला :

"हे ओरेस्टीस ! खून का बदला खून से लो । उन दोनों को मार डाल क्योंकि उन्होंने एक ही समय में दो मारे थे । एगैमैम्नौन और कैसेण्ड्रा के खून पर अब तू क्लाईमैस्ट्रा और ईगिस्थस का खून बहा दे । नये खून से पुराना खून धुल जायगा ।"

ओरेस्टीस ने सुना । वह दिल थाम कर वहीं बैठ गया । अब उसका पथ निश्चित हो गया था । अब उसे अपने उसी शापग्रस्त मकान में एक बार फिर खून बहाना होगा । वह आतंक से काँपने लगा । उसने सोचा, 'अब उसे अपनी माता को मारना ही होगा । कैसे मार सकेगा वह उसे ? वह जिसने उसे गर्भ में रखकर पाला था, वह जिसके स्तनों में मुँह लगाकर उसने उसके जीवन का अंश खींचा था । नहीं. . . .नहीं. . . .वह उसे कदापि नहीं मार सकेगा । उस पर उसका हाथ कभी नहीं उठ सकेगा. . . .' परन्तु फिर विचार आया 'परन्तु बाप का बदला. . . .एपोलो की आज्ञा ।' उसने अपने भावावेश को दबाया । वह कठोर दिखाई देने लगा । उसके हृदय में भीषण द्वंद्व मच रहा था और मुख पर दुख झलकने लगा । उसने अपनी निर्बलता और कोमल विचारों को दबा लिया । 'वह अवश्य क्लाईमैस्ट्रा और उसके उस घृणित प्रेमी की हत्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करेगा। वह उसके हाथ से कभी न बच पावेंगे।'

ओरेस्टीस अब अपने पिता के घर चल पड़ा। वह उस घर में वर्षों पहिले रहा था जब वह बच्चा था तब कितना अच्छा वातावरण था वहाँ। उसने सोचा अब कितनी विकट परिस्थिति उपस्थित है। उसके साथ उसका एक दूर का भाई पाईलेडीस भी चला जो उसको प्रिय भी था। वह अभी विवाहित नहीं था। ओरेस्टीस से बहुत प्रेम करता था। छुटपन से वह उसी के साथ पला था।

इलैक्ट्रा को यह भी मालूम न था कि उसका भाई कहाँ रहता था। वह चाह कर भी उसके पास संदेश नहीं भेज सकती थी। अब जब कि वह जवान हो गया था उसे स्वयं ही चाहिये था कि वह आकर अपने पिता का बदला लेता। वह अब उद्विग्न रहा करती थी। एक दिन वह अपने पिता की कब्र पर गई। वहाँ बैठकर वह खूब रोई। तत्पश्चात् वह चिलायी :

"हे पिता! ओरेस्टीस को शीघ्र घर बुलाओ।" उसी समय ओरेस्टीस अपने साथ युवक पाईलेडीस को लेकर वहाँ प्रकट हुआ। उसने अपना परिचय दिया और अपनी माता का समाचार इलैक्ट्रा से पूछा।

इलैक्ट्रा उसे देखते ही उससे चिपट गई। वह बोली :

"हे ओरेस्टीस मैं तुम्हें देखते ही पहिचान गई थी क्योंकि तुम्हारा मुख बिल्कुल मेरे पिता जैसा है। हे भाई! तुम ठीक समय पर घर लौट आये हो। इतने वर्षों से मैंने तुम्हारी प्रतीक्षा में अपार कष्ट सहे हैं। मैं किसी से प्रेम नहीं कर सकी। अब जब तुम आ गये हो मैं तुम पर अपने आप को न्यौछावर करने को तैयार हूँ...."

ओरेस्टीस ने उसे स्नेह से उठाकर हृदय से लगा लिया। थोड़ी देर सभी मौन रहे। तत्पश्चात् इलैक्ट्रा बोली :

"माता के बारे में क्या पूछते हो? वह हमारी माता अवश्य है परन्तु उसके समान पापिनी स्त्री शायद संसार भर में और कहीं नहीं मिलेगी। वह हमारे पिता की हत्यारी नित्य अपने प्रेमी के साथ राग-रंग मनाया करती है। वह मुझसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और तुमसे अत्यंत घृणा करती है। ईफ़िग्निआ से वह अवश्य प्रेम करती थी। उसी की मृत्यु के कारण वह पिता एगैमैम्नौन से विमुख हो गई थी और तभी उसने एक परपुरुष से अनुचित संबंध स्थापित किया था। परन्तु वह हमें बिल्कुल नही चाहती।"

ओरेस्टीस ने तब उसे एपोलो की आज्ञा कह सुनाई। क्लाईमैंस्ट्रा की हत्या की बात कहते-कहते वह लड़खड़ा गया। परन्तु पाईलेडोस ने उसका साहस बँधाया और इलैक्ट्रा ने भी हत्या करने की अनुमति दी। तीनों ने मिलकर वहीं क्लाईमैंस्ट्रा और ईगिस्थस की हत्या की योजना बनाई। ओरेस्टीस और पाईलेडीस सीधे महल को जायँगे और ओरेस्टीस की मृत्यु का समाचार लाने वाले दूत बनकर अपना परिचय देंगे। इलैक्ट्रा वहाँ उनकी प्रतीक्षा करेगी। यह उन्हें ज्ञात था कि क्लाईमैंस्ट्रा और ईगिस्थस उस समाचार को सुनकर अवश्य ही बहुत खुश होंगे। क्योंकि अब केवल उसी एक का भय उन्हें बना रहता था। वह उन्हें शुभ संवाददाता समझकर अंदर घुसा लेंगे, फिर तो सब कुछ आसान हो जायगा। ओरेस्टीस को अपनी तलवार का भरोसा था। वह उन दोनों पापियों को मार डालेगा।

योजना सफल हो गई। वे महल के अंदर घुसा लिये गये। रात्रि के गहरे सन्नाटे में महल के अंदर इलैक्ट्रा के बताये मार्ग पर ओरेस्टीस और पाईलेडीस नंगी तलवारें लेकर चुपचाप बिना आहट किये क्लाईमैंस्ट्रा और ईगिस्थस के शयनागार की ओर बढ़े। उसी समय क्लाईमैंस्ट्रा नींद न आने के कारण अपने बगल में सोये हुए प्रेमी को छोड़कर बाहर निकली। न उसे मालूम था कि उसकी हत्या करने कोई आ रहा था न ओरेस्टीस को ही पता था कि शैया पर वह नहीं मिलेगी। उसने धीरे से किवाड़ खोला और वह बाहर आई। उसी समय एक दास वहाँ भागता हुआ आया और अपनी स्वामिनी के सम्मुख आकर उसने धीरे से कहा :

"धोखा ! हे स्वामिनी धोखा हुआ है। शत्रु महल के अंदर घुस आये हैं।"

"कौन है ?" क्लाईमैंस्ट्रा ने घबराकर पूछा। दास गिड़गिड़ाया और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काँपता हुआ बोला :

"ओरेस्टीस...." उसने अपना वाक्य पूरा भी नहीं किया था कि शयन कक्ष में से ईगिस्थस की भयानक चीख सुनाई दी। ओरेस्टीस ने उसे मार डाला था। क्लाईमैंस्ट्रा समझ गई उसका प्रेमी मर चुका था। परन्तु वह बड़ी साहसी स्त्री थी। उसने ओरेस्टीस से युद्ध करने की ठानी। वह उस दास से बोली :

"जल्दी जाकर मेरे लिये एक युद्ध का फरसा ले आ," दास भागा और निमिष मात्र में अस्त्र ले आया। क्लाईमैंस्ट्रा हाथ में उस विकराल फरसे को लेकर युद्ध को उद्यत हो गई। परन्तु तभी उसे एक दूसरी ही तरकीब सूझी। उसने फरसा नीचा कर लिया। उसी समय किवाड़ खुला और ओरेस्टीस पाईलेडीस सहित बाहर आया। वह कठोर लग रहा था। उसकी तलवार खून से रँगी हुई थी और उसके कपड़े और अंग पर भी रक्त बिखरा हुआ था। क्लाईमैंस्ट्रा जानती थी वह रक्त किसका था। ओरेस्टीस पर खून सवार था। वह उसी रक्तरंजित तलवार को लेकर उसकी ओर बढा। जब वह बिल्कुल पास आ गया तो क्लाईमैंस्ट्रा चिल्लाई :

"ठहर जा पुत्र! ठहर जा!" और उसने अपने वस्त्र ढीले करके अपना वक्षस्थल नग्न कर लिया फिर बोली : "हे पुत्र! मैं तेरी माँ हूँ। मेरे इन स्तनों को देख जब तेरे मुँह में दाँत भी न थे तब तूने इन्हीं में से दूध पीकर अपने को बलिष्ठ बनाया था। इन्हीं में से तूने मेरी शक्ति खींची थी...." और वह उदार ममतामयी बनी खड़ी रही। उसे पूर्ण विश्वास था कि इस उपाय से वह बच जायगी।

ओरेस्टीस ने देखा उसके सामने उसकी माता खड़ी थी। ये वही स्तन थे जिन्हें मुँह से चूस कर वह इतना बड़ा हुआ था। कैसे मारे वह उसी को....नहीं वह उसे नहीं मारेगा....वह उसकी माता थी। उसने यदि पाप किया, यदि अपने पति को मार डाला तो देवता उसे दंड देंगे। भला ओरेस्टीस अपने हाथ अपनी माता के खून से क्यों रँगे। वह डगमगा गया। उसने घबरा कर पाईलेडीस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की ओर देखा जो शांत खड़ा था, उसने उसे पकड़ कर झँझोर डाला और उससे पूछा :

"यह मेरी माता है....क्या मैं इसे छोड़ सकता हूँ ? नहीं मैं इसकी हत्या नहीं कर सकता।"

"तुझे इसे मारना ही होगा ओरेस्टीस !" अविचलित स्वर से उसने उत्तर दिया, "एपोलो की आज्ञा का उल्लंघन नहीं हो सकता।"

"तब मैं मारूँगा," दृढ़ स्वर से ओरेस्टीस बोला। क्लाईमैस्ट्रा ने सुना और उसकी आँख के सामने अंधकार छा गया। उसने समझ लिया कि अब वह गई। मृत्यु आ गई थी। उसने अनुनय किया। वह बोली :

"हे पुत्र ! मुझे लगता है कि तू अपनी ही माता की हत्या पर उतारू है।"

परन्तु ओरेस्टीस पत्थर का बन चुका था। वह गर्जा : "अंदर चलो।"

क्लाईमैस्ट्रा चुपचाप उसके साथ अंदर चली गई। वह अत्यंत डरी हुई थी। उसके तमाम अस्त्र खाली चले गये थे। वह चुपचाप एक ओर खड़ी हो गई थी। ओरेस्टीस ने तलवार उसके हृदय में घुसा दी।

जब वह बाहर आया किसी को कुछ नहीं पूछना था। दास-दासियाँ सब एकत्रित हो गये थे जो अब बाहर प्राङ्गण में खड़े थे। वे सब जान गये थे कि अब वही उनका स्वामी था। उन्होंने उसके सामने सिर झुकाये और उसकी अभ्यर्थना की। पाईलेडीस और इलैक्ट्रा ने उसकी ओर प्रशंसनीय दृष्टि से देखा। परन्तु वह शून्य दृष्टि से दूर....दूर कहीं अनंत की ओर देख रहा था। वह अत्यंत गंभीर था। उसके मुख पर विषाद और भय की रेखाएँ स्पष्ट झलक रही थीं। उसका हृदय क्रंदन कर रहा था। उसने अपनी माता की हत्या की थी। वह जघन्य था जिसे संसार और स्वर्ग में कभी क्षमा नहीं मिल सकेगी ! उसका सारा नशा उतर चुका था। अब वह लुटा-पिटा सा खड़ा था और माता का खून उसके सिर पर चढ़ चुका था। वह सोचने लगा : "कहाँ था इन हत्याओं का अंत। उस घर में....उस शापग्रस्त घर में अब तक जाने कितनी हत्याएँ हो चुकी थीं....परन्तु अब भी उनका अंत नहीं आता था। उसने अभी अपनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माता को आवेश में मार डाला है. . . .वह पापी है. . . .वह ज़घन्य है. . . वह नीच है. . . ." और तभी वह भयानक स्वर से चीख उठा। उसे चारों ओर भयानक आकृतियाँ दिखाई देने लगीं। भयानक काली-काली स्त्रियाँ! जिनके बड़े-बड़े दाँत आगे निकले हुए थे। वह उसे देखकर वीभत्स रूप से अट्टहास कर रहीं थीं। उनके सिरों पर केशों के स्थान पर विषधर फुफकार रहे थे. . . .वह बुरी तरह चीखने लगा। सेवकों ने उसे घेर लिया। इलैक्ट्रा और उसका प्रिय मित्र उसके बिल्कुल निकट आ गये और उन्होंने उससे चीखने का कारण पूछा। सभी आतंकित हो उठे थे। ओरेस्टीस चिल्लाया :

". . . .वह देखो भयानक दानवियाँ मुझे देखकर खाने को लपक रही हैं . . . .उनके नुकीले दाँत. . . .आह! उनसे मेरा बचना असंभव है. . . .वह देखो. . . .वे मुझे देखकर आगे बढ़ रही हैं. . . ."

लोगों ने चारों ओर देखा। वहाँ कुछ नहीं था। उन्होंने उससे कहा कि वहाँ कुछ भी तो नहीं था। उसे भ्रम हो गया है। परन्तु ओरेस्टीस की चीख बढ़ती ही जाती थी। वह चिल्लाया ; "नहीं. . . .नहीं! . . . .भ्रम नहीं है. . . .वह देखो प्रत्यक्ष भयानकता से वह अट्टहास कर रही है. . . .वह. . . . वह. . . ."

सभी उसकी उस विचित्र दशा को देखकर हैरान हो रहे थे। किसी की कुछ समझ में नहीं आ रहा था। पाइलेडीस समझ गया। वह बोला :

"इस पर हत्या चढ़ गई है. . . ."और फिर वह चिल्लाया :

"हे एपोलो! मेरे प्रियतम को यह क्या हो गया? सब तेरी ही आज्ञा से तो हुआ है।"

ओरेस्टीस फिर चीखा, "मुझे छोड़ दो. . . .मुझे छोड़ दो।"

सेवकों ने उसे पकड़ लिया परन्तु वह छूटने के लिये भयंकर संघर्ष करने लगा। उसने भीम बल लगाकर अपने को छुड़ा लिया और महल के बाहर भाग गया। उन भयानक स्त्रियों की आकृतियाँ उस पर अब भी अट्टहास करती हुई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसे घेर कर चल रही थीं। वह जिधर भी निगाह घुमाता था उधर ही वह उसे दिखाई देती थीं।

ओरेस्टीस अकेला पागलों की भाँति देश-देश भटकने लगा। वह भीषण यंत्रणा भोगता हुआ रहता था और वह वीभत्स छायाएँ उसे पलभर भी नहीं छोड़ती थीं। उसका जीवन घोर नरक हो गया था। वह इतना उकता गया था कि मरना उसे सुखकर प्रतीत होता था। परन्तु उस अवस्था में भी वह आत्महत्या न कर सका। कभी-कभी जब वह आकाश की ओर देखता तो उसे उसकी माता की छाया दिखाई देती और तब वह बुरी तरह घबरा जाता था। उसके जीवन की शांति उससे हमेशा-हमेशा के लिये छिन गई थी।

वर्षों बीत गये। एक दिन ओरेस्टीस स्वदेश वापिस आया। वह बिल्कुल बदल गया था। वह उजड़ा-उजड़ा एकदम क्षीण हो गया था। कोई उसे देखकर नहीं पहचान सका। वह सुंदर स्वस्थ पुरुष अब क्षीणकाय और दुर्बल हो गया था। परन्तु उसकी मुखाकृति देखकर सभी प्रभावित हुए। वह अत्यंत गंभीर हो गया था। वह बोला :

"मैंने जीवन भर यातना भोगी हैं परन्तु इनमें भी मैंने जीवन का सब से बड़ा सत्य पाया है मैंने जघन्य पाप किया था परन्तु पश्चात्ताप से मेरी आत्मा अब धुलकर साफ़ हो गई है. . . .मुझे देवता एपोलो ने आज्ञा दी है कि मैं ऐथेना के पास एथेंस जाकर अपने पाप का उसके सम्मुख प्रायश्चित्त करूँ. . . .मैं वहीं जा रहा हूँ क्योंकि इतने समय में मैंने आत्मबल एकत्रित कर लिया है। मैं उस दिव्यज्योति से चमकने वाली देवि के सम्मुख अपना अपराध स्वीकार करने की क्षमता रखता हूँ।"

जब वह ऐथेना के मंदिर में पहुँचा उसके साथ स्वयं एपोलो गया। वह बोला :

"ओरेस्टीस से मैंने ही क्लाईमैंस्ट्रा और ईगिस्थस की हत्या करने को कहा था. . . .उसका उत्तरदायित्व मुझ पर है. . . .क्योंकर यह उसका दंड भोगे ?"

ऐथेना ने ओरेस्टीस से कहा :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हे एगैमैम्नौन के पुत्र! तुम्हारा अपराध घातक था परन्तु तुम्हारे प्रायश्चित ने तुम्हारा कलंक अब धो दिया है। आज से मैं संसार में यह प्रतिष्ठा निर्धारित करती हूँ कि मनुष्य अंतःकरण की प्रायश्चित्त से अपने भारी से भारी पाप के कलंक को भी धो सकेगा. . . .अब संसार में दुख देने वाली दानवी छायाओं (फ्यूरीज़) की कोई आवश्यकता नहीं रही है. . . .वह इसी क्षण से मेरी आज्ञा से लोप हो जायँ।"

और ओरेस्टीस को डराने और यंत्रणा देने वाली छायाएँ एकदम गायब हो गईं। वह अब दुष्टा नहीं रही बल्कि संसार का कल्याण करने वाली सौम्य देवियाँ बन गईं। दुखी और अपाहिजों के सेवा का भार तभी से उन्होंने अपने ऊपर ले लिया।

ओरेस्टीस अब शांत हो गया। उसका हृदय पवित्र हो चुका था। अपना शेष जीवन इसने अब लोक कल्याण में ही लगा दिया। अब उस शापग्रस्त घर से हत्याओं का वह अभिशाप सदा के लिये हट गया था। प्राचीन राजा एट्रिअस का घर (महल) अब हत्याओं का केंद्र नहीं रहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ओर्सिटीस की मुक्ति

हैलन को ट्रौय से वापस लाने के लिये जब मैनीलौस, एगैमैम्नौन इत्यादि अऊलिस में जहाजी बेड़ा लेकर जाने को तैयार हो रहे थे कि वायु बिल्कुल शांत हो गई। बिना हवा के न पाल ताने जा सकते थे और न यात्रा हो सकती थी। कुछ दिनों तक तो उन्होंने अनुकूल हवाओं के चलने की प्रतीक्षा की परन्तु न वह चलनी थीं न चली। एगैमैम्नौन के सैनिकों ने भूल से देवी ऐर्टमिस के किसी प्रिय जंतु का शिकार खेल लिया था। वह क्रुद्ध हो उठी थी और उसी ने हवाओं को रोक दिया था ऐसा उनके ज्योतिषी ने अंत में उन्हें बतलाया। देवी को प्रसन्न करने का अब एक ही मार्ग था और वह था ईफ़िग्निआ का बलिदान। एगैमैम्नौन ने सुना और वह दुख से पागल हो उठा था। ईफ़िग्निआ उसकी सुंदर जवान पुत्री थी और वह उस कुमारी को किसी भी हालत में मारना नहीं चाहता था। परन्तु वह अपने हठ को अधिक दिनों तक नहीं साध सका। उसे पुत्री की बलि देनी ही पड़ी। अपने विश्वस्त अनुचरों द्वारा उसने माईसीनी से ईफ़िग्निआ को यह कहकर बुलवाया कि वह उसका विवाह ग्रीस के सबसे बड़े योद्धा एकिलीस से करने वाला था। उसने तो उसे अकेले ही बुलाया था परन्तु छिप कर पीछे से ईफिग्निआ की माता क्लाईमैंस्ट्रा भी वहाँ आ गई थी। एगैमैम्नौन को उसके आने का ख्याल तनिक भी नहीं था। उसने उसके आते ही उसे सैनिकों को दे दिया कि वह उसे ले जाकर ऐर्टमिस के पुजारियों को दे दें।

इफ़िग्निआ जो उल्लसित हृदय से एकिलीस से विवाह करने आई थी अब मृत्युदंड पाकर विह्वल हो उठी। वह रोई और इतनी रोई कि पाषाण भी पिघल गये परन्तु वज्र हृदय एगैमैम्नौन ने उसकी करुण पुकार नहीं सुनी। क्लाईमैंस्ट्रा उस हत्या से अपनी प्यारी पुत्री को बचाने में असमर्थ थी परन्तु जब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सैनिक इफ़िग्निआ को घसीट कर ले जाने लगे तो उसने उन्हें रोकना चाहा। परन्तु इफ़िग्निआ जानती थी कि यह सब व्यर्थ था। उसने अपनी माँ को समझा कर कहा कि अब उसका बीच में पड़ना उल्टे कलह ही मोल लेना था। वह उससे अंत में बोली :

"हे माता, अच्छा हो यदि तुम यहीं से माईसीनी लौट जाओ क्योंकि हम दोनों का इसी में भला है।" बात भी ठीक थी।

रोती हुई क्लाईमैंस्ट्रा वापस चली आई। तीसरे ही दिन एक दूत भागा हुआ उसके पास माईसीनी आया। उसे देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। ऐसा क्या था जो अब बचा था। क्या यह मूर्ख उसे उसकी प्यारी पुत्री की मृत्यु का समाचार देने आया है? उसने सोचा। परन्तु जब वह पास आया तो उसने देखा कि वह अत्यधिक प्रसन्न था। तभी वह चिल्लाया :

"शुभ संवाद है देवी! कुमारी इफ़िग्निआ नहीं मारी जा सकी...."

सुनकर क्लाईमैंस्ट्रा का सारा दुख हवा की तरह जाता रहा। उसे उस दूत के शब्दों और अपने कानों पर विश्वास नहीं आ रहा था। वह झट से बोल उठी :

"कहाँ है मेरी पुत्री? कहाँ है वह?"

दूत ने उत्तर दिया : "कहाँ है यह तो हमें किसी को भी मालूम नहीं है.... परन्तु यह निश्चय है कि वह मारी नहीं जा सकी।"

"क्या बकता है?" क्लाईमैंस्ट्रा ने शंकित होकर पूछा। तब दूत ने उसे सारा हाल बतलाया। वह बोला :

"....उन्होंने सुंदरी इफ़िग्निआ को कमर तक नंगी करके आल्टर से बाँध दिया था। उसके उस सुंदर रूप को देखकर सभी के हृदय द्रवित हो उठे थे। सभी सोच रहे थे कि उसकी बलि चढ़ाना पैशाचिक कर्म था। भला देवी ऐर्टमिस इतनी क्रूर कैसे हो सकी कि उसने उस सुंदरी को मरवा डालने में ही प्रसन्नता प्राप्त करने की सोची? पुजारी स्वयं विचलित हो उठे थे। कोई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं चाहता था कि उस अपरूप यौवना कुमारी की इस प्रकार अमानुषिक हत्या हो। जब पुजारी ने अपना बड़ा खड्ग उसके मारने को उठाया तो कोई उस हत्या को नहीं देख सका। सभी ने अपने सिर नीचे कर लिये। उसी क्षण खड्ग के गिरने का शब्द हुआ और साथ ही पुजारी के मुँह से चीख निकल गई। सभी ने साश्चर्य देखा....और जो कुछ देखा उससे वह सब हैरान हो गये। आल्टर के पास एक हिरन पड़ा था जिसका गला कटा हुआ था। इफ़्गिनिआ गायब थी। पुजारी ने बतलाया कि जैसे ही उसका खड्ग इफ़िग्निआ की गरदन पर पड़ा वह गायब हो गई थी और जभी घबराहट के कारण उसके मुँह से चीख निकल गई थी। प्रसन्नता की लहर चारों ओर छा गई। उन्मुक्त कंठ से सभी ने तब देवी ऐर्टेमिस की जय बोली क्योंकि यह सब उसी की कृपा थी ....और तभी समुद्र पर हवाएँ छूट निकलीं; प्रत्यक्ष था कि देवी प्रसन्न हो गई थीं। ....हे रानी! तुम अब निश्चित रहो क्योंकि तुम्हारी पुत्री जीवित है। देवताओं ने उसे अपनी रक्षा में ले लिया है।"

इतना कहकर वह दूत चुप हो गया। क्लाईमैंस्ट्रा ने पहिले तो उसकी बातों का विश्वास कर लिया परन्तु फिर उसने सोचा कि हो न हो यह सब उसके दुष्ट पति एगैमैम्नौन की बनाई हुई झूठ थी कि वह अपनी पुत्री को मरवाकर भी उसके सामने निर्दोष बनना चाहता था। वह किसी भी भाँति संतुष्ट न हो सकी। उसने उसी समय यह निश्चय कर लिया कि वह एगैमैम्नौन से उसका बदला अवश्य लेगी। उसने अपनी योजना को सफल बनाने के हेतु उसी वर्ष ईगिस्थस नामक एक पुरुष से प्रेम कर लिया और उसकी प्रिया बनकर रहने लगी।

× × ×

इफ़िग्निआ को देवतागण ओलिम्पस नहीं ले गये थे। ऐर्टेमिस उसे अपने आल्टर पर नहीं मरवा सकी थी। मनुष्य के रक्त से अपना मंदिर अपवित्र नहीं कराना चाहती थी। खड्ग के नीचे से हटाकर वह उसे लेकर सीधी आकाश में उड़ गई और बहुत दूर टौरियन लोगों के देश में छोड़ आई। यह स्थान समुद्र के किनारे था और यहाँ ग्रीक लोगों के कट्टर शत्रु टौरियन लोग रहते थे जो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अत्यंत जंगली थे। उनका एक रिवाज़ था कि जब कहीं कोई ग्रीक उनकी पकड़ में आता था तो वह उसे मंदिर में बलि चढ़ा देते थे। निश्चित था कि वह इफिग्निआ को मार डालते पर ऐर्टेमिस सन्नद्ध थी। वह उस पर किसी प्रकार की विपत्ति नहीं आने देना चाहती थी। उसने उसे वहाँ अपने मंदिर की पुजारिन बनवा दिया। इफ़िग्निआ उस नये काम से अत्यधिक अप्रसन्न रहती थी क्योंकि यहाँ उसे अपने देश के लोगों को मरते देखना पड़ता था। यह बात दूसरी थी कि वह उन्हें स्वयं नहीं मारती थी परन्तु उस देश की रीति के अनुसार उसी को मंत्रादिक बोलकर बलि के सारे आयोजन करने पड़ते थे। जब वह पूरे उपचार कर लेती थी तभी टौरियन लोग पकड़े हुए ग्रीक की बलि चढ़ा देते थे। वह अपने इस कर्म से बहुत दुखी थी। वह किसी भी भाँति वहाँ से भाग जाना चाहती थी परन्तु उसके लिये ऐसा संभव नहीं था। मन मार कर वह वहीं वर्षों रही। और इस बीच उसकी आँखों के सामने हजारों ग्रीक लोग ऐर्टेमिस के आल्टर पर टौरियन लोगों के द्वारा मार डाले गये। अब वह उन अमानुषिक दृश्यों की काफी अभ्यस्त हो चुकी थी।

एक दिन एक जहाज़ आकर किनारे लगा उसमें ग्रीक लोग सवार थे। तूफ़ान द्वारा या भूले से वह जहाज़ वहाँ नहीं आया था बल्कि इरादतन वहीं वे लोग आये थे। दूर-दूर तक टौरियन लोगों की शत्रुता से ग्रीक लोग परिचित थे फिर भी जब वह जहाज़ रात्रि के अंधकार में वहीं पहुँचा और उसमें लंगर डाल दिया गया था तो यह बात कुछ विचित्र सी लग रही थी। जहाज़ के मल्लाह अपने मालिक की इस सूझ से हैरान थे।

भोर से भी पहिले दो जवान आदमी उस जहाज़ से नीचे उतरे और लुकते-छिपते वह उसी मंदिर में आये जहाँ इफ़िग्निआ रहती थी। उन्हें देखकर ही पता चल गया कि वह ऊँचे घराने के राजपुरुष थे। एक के मुख पर चिंता की रेखाएँ स्पष्ट झलक रही थीं। जब वे लोग आकर मंदिर के एक अँधेरे कोने में छिप गये तो एक ने धीरे से दूसरे से पूछा :

"यही वह मंदिर है पाईलेडीस ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हाँ ओरसिटीस ! यही वह मंदिर मालूम होता है," दूसरे ने उत्तर दिया।

उस भयानक स्थान में जहाँ ग्रीक नामक पक्षी को भी नहीं छोड़ा जाता था ओरसिटीस और पाईलैडीस का जानबूझ कर जाना अवश्य ही गूढ़ अर्थ रखता था। जब ओरसिटीस ने अपने पिता का बदला लिया था उस समय वह पशु हो गया था। उसने अपनी ही माता क्लाईमैंस्ट्रा को मार डाला था। पर तभी से खून उस पर सवार हो गया था। यातना देनेवाली विकृतात्माएँ उसके पीछे लग गई थीं जो उसे एक क्षण भी चैन नहीं लेने देती थीं। उन्होंने उसके जीवन की शांति उससे छीन ली थी। रात-दिन वह उसको डराया करती थीं; वह सारे संसार में भटकता फिरा पर उसका पीछा उन छायाओं ने नहीं छोड़ा। वह उस पर वीभत्स रूप से अट्टहास किया करती थीं; आखिरकार कई वर्ष उस दुःसह यातना को भोगने के उपरांत वह ऐथेना के पास गया और उसने दया करके उसको शांति प्रदान की। ऐथेना ने आज्ञा दी कि वह दुष्ट आत्माएँ अब उसका पीछा छोड़ दें। और तभी से वह छायाएँ हट गईं। परन्तु ओर-सिटीस को वह तमाम तो नहीं पर दो चार अब भी दिखा ही करती थीं। कई महीने बीत गये और उसकी परेशानी नहीं हटी। वह अपने जीवन से उकता गया था। आखिर एक दिन वह डैल्फी गया। उसने पवित्र और दयालु एपोलो से प्रार्थना की और वह बोला:

"ऐ सुंदर देवता। तेरे ही कहने से मैंने अपनी माता को मारा अब यदि तू ही सहायता करने में असमर्थ रहा तो संसार में मेरा कहीं ठिकाना नहीं है . . ."

एपोलो ने पुजारिन की जुबानी उत्तर दिया:

"टौरियन लोगों के देश जा और वहाँ से ऐर्टमिस की मूर्ति मंदिर से उठा ला। जब तू उसे एथेंस के विशाल मंदिर में प्रतिष्ठित कर देगा, तू तमाम यातनाओं से छुटकारा पायेगा।" अंत में उस पुजारिन ने उसे यह भी जता दिया कि वह स्थान ग्रीक लोगों के लिये कितना भयानक था। टौरियन लोग ग्रीकों को पकड़ कर बिना सोचे-समझे ही अपनी देवी पर बलि चढ़ा देते थे। उन्हें उनसे एक प्रकार की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विचित्र घृणा थी। ओरसिटीस को बिल्कुल ठीक होने के लिये यह खतरा मोल लेना ही होगा।

और आज इसीलिये मौत हथेली पर रखे वह यहाँ छिपता हुआ आया था। पाईलेडीस उसका अभिन्न मित्र था। ओरसिटीस ने उससे अपनी बहिन इलैक्ट्रा का विवाह कर दिया था। उसने उसको मना भी किया था कि वह उसके साथ न जाय पर भला वह कब मानने वाला था। वह सदा से उसके साथ पला और रहा था। आज भी उसने उसे अकेला छोड़ देना उचित नहीं समझा था।

मंदिर में वह दोनों छिपे खड़े रहे। धीरे-धीरे उजाला होने लगा। उन दोनों ने यह समझ लिया कि उन्हें अपना मंतव्य पूरा करने के लिये रात की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। दिन के उजाले में कुछ न हो सकेगा। वह वहीं दुम दबाकर बैठ गये। उन्हें तनिक भी नहीं मालूम था कि टौरियन सैनिकों ने उन्हें देख लिया था। जब वे मंदिर के अंदर घुसे थे उसी समय चौकी पर रहने वाले पहरेदारों ने उन्हें देख लिया था। और तुरंत अपने राजा को उनके आगमन की सूचना दी। अब वह राजा उन्हें घेर कर पकड़ने की योजना बना रहे थे। ओर्सिटीस औरं पाईलैडीस जब बढ़ते उजाले में छिप न सके तो उन्होंने मंदिर से बाहर निकल कर अन्यत्र छिपने की सोची। और जैसे ही वह अपने स्थान से हिले अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित टौरियन पहरेदारों ने उन्हें पकड़ लिया। वह उनका सामना भी नहीं कर सके क्योंकि टौरियन लोग संख्या में बहुत अधिक थे। शीघ्र ही वह बाँध लिये गये।

सुंदरी इफ़िग्निआ नित्य की भाँति उदास मन से मंदिर की ओर जा रही थी जब उसे दो सैनिकों ने सूचना दी कि शीघ्र ही वह जाकर बलि की तैयारी करे वे बोले :

"अभी दो ग्रीक पकड़े गये हैं। राजा की आज्ञा है कि उन्हें इसी समय देवी के आल्टर पर बलि चढ़ा दिया जाय।....तुम शीघ्र प्रवंध करो।"

सुनकर इफ़िग्निआ दुखी हो गई। उसने मन ही मन दोहराया, "हे जिअस! यह घृणित कार्य मुझे कब तक और करना पड़ेगा। मैं इससे अच्छा मृत्यु को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समझती हूँ। कब तक मुझे इस नरक में इन जंगलियों के साथ रहना पड़ेगा जो इतने निर्दयी और नृशंस हैं।"

अब तक न जाने कितने निरीह ग्रीक लोगों को उसके द्वारा अभिमंत्रित कराकर टौरियन लोगों ने मार डाला था परन्तु आज वह इस कार्य को करने में विशेष उदासीन हो गई। उसने स्वतः कहा :

"भला कोई देवी मनुष्यों की बलि से प्रसन्न हो सकती है? ....नहीं.. ..कदापि नहीं....मनुष्य की हत्या से तो वह उल्टी दुखी ही होती होगी। यह तो इन टौरियन लोगों की रक्त की पिपासा है और वह अपना दोष देवी पर मढ़ देते हैं...."

वह खड़ी-खड़ी यही सोच रही थी कि वे दोनों कैदी उसके सम्मुख लाये गये। उन्हें देखकर एक विचित्र उत्सुकता उसके हृदय में जाग्रत हो गई। उसने तुरंत उन सैनिकों को आज्ञा दी कि वे जाकर मंदिर के अंदर बलि देने का प्रबंध करें। जब वे लोग चले गये और वह उन दोनों के साथ अकेली रह गई तो उसने उनसे नम्रता से पूछा :

"तुम लोग कहाँ के रहने वाले हो मुझे कृपया बताओ।"

शुष्क स्वर से ओरसिटीस ने उत्तर दिया :

"उससे क्या फायदा....हम तो...."

बीच ही में इफ़िग्निआ बोली :

"मैं जानती हूँ कि मैं तुम्हें तुम्हारे घर की याद दिलाकर कष्ट दे रही हूँ। खासकर अब जब कि यह निश्चित हो गया है कि तुम वहाँ वापस नहीं जा सकते ....परन्तु मैं असहाय हूँ तुम्हारी कुछ भी मदद नहीं कर सकती हूँ...." उसे इतना दुख हुआ कि उसके नेत्रों में आँसू आ गये जिन्हें देखकर ओरसिटीस को तथा उसके मित्र को बड़ा आश्चर्य हुआ। ओरसिटीस उदास स्वर से बोला :

"जब हम अपने घर से चले थे तभी जानते थे कि हमारी यही दशा यहाँ आकर होगी। परन्तु फिर भी हम मृत्यु का सामना करने यहाँ आये हैं। हे सुंदरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम हमारे लिये इतनी दुखी क्यों होती हो।"

संवेदना के शब्द सुनकर इफ़िग्निआ के आँसू झर-झर बहने लगे। उसने पूछा: "क्या तुम दोनों भाई-भाई हो?"

"प्रेम से, जन्म से नहीं," ओरसिटीस ने उत्तर दिया।

"कौन सा है तुम्हारा निवास स्थान, क्या मुझे नहीं बताओगे?" बड़े अनुनय से वह बोली। ओरसिटीस अब उसे मना न कर सका। वह बोला:

"हम माईसीनी से आये हैं जो किसी जमाने में बहुत समृद्ध था...."

इफ़िग्निआ सुनकर बहुत प्रसन्न हुई। यह उसका वतन था। वह बोली:

"हाँ वहाँ का राजा बहुत बलवान और धनी था...उसका नाम एगैमैम्नौन था....क्या तुम उसको जानते हो?"

ओरिसिटीस विरक्त हो गया उसने शुष्क स्वर से कहा:

"मैं उसको नहीं जानता....अच्छा हो यदि यह वार्तालाप का विषय बदल दिया जाय....मैं उन लोगों के बारे में कोई बात नहीं करना चाहता।"

"नहीं नहीं....ऐसा न कहो....मुझे बतलाओ," इफ़िग्निआ ने प्रार्थना करते हुए कहा।

"वह मर गया....उसी की स्त्री ने उसे मार डाला," ओरिसिटीस ने भर्राये स्वर से उत्तर दिया।

"और क्लाईमैंस्ट्रा जीवित है?" घबराकर इफ़िग्निआ ने प्रश्न किया।

"नहीं....," कठोर स्वर से ओरिसिटीस बोला, "उसके पुत्र ने उसे मार डाला....बस करो अब मैं उत्तर नहीं दूँगा...इन बातों को छोड़ दो।"

"ठीक हुआ....न्याययुक्त ही हुआ... ," अज्ञात भय से काँपते हुए ईफ़िग्निआ के मुँह से फूट निकला, "परन्तु यह भयानक समाचार है।"

ओरिसिटीस और पाईलैडीस कठोर मुद्रा बनाये खड़े थे। इफ़िग्निआ थोड़ी देर चुप होकर सोचती रही फिर बोली:

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"क्या वह कभी उस पुत्री के बारे में भी पूछते हैं जिन्होंने उसे ऐर्टेमिस के आल्टर पर बलि चढ़ा दिया था ?"

"उतना ही जितना लोग मरों के बारे में सोचते हैं," ओरिसिटीस ने शांत स्वर से उत्तर दिया।

इफ़िग्निआ अब उत्तेजित हो उठी। उस स्थान से जल्दी से भाग चलने की हूक उनके हृदय में एकाएक हो आई। वह धीरे से बोली :

"मेरी सहायता करो....मेरे पास एक उपाय है....हम तीनों यहाँ से निकल कर भाग सकते हैं....तुम मेरा एक पत्र माईसीनी पहुँचा दो.... वहाँ मेरे एक मित्र के पास जाकर मेरा पत्र उसे दे दो...."

"नहीं मैं नहीं जा सकता," ओरिसिटीस ने उत्तर दिया," यह मेरा मित्र अवश्य तुम्हारा काम पूरा कर देगा ....यह मेरे साथ व्यर्थ ही यहाँ चला आया था। इसे पत्र देकर भेज दो और मुझे मार डालो।"

"मैं तुम्हें अकेला यहाँ छोड़ जाऊँ ?....कभी नहीं, ऐसा कदापि नहीं हो सकता। यदि मैं ऐसा करूँ भी तो सारा संसार मुझे डरपोक कहेगा.... हे मित्र मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ....अकेला और वह भी मरने के लिये कभी नहीं छोड़ सकता...." अत्यधिक उत्तेजित होकर पाईलेडीस ने उसे बीच में ही टोका।

ओरिसिटीस ने उसे रोककर दृढ़ता से कहा :

"तुम मेरी बहिन के पति हो....जाओ और उसकी रक्षा करो। तुम उसे अकेली नहीं छोड़ सकते। भला वह किसके सहारे जियेगी ? मेरी चिंता मत करो क्योंकि मेरा तो मरना ही सुखकर होगा।"

इफ़िग्निआ उन्हें बहस करते देख यह कह कर चल दी थी कि ऐसा ही हो। जब वह पत्र लेकर लौटी तब भी वह आपस में फुसफुसाकर वाद-विवाद कर ही रहे थे। वह बोली :

"मैं राजा से कहकर तुम्हें यहाँ से जाने की आज्ञा दिला दूँगी। वह मेरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पत्र-वाहक को कभी नहीं रोकेगा। मुझे विश्वास है। परन्तु जाने से पहिले मैं तुम्हें इस पत्र में लिखी बातें जुबानी भी बता देना चाहती हूँ क्योंकि यदि मार्ग में यह पत्र खो जाय तो भी तुम मेरा संदेश मेरे आत्मीय तक पहुँचा सको।"

"बिल्कुल ठीक बात है। मैं किसे तुम्हारा क्या संवाद दूँ," पाईलेडीस ने पूछा।

"एगैमैम्नौन के पुत्र ओरिसिटीस को मेरा संवाद दे देना।" इफ़िग्निआ ने कहा। वह अपने विचारों में तल्लीन उस समय माईसीनी की बातें सोच रही थी। वह देख भी अन्यत्र ही रही थी। उसने बिल्कुल नहीं देखा कि ओरिसिटीस का नाम सुनकर वह एकदम चौंक उठे थे। वह कहती गई:

"....उनसे कहना कि जिसे वह मरा हुआ समझे बैठे हैं वह मरी नहीं है। उन्होंने उसे अंऊलिस में बलि चढ़ा दिया था परन्तु वह नहीं मरी। वह अब भी जीवित है...."

"तो क्या मरे भी जीवित हो उठते हैं?" ओरिसिटीस ने बीच में काटा।

"चुप रहो," इफ़िग्निआ ने उसे डाँटा, "समय बहुत कम है। तुम बीच में बोल कर मेरा समय नष्ट न करो।" फिर पाईलेडीस की ओर मुख करके वह उससे बोली:

"मेरे भाई ओरिसिटीस से कहना कि वह मुझे यहाँ से ले जाय। मैं यहाँ बहुत दुखी हूँ। मैं इस हत्यारी पूजा से उकता गई हूँ। इन जंगली खून के प्यासे लोगों में मैं नहीं रहना चाहती....किसी भी भाँति वह मुझ यहाँ से ले जायँ।"

ओरिसिटीस पर मानो गाज गिरी हो वह आह भर कर गिरते-गिरते बचा। पाईलेडीस ने उसे सँभाल लिया। वह बोला:

"हे ज़िअस! मैं कैसा अभागा हूँ..."

"तुम फिर बोले?" इफ़िग्निआ ने झिड़का। वह बोली: "मैं तुमसे नहीं बल्कि इनसे कह रही हूँ। तुम व्यर्थ बीच में पैर न अड़ाओ....हाँ मित्र तुम उसका नाम न भूलना....ओरिसिटीस याद रखना....समझे?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"समझ गया...," पाईलेडीस खुश होकर बोला, "और इस संदेश को पहुँचाने में मुझे तनिक भी बिलंब नहीं लगेगा।"

तत्पश्चात् उसने वह पत्र ओरिसिटीस को दे दिया और वह उससे बोला : "लो ओरिसिटीस अपनी बहिन का पत्र लो।"

"लाओ....मैं इसे स्वीकार करता हूँ....आह! भाग्य! और कितना दुख दिखायेगा।" ओरिसिटीस ने आह भरी, फिर वह जोश से भर गया और इससे पहिले कि इफ़िग्निआ सँभले उसने उसे अपने दोनों हाथों में भर कर अपने हृदय से लगा लिया। परन्तु इफ़िग्निआ को उसका यह बर्ताव अच्छा नहीं लगा। वह बलपूर्वक उसकी भुजाओं से हट गई और अप्रसन्न होकर बोली :

"यह क्या करते हो? तुम्हें लज्जा नहीं आती? मैं तुम्हें नहीं जानती तुम कौन हो। तुम्हारे पास क्या सबूत है कि तुम ओरसिटीस हो?"

ओरिसिटीस उसे विश्वास दिलाता हुआ बोला :

"क्रुद्ध न हो बहिन! मैं ही ओरिसिटीस हूँ। आउलिस जाने से पहिले तुमने नीले रेशम पर सोने के तारों से कई सुंदर पुष्प काढ़े जिनके चारों कोने पर आठ कुंडली मारे सर्प बनाये थे....तुम्हें याद है?....और बताऊँ? महल में तुम्हारे रहने का कक्ष पश्चिम दिशा में स्फटिक का बना हुआ था। तुम्हारे शयन कक्ष में उत्तर की ओर एक बड़ा वातायन था जिसमें तुमने अपने हाथ से कसीदा काढ़कर झिलमिलाती चादर टाँग रखी थी...."

"बस...बस!....," रोते हुए इफ़िग्निआ बोली : "तुम ही मेरे भाई हो अब मुझे विश्वास हो गया।" फिर वह रोने लगी। तत्पश्चात् वह फिर बोली :

"हे मेरे प्यारे भाई! कितने बच्चे थे तुम उस समय जब मैंने तुम्हें छोड़ा था...हाय! कैसे समय में तुमसे मैं आज मिली हूँ....हे भाई! हे मेरे आत्मा के टुकड़े!!"

अब वह फफक-फफक कर रोने लगी थी तभी ओरसिटीस ने उदास स्वर से कहा :

१८

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"मेरे तो भाग्य में ही दुख लिखा है। मैंने जीवन में कभी शांति नहीं पाई। आज इतने वर्षों बाद बहिन से तब मिल पाया हूँ जब पहिले ही मेरी मृत्यु निश्चित हो चुकी है। हा! हतभाग्य!" और वह अपना सिर धुनने लगा। फिर बोला :

"कैसी विडंबना है कि बहिन ही भाई की हत्या कर रही है! हे ज़िअस! क्या हमारे कुल में एक दूसरे की हत्या करना ही सबके लिये अवश्यंभावी हो गया है?"

इफ़िग्निआ निराशा से बोली :

"हे ज़िअस! तूने बचा लिया! तूने मुझे बचा लिया नहीं तो मैं अपने ही भाई को मार डालती। परन्तु अब मैं उन्हें कैसे बचाऊँ? हाय! अब तो यहाँ से बचने वाला कोई उपाय दिखाई नहीं देता," और वह रोने लगी।

पाईलेडीस अब तक चुप था। उसने देखा कि भाई और बहिन अत्यधिक उत्तेजना के कारण नाजुक समय को खो रहे हैं। वह बोला :

"यहाँ बातों में समय नष्ट करना ठीक नहीं. . . .पहिले इस भयानक स्थान से बाहर निकल चलो. . . .फिर तो जीवन भर बातें हो सकेंगी. . . .जल्दी भागो. . . ."

"राजा को मार डालें?" ओरिसिटीस ने पूछा।

"नहीं," इफ़िग्निआ ने बात काट दी। उसने कहा : "राजा से मैं धोखा नहीं करना चाहती खासकर जब वह मेरा आज्ञाकारी रहा है।" फिर वह कुछ देर सोचती रही, वे दोनों खड़े रहे। तत्पश्चात् उसने कहा :

"पर बचने का दूसरा उपाय मुझे सूझ गया है। प्रारंभ से अंत तक सब बातें ध्यानपूर्वक सुनो। मैं जैसे कहूँ तुम लोग बिना प्रश्न किये वैसा ही करना।" और तब उसने वह योजना जो उसने बनाई थी उन्हें विस्तारपूर्वक समझा दीं। सुन कर वे दोनों अत्यंत प्रसन्न हुए। अब तीनों मंदिर के अंदर घुस गये।

थोड़ी देर बाद मंदिर के अंदर से इफ़िग्निआ अपने हाथों में देवी की प्रतिमा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिये बाहर निकली। उसी समय एक लंबा डीलडौल वाला बलिष्ठ व्यक्ति मंदिर की सीढ़ियों पर उसे मिला जिसे देखकर वह बोली ;

"हे राजा थोअस ठहरो और मेरी बात सुनो....हाँ! हाँ! हिलना मत ....जहाँ खड़े हो वहीं सुनो!!"

राजा थोअस को पुजारिन के उस बर्ताव से अचंभा हुआ। उसने उसी स्थान पर जड़वत् होकर उसकी ओर प्रश्न करते हुए नेत्रों से देखा।

इफ़िग्निआ बोली :

"यह जो दो आदमी अभी तुमने बलि के हेतु भेजे है दोनों ही अपवित्र हैं। इन्होंने अपनी माता की हत्या की है। देवी ऐर्टेमिस कलुषित व्यक्तियों की बलि स्वीकार नहीं करती। वह अप्रसन्न हो गई है....मैं इन्हें समुद्र के किनारे ले जाकर शुद्ध करूँगी....इनके मंदिर में घुस आने से देवी की प्रतिमा भी अपवित्र हो गई है। यह भी समुद्र में ही शुद्ध की जायगी....परन्तु खबरदार! मुझे यह सब काम एकांत में ही करना पड़ेगा। कोई मेरे साथ समुद्र पर न आवे....मूर्ख नगरवासी शायद वहाँ उत्सुकतापूर्वक आ जायँ अतएव तुम शीघ्र डोंडी पिटवा दो कि मेरे धार्मिक विषय में कोई बाधा न डाले...."

राजा ने श्रद्धा से सिर झुका लिया। वह विनम्र स्वर से बोला : "जो ठीक हो वही करो....और चाहे जब तक अपना कार्य करो....अभी तुम्हारी आज्ञा का पालन हुआ जाता है" और वह मार्ग छोड़कर बगल को हट गया। उसने तुरंत डोंडी पिटवाने की आज्ञा दे दी। इफ़िग्निआ विचित्र मंत्रोच्चारण करती हुई प्रतिमा को लेकर आगे बढ़ी। ओरिसिटीस और पाईलैडीस पीछे चले। उनके पीछे सेवक हाथों में बड़े-बड़े पात्र लेकर चले। राजा ने देखा और सिर झुका लिया। तत्पश्चात् वह अपने महल में चला गया। इफ़िग्निआ चिल्लाकर कह रही थी :

"हे पवित्र कुमारी! हे महारानी! हे ज़िअस की पवित्र पुत्री! तुम केवल पवित्र स्थान में ही रह सकती हो....हम तुम्हारे अनुचर! तुम्हारी एक मुस्कान के भिखारी हैं....हम पर दया करो।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सेवक गण समुद्र तट पर उन पात्रों को रख कर वापस लौट आये। उन्हें कठोर आज्ञा थी कि आगे न बढ़ें। इफ़िग्निआ अपने भाई और पाईलैडीस को लेकर उस स्थान को पहुँची जहाँ ओरिसिटीस का जहाज़ खड़ा था। जल्दी-जल्दी लंगर उठाये गये और किनारे के बंधन तोड़ दिये गये। खींच कर मल्लाहों ने जहाज़ पानी में डाल दिया। अब तीनों उस पर उस प्रतिमा सहित चढ़ गये और जहाज़ चल दिया।

परन्तु जिस सफाई से वह भागे थे उन्हें सफलता नहीं मिली। जैसे ही वह बंदरगाह से बाहर निकले एक भयंकर तूफ़ान समुद्र से पृथ्वी की ओर छूटा और उसने जहाज़ को बड़े जोर से पीछे ठेला। ओरिसिटीस और उसके साथियों ने उसे रोककर आगे बढ़ाने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु तूफ़ान इतनी जोर से उठा था कि जहाज़ के पाल सब स्थल की ओर ही तन गये। लाख प्रयत्न करने पर भी वह आगे नहीं बढ़ा और तट की ओर ही उल्टा चला आया था। ओरिसिटीस ने जान लड़ाकर उसका रुख मोड़ा पर तब वह एक पहाड़ी चट्टान से उलझ कर रुक गया। अब न वह आगे जाता था न पीछे। ओरिसिटीस को मृत्यु दिखाई देने लगी और अब वह बिल्कुल निराश हो गया था।

टौरियन लोगों ने अब सब बातें देख ली थीं। उन्होंने देखा कि उनकी पुजरिन धोखा देकर प्रतिमा सहित अन्य पुरुषों के साथ भागी जा रही थी। वे क्रुद्ध हो गये और उन्हें पकड़ने का उपक्रम करने लगे। कुछ लोग राजा को सूचना देने भागे। जब राजा थोअस ने सुना तो विषधर सर्प की भाँति वह क्रुद्ध होकर फुफकारने लगा। उसने आज्ञा दी कि वे परदेशी लोग और वह धोखेबाज पुजारिन सब के सब पकड़ कर मार डाले जांय परन्तु उसी समय आकाश से तेज रोशनी उसके मुख पर पड़ी। उसने घबरा कर ऊपर देखा। उसने देखा कि ऊपर आकाश में टँगी एक दिव्य ज्योति से जगमगाती हुई देवी खड़ी है। वह डर गया और उसने भूमि पर गिर कर उसकी अभ्यर्थना की। उस प्रकाश में उसके नेत्र चौंधिया गये थे। तभी वह देवी बोली :

"हे थोअस! अपना क्रोध शांत कर। इफ़िग्निआ और उसके साथियों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को जाने दे। वह देख मेरी आज्ञा से पैसीडौन ने समुद्र का ज्वार भी शांत कर दिया है। अब वह शांतिपूर्वक निर्विघ्न आगे बढ़ेंगे। जो हो रहा है सब ईश्वर की आज्ञा और प्रेरणा से हो रहा है...सावधान! हमारी आज्ञा का उल्लंघन न हो जाय।"

राजा थोअस उस तेजोमय देवी को देखकर भय से काँप रहा था। उसने गिड़गिड़ाते हुए उत्तर दिया :

"हे देवी! तुम्हारी प्रसन्नता में ही हमारा जीवन है। किसमें इतना दुस्साहस है जो तुम्हारी आज्ञा की अवहेलना कर सके। इफ़िग्निआ आज जहाँ चाहे जाय हमें क्या?"

उसी समय टौरियन लोगों ने देखा कि पहाड़ में अटका हुआ जहाज़ अपने आप हिलकर लहरों के बीच में आ गया तूफ़ान हट गया और अनुकूल हवाएँ चलने लगीं। पूरे वेग से पालों को ताने जहाज़ समुद्र की ओर बह चला था।

ओरिसिटीस अब यातनाओं से मुक्ति पा गया था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ईडियस की यातना

कैड्मस की तीसरी पीढ़ी में थीबिस का राजा लेअस हुआ। वह बड़ा प्रतापी थी। उसने अपने दूर के रिश्ते में लगी एक बहिन से विवाह किया। उस समय वह तीस वर्ष का था और उसकी स्त्री जोकास्टा केवल तेरह वर्ष की थी। जोकास्टा उस कच्ची आयु में भी पूरी जवान औरत लगती थी और अपनी सुंदरता में वह चाँद को भी लजाती थी।

थीबिस के पास ही पहाड़ों पर डेल्फी में एपोलो का मंदिर था। यहां कई युवती पुजारिनें देवता की पूजा किया करती थीं। एपोलो उन्हीं की जुबानी भविष्यवाणी कराया करता था। एक बार उसने यह कहलवाया कि थीबिस का लेअस अपने पुत्र के ही हाथों मारा जायगा। एपोलो कभी झूठ नहीं बोलता था यह सारा संसार जानता था परन्तु न जाने क्यों राजा लेअस को यह बात नहीं जँची। मन ही मन उसने उस भविष्यवाणी को झुठाने का निश्चय किया।

विवाह के ठीक एक वर्ष के उपरांत रानी जोकास्टा के गर्भ से एक सुंदर पुत्र उत्पन्न हुआ। उस समय रानी केवल चौदह वर्ष की थी। राजा लेअस को उसे देखकर पहिले तो भय हुआ परन्तु फिर उसने एक उपाय सोचा। न रहे बाँस न बजे बाँसुरी, इसी शिशु को खत्म कर दिया जाय तो न अपने प्राण का ही भय रह जायगा और एपोलो द्वारा कराई भविष्यवाणी भी झूठी पड़ जायगी। उसने उस बालक के पैर आपस में बाँध कर उसे एक सुनसान बियाबान पहाड़ की चोटी पर उसे रखवा दिया। जहाँ यह निश्चित था कि वह शीघ्र ही मर जायेगा। रानी उसका विरोध चाहकर भी न कर सकी। राजा अब प्रसन्न था कि उसने देवता की बात को भी झूठा कर दिखाया था।

बीस वर्ष बीत गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रानी जोकास्टा अब भी अपरूप सुंदरी थी, देवी वीनस ने प्रसन्न होकर कभी नष्ट न होने वाला सौंदर्य दिया था। उसका पुत्र क्यूपिड अक्सर उसे काम-बाणों से पीड़ित किया करता था। रानी वासनोमत्त होकर रात-दिन विलास किया करती थीं। परन्तु राजा लेअस अब ढलती आयु में पहुँच चुका था। वह बलिष्ठ तो था परन्तु अब उसका मन संसार से उचाट खा गया था। वह अधिकतर यात्रा में ही अपना समय व्यतीत किया करता था। वह कई-कई वर्षों बाद थीबिस लौटता। एक बार वह ऐसा गया कि फिर न लौटा। उसके साथ चार सेवक गये थे। एक दिन रानी जोकास्टा के सामने उनमें से एक सेवक वापस लौटा। उसके वस्त्र रक्त से भींग रहे थे और वह बहुत दुखी और डरा हुआ प्रतीत हो रहा था। उसने कहा, "जंगल में राजा को डाकुओं ने घेर कर मार डाला है। उसको बचाने में तीन सेवक भी मारे गये।"...रानी ने सुना और कटे वृक्ष की भाँति मूर्छित होकर गिर पड़ी। परन्तु उस दुख में भी उसके मुँह से निकला :

"एपोलो की भविष्यवाणी भूठी पड़ गई।"

रानी ने थोड़ी बहुत जाँच भी कराई कि हत्यारा कौन था परन्तु कुछ खास समाचार प्राप्त न हो सका। संतान न होने के कारण रानी जोकास्टा स्वयं राज्य सँभालने लगी और थीबिस की रानी बन गई।

× × ×

उन्हीं दिनों थीबिस पर भारी संकट छा रहा था। एक विचित्र दीर्घाकाय प्राणी नगर के चारों ओर मनुष्यों की हत्या और उनका भक्षण करती हुई घूमा करती थी। वह अत्यन्त बलिष्ट और भयानक थी। उसका नीचे का शरीर शेर जैसा था और ऊपर वह स्त्री जैसी थी। उसके दो बड़े-बड़े पँख भी थे और वह उड़ भी सकती थी। मुख और स्तन-मंडल स्त्रियों जैसा रोम रहित और सुंदर था। वह हर एक आदमी अथवा औरत से एक पहेली का उत्तर पूछती थी। न बता सकने पर वह उन्हें मार कर खा जाती थी। इसी तरह उसने मनुष्य पर मनुष्य सैकड़ों खा लिये थे। थीबिस में उसका आतंक छाया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहता था। रानी जोकास्टा ने उससे बचने का कोई उपाय न पाकर थीबिस नगर के सातों द्वार बंद करवा दिये थे। यह सातों द्वार भुवन विख्यात थे क्योंकि उनके सामने संसार में सुंदर द्वार और कहीं भी न थे। बाहर वह भयानक स्फ़िक्स अब भी चक्कर लगाया करती थी। केवल रात्रि के समय वह पहाड़ की चोटी पर चढ़कर आकाश की ओर मुँह करके चिल्लाया करती थी। वह इतनी भयानकता से चिल्लाती थी कि उसका आवाज़ सारे जंगल को गुंजा देता था। थीबिस के रहने वाले उस शोर को सुनते और भय से काँप जाते थे।

थीबिस के द्वार महीनों से बंद होने के कारण खाद्य पदार्थ समाप्त हो गया और अकाल पड़ने लगा। भुखमरी फैल गई और लोग भूख से तड़प-तड़प कर मरने लगे। चारों ओर हाहाकार छा गया।

× × ×

कोरिन्थ का राजा पोलीबस यशस्वी शासक था। उसके एक पुत्र ईडियस था। ईडियस सुंदर युवक था और उसे सभी लोग हृदय से चाहते थे। एपोलो ने यहाँ भी उसके बारे में भविष्यवाणी की थी कि वह अपने पिता का हत्यारा बनेगा। ईडियस उस पर तनिक भी विश्वास नहीं करता था क्योंकि पोलीबस से उसका अगाध स्नेह था। फिर भी भविष्य में न जाने क्या हो सोचकर उसने कोरिन्थ को ही छोड़कर चले जाने का निश्चय किया। उसने सोचा : "मैं जीवन में कभी कोरिन्थ नहीं लौटूंगा जब मैं यहाँ रहूँगा ही नहीं फिर भला अपने पिता की हत्या किस प्रकार करूँगा....इस भाँति एपोलो का वचन भी झूठा निकल जायगा।" और एक दिन बिना किसी से कुछ कहे-सुने वह कोरिन्थ से निकल पड़ा। ईडियस जितना सुंदर और बलवान था उतना ही बुद्धिमान था। उसकी वीरता और साथ ही साथ दया प्रसिद्ध थी। जब वह कोरिन्थ से चला आया तो वहाँ की प्रजा ने उसके लिये बहुत शोक किया।

ईडियस बहुत दिनों तक ग्रीस में घूमता रहा और एक दिन अचानक डैल्फी आया। वहाँ से संध्या समय वह महानगर थीबिस की ओर बढ़ा। दूर से उसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थीबिस की ऊँची-ऊँची अट्टालिकाएँ और विस्तृत परकोटा दिखाई दे रहा था। उसी समय उस बियावान जंगल से एक ओर से भयानक दहाड़ सुनाई दी। ईडियस भय से उसी ओर देखने लगा परन्तु बहुत ही शीघ्र उसने अपने आप पर संयम कर लिया। उसने म्यान से तलवार बाहर निकाल ली। ऊँचे पहाड़ की चोटी से उसे मनुष्य के बोल सुनाई दिये :

"मेरे प्रश्न का उत्तर देता जा।"

वह खड़ा हो गया और उत्सुकतापूर्वक उस ओर देखने लगा। थोड़ी देर बाद सामने के एक छोटे टीले पर उसने देखा कि एक विचित्र प्राणी आकर बैठ गया है। यह वही स्फ़िक्स थी जिसका नीचे का शरीर शैर जैसा और ऊपर का स्त्री जैसा था। स्फ़िक्स ने पंख फटफटा कर कहा :

"हे ईडियस ! मेरी पहेली यदि तू बता देगा तब तो तू जीवित बच जायगा अन्यथा मैं तुझे मार डालूँगी। बोल तुझे मंजूर है ?"

अब तक ईडियस प्रकृतिस्थ हो चुका था। आश्चर्यचकित तो वह था ही पर अब ऐसा प्रश्न सुनकर उसे झुँझलाहट भी आ गई। उसने उत्तर दिया :

"मैं तेरी पहेली बूझने को तैयार हूँ परन्तु यह बतला कि अगर मैंने ठीक बात बता दी तो क्या तू भी मेरा कहा करेगी ?"

"अवश्य," स्त्रीकंठ बोल उठा, "तब मैं अपनी हत्या कर लूँगा।"

"तो पूछ," ईडियस बोला। अब स्फ़िक्स ने पूछा :

"वह कौन सा जानवर है जो भोर में चार पैरों से, मध्याह्न में दो पैरों से और सायंकाल तीन पैरों से चलता है।"

"आदमी !" ईडियस ने चिल्लाकर उत्तर दिया। वह बड़ा बुद्धिमान पुरुष था उसे बातें बड़ी जल्दी सूझती थीं।

"कैसे ?" स्फ़िक्स ने फिर पूछा।

"वह बचपन में चार पैरों से अर्थात् दो हाथ दो पावों से, जवानी में दो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पैरों से और वृद्धावस्था में लकड़ी के सहारे तीन पैरों से चलता है. . .ऐसे," ईडियस ने निर्भीक होकर उत्तर दिया।

"तू जीत गया," स्फ़िक्स चिल्लाई और उसका शरीर एक भारी शब्द के साथ पृथ्वी पर गिर गया। उसने आत्महत्या कर ली थी।

भोर हुई और थीबिस के निवासियों को स्फ़िक्स के मरने का समाचार मिला। वह झुंड के झुंड बनाकर उसे देखने आये। उन्होंने ईडियस को हाथों-हाथ उठा लिया और उत्सव मनाते हुए उसे नगर की ओर ले चले। रानी जोकास्टा ने उसका अत्यधिक सम्मान किया। सारे नगर में उसका नाम रक्षक की भाँति पूजा जाने लगा। वही वह महापुरुष था जिसने थीबिस को उस मुसीबत से बचाया था। रानी जोकास्टा भी इस समय यौवन की हिलोरों से ओत-प्रोत थीं। वीनस की कृपा से उसका यौवन अनिंद्यनीय था। क्यूपिड के बाणों से आहत उस मदविह्वला कामोन्मत्त नारी ने जब उस सुगठित और सुंदर युवक को देखा तो वह उस पर रीझ उठी। जब प्रजा ने ईडियस को थीबिस का राजा बनाने का प्रस्ताव रखा तो उसने बिना विरोध किये उसे झट मान लिया। ईडियस राजा बना दिया गया। रात्रि के गहन अंधकार में जब वह अपने कक्ष में लेटा हुआ था रानी जोकास्टा उसके पास वासनोन्मत्त होकर आई और उसने उस पर अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया। उस पूर्ण तरुणी को ईडियस न ठुकरा सका। दूसरे ही दिन उसने उससे विवाह कर लिया। सारे नगर में खुशियाँ मनाई गईं और राजमहल में आनंद का स्रोत बहने लगा। रानी जोकास्टा प्रसन्न थी। उसका पहिला पति उससे बहुत बड़ा था तो यह उससे छोटा था। राजा लेअस से कभी प्रेम न कर सकी थी परन्तु इस पर तो वह जैसे वारी जाती थी। इतना योग्य, सुंदर और बलिष्ठ पति पाकर उसके आनंद का ठिकाना ही न था। रुकी हुई वासना अब सहस्त्र धाराओं से बहने लगी। रानी जोकास्टा सदा विलास में डूबी रहती।

इसी तरह कई वर्ष बीत गये। राजा ईडियस प्रजा वत्सल बना हुआ राज्य कर रहा था। उसके रानी जोकास्टा से कई पुत्र-पुत्रियाँ उत्पन्न हुई थीं;

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुत्र दो थे जो अब जवान हो चले थे। उन्हीं दिनो थीबिस में ताऊन की जबर्दस्त बीमारी फैली। लोग भारी संख्या में मरने लगे। ऐसा विकराल ईश्वरीय कोप था वह कि उससे न केवल मनुष्य ही मर रहे थे बल्कि मवेशी, जानवर, फल, अन्न इत्यादि सभी कुछ नाश को प्राप्त होने लगा था। सैकड़ों मनुष्य नित्य मर जाते और बीमारी का कोई अन्त नहीं था। और तभी अकाल आया। अब तो परिस्थिति और भी विकट हो गई। सर्वत्र हाहाकार मच गया। रात-दिन लाशें जलती रहती थीं और भूख से व्याकुल नर-नारी राजमार्गों पर दम तोड़ रहे थे। व्यभिचार बहुत बढ़ गया था और राज्य की सारी व्यवस्था ही प्रायः समाप्त हो चुकी थी। सभी ओर दुख मृत्यु बनकर फैल गया था।

ईडियस बहुत दुखी था। वह अपने को प्रजा का पिता समझता था। उसे अपने पुत्रों पर इतना बड़ा संकट देखकर बहुत दुख होता था। "हो न हो यह मेरी ही किसी गलती का दंड है," वह अपने मन में समझता और अपने आपको ही उस भीषण महामारी का कारण समझता था। प्रत्येक आदमी के दुख को अपना दुख समझने वाले उस प्रजावत्सल राजा ने तब रानी जोकास्टा के भाई क्रीओन को डैल्फी भेजा। उसने उससे कहा :

"एपोलो के मंदिर में जाओ और प्रार्थना करो कि यह नर संहार बंद हो जाय। कहना ईडियस अपनी प्रजा को दुखी देखने में असमर्थ है। यदि वह स्वयं दंड का भागी बन सके और प्रजा को मुक्ति मिल जाय तो वह अपने आपको भाग्यशाली समझेगा. . . .जाओ क्रीओन तुम देवता से मेरी ओर से यह प्रार्थना करना. . . .मैं हर तरह से प्रजा का दुख मिटाने को तैयार हूँ चाहे मुझे अपनी जान ही क्यों न देनी पड़ जाय।"

क्रीओन डैल्फी चला गया। वह तीन दिन में लौटा। इस बीच ईडियस ने अन्न भी ग्रहण नहीं किया और रानी जोकास्टा के बुलाने पर भी वह उसके पास एकांत में नहीं गया। उसने एक प्रकार से व्रत ले लिया था। जब क्रीओन लौटा तो उसने उससे उत्सुकतापूर्वक पूछा। क्रीओन बोला :

"एपोलो ने कहा है कि वह इस महामारी और अकाल को शीघ्र हटा लेगा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परन्तु एक शर्त है।"

"क्या है वह शर्त," ईडियस ने अधीर होकर धड़कते कलेजे से पूछा।

"....यह कि राजा लेअस के हत्यारे का पता लगाकर उसे कठोर दंड दिया जाय।"

ईडियस ने चैन की साँस ली। तत्पश्चात् वह बोला :

"ऐसा ही होगा हे एपोलो! ऐसा ही होगा। उसका पता लगाना ऐसी बहुत कठिन बात नहीं है। राजा लेअस को मरे कई वर्ष हो गये हैं अवश्य परन्तु फिर भी ईडियस हत्यारे का पता लगा ही लेगा....किसी भाँति प्रजा का दुख मिटना ही चाहिये।"

उसने तुरंत राजाज्ञा घोषित करा दी :

"थीबिस में उस हत्यारे को कहीं स्थान न मिले। वह जहाँ भी हो उसे कोई अन्न न दे, कोई पानी भी न दे....वह हत्यारा नृशंस है....उसको कहीं छत भी सोने को न मिले....जो उसे पकड़ कर लायेगा भारी पुरस्कार का अधिकारी होगा।"

और जादू की भाँति उसी क्षण महामारी गायब हो गई। फिर धीरे-धीरे आकाश भी हट गया। वर्षा हुई और पृथ्वी फिर उर्वरा बन गई। खेत लहलहाने लगे और वृक्ष फल-फूलों से लद गये। सुभिक्ष सब ओर आनंद बनकर बिखर गया।

ईडियस एक बार फिर प्रजा को सुखी देखकर आनंद से भर गया। रानी जोकास्टा अपने अबाध यौवन में फिर उसे विभोर करने लगी और वह अपने उद्देश में सन्नद्ध होकर राजा लेअस के हत्यारे का पता लगाने लगा।

उन दिनों अंधा टिरैसिअस थीबिस में बहुत ज्ञानी माना जाता था। ऐसा कहा जाता था कि उसे भूत, भविष्य और वर्तमान का अगाध ज्ञान था। ऐसी कोई बात नहीं थी जो उसे मालूम न हो। थीबन लोग उसे आदर की दृष्टि से देखते और उसका बहुत सम्मान करते थे। राजा ईडियस ने उसे बुलवाया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब टिरैसिअस आया ईडियस ने देखा कि वह अत्यन्त वृद्ध था जिसके केश और भौंहें सब हिम की भाँति श्वेत थे। उसकी लंबी दाढ़ी नाभि तक लटकती थीं और आँखों में एक दिव्य ज्योति थी। वह दीर्घाकाय वृद्ध भव्य गरिमा का प्रतीक दिखाई देता था। ईडियस का सिर उसके प्रति श्रद्धा से झुक गया। उसने आदर सहति उसे आसन दिया और कुशल क्षेम पूछी। तत्पश्चात् उसने अपना प्रश्न उससे पूछा। वह बोला :

"हे महाभाग ! आप वृद्ध हैं। आपने बहुत संसार देखा है। एपोलो की आज्ञानुसार हमें राजा लेअस के हत्यारे का पता चलाना है। आप कृपया हमें बतलाइये कि वह दुष्ट कौन है। थीबिस आपके इस ऋण से कभी मुक्त न हो सकेगा।"

राजा की उस नम्रता से वृद्ध प्रसन्न हुआ परन्तु प्रश्न सुनकर चौंका। थोड़ी देर चुप रहने के उपरांत उसने उत्तर देने से इंकार कर दिया। राजा को उसके उस उत्तर को सुनकर आश्चर्य हुआ, साथ ही साथ उसे लगा कि वृद्ध ने उसका अपमान किया है। उसे मन ही मन कुछ क्रोध भी उसके प्रति हुआ परन्तु वह उसे दबाकर फिर बोला :

"देवताओं की शपथ है आपको उत्तर देना ही होगा।" अब वृद्ध बिगड़ उठा। वह चिल्लाया :

"तुम सब मूर्ख हो. . . .मैं उत्तर-नहीं दूँगा. . . .नहीं दूँगा. . . .मैं नहीं बताता. . . ."

अब ईडियस को क्रोध हो आया। यह वृद्ध जिसकी वह इतनी मर्यादा कर रहा है उसी के मुँह पर अकारण ही उसे मूर्ख बतलाता है। अवश्य ही वह सज्जन नहीं है। अब वह अधिकार के स्वर में उससे बोला :

"इससे प्रत्यक्ष है कि तुम खुद इस हत्या से संबंधित हो जो वास्तविकता को छिपाते हो. . . .कहीं तुम ही तो हत्यारे नहीं हो ?"

वृद्ध ने राजा की वह अधिकारपूर्ण आज्ञा सुनी और अन्तिम प्रश्न को सुनकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह क्रुद्ध हो उठा। चिल्लाकर वह बोला :

"तुम स्वयं राजा लेअस के हत्यारे हो। जिसे ढूंढ़ते हो वह तो तुम खुद हो.. ..क्यों यह ढुंढ़ाई का व्यर्थ आडंबर तुमने बना रखा है।"

ईडियस ने सुना और उसका कलेजा धक से रह गया। परन्तु फिर उसके मस्तिष्क में विचार आया कि टिरैसिअस वृद्ध होने के कारण संभव है पागल हो गया हो। वृद्धावस्था में प्रायः लोगों के मस्तिष्क में विकार आ ही जाता है। परन्तु इस वृद्ध का इतना साहस कि इसने राजा को ही हत्यारा बताया। ईडियस और अधिक सहन न कर सका उसने चिल्लाकर आज्ञा दी :

"इस बुड्ढे को बाहर निकाल दो....यह कभी मेरी आँखों के सामने दुबारा न आने पावे।"

जोकास्टा ने सुना और वह भी मन में प्रसन्न हुई। उसे भी उस वृद्ध की बातें सुनकर उससे घृणा हो गई थी। वह ईडियस के कंधे पर हाथ रखकर उसे आश्वासन देती हुई बोली :

"देवताओं के मंदिर से की गई भविष्यवाणियाँ और पैगम्बरों द्वारा घोषित बातें हमेशा सत्य नहीं उतरा करतीं। किसी को भी भविष्य का पूरा-पूरा ज्ञान नहीं होता।"

ईडियस ने उसकी ओर आशंका से देखा। उसे लगा वह व्यंग कर रही थी। परन्तु जब उसे सचमुच ही भोलेपन से उस प्रकार कहते देखा तो उसे प्रसन्नता हुई। तब रानी उससे पहली बातें कहने लगी :

"मेरे पहिले पति के बारे में भी ऐसी ही भविष्यवाणी की गई थी परन्तु वह सब झूठी निकली। डैल्फी के मंदिर की पुजारिन ने कहा था कि वह अपने ही पुत्र के हाथों मारा जायगा। अतएव हम दोनों ही काफी होशियार रहे। जब हमारा प्रथम पुत्र बल्कि कहना चाहिये कि वही एकलौता पुत्र उत्पन्न हुआ तो उसे राजा लेअस ने पहाड़ की चोटी पर मरवा डाला....भविष्यवाणी झूठी हो गई। जब वह मरा तो डाकुओं के हाथ मरा। वह डैल्फी से वापस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आ रहा था कि उसे मार्ग में डाकुओं ने घेर लिया और उस स्थान पर उसकी हत्या कर दी गई जहाँ तीन सड़कें मिलती हैं. . . ."

आखिरी बात सुनकर ईडियस मानो झटका सा खा गया। "तीन सड़कें," उसने मन ही मन दुहराया और घूर कर रानी की ओर देखा। फिर पूछा :

"यह बात कब हुई ?"

"तुम्हारे यहाँ आने के कुछ ही दिनों पहले," मामूली तरह से रानी ने उत्तर दिया।

"राजा लेअस के साथ उस समय कितने आदमी थे ?" ईडियस ने उत्सुक होकर पूछा।

"वह कुल पाँच थे। चार मारे गये और केवल एक बचकर लौटा जिसने यहाँ आकर सारा समाचार सुनाया था।" रानी ने अब स्वयं उत्सुकता दिखाई।

ईडियस चिंता में पड़ गया। थोड़ी देर तक वह सोचता हुआ चुप रहा तत्पश्चात् उसने रानी से पूछा :

"वह आदमी अब भी है ?"

"है," रानी ने शीघ्र उत्तर दिया, "वह यहीं है।"

"उसे अभी बुलवाओ," राजा ने आज्ञा दी।

"अभी बुलवाती हूँ. . . .इसी समय," रानी ने उत्तर दिया और तुरंत उस सेवक को बुलवा भेजा। तत्पश्चात् वह ईडियस से बोली :

"हे प्रियतम ! तुम इतने व्यग्र क्यों हो उठे हो। क्या मुझे यह पूछने का अधिकार नहीं है ? मुझे बतलाओ तुम्हारे मन में क्या है ?"

"जो मैं जानता हूँ वह सभी तुम जानने की हकदार हो. . .लो सुनो।"

ईडियस ने बैठते हुए लंबी साँस खींची। तत्पश्चात् उसने अपने चारों ओर देखा और फिर रानी से कहा :

". . . .तुम्हारे पास यहाँ आने के पहले मैं डैल्फी गया था। जब मैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोरिन्थ में था मुझसे एक आदमी ने यह कहा था कि मैं वास्तव में राजा पोलीबस का पुत्र नहीं था। मुझे उसकी बातें सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ और साथ-साथ दुख भी हुआ। मैं तुरंत वहाँ से डैल्फी की ओर चल दिया कि वहाँ देवता से वास्तविकता की जाँच करूँगा। परन्तु डैल्फी में आकर जब मैंने देवता के सम्मुख अपना प्रश्न किया तो मुझे बहुत निराश होना पड़ा। मुझे मेरी बात का तो कोई उत्तर नहीं मिला परन्तु एक आदमी ने मुझसे वहाँ एक और अजीब बात कही। वह बोला कि मैं अपने पिता का हत्यारा बनूँगा और अपनी माता से विवाह करूँगा। संसार मेरी संतान से घृणा करेगी। संसार मुझे ही देखकर दूर भागेगी, मेरी छाया से भी घृणा करेगी इत्यादि। मुझे उसकी बातें सुनकर आश्चर्य भी हुआ और क्रोध भी बहुत आया। मैं वहाँ से बाहर निकला। मैंने निश्चय कर लिया कि कोरिन्थ वापिस कभी नहीं जाऊँगा। जब मैं उस स्थान पर आया जहाँ तीन सड़कें मिलती हैं तो मुझे वहाँ पाँच आदमी मिले। एक मालिक था बाकी चार सेवक थे। वह व्यक्ति बड़ा ढीठ था। उसने अकारण ही मुझे मार्ग छोड़ कर चले जाने को कहा और इतने में कि मैं उसे उत्तर दूँ उसने मेरे ऊपर अपने हाथ की लकड़ी से प्रहार किया। अब मेरा क्रोध उमड़ आया मैं तलवार लेकर उन सब पर टूट पड़ा। वह पाँचों मुझसे जूझ गये।" इतना कहकर ईडियस रुका और उसने लंबी साँस ली। रानी जोकास्टा नीची निगाह किये चुपचाप सुन रही थी। ईडियस को रुकते देखकर उसने निगाहें उसकी ओर उठाईं और कहा :

"फिर ?"

ईडियस ने देखा रानी के नेत्रों में एक अज्ञात भय, आशंका और निराशा झलक रही थी जिसे देखकर वह भीतर ही भीतर काँप गया। परन्तु अपने आप पर उसने संयम किया और बोला :

"लड़ाई में वे मुझसे जीत न सके। मैंने उनमें से चार को उसी जगह मार डाला, पाँचवा भाग गया।"

रानी ने सुना और उसका मुख पीला पड़ गया। परन्तु फिर उसने अपने आप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को संभाला । कुछ देर तक वह सोचती रही । फिर वह हँसी मानो अपने मन के आशंकित भावों को निकाल फेंकना चाहती थी ।

उसने अपने मन में कहा : "नहीं यह सब निमूल बातें हैं । इनसे और लेअस की हत्या से कोई संबंध नहीं हो सकता ।" फिर उसे अपने उस बालक का ध्यान आया जो जन्म होते ही पहाड़ पर मरने के लिये छोड़ दिया गया था । इस विचार के आते ही उसके हृदय में उठी शंका मानो एकदम खत्म हो गई । वह बोली :

"नहीं प्रियतम ! तुम्हारा इससे कोई संबंध नहीं हो सकता । तुम बिल्कुल चिंता मत करो । राजा लेअस और मेरा पुत्र तो जन्म होते ही मार डाला गया था । ....तुमसे भला इस बात का क्या संबंध है.... ।"

"तब एपोलो की भविष्यवाणी झूठी हुई ?" ईडियस ने पूछा ।

"बिल्कुल असत्य," रानी ने दीर्घ श्वास छोड़ा । "उसे तो डाकुओं ने मारा था । ऐसा ही उस सेवक ने कहा था । तुम्हें जो आदमी मिले थे निश्चय ही वे कोई और होंगे ।" मैंने तो पहिले ही कहा था कि देवताओं द्वारा की हुई भविष्यवाणियाँ झूठी हुआ करती हैं ।"

उसी समय कोरिन्थ से एक दूत आया । उसने संवाद दिया कि राजा पोलीबस मारा गया था । सुनते ही जोकास्टा उच्च स्वर से चिल्लाई :

"हे देवताओ ! सुनो ! राजा पोलीबस मारा गया है परन्तु अपने पुत्र के हाथ से नहीं ; उसे किसी और ही ने मारा है ।"

अब पति-पत्नी दोनों को विश्वास हो गया कि भविष्यवाणियाँ हमेशा ही सच नहीं निकलती । परन्तु यह सुनकर वह दूत मुस्कुराकर ईडियस से बोला :

"हे राजा क्या तुम इसी कारण कोरिन्थ छोड़कर चले आये थे कि पिता की हत्या न कर बैठो ? ....तुमने बहुत भूल की....सचमुच ही बहुत बड़ी भूल की क्योंकि तुम उसके पुत्र नहीं हो । तुम्हें पोलीबस ने अपने पुत्र की ही भाँति पाला अवश्य था । परन्तु तुम वास्तव में उसके पुत्र नहीं हो । तुम्हें तो मैंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लाकर उसे दिया था।"

ईडियस मानो आसमान से नीचे गिरा। उसने झपट कर उस दूत के हाथ पकड़ लिये। उसने पूछा:

"तुमने मुझ कहाँ पाया था? बोलो मेरे माता-पिता कौन हैं?"

"यह सब मुझे कुछ नहीं मालूम," दूत ने उत्तर दिया, "मुझे तो एक बच्चा एक चरवाहे ने दिया था। मैंने उससे पूछा तो उसने कहा था कि वह राजा लेअस का कोई भृत्य था।"

जोकास्टा का मुख उन बातों को सुनकर बर्फ़ की भाँति सफेद हो गया। ऐसा लगता था कि उसके शरीर में रक्त का स्राव बंद हो गया था। मानो काटो तो खून नहीं था। परन्तु तभी बड़ी मुश्किल से अपने आप को सँभालने का निष्फल प्रयत्न करते हुए वह बोली:

"इन व्यर्थ के आदमियों के साथ जिरह करना अपना समय नष्ट करना है। इन बातों से कुछ बनता बिगड़ता नहीं है।"

परन्तु उसके स्वर अटक-अटक कर उत्तेजित स्वर से निकल रहे थे। वह बुरी तरह घबरा गई थी। अब उसे लेअस के हत्यारे की तनिक भी फिक्र नहीं थी। फिक्र केवल अपनी थी क्योंकि वह सारी परिस्थिति साफ़ समझ गई थी। वह किसी भी भाँति उस बात को और आगे नहीं चलाना चाहती थी। परन्तु ईडियस की समझ में कुछ नहीं आया। वह चिल्लाया:

"किस बात से फायदा नहीं है? यह तुम क्या कह रही हो....यहाँ तो मेरे जन्म की, मेरे माता-पिता की बात है। इसे तो जानना आवश्यक है।" और उसने बड़े आग्रह से अपनी पत्नी की ओर देखा।

"भगवान के लिये चुप रहो," वह रोती हुई चिल्लाई।

"मेरी यातना और न बढ़ाओ," और वह वहाँ से उठकर महल के अंदर भाग गई।

उसी समय एक वृद्ध ने वहाँ प्रवेश किया। यह वही पाँचवा सेवक था

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो लेअस का निजी भृत्य था। यही वह आदमी था जिसने लेअस की हत्या का समाचार रानी को आकर दिया था। उसने आते ही पोलीवस के दूत को देखा और ठिठक गया। दूत उसे देखते ही चिल्लाया :

"यही है वह मनुष्य। यही है वह व्यक्ति जिसने तुम्हें मुझे दिया था।"

"क्या तुम इसे जानते हो?" राजा ने पोलीबस के दूत की ओर उँगली उठाकर उस नवागंतुक वृद्ध से पूछा। वृद्ध थोड़ी देर चुप रहा। तत्पश्चात् दुबारा पूछे जाने पर बोला :

"नहीं।"

ईडियस ने दीर्घ श्वास छोड़ा। परन्तु दूत अब कहने लगा : "तुम मुझे कैसे भूल गये? मेरी ओर देखो और मुझे पहिचानो। क्या तुमने मुझे डैलफी के पहाड़ों के पास उस निर्जन पथ के बायें ओर बने कुयें के पास एक बालक नहीं दिया था? सच कहो क्योंकि यही वह बच्चा है जो अब यहाँ का राजा है. . . उस समय. . . ." वह और भी निशान देना चाहता था कि वृद्ध बोला :

"तेरा सर्वनाश हो. . . .तुझसे चुप क्यों नहीं रहा जाता. . . ."

ईडियस ने सुना और उसकी भृकुटी तन गई। वह क्रुद्ध होकर उस वृद्ध पर टूट पड़ा।

"असलियत को छिपाने का प्रयत्न करता है मूर्ख! समझ ले कि राजा के पास सब बातें जबर्दस्ती कहलवाने के भी उपाय हैं. . . .खबरदार जो इससे मिलकर षड्यंत्र किया तो. . . .मैं सारी बातें जानने का इच्छुक हूँ।"

वृद्ध रोने लगा। वह दीनता से बोला :

"हे राजा! यह आदमी सच कहता है। मैंने सचमुच ही वह बालक इसे दिया था. . . .परन्तु मैं हाथ जोड़कर भीख माँगता हूँ और कुछ मुझसे मत पूछो।"

ईडियस क्रोध से लाल हो उठा। उसने कठोर स्वर से कहा :

"बता उस बच्चे को तूने कहाँ पाया. . . .किसने उसे तुझे दिया. . . .

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सावधान छिपाने का प्रयत्न व्यर्थ है। मैं आज्ञा देता हूँ कि जो कुछ तू जानता है शीघ्र मुझे बता दे। मैं दो बार अपने प्रश्न को नहीं दुहराता मूर्ख ! कहीं उसकी नौबत न आ जाय वरना तेरे कंधों पर तेरा सिर नहीं रहेगा।"

"हे राजा ! मैं नहीं कह सकता चाहे तुम मरवा ही क्यों न डालो," दृढ़ स्वर से वृद्ध ने उत्तर दिया।

"बताओ !!!!" कठोर स्वर से राजा ने आज्ञा दी।

"अपनी रानी से पूछ लो," वृद्ध बोला, "क्योंकि वह जानती है।"

ईडियस अब लड़खड़ा गया। उसने साँस बाँधकर पूछा :

"जोकास्टा ने यह बालक तुम्हें दिया था ?"

"हाँ श्रीमान् ! हाँ ! उन्होंने मुझे आपको दिया था. . . .क्योंकि भविष्य वाणी हुई थी. . . .", वृद्ध रुक-रुककर बोला। वह अपना वाक्य समाप्त भी नहीं कर पाया था कि ईडियस बीच ही में बोल उठा :

". . . .कि राजा लेअस का पुत्र अपने पिता को मार डालेगा. . . . वही उसकी हत्या करेगा !"

"हाँ !" वृद्ध फुसफुसाया, "परन्तु रानी उसे पहाड़ पर मरने के लिये न छोड़ सकी। उसने राजा से छिपाकर आपको मुझे दे दिया था कि. . . ."

"तुम अनर्थ कर दो. . . .कि तुम संसार के नियम ही बिगाड़ दो. . . . कि पुत्र और माता का विवाह हो जाय। आह ! नृशंस !" राजा ईडियस बीच ही में चिल्ला उठा। उसने अपना सिर पीट लिया। वह दुख, घृणा और अज्ञात भय से भीतर ही भीतर मन में काँप गया। अब वह उन लोगों से आँख मिलाने में असमर्थ होकर महल के अंदर भागा। वह आत्मग्लानि से मरा जा रहा था। उसी ने अपने पिता को मार डाला था––वही अपने पिता का हत्यारा था। और वही अपनी सगी माता का पति हो गया था। उसका हृदय ग्लानि से फटने लगा। पहली बात तो एक बार सह भी लेता। ऐसे तो कई पुत्रों ने अपने पिताओं की भूल में हत्या कर डाली थी परन्तु माता से विवाह !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कितना घृणित कार्य था यह ! ऐसा नीच कार्य आज तक न किसी ने किया न कोई कर ही सकता था। अब मैं क्या करूँ ?" वह सोचने लगा : "और हमारी संतान ! हे भगवन ! उन्हें संसार घृणा की दृष्टि से देखेगा। उनकी छाया से भी लोग बचकर चलेंगे क्योंकि उनके समान शापग्रस्त भला और कौन होंगे। माता से संबंध ! क्या रिश्ता हुआ मेरा और उन पुत्र-पुत्रियों का ?" वह और अधिक नहीं सोच सका। वह भागा चला जा रहा था। एकाएक उसे एपोलो की याद हो आई और वह चीख उठा : "हे एपोलो ! तेरा वचन सत्य हो गया। तू निश्चय ही कभी झूठ नहीं कहता। इधर मैंने अपने पिता को मारा, उधर पोलीबस को अपरिचित युवक ने मारा जो बाद में मालूम हुआ उसी का खोया हुआ पुत्र था। आह ! परन्तु माता से विवाह !" वह और अधिक न कह सका। उसने निश्चय कर लिया कि वह उस जीवन की ज्योति को सदा के लिये बुझा देगा। उस उजाले को वह सहन नहीं कर सकेगा जिसमें उसने जघन्य से जघन्य पाप कर डाले थे। वह भला किस प्रकार लोगों को अपने ऊपर हँसते, उँगली उठाते देख सकेगा कि यही है वह पिता का हत्यारा जिसने अपनी सगी माता के यौवन को लूटा। जिसने पशुओं की भाँति उससे यौन-संभोग किया था. . . .नहीं, नहीं. . . .वह हरगिज संसार के किसी भी व्यक्ति से आँख मिलाने के योग्य नहीं रहा था। उसे याद आया जोकास्टा ने उससे कहा था "मेरा यौवन अबाध है, मैं जब तक जीऊँगी सदा तरुणी ही बनी रहूँगी--मुझे वीनस से वरदान प्राप्त है. . . .मेरी वासना का कहीं अंत नहीं है क्योंकि वीनस का उत्पाती पुत्र क्यूपिड निरंतर मुझ पर काम-शर छोड़ा करता है।" उसने अब सोचा, "कितना भयंकर था वह वरदान। वह वरदान नहीं था बल्कि अभिशाप था।" अब वह जोकास्टा के कक्ष में जा पहुँचा था। उसने देखा जोकास्टा शैया पर मरी पड़ी थी। उसने अपने हृदय में मूँठ तक छुरा घुसा लिया था। शैया रक्त से भींग गई थी। जब उसे वास्तविकता ज्ञात हो गई थी तो वह जी न सकी उसने आत्महत्या कर ली थी। ईडियस ने देखा वह अब भी सुंदरी अत्यंत सुंदरी प्रतीत हो रही थी। वह और अधिक सहन नहीं कर सका। उसे उस समय भी जब कि वह जान गया था कि वह उसकी माता थी वह सुंदरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रतीत हुई थी। उसने अपनी तलवार निकाली और बारी-बारी से अपनी आँखों में घुसा ली। वह अंधा हो गया। उसके मुख पर गर्म-गर्म रक्त बहने लगा। उसका उजाला चला गया। अंधकार में उसे एक नवीन शांति का अनुभव हुआ। "नहीं चाहिये मुझे वह रोशनी जिससे मैंने वास्तविकता को न देखकर जघन्य कर्म किये। यही आँखें दोषी थीं जो मैंने अब फोड़ ली," वह चिल्लाया, "अब मैं किसी की दृष्टि नहीं देख सकूँगा। संसार मेरा उपहास भले ही करे।" वह पृथ्वी पर गिर गया मानो अब उसका कहीं सहारा ही न था।

× × ×

ईडियस ने सिंहासन को छोड़ दिया। वह उस पर बैठ कर उसे कलुषित नहीं करना चाहता था। उसकी दोनों पुत्रियाँ ऐंटीगोन और इस्मिनी उसे ज़ीवन भर अत्यंत प्रेम करती रहीं। उन्हें उसके दुख से पूर्ण सहानुभूति थी, वह कहती थीं ज़ो कुछ हुआ अनजाने में हुआ, हमारा पिता निर्दोष है। जब तक ईडियस थिबिस में रहा वह उसकी सेवा करती रहीं। परन्तु एक दिन जब वह वृद्ध हो चुका था, थीबिस के लोगों ने उसे राज्य से बाहर निकाल दिया। ऐंटीगोन ने अब भी अपने पिता का साथ नहीं छोड़ा। वह उसी के साथ उसकी लाठी पकड़े, उसे मार्ग दिखाती हुई साथ-साथ चली गई। इस्मिनी थीबिस में ही रह गई और वहीं से नये-नये समाचार उसके पास भेजा करती थी।

अंधा ईडियस बहुत काल तक इधर से उधर भटकता फिरा। उसके समान संसार में शायद दूसरा कोई दुखी न था। एक दिन वह महानगर एथेंस के पास कोलोनस पहुँचा। वहाँ पहले कलह की देवी इरान्यस राज्य करती थी जो बाद में ओलिम्पस के देवताओं के वरदान से न्याय की देवी बना दी गई थी तभी से कोलोनस धर्मार्थ का स्थान बन गया था और वहाँ स्थान-स्थान पर देवमंदिर बने हुए थे। यहाँ वृद्ध ईडियस को शरण मिली। यहीं वह बहुत दिनों तक शांति-पूर्वक रहा और यहीं उसे शांति भी प्राप्त हुई। एपोलो ने दूसरी भविष्यवाणी की। उसके मंदिर की पुजारिन ने कहा : "संसार की दृष्टि में घृणित, बेघरबार और अनाथ ईडियस अब घृणा का पात्र नहीं रहेगा. . . .मृत्यु के समय उसे अपार शांति मिलेगी।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थोड़े ही दिनों बाद एथेंस का महान् राजा थीसिअस कोलोनस आया और पिता-पुत्री को अपने साथ अपने नगर ले गया। उसने उस अंधे से तनिक भी घृणा नहीं की। उल्टे उसने सम्मानित किया। वहीं ईडियस मर गया। मरते समय उसे अपार शांति मिल चुकी थी। थीसिअस ने आदरपूर्वक उसकी अंत्येष्टि की और उसकी पुत्री ऐंटीगोन को उसकी इच्छानुसार थीबिस वापस पहुँचा दिया।

ईडियस सारे जीवन दुखी रहा परन्तु मरते समय वह सुखी था। थीबिस के राज्य वंश में उसके समान दुखी राजा और कोई नहीं हुआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मूर्ख माईडास

प्राचीन समय की बात है कि यूनान देश स्थित फ्रिजिया नामक राज्य में माईडास राज्य करता था। फ्रिजिया उन दिनों गुलाब के फूलों का देश कहलाता था। माईडास के महल के चारों ओर रंग-बिरंगे मदहोश खुशबू से भरे फूल सदा खिले रहते थे। माईडास का परिवार बहुत छोटा था, उसकी एक स्त्री और केवल एक पुत्री थी। जिन्हें वह अत्यंत प्रेम से रखता था। छोटा राजा होने के कारण उसके पास बहुत धन नहीं था। परन्तु उसकी तृष्णा इतनी अधिक थी कि वह संसार की सारी दौलत पा लेना चाहता था। राजा माईडास बुद्धि का भी कुशाग्र नहीं था। जीवन में बारंबार अपनी मूर्खता के कारण वह दुख पाया करता था। भोर के समय वह सब से छिप कर महल के अन्तर्गत बने तह-खाने में जाकर अपने संचित धन को नित्य देखता और उन सुवर्ण मुद्राओं को गिना करता। मुद्राओं के बजने से जो शब्द होता उसे सुन-सुनकर वह आनंद से विभोर हो उठता। बरबस उस समय उसके मुँह से खुशी की किलकारी फूट निकलती थी।

वर्षा ऋतु में शाम के समय जब आसमान में बादल अस्ताचलगामी सूर्य की पीली किरणों से प्रतिबिंबित होकर सुवर्ण की भाँति दमकने लगते तो मूर्ख माईडास अपने महल की छत पर चढ़ा हुआ उन्हें देखकर सचमुच स्वर्ण समझता और उसके मन में हूक उठती कि आकाश में अनंत तक फैली हुई उस धनराशि को किसी भी भाँति समेट कर वह अपने खज़ाने में रख ले। ऐसे समय पर जब कि वह अपनी बुद्धिहीन कल्पनाओं में खोया रहता था, यदि कोई सेवक अथवा दास उसके ध्यान में बाधा डालता तो वह क्रोधित होकर उसे मृत्युदंड दे देता था।

एक बार उत्तर की ओर वह ज्यूपिटर के दर्शनार्थ पहाड़ों पर गया। रास्ता ऊबड़-खाबड़ था जिसे उसने कठिन परिश्रम से पार किया। जब वह पहाड़ पर चढ़ने लगा तो उस समय बाल सूर्य की चपल किरणें नीहार की बूंदों और उत्तुंग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिखर पर जमी हुई वर्फ पर सुवर्ण की भाँति आलोक फैला रही थीं। माईडास उन्हें देखकर अपने आप को संयम में न रख सका। वह उनके पीछे दौड़ा क्योंकि उसने उन्हें भी सुवर्ण की सचमुच की ढेरी समझा। अपनी उस तृष्णा में वह ज्यूपिटर को भी भूल गया। अपनी अवहेलना देखकर पराक्रमी देवता ज्यूपिटर क्रुद्ध हो उठा। उसने बंकिम दृष्टि से माईडास की ओर देखा और बाँया हाथ ऊपर उठा दिया। उसी क्षण माईडास खड्ड में गिर गया। उसके बहुत चोट लगी और वह मूर्च्छित हो गया। इसके बहुत समय बाद तक वह अपंग बना रहा। जब वह ठीक हुआ, तो उसकी स्त्री ने एक दिन जाकर पराक्रमी ज्यूपिटर को विधिवत पूजा करके प्रसन्न किया। और आज्ञा मिलने पर वर प्राप्त किया। तब कहीं जाकर माईडास ठीक हो सका था। ऐसे ही दिन गुज़रते चले जाते थे। एक बार संध्या समय एक व्यक्ति अत्यधिक मदिरा पीकर नशे में झूमता हुआ माईडास के महल के बड़े बाग में घुस आया जिसमें रंग-बिरंगे सुगंधित गुलाब के फूल खिल रहे थे। वह व्यक्ति अपनी सारी सुध-बुध खोये हुए लड़खड़ाता हुआ बाग में स्थित एक पत्थर की चौकी पर गिर गया और वहीं सो गया।

दूसरे दिन सुबह बाग के मालियों ने जब एक अपरिचित व्यक्ति को चौकी पर बेखबर सोते हुए देखा तो पकड़ लिया। उन्होंने उसे गुलाब की काँटेदार बेलों से बाँध दिया।

एक ने उसके सिर पर गुलाब की ही डालियों का एक कँटीला ताज पहना दिया। फिर हँसते हुए वह उसे पकड़ कर राजा के सामने ले गये। वह व्यक्ति अब प्रकृतिस्थ हो चुका था। अब उसे नशा नहीं था। अपनी उपहासात्मक वेषभूषा को देख कर वह अत्यंत लज्जित हो रहा था। माईडास उस समय आराम से लेटा हुआ फूलों की खुशबू ले रहा था। उसने जो उस अपरिचित व्यक्ति को देखा तो वह उठ बैठा और बोला :

"यह कौन है ?" इससे पहले कि माली जवाब दे वह व्यक्ति स्वयं बोल उठा :

"मैं साइलीनस हूँ, मैं अन्य व्यक्तियों के साथ बैक्कस की मुसाहिबी में जा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहा था रास्ते में बहुत ज्यादा मदिरा पी लेने के कारण अपने साथियों से पीछे रह गया। मुझे तत्पश्चात् होश भी नहीं रहा और मैं मार्ग भूलकर इधर-उधर भटकने लगा। मैं इस बाग में कब और कैसे आ गया यह भी मुझे याद नहीं है।"

साइलीनस का नाम सुनकर माईडास खड़ा हो गया और दोनों हाथ बढ़ाकर उसने उसकी अभ्यर्थना की। अत्यंत विनम्र स्वर से वह बोला:

"फ्रिजिया का राजा माईडास अपने घर आये हुए देवता का स्वागत करता है।"

और तब उसने स्वयं अपने हाथों से उसके बंधन खोलकर उसे लाकर आसन पर बिठाया। तत्पश्तात् पूरे दस दिन तक साइलीनस वहाँ रहा। माईडास ने उसका यथेष्ट सत्कार किया। और उसके बाद उसे खुद ले जाकर बेक्कस से जा मिलाया। बेक्कस ने साइलीनस को अपने पास वापस पाकर प्रसन्न होकर माईडास को एक वरदान दिया। वह बोला:

"हम तुमसे खुश हैं। तुम्हें आज्ञा है कि तुम जो भी चाहो एक वरदान माँग लो।"

सुनकर माईडास खुशी से फूला न समाया, बोला:

"मुझे ऐसा वर दो कि जिस चीज़ को भी मैं छू लूँ वही सोने की हो जाय।"

बेक्कस मुस्कराया क्योंकि उसे इस मूर्खता से भरी चाह से उत्पन्न होने वाले खतरों का एकदम ज्ञान हो आया। फिर उसने कहा:

"ऐसा ही हो।"

और वह साइलीनस को लेकर चला गया। उनके जाते ही माईडास ने पलँग पर हाथ रखा। वह हर्षातिरेक होकर नाचने और चिल्लाने लगा क्योंकि पूरा पलँग सोने का हो गया था। अब उसने उछल-उछल कर दीवारों को छुआ जो उसका स्पर्श पाते ही एक दम सोने की हो गईं। उसका मन फिर भी न भरा अब उसने भारी-भारी तख्त, बड़ी-बड़ी मूर्त्तियाँ, मेजें इत्यादि सभी सामानों को छूकर सोने का बना दिया। जैसे-जैसे सोना बढ़ता जाता था, माईडास की हविस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी बढ़ती जाती थी। वह भागा और ऊपर की मंजिल में पहुँचा। सीढ़ियों पर चढ़ते हुए उसने उन सभी को सोने का कर दिया था। इसी तरह देर तक वह पागलों की तरह भागता रहा। चारों तरफ सोना ही सोना देखकर अब उसकी आँखें चौंधिया गईं थीं।

वह बैठ गया। अब वह बहुत थक गया था। इतना सब कुछ सहन करना उसकी सामर्थ्य के बाहर हो गया था। वह लुढ़का और सो गया।

जब वह उठा, शाम हो चुकी थी। दुनियाँ को अँधेरे में छोड़कर सूर्य अंतरिक्ष के पार उतर चुका था। माईडास को बहुत जोर की भूख लगी। उसने सेवक को बुलाकर खाना लाने की आज्ञा दी, जब गरम-गरम खाना उसके सामने आया तो वह एकदम उस पर टूट पड़ा। परन्तु जब उसने हाथ से उठाकर खाना चाहा तो कौर गरम-गरम सोने का हो गया। उसने घबराकर थाली में परोसे सभी खाने की चीजों को छूआ। परन्तु हतभाग्य! वह सभी गरम सोना बन गया। जब उसने पानी छुआ तो वह भी सोने का हो गया। अब तो माईडास बहुत घबराया सामने खाना था परन्तु उस खाने को वह खा नहीं सकता था। भविष्य में आने वाली उस विकट परिस्थिति का अब उसे आभास हो गया था। भयातुर होकर वह चिल्लाया और उसने अपने तन पर पहने हुए वस्त्रों को पकड़ा परन्तु वह भी सोने के हो गये। उनका ठंडा स्पर्श पाकर माईडास दुख से चीत्कार कर उठा। और कटे हुए वृक्ष के समान भूमि पर गिर पड़ा। उसकी चीख से सारा महल गूँज उठा। उस हृदय विदारक चीख को सुनकर उसकी बेटी दौड़ी हुई उसके पास आई। उसको भूमि पर गिरा हुआ देखकर उसने नौकरों को बुलाया और खुद उसे उठाकर पलँग पर जा लिटाया। सभी मिलकर उसकी सेवा-सुश्रूषा करने लगे। थोड़ी देर बाद माईडास को होश आया। उसने आँखें खोलीं और अपने ऊपर अपनी बेटी को घबराई हुई दृष्टि से झुके हुए पाया। वह भूल गया कि उसके हाथ का स्पर्श कितना घातक था। उसने अत्यंत स्नेह से अपने हाथों से अपनी पुत्री के गालों को छू दिया और तभी भय से चीत्कार करता हुआ वह आहत होकर मूर्च्छित हो गया। उसकी बेटी उस स्पर्श से सोने की होकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके ऊपर गिर पड़ी थी। थोड़ी देर बाद जब फिर उसे प्रज्ञा हुई तो फिर उसने भूलकर और घबराकर अपने कई नौकरों को छू लिया जो सब सोने के हो गये।

माईडास पागल हो गया। उसे अपनी पुत्री से बिछुड़ने का बहुत दुख था। उसका विशाल महल सोने का बन गया था। अपनी अद्‌भुत् चमक से वह देदीप्यमान हो रहा था परन्तु माईडास को अब सोने के नाम से चिढ़ हो गई थी। अधीर होकर वह भागा और बैक्कस के चरणों में जाकर गिर पड़ा। बेक्कस, जिसने अपनी दूरदर्शिता के कारण पहले ही उसकी मूर्खता समझ ली थी अब हँस कर बोला :

"माईडास ! अब तू जा और दुखी न हो क्योंकि इसी क्षण से उस वर की शक्ति जाती रहेगी। जो कुछ तूने छूकर सोना बनाया है वह सब पूर्ववत् ठीक हो जायगा।"

राजा ने करबद्ध होकर बैक्कस की वंदना की और उल्लसित मन लिये घर को लौटा। घर आकर उसने सबसे पहिले अपनी पुत्री को पुनर्जीवित किया। और तत्पश्चात् सेवकों और दासों तथा अन्य वस्तुओं को भी यथावत् कर दिया।

माईडास अब अत्यंत सावधानी से दिन बिताने लगा। परन्तु उसकी मूर्खता वैसी ही बनी रही।

एक दिन ओलिम्पस में सुंदर और पराक्रमी देवता एपोलो और वन्य प्रदेश के जंगली देवता पैन की आपस में होड़ पड़ गई। एपोलो स्वर्ग और पृथ्वी में सबसे सुंदर देवता माना जाता था जिसके भव्य मंदिर सारे यूनान में बने हुए थे। पैन का ऊपर का शरीर मनुष्यों जैसा था। परन्तु उसका नीचे का धड़ बकरे जैसा था। उसके खुर और पूंछ भी थी, वह केवल बकरियों से ही संभोग करता था। होड़ संगीत के ऊपर पड़ी थी। एपोलो का कहना था कि वह पैन के मुकाबले में अच्छा गा-बजा सकता था जब कि पैन अपने आप को उससे अच्छा संगीतज्ञ समझता था। एपोलो का यहाँ तक दावा था कि जब वह अपनी चाँदी की बनी बाँसुरी में फूंक भरता तो उसमें से निकले हुए संगीत को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुनकर ओलिम्पस के विशेष संगीतज्ञों (म्यूजिस) के अतिरिक्त सारा संसार और स्वर्ग झूम उठेगा। वेक्कस ने जब उनके झगड़े का कारण सुना तो उसे मजाक सूझा। वह बोला ;

"फ्रिजिआ का राजा माईडास संगीत विद्या में पारंगत है। मैंने ऐसा सुना है। तुम लोग उसी के पास जाओ और अपना निर्णय कराओ। निश्चय ही वह तुम्हारा फैसला करा देगा।"

एपोलो और पैन को अपने यहाँ देखकर माईडास बहुत खुश हुआ। "इतने बड़े देवता मेरे यहाँ अपना फैसला कराने आते हैं मैं निश्चय ही बहुत बड़ा संगीतज्ञ हूँ," ऐसा सोच कर वह गर्व से फूल गया। वह भूल गया कि देवताओं के बीच में बोलना कितना खतरनाक होता था। संगीत प्रारंभ हुआ। पहले एपोलो ने गाया। उसके संगीत की स्वर लहरियों को सुनकर अपनी यात्रा भूलकर आकाश में तारे ठहर गये। वायु निस्तब्ध हो गई और सारा संसार झूम उठा। जब उसने बाँसुरी रोकी तो आकाश से अन्य देवतागण पुष्प वृष्टि करने लगे। देर तक स्वर लहरियाँ अन्तराल में गूँजती रहीं। ऐसा समाँ बँधा कि किसी को अपने तन-बदन की सुध न रही।

पैन की बारी आई। उसने अपनी बाँस की बाँसुरी मुँह से लगाई और हठात् अद्भुत संगीत प्रस्फुटित होने लगा। वायु फिर स्तब्ध हो गई और आकाश के तारे रुक गये। परन्तु एपोलो के भय से रुकना चाहकर भी वे न रुके। और पीछे मुड़-मुड़ कर देखते हुए धीमे पगों से आगे बढ़ने लगे। पैन मानो बाँसुरी के छेदों में अपने प्राणों को फूँक रहा था। उसकी स्वर लहरियों के साथ सारा संसार मानो ताल दे रहा था। थिरकती हुई वायु उन मधुर स्वरों से अंतराल को गुंजा रही थी। पशु, पक्षी जड़वत् होकर उस अद्भुत संगीत को सुन रहे थे। आनंद के वातावरण में स्वर्ग और पृथ्वी झूमने लगी। परन्तु जब संगीत रुका देवताओं ने एपोलो के भय से पुष्प वृष्टि नहीं की।

माईडास के सामने कठिन समस्या उपस्थित हो गई। दोनों के संगीत अद्भुत थे। किसे श्रेष्ठ बताया जाय ? साँस बाँधे हुए मनुष्य और देवता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके ऊपर गिर पड़ी थी। थोड़ी देर बाद जब फिर उसे प्रज्ञा हुई तो फिर उसने भूलकर और घबराकर अपने कई नौकरों को छू लिया जो सब सोने के हो गये।

माईडास पागल हो गया। उसे अपनी पुत्री से बिछुड़ने का बहुत दुख था। उसका विशाल महल सोने का बन गया था। अपनी अद्‌भुत् चमक से वह देदीप्यमान हो रहा था परन्तु माईडास को अब सोने के नाम से चिढ़ हो गई थी। अधीर होकर वह भागा और वैक्कस के चरणों में जाकर गिर पड़ा। बेक्कस, जिसने अपनी दूरदर्शिता के कारण पहले ही उसकी मूर्खता समझ ली थी अब हँस कर बोला :

"माईडास! अब तू जा और दुखी न हो क्योंकि इसी क्षण से उस वर की शक्ति जाती रहेगी। जो कुछ तूने छूकर सोना बनाया है वह सब पूर्ववत् ठीक हो जायगा।"

राजा ने करबद्ध होकर वैक्कस की वंदना की और उल्लसित मन लिये घर को लौटा। घर आकर उसने सबसे पहिले अपनी पुत्री को पुनर्जीवित किया। और तत्पश्चात् सेवकों और दासों तथा अन्य वस्तुओं को भी यथावत् कर दिया।

माईडास अब अत्यंत सावधानी से दिन बिताने लगा। परन्तु उसकी मूर्खता वैसी ही बनी रही।

एक दिन ओलिम्पस में सुंदर और पराक्रमी देवता एपोलो और वन्य प्रदेश के जंगली देवता पैन की आपस में होड़ पड़ गई। एपोलो स्वर्ग और पृथ्वी में सबसे सुंदर देवता माना जाता था जिसके भव्य मंदिर सारे यूनान में बने हुए थे। पैन का ऊपर का शरीर मनुष्यों जैसा था। परन्तु उसका नीचे का धड़ बकरे जैसा था। उसके खुर और पूँछ भी थी, वह केवल बकरियों से ही संभोग करता था। होड़ संगीत के ऊपर पड़ी थी। एपोलो का कहना था कि वह पैन के मुकाबले में अच्छा गा-बजा सकता था जब कि पैन अपने आप को उससे अच्छा संगीतज्ञ समझता था। एपोलो का यहाँ तक दावा था कि जब वह अपनी चाँदी की बनी बाँसुरी में फूंक भरता तो उसमें से निकले हुए संगीत को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुनकर ओलिम्पस के विशेष संगीतज्ञों (म्यूजिस) के अतिरिक्त सारा संसार और स्वर्ग झूम उठेगा। वेक्कस ने जब उनके झगड़े का कारण सुना तो उसे मजाक सूझा। वह बोला ;

"फ्रिजिआ का राजा माईडास संगीत विद्या में पारंगत है। मैंने ऐसा सुना है। तुम लोग उसी के पास जाओ और अपना निर्णय कराओ। निश्चय ही वह तुम्हारा फैसला करा देगा।"

एपोलो और पैन को अपने यहाँ देखकर माईडास बहुत खुश हुआ। "इतने बड़े देवता मेरे यहाँ अपना फैसला कराने आते हैं मैं निश्चय ही बहुत बड़ा संगीतज्ञ हूँ," ऐसा सोच कर वह गर्व से फूल गया। वह भूल गया कि देवताओं के बीच में बोलना कितना खतरनाक होता था। संगीत प्रारंभ हुआ। पहले एपोलो ने गाया। उसके संगीत की स्वर लहरियों को सुनकर अपनी यात्रा भूलकर आकाश में तारे ठहर गये। वायु निस्तब्ध हो गई और सारा संसार झूम उठा। जब उसने बाँसुरी रोकी तो आकाश से अन्य देवतागण पुष्प वृष्टि करने लगे। देर तक स्वर लहरियाँ अन्तराल में गूँजती रहीं। ऐसा समाँ बँधा कि किसी को अपने तन-बदन की सुध न रही।

पैन की बारी आई। उसने अपनी बाँस की बाँसुरी मुँह से लगाई और हठात् अद्भुत संगीत प्रस्फुटित होने लगा। वायु फिर स्तब्ध हो गई और आकाश के तारे रुक गये। परन्तु एपोलो के भय से रुकना चाहकर भी वे न रुके। और पीछे मुड़-मुड़ कर देखते हुए धीमे पगों से आगे बढ़ने लगे। पैन मानो बाँसुरी के छेदों में अपने प्राणों को फूँक रहा था। उसकी स्वर लहरियों के साथ सारा संसार मानो ताल दे रहा था। थिरकती हुई वायु उन मधुर स्वरों से अंतराल को गुँजा रही थी। पशु, पक्षी जड़वत् होकर उस अद्भुत संगीत को सुन रहे थे। आनंद के वातावरण में स्वर्ग और पृथ्वी झूमने लगी। परन्तु जब संगीत रुका देवताओं ने एपोलो के भय से पुष्प वृष्टि नहीं की।

माईडास के सामने कठिन समस्या उपस्थित हो गई। दोनों के संगीत अद्भुत थे। किसे श्रेष्ठ बताया जाय ? साँस बाँधे हुए मनुष्य और देवता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे थे। और तभी मन्दबुद्धि माईडास ने फैसला सुना दिया। उसने पैन को विजेता घोषित कर दिया। सभी देवता भय से व्याकुल हो गये। एपोलो क्रोध से लाल हो उठा। उसके उस रौद्ररूप को देख कर सारा संसार काँप गया। निश्चय था कि उस क्रोध में वह माईडास को जला डालता। परन्तु उसी समय माईडास की लड़की भारी आपत्ति का ध्यान करती हुई भागी आई और एपोलो के पैरों पर गिर पड़ी। एपोलो उस किशोरी की सुंदरता देखकर थोड़ा दयार्द्र हो गया। वह तनिक हँसा और उसी क्षण माई-डास के सिर पर गधे के से लंबे कान खड़े हो गये। सारे देवता चले गये। प्रतिद्वंद्वी भी अंतर्धान हो गये। वहाँ केवल माईडास रह गया था जिसके कान गधे के से हो गये थे।

राजा माईडास अपने गधे के से कानों को छिपाने के लिये अब हमेशा अपने सिर पर एक ऊँची बाढ़ की टोपी पहनने लगा। वह नहीं चाहता था कि कोई भी इस बात को जानने पावे। परन्तु आखिर वह कब तक छिपाता। जब उसका नाई उसका बाल काटने आया तो मजबूरन उस टोपी को उतारनी पड़ी। और नाई ने असलियत देख ली। वह उन्हें देखकर हँसी न रोक सका। परन्तु दूसरे ही क्षण जब उसने राजा का उग्र स्वरूप देखा तो भय से थर-थर काँपने लगा। राजा ने उससे कहा :

"वायदा कर कि यह बात किसी से नहीं कहेगा।"

नाई छोटा आदमी था। इतने बड़े भेद को अपने तक सीमित रखने में वह असह्य यातना भुगतने लगा। परन्तु राजा के भय से वह उसे कह भी कैसे सकता था? जब यह भेद की बात चट्टान की तरह बोझिल बनकर उसकी छाती पर चढ़कर उसे दबाने लगी तो एक दिन वह जंगल में भाग गया। वहाँ जाकर एकांत में उसने भूमि में एक छोटा सा गड्ढा खोदा। जब गड्ढा खुद गया तो भूमि पर औंधा लेट कर उस गड्ढे में उसने अपना मुँह डाला और फुसफुसा कर बोला :

"राजा माईडास के कान गधे के से हैं।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तत्पश्चात् वह उठा और मिट्टी डालकर उसने वह गड्ढा बंद कर दिया। वह अब ऐसा अनुभव करने लगा जैसे उसका सारा बोझ हट गया हो। पतझड़ के बाद वसंत ऋतु आई और सारा संसार फूलों की महक से झूम उठा। नाई के खोदे हुए उस गड्ढे में से बाँस खड़े हो गये। तेज हवा चलने लगी जिसके स्पर्श से बाँस लहराने लगे। जब उनके छेदों में होकर हवा निकली तो विचित्र ध्वनि निकली जिसे सभी आने-जाने वालों ने मंत्रमुग्ध होकर सुना। आवाज़ आई, "राजा माईडास के कान गधे के से हैं जिन्हें वह सदा टोपी में छिपाये रहता है. . . .कभी शक्तिशाली देवता के विरुद्ध बोलने का साहस कोई न करे।"

माईडास ने सुना सारा संसार उस पर हँस रहा है। उसने क्रोध में भर कर अपने सिर से टोपी उतारी और दूर फेंक दी। गधे के से कान सीधे खड़े हो गये। यह उसकी मूर्खता की चरम सीमा थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्यूपिड का अमर प्रेम

बहुत समय पहिले की बात है कि ग्रीस में एक राजा राज्य करता था जिसकी तीन अत्यंत सुंदरी कन्याएँ थीं। जब तीनों जवान हुईं तो उनकी सुंदरता को देखकर मनुष्य और देवता सभी मोहित हो गये। सबसे छोटी लड़की का नाम साईके था और वह अपनी दोनों बहिनों से बहुत अधिक सुंदर थी। अपनी बहिनों के साथ जब वह खड़ी होती तो उनके मुकाबले में साक्षात् देवी मालूम होती थी। उसकी सुंदरता दूर-दूर तक प्रशंसा बनकर फैल गई और संसार के कोने-कोने से लोग उसे देखने को आने लगे। लोग आकर उसके सामने ऐसे झुकते मानो सचमुच ही वह कोई अमर देवी थी। उसकी एक झलक पाने के लिये लोग कई-कई दिन उसके द्वार पर खड़े रहते और यदि वह किसी को देख कर अनायास ही मुस्करा उठती तो वह मनुष्य अपने भाग्य पर स्वयं ही ईर्षा करने लग जाता था। यह चर्चा यहाँ तक बढ़ गई कि लोगों ने सुंदरता की देवी वीनस से भी उसे अधिक सुंदरी कहना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे उन्होंने वीनस के मंदिर में भी जाना छोड़ दिया। अब सब लोग साईके के ही दर्शन करने के लिये उसके घर जाने लग गये। वीनस के मंदिर थोड़े ही दिनों में उजाड़ हो गये। बलिखंभ धूल से ढँक गये और उसके नगर खंडहर बन गये। जो पूजा पहिले वीनस की होती थी अब साईके की होने लगी। उसकी सुंदरता का विषय अब गंभीर हो गया क्योंकि स्वर्ग से वीनस ने जो अपने मंदिरों की ऐसी दुर्दशा देखी तो वह क्रोधित हो उठी और तब उसने साईके के विनाश का उपाय सोचा।

भला वीनस अपना अपमान और एक मानव की कन्या का इतना आदर कब सहन कर सकती थी। उसने निश्चय किया कि जैसे भी होगा वह अवश्य साईके का नाश करेगी।....जब भी वह कठिनाई का सामना करती थी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तभी अपने पुत्र कामदेव (क्यूपिड) से वह मदद माँगा करती थी। कामदेव स्वयं प्रेम था, वासना था, और वह जब अपने फूलों के तीर छोड़ता था तो संसार और देवलोक में कहीं भी कोई मनुष्य या देवता उनसे घायल हुए बिना नहीं रहता था। उसका प्रहार अटल था और अभी तक उसे कोई नहीं जीत सका था। वीनस इस बात को जानती थी कि उसका सुंदर पुत्र अजेय है और इसीलिए समय पर वह सदा उसी से काम लिया करती थी।....वह कामदेव के पास गई और उसने उनसे साईके की काफी शिकायत की और मदद माँगी। वह कभी अपनी माता की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करता था। अबकी बार भी वह तैयार हो गया। तब प्रसन्नता से वीनस बोली :

"अपना वासना का अस्त्र चलाओ और उस दुष्टा को किसी बदसूरत और नीच व्यक्ति के प्रेम-पाश में फँसा दो जिससे शीघ्र ही उसका पतन हो जाय.."

कामदेव ने सुना और तब वह अपने पुष्प-शर लिये हुए साईके को दंड देने के लिये चल पड़ा। उसी समय उसे वीनस ने पुकारा और कहा :

"ठहरो क्योंकि मैं चलकर तुम्हें उस स्त्री को दिखा तो दूँ....जिससे तुम उसे पहिचान सको...."

और तब दोनों साथ-साथ चले। वीनस को पूर्ण विश्वास था कि चाहे वह (साईके) कितनी भी सुंदरी क्यों न हो स्वयं उससे तो अच्छी हो हीं नहीं सकती। फिर उसे यह भी पूर्ण विश्वास था कि कामदेव जैसा सुंदर और पराक्रमी देवता हरगिज उस मानवी को देखकर विचलित नहीं हो सकता।

जब वे दोनों राजा के उद्यान में पहुँचे तो उस समय साईके एकांत में बैठी हुई सरोवर के किनारे नहा रही थी। उस समय वह संसार की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी यौवन के तेज से दमक रही थी। वीनस ने उसे जो देखा तो सकते की सी हालत में रह गई। परन्तु शीघ्र ही उसने अपने आप को सँभाला और कठोर मुद्रा बनाकर एकटक देखते हुए अपने पुत्र को पकड़ कर झकझोर दिया। फिर कहा :

"वह देख वही वह दुष्टा स्त्री है....इसका नाश कर दे...."

तत्पश्चात् कामदेव के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही वह वापस चली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आई। जब वह अकेला रह गया तो निर्निमेष नेत्रों से साईके के यौवन से उद्दीप्त अति सुंदर शरीर को देखकर स्वयं काम से विह्वल हो उठा। साईके पर पुष्प-बाण से प्रहार करना वह भूल गया और स्वयं ही उसके लावण्य से घायल हो गया। जब वह स्नान करके चली गई तो वह आहें भरता हुआ, अत्यंत पीड़ित होता हुआ अपने घर की ओर गया। उसने वीनस से कुछ भी नहीं कहा क्योंकि उसने तो साईके का नाश करने के लिये उससे कहा था और यहाँ यह हालत थी कि वह स्वयं ही उसके रूप और यौवन का पुजारी बन गया था। अब भला वह वीनस से कैसे कुछ कहता? निदान उसने चुप रहना ही उचित समझा। साईके पर तो उसका कोई असर नहीं हुआ उल्टा उसी पर साईके का असर चढ़ गया।

उधर वीनस नित्य प्रतीक्षा कर रही थी कि कब साईके किसी बदशकल व्यक्ति के प्रेम में फँसती है। परन्तु हुआ यह कि न वह किसी के प्रेम में पड़ी न कोई पुरुष ही उसके प्रेम में पड़ा। सब लोग उसे देखते और उसकी सुंदरता की इज्जत करते थे। लोग दूर-दूर से उसे देखने आते, उसके सामने नत-मस्तक होते और उसे भेंट चढ़ाते मानो वह कोई देवी थी। परन्तु उससे वासनामय प्रेम कर सकने का साहस किसी को नहीं होता था। उन्हीं दिनों उसकी दोनों बहिनों के लिये वर भी मिल गये हालाँकि उसके मुकाबले में वह सुंदरता में कहीं नहीं ठहरती थीं। उनका विवाह दो राजाओं के साथ बड़ी धूमधाम से हो गया, परन्तु साईके को न कोई प्रेमी मिला, न वह किसी से प्रेम करने लगी। वह उदास अपने महल में रहा करती थी क्योंकि उसे कोई साथी विहार करने को नहीं मिलता था। यह सब कामदेव के ही कारण था। यदि वह उसे फूल के तीरों से घायल करता तो उसके हृदय में प्रेम फूट पड़ता और तब शायद वह किसी अन्य से प्रेम करने लग जाती और यदि वह लोगों द्वारा उसकी सुंदरता की उपासना न करवा कर उनमें वासना भर देता तो उनमें से निश्चय ही कोई न कोई तो उसका प्रेमी बन ही जाता। उसने साईके पर कोई प्रेम प्रहार नहीं किया क्योंकि वह तो स्वयं ही उसके प्रेम की विरहाग्नि में जला जा रहा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साईके के माता-पिता व बन्धुगण इस बात से परेशान थे कि उसके लिये कोई वर नहीं मिल रहा था। आखिरकार साईके का पिता सुदूर पूर्व दिशा में स्थित परम सुंदर देवता एपोलो के मंदिर में गया। वहाँ जाकर उसने एपोलो को श्वेत कबूतर भेंट में चढ़ाये जो अत्यंत सुंदर और स्वस्थ थे। वह उड़े और एपोलो की मूर्त्ति पर कंधों पर बैठ गये। तब राजा घुटनों के बल बैठ गया और उसने देवता से प्रार्थना की कि वह साईके के लिये एक अच्छा वर दे। एपोलो के पास राजा से पहिले ही कामदेव हो आया था और उसने उससे अपने प्रेम के बारे में सब कुछ कह रखा था, यहाँ तक कि उसने उससे इस संबंध में मदद भी माँगी थी। कामदेव यह भी नहीं चाहता था कि वीनस को इस संबंध में कुछ मालूम हो। एपोलो ने सब कुछ सोचसमझकर राजा से कहा :

"साईके को काले मातम के कपड़े पहना कर पश्चिम दिशा में स्थित पहाड़ की ऊँची चोटी पर अँधेरी रात्रि के समय भेज दो—वहाँ उससे उसका होनेवाला पति मिलेगा। वह एक भयंकर उड़ने वाला साँप है जिसके पर बहुत मज़बूत और बड़े हैं। वह अत्यंत पराक्रमी है—इतना कि जितने स्वयं देवता लोग भी नहीं हैं। वह उस अँधेरी रात्रि में आयेगा और साईके को अपनी स्त्री बनाकर अपने साथ ले जायेगा. . . .जो कुछ कह दिया है वही होगा इस-लिए अब इस काम में तनिक भी देरी नहीं होनी चाहिये।"

राजा यह सुनकर बहुत दुखी हुआ। निराश होकर वह वहाँ से लौटा और उसने आकर अपने संबंधियों से सारी बातें कही। अपार दुख फैल गया। परन्तु किसी ने यह बात साईके को नहीं बतलाई। परन्तु जब वह काले कपड़े उसे पहनाने लगे तब उसने साश्चर्य कारण पूछा। तब उसका पिता दुखित स्वर से बोला :

"एपोलो की आज्ञानुसार तुझे पहाड़ की ऊँची चोटी पर आज रात्रि को जाना है जहाँ रात्रि के गहन अंधकार में तुझे पति मिलेगा। वह कैसा होगा यह तो हमें मालूम नहीं है परन्तु वह देवताओं से भी अधिक पराक्रमी है यह बात निश्चित है। तुझे इस तरह मातम के कपड़े पहनाकर ले जाते हुए हमें बहुत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुख हो रहा है. . . . क्या करें एपोलो की आज्ञा है।"

साईके ने धीरज के साथ सब कुछ सुना। तत्पश्चात् वह धीरे से बोली :

"अब दुख करना व्यर्थ है। अगर दुख ही करना था तो तब करते जब मैं पैदा हुई थी। मेरी सुंदरता ही मेरी शत्रु बन गई है। स्वर्ग की देवी वीनस मेरी इसी सुंदरता से नाखुश हो गई है—परन्तु अब भला हो भी क्या सकता है। वीनस मुझसे मेरे रूप के कारण जलती है और वह ठहरी सर्वशक्तिमान देवी, भला मैं साधारण मानवी उससे क्या मुकाबला कर सकती हूँ? अब तो जो कुछ भी होना है, हो। मैं खुश हूँ कि इस निरंतर यातना का अंत तो आ गया है. . . ."

सब लोगों ने सुना और खामोश हो गये। उस भयंकर परों वाले सर्प के बारे में उससे कहने का साहस किसी को नहीं हुआ। तब सब लोग उसे साथ लेकर उस पहाड़ पर गये और जब अंधकार चारों ओर छा गया तो उसे वहाँ अकेली असहाय छोड़कर चले आये। उनका हृदय दुख से फटा जा रहा था पर मजबूरी थी। साईके अंधकार में घबराई नहीं। शांत हृदय से आने वाले पति की बाट देखती रही, परन्तु यह हालत उसकी बहुत देर तक नहीं रही। वह पहाड़ की चोटी पर एक ऊँची चट्टान पर बैठ गई। उसी समय धड़ाके का एक भयानक शब्द हुआ और साईके का धीरज छूट गया। अब वह अज्ञात भय से थर-थर काँपने लग गई और उसके दाँत बजने लगे। उसकी आँखें भय से बंद हो गई। वह देर तक उसी भाँति बैठी रही। थोड़ी देर बाद ही मंद-मंद समीरण बहने लगा और उसके साथ सुगंधित पुष्पों की मादक महक चारों ओर फैलने लगी। साईके उसको सूँघकर नशे में झूमने लगी। तभी किसी अज्ञात और अदृश्य शक्ति द्वारा उसका शरीर उस चट्टान से ऊपर उठ गया और वह हवा में तैरती हुई नीचे की ओर न जाने किस दिशा (क्योंकि इसका तो उसे उस समय ध्यान ही न था) की ओर जाने लगी। जब उसे होश आया तो उसने अपने आप को हरी घास से आच्छादित पृथ्वी पर पड़े पाया। घास बहुत सुहावनी और गुदगुदी थी जिस पर लेटने से उसे अत्यंत सुख का अनुभव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुआ। इस विचित्र नशे के कारण अब उसका वह भय एकदम से जाता रहा था। परन्तु उसे नींद जोरों से आ रही थी। उसने घास पर अपने अंग फैला दिये और वह सो गई।

न जाने वह कब तक सोती रही। परन्तु जब जागी तो उसने अपने को एक नदी के किनारे पड़े पाया। नदी की पवित्र धाराएँ उज्ज्वल प्रकाश से दीप्त थीं। बहुत मनोरम दृश्य था। साईके उठी और तब उसने देखा कि नदी के एक ओर उससे थोड़ी ही दूरी पर एक बहुत ही विशाल महल खड़ा है। उसे देखकर मालूम होता था कि अवश्य ही वह किसी पराक्रमी देवता का महल है जिसके खंभे सोने के, दीवालें चाँदी की और फर्श जवाहिरातों से जड़ी हैं। क्या कहने थे उस महल के ऐश्वर्य के!

सारा महल तेज प्रकाश से जगमगा रहा था। नीलम का बना हुआ विशाल फाटक और पन्ने से जड़ी खिड़कियाँ प्रकाश में थिरकती सी प्रतीत होती थीं, परन्तु कहीं भी किसी प्रकार का कोई भी शब्द सुनाई नहीं पड़ता था। महल कई मंजिलों ऊँचा था और इतना बड़ा था कि उसके पूरे विस्तार का निरीक्षण दूर खड़े होकर भी आँखें घुमाकर करना पड़ता था। साईके उसे देखकर आश्चर्यचकित रह गई।

उसने समझ लिया कि यह कोई जनशून्य महल है और तब वह जिज्ञासा के कारण पास आई। इतना वैभव पास से देखकर वह भौचक्की रह गई। उसका साहस नहीं हुआ कि अंदर घुस जाय और वह वहीं ठिठक कर खड़ी हो गई। उसी समय उसने आवाज़ें सुनीं। कई आदमी उससे कुछ कह रहे थे परन्तु वह दिखाई नहीं देते थे। साईके ने उनके शब्दों पर ध्यान न दिया। उसने सुना कि वह उसी को संबोधित कर रहे थे और महल में चले आने को कह रहे थे। उसने सुना :

"हे सुंदरी! तुम अंदर क्यों नहीं आती? यह महल तो तुम्हारा ही है—यह सब भोग-विलास की वस्तुएँ तुम्हारे लिये ही यहाँ रखी गई हैं। तुम इन सब की एकमात्र स्वामिनी हो. . . .तुम अंदर आओ और तुम्हें अंदर उत्तम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुख हो रहा है. . . .क्या करें एपोलो की आज्ञा है।"

साईके ने धीरज के साथ सब कुछ सुना। तत्पश्चात् वह धीरे से बोली :

"अब दुख करना व्यर्थ है । अगर दुख ही करना था तो तब करते जब मैं पैदा हुई थी। मेरी सुंदरता ही मेरी शत्रु बन गई है। स्वर्ग की देवी वीनस मेरी इसी सुंदरता से नाखुश हो गई है—परन्तु अब भला हो भी क्या सकता है। वीनस मुझसे मेरे रूप के कारण जलती है और वह ठहरी सर्वशक्तिमान देवी, भला मैं साधारण मानवी उससे क्या मुकाबला कर सकती हूँ ? अब तो जो कुछ भी होना है, हो। मैं खुश हूँ कि इस निरंतर यातना का अंत तो आ गया है. . . ."

सब लोगों ने सुना और खामोश हो गये। उस भयंकर परों वाले सर्प के बारे में उससे कहने का साहस किसी को नहीं हुआ। तब सब लोग उसे साथ लेकर उस पहाड़ पर गये और जब अंधकार चारों ओर छा गया तो उसे वहाँ अकेली असहाय छोड़कर चले आये। उनका हृदय दुख से फटा जा रहा था पर मजबूरी थी। साईके अंधकार में घबराई नहीं। शांत हृदय से आने वाले पति की बाट देखती रही, परन्तु यह हालत उसकी बहुत देर तक नहीं रही। वह पहाड़ की चोटी पर एक ऊँची चट्टान पर बैठ गई। उसी समय धड़ाके का एक भयानक शब्द हुआ और साईके का धीरज छूट गया। अब वह अज्ञात भय से थर-थर काँपने लग गई और उसके दाँत बजने लगे। उसकी आँखें भय से बंद हो गई। वह देर तक उसी भाँति बैठी रही। थोड़ी देर बाद ही मंद-मंद समीरण बहने लगा और उसके साथ सुगंधित पुष्पों की मादक महक चारों ओर फैलने लगी। साईके उसको सूँघकर नशे में झूमने लगी। तभी किसी अज्ञात और अदृश्य शक्ति द्वारा उसका शरीर उस चट्टान से ऊपर उठ गया और वह हवा में तैरती हुई नीचे की ओर न जाने किस दिशा (क्योंकि इसका तो उसे उस समय ध्यान ही न था) की ओर जाने लगी। जब उसे होश आया तो उसने अपने आप को हरी घास से आच्छादित पृथ्वी पर पड़े पाया। घास बहुत सुहावनी और गुदगुदी थी जिस पर लेटने से उसे अत्यंत सुख का अनुभव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुआ। इस विचित्र नशे के कारण अब उसका वह भय एकदम से जाता रहा था परन्तु उसे नींद जोरों से आ रही थी। उसने घास पर अपने अंग फैला दिये और वह सो गई।

न जाने वह कब तक सोती रही। परन्तु जब जागी तो उसने अपने को एक नदी के किनारे पड़े पाया। नदी की पवित्र धाराएँ उज्ज्वल प्रकाश से दीप्त थीं। बहुत मनोरम दृश्य था। साईके उठी और तब उसने देखा कि नदी के एक ओर उससे थोड़ी ही दूरी पर एक बहुत ही विशाल महल खड़ा है। उसे देखकर मालूम होता था कि अवश्य ही वह किसी पराक्रमी देवता का महल है जिसके खंभे सोने के, दीवालें चाँदी की और फर्श जवाहिरातों से जड़ी हैं। क्या कहने थे उस महल के ऐश्वर्य के!

सारा महल तेज प्रकाश से जगमगा रहा था। नीलम का बना हुआ विशाल फाटक और पन्ने से जड़ी खिड़कियाँ प्रकाश में थिरकती सी प्रतीत होती थीं, परन्तु कहीं भी किसी प्रकार का कोई भी शब्द सुनाई नहीं पड़ता था। महल कई मंजिलों ऊँचा था और इतना बड़ा था कि उसके पूरे विस्तार का निरीक्षण दूर खड़े होकर भी आँखें घुमाकर करना पड़ता था। साईके उसे देखकर आश्चर्यचकित रह गई।

उसने समझ लिया कि यह कोई जनशून्य महल है और तब वह जिज्ञासा के कारण पास आई। इतना वैभव पास से देखकर वह भौचक्की रह गई। उसका साहस नहीं हुआ कि अंदर घुस जाय और वह वहीं ठिठक कर खड़ी हो गई। उसी समय उसने आवाज़ें सुनीं। कई आदमी उससे कुछ कह रहे थे परन्तु वह दिखाई नहीं देते थे। साईके ने उनके शब्दों पर ध्यान न दिया। उसने सुना कि वह उसी को संबोधित कर रहे थे और महल में चले आने को कह रहे थे। उसने सुना :

"हे सुंदरी! तुम अंदर क्यों नहीं आती? यह महल तो तुम्हारा ही है--यह सब भोग-विलास की वस्तुएँ तुम्हारे लिये ही यहाँ रखी गई हैं। तुम इन सब की एकमात्र स्वामिनी हो. . . .तुम अंदर आओ और तुम्हें अंदर उत्तम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भोजन तैयार मिलेगा। पर तुम पहिले अंदर आकर स्नान करना चाहोगी यह भी हम जानते हैं। इसलिए तुम सुगंधित जल में स्नान करो और फिर अमूल्य वस्त्रों और दिव्य आभूषणों से अलंकृत होकर उत्तम गर्म भोजन करो.. ..हम सब तुम्हारी सेवार्थ भेजे गये दास हैं...हमें अवसर दो कि हम तुम्हारी सेवा कर सकें।"

साईके उन आवाज़ों को सुनकर आश्चर्य से भर उठी पर तब उसने हिम्मत के साथ उस महल में प्रवेश किया। अंदर की जो सजावट और जो वैभव उसने देखा तो उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं। इतना सब कुछ उसी का था। यह बात उसके हृदय में बैठ नहीं रही थी। जब वह स्नानगृह में पहुँची तो उसने देखा कि वह एक बहुत ही बड़े कमरे में खड़ी है जिसकी दीवालें चाँदी की और छत सोने की है। फर्श पर स्वच्छ बिल्लौर बिछा हुआ है जिसके अंदर विचित्रता से जवाहिरात जड़े हैं जो विद्युत के से प्रकाश में जगमगा रहे हैं। चारों ओर कृत्रिम हरे-भरे बाग का सा नक्शा बना हुआ है और कमरे के बीच एक चाँदी का फव्वारा निकल रहा है जिसमें से गर्म पानी निकल रहा है। पूरा स्नानागार मदमत्त कर देने वाले फूलों से आच्छादित है और सोने के बने बड़े हौज़ (टब) में सुगंधित जल उसकी प्रतीक्षा देख रहा है। साईके उन सब को देख कर बहुत खुश हुई और उसने अपने वस्त्र उतारे और उस सुगंधित जल से भरे हौज़ में उतर गई। उसने अनुभव किया कि अदृश्य स्त्री के कोमल हाथों ने उसके शरीर को मल-मलकर स्वच्छ कर दिया है। वह बड़ी देर तक नहाती रही। जब वह स्नान कर चुकी तो अदृश्य ही स्त्री-हाथों ने उसके शरीर को नर्म और सुगंधित वस्त्र से पोंछा और फिर उसके सुंदर शरीर पर सुगंधित तेल लगा कर मर्दन किया। तत्पश्चात् उसके केशों को सूतकर उनको बाँधा और विचित्र तथा सुन्दर जूड़ा बनाया। जब वह दिव्य वस्त्रों और आभूषणों से अलंकृत होकर निवृत्त हुई तब खाने की मेज पर अज्ञात हाथों द्वारा ले जाई गई जहाँ उत्तम से उत्तम गर्म भोजन सोने की थालियों में उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। अति स्वादिष्ट मीठी मदिरा पीकर वह नशे में झूम पड़ी। जब वह खा रही थी तो मधुर संगीत लहरियों से प्रकोष्ठ कंपित हो रहा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धीमे-धीमे वाद्य बजते रहे और वह खाना खाती रही परन्तु दिखलाई कुछ नहीं देता था। खाना खा लेने के बाद वह देर तक बैठी हुई मधुर संगीत सुनती रही और फिर शयन-कक्ष में जाकर कोमल सुवर्ण की शैया पर सो गई। जब वह उठी तब शाम झुक आई थी। वह अब भी अकेली थी सिवा इसके कि जब तब उससे वह अदृश्य व्यक्ति बात कर लेते थे। परन्तु न जाने क्यों उसे एक प्रकार की प्रेरणा हो रही थी कि जब रात होगी तब उसका पति उसके पास अवश्य आ जायगा। उसने अपना शृंगार अलौकिक रूप से किया और अत्यंत मीठी शराब भी मात्रा से अधिक पी। जब वह ऐसा कर रही थी तभी एक पुष्पबाण उसके हृदय पर आकर लगा। वह केवल स्पर्श से और सुगंध से ही ऐसा अनुभव करने लगी थी कि अवश्य ही वह पुष्पबाण था क्योंकि दिखाई तो उसे वह भी नहीं दिया था। उस बाण का लगना था कि वह एकदम विह्वल हो उठी। तीव्र वासना से उसका शरीर जलने लगा और वह अपने आने वाले पति से मिलकर प्रेम करने को आतुर हो उठी। एक विचित्र मादकता से भर उठी और उच्छ्‌वसित होकर इधर से उधर विचलित भाव से घूमने लगी। एक बार फिर उसने अपने अनूठे शृंगार का निरीक्षण किया और अबकी उसने अपने वस्त्र शिथिल कर लिये। जब रात्रि का भोजन करने के उपरांत वह शैया पर सो गई तो स्वतः उस कक्ष में अंधकार फैल गया। उजाला जाता रहा और तभी उसने अपने बगल में अपने पति को पाया जिसके शरीर और मुख से मदहोश कर देनेवाली सुगंध निकल कर पूरे कक्ष में फैल रही थी। उसके पति ने आकर उसे छुआ ही था कि उसने अपना अंग उसकी बाहों में ढीला छोड़ दिया।

उसके पति ने उससे बहुत प्रेम किया और उसके कानों में मधुर वाणी से फुसफुसाकर वह उससे बातें करता रहा। साईके के हृदय का भय और शक अब बिलकुल जा चुका था और वह प्रेम से विभोर होकर अपने पति से आलिंगन-बद्ध होकर अपने हाथों से उसे छू-छू कर देखने लगी। वह अब पूर्ण स्वस्थ और खुश थी क्योंकि अब उसका शक दूर हो चुका था कि उसका पति दानव या अजदहा या सर्प नहीं है बल्कि सुंदर, स्वस्थ और बलिष्ठ देह वाला मनुष्य ही है जिसकी प्रतीक्षा वह काफी समय से कर रही थी। हालाँकि उसने अभी उसे देखा नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था तब भी वह उसके सहवास और स्पर्शमात्र से ही पुलकित हो उठी थी। वह अत्यंत प्रसन्न थी क्योंकि उसके हृदय की आकांक्षा पूरी हो गई थी।

प्रातःकाल जब वह सोकर उठी तो उसने अपने बगल में किसी को नहीं पाया। फिर वैसा ही वातावरण उपस्थित हो गया। आवाज़ें जरूर सुनाई पड़ती थीं पर दिखलाई कोई नहीं देता था। अब वह अपने आप को वैभव से पूर्ण महल की पूर्णरूप से स्वामिनी समझने लग गई और इतने अच्छे पति के पाने से गर्व से उसकी छाती फूल गई। जब पूरा दिन निकल आया और फिर रात्रि आई तो उसका पति फिर उसके पास आ गया परन्तु प्रातःकाल होने के पहले ही चला भी गया।

इसी तरह नित्य रात्रि समय उसे अपने प्रियतम का सहवास मिल जाता था परन्तु दिवस में बिल्कुल अकेली रहा करती थी। इसी प्रकार कुछ मास व्यतीत हो गये और तब उसके हृदय में यह अधूरा प्रेम अखरने लगा। जिस पति से वह इतना अधिक प्रेम करती थी वही उसे दिखलाई क्यों नहीं देता? वह कैसा है? क्यों इस प्रकार छिपा रहता है? इत्यादि तरह-तरह के प्रश्न उसके हृदय में उठने लग गये थे और वह जितना ही इन प्रश्नों को दबाकर शांतिपूर्वक रहना चाहती उतने ही सजीव होकर वह उसके सामने बार-बार उठते। परन्तु फिर भी किसी प्रकार अपने हृदय की शंकाओं को दबाकर उसने यह समझने का पूरा प्रयत्न किया कि वह पूर्ण रूप से प्रसन्न है। इसी भाँति दिन गुजरते रहे और वह नित्य अनेकानेक शृंगार से रत होकर रात्रि समय अपने पति से मिला करती थी। वह भी उससे दिन प्रतिदिन अधिकाधिक प्रेम से मिलता था और उसके कानों में फुसफुसाकर बातें किया करता था....

एक रात जब वह अपने पति के साथ बातें कर रही थी तो उसका पति बोला:

"आज मैं तुम्हें खबरदार कर देना ठीक समझता हूँ क्योंकि शायद हमारे ऊपर संकट आना चाहता है....जिस पहाड़ पर से तुम गायब होकर यहाँ आ गई थीं, वहाँ आज तुम्हारी बहिनें तुम्हें मरी हुई समझ कर, तुम्हारे लिये रोने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आने वाली हैं। कहीं तुम उनके सामने प्रकट मत हो जाना वरना समझ लो कि मेरे और तुम्हारे दोनों ही पर भारी संकट आ जायगा. . . .''

साईके ने सुना और गंभीर होकर वह बोली :

''मैं वचन देती हूँ कि मैं उनसे बिल्कुल नहीं मिलूँगी। भला जब हमारा मिलन इतनी बड़ी विपत्ति ला सकता है तब तो निश्चय ही उनसे मुझे नहीं मिलना चाहिये,'' परन्तु यह सब उसने ऊपरी मन से ही कहा था क्योंकि दूसरे दिन वह सुबह से शाम तक रोती रही। उसे रह-रह कर अपने बहिनों की याद सता रही थीं। उसे पति द्वारा कही गई सारी बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था क्योंकि उसने सोचा कि भला बहिनों से मिलकर उसका या उसके पति का बिगड़ भी क्या सकता है।

जब रात्रि हुई और उसका पति आया तो उसने देखा कि साईके की आँखें आँसुओं से भरी हुई हैं। उसने उसे बहुत प्यार किया और समझाने का प्रयत्न किया परन्तु उसने कोई उत्तर नहीं दिया। निदान वह पुरुष जो इस स्त्री से इतना अधिक प्रेम करता था, और उसके दुख को सहन न कर सका और तब वह बोला :

''प्रिये ! रोती क्यों हो ? तुम्हारी बहिनें तुम्हारे लिये रोने आ रही हैं . . . .यदि तुम उनसे मिलने को वास्तव में इतनी उतावली हो रही हो तो जाओ मिल आओ. . . .परन्तु यह बात मैं स्पष्ट फिर भी कहूँगा कि उनसे मिल कर तुम अपने ऊपर आफ़त ही बुला रही हो. . . .पर खैर जब तुम नहीं समझती तो जाओ तुम्हें स्वतंत्रता है चाहे जैसा करो. . . .''

साईके यह सुनते ही प्रसन्न हो उठी। अब उसका रोना गायब हो गया और वह हँसती हुई पति की ओर देखने लगी जो अंधकार में दिखलाई तो नहीं पड़ता था पर उसका स्पर्श और उसकी वाणी तो साफ़ सुनाई पड़ रही थी। उसको ऐसे देखकर वह बोला :

''एक बात और है जिसके प्रति मैं तुम्हें समय के अंदर ही सावधान कर देना चाहता हूँ। यदि तुमने किसी के बहकाने, सिखाने या भड़काने से मुझे—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरे शरीर और मेरे मुख को कभी देखने का प्रयत्न किया तो बस समझ लो कि तुम्हारा और मेरा साथ हमेशा के लिये छूट जायगा. . . ."

साईके अब अपने बहिनों से मिल सकने की आज्ञा पाकर बहुत खुश हुई और उसने ऊँचे स्वर से चिल्लाकर कहा :

"मैं वचन देती हूँ मैं ऐसा कभी नहीं करूँगी. . . ." फिर अपने आप पर संयम करते हुए बोली : "तुम्हारे बिना तो मैं रह ही नहीं सकती हूँ. . . . तुम जैसे कहोगे वैसे ही रहूँगी पर सिर्फ़ मुझे इतनी सी आज्ञा दे दो कि मैं अपनी बहिन से मिल सकूँ।"

उसके पति ने उदास भाव से उसे स्वीकृति दे दी। तत्पश्चात् वह सो गया। पर साईके अपनी बहिनों के बारे में ही सोचती हुई सारी रात जागती रही।

दूसरे दिन जब सुबह हुई तो साईके की दोनों बहिनें उसके लिये रोने मातम के काले कपड़े पहने हुए उसी पहाड़ की चोटी पर पहुँची। जैसे ही वह बैठकर रोने लगीं वैसे ही जैफ़ायर हवा चलाता हुआ आया और उन्हें अपनी मदहोश खुशबू सुँघाकर हल्की बेहोशी में बेखबर करते हुए हवा में उड़ाकर साईके के महल के सामने की नदी के किनारे ला पटका। जब वे स्वस्थ हुईं तो आश्चर्यचकित तथा भय से काँपते हुए उन्होंने अपने चारों ओर देखा। नदी का मनोरम दृश्य और सामने ही गगनचुंबी सतखंडी अट्टालिका को देखकर वह भौंचक्की रह गईं। प्रभात की सूर्य रश्मियों से उस महल के सुवर्ण के खंभे और जड़ाऊ दीवालें जगमगा रही थीं। वे अभी घबरा कर देख ही रही थीं कि उस सुनसान वातावरण को अपनी कोकिल ध्वनि से कंपित करती हुई और प्रसन्नता से खिलखिला कर हँसती हुई साईके उस महल के नीलम से बने हुए बड़े फाटक के बाहर निकली। उस समय उसका शृंगार अद्भुत था क्योंकि उसके शरीर पर वज्र और सुवर्ण के विचित्र आभूषण चमक रहे थे और वस्त्र बहुत ही सूक्ष्म और कम थे जिनमें से उसके शरीर के उत्कट यौवन की ज्वाला बाहर निकल रही थी। वह साक्षात् स्वर्ग की देवी सी प्रतीत हो रही थी जिसके सिर पर हीरे का मुकुट शोभायमान था। उसके स्वच्छ और उफनते हुए यौवन को देखकर स्वर्ग के देवता उस समय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विचलित हो उठे थे।

वह महल के बाहर आई और दौड़कर अपनी बहिनों से बारी-बारी लिपट गई जो उसे जीवित और इतने ठाटबाट से देखकर आश्चर्य से उसकी ओर देखती ही रह गई थीं। जब वह उनसे लिपट कर रोने लगी तब उन्हें भी वास्तविकता का ध्यान हुआ और वह भी विरह के लंबे समय के पश्चात् मधुर मिलन के कारण रोमांचित हो उठीं और रोने लगीं। बहुत देर तक वह आपस में लिपटी रहीं और पुरानी बातें याद करके रोती रहीं। तत्पश्चात् साईके उनके हाथ पकड़े हुए महल के अंदर दाखिल हुईं। पर महल के अंदर की बेशुमार दौलत और वैभव को देखकर स्त्रियाँ अपने मन में ईर्षा का भाव अनुभव करने लगीं। जब उन्होंने दोपहर के समय मेज पर रखा हुआ बेहतरीन गर्म खाना और मीठी मदिरा पी तब उनकी ईर्षा की अग्नि और भी प्रज्वलित हो उठी। वे स्वयं प्रतापी और ऐश्वर्य से पूर्ण राजाओं की रानियाँ थीं परन्तु उन्होंने आज तक इतने ठाटबाट कभी नहीं देखे थे। मन ही मन वह साईके के भाग्य से जलने लगीं और सोचने लगीं 'कि आखिर कौन है वह विचित्र पुरुष जो इसका पति है ? क्यों नहीं वह सामने आता और इस प्रकार छिपा रहता है ? क्यों नहीं वह सारे दास और दासियाँ सामने आते जो केवल बोलते हैं और काम करते हैं। यह आखिर रहस्य क्या है ?' तब उन्होंने अनजाने बनते हुए साईके से पूछा :

"तुम्हारे पति कहाँ हैं ? हमें उनसे क्यों नहीं मिलातीं—हम तो उन्हें देखने को इतनी अधिक इच्छुक हैं।"

साईके ने धीरज के साथ शांत स्वर में उत्तर दिया :

"वह एक सुंदर नवजवान पुरुष हैं और इस समय शिकार खेलने जंगलों में घोड़े पर बैठकर चले गये हैं....मजबूरी है कि इस समय वह तुमसे नहीं मिल सकते...."

उसकी बहिनें उसके इस प्रकार स्वाभाविक तरह से उत्तर देने से चुप हो गईं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब तीसरा पहर ढल चुका था और वह स्त्रियाँ वापस जाने को उद्यत हुईं। साईके ने प्रेमपूर्वक उनको दोनों हाथ भरकर सुवर्ण और जवाहिरात भेंट में दिये। तत्पश्चात् जैफ़ायर से कहा कि वह उन्हें मंद मलयानिल पर चढ़ाकर पहाड़ की उसी चोटी पर पहुँचा दे। जैफ़ायर तुरंत उन्हें लेकर स्वामिनी की आज्ञानुसार पहाड़ की चोटी पर छोड़ आया।

दोनों बहिनें तीव्र ईर्षा के कारण जल रही थीं। इतना वैभव, इतना आराम और सवारी के लिये हवा का रथ देखकर वह अब इतनी अधिक द्वेष से भर उठीं कि उन्होंने साईके का नाश ही करने के लिये षड्यंत्र रचने की सोची।

उसी रात साईके को उसके पति ने फिर सावधान किया कि वह दुबारा अपनी बहिनों से न मिले। उसने कहा :

"प्रिये ! अच्छा हो यदि तुम उनसे न मिलो और उन्हें यहाँ फिर आने ही न दो क्योंकि ऐसा करने से निश्चय ही हमारा अनिष्ट होगा।"

परन्तु सब कुछ सुनकर साईके ने उत्तर दिया :

"तुम मेरे प्रियतम हो—तुम तो मुझे दिखते नहीं। यहाँ तक तुमने मझसे वचन ले लिया है कि मैं कभी तुम्हें देखने का उपक्रम भी न करूँ। अब क्या मैं अपनी प्यारी बहिनों से भी नहीं मिलूँ ? यह तो तुम्हारी मेरे ऊपर ज्यादती है.. ..मैं तुम्हारी प्रिया हूँ....क्या तुम मुझे इस प्रकार बंधन में रखकर दुख देना चाहते हो ?" और वह रोने लगी। मजबूरन उसके पति न उदास भाव से फिर उन्हें बुलाने की आज्ञा दे दी। सुनकर साईके खुशी से फूली न समाई।

एक सप्ताह बाद जब वह दोनों स्त्रियाँ फिर उस पहाड़ पर आईं तो साईके की आज्ञा से जैफ़ायर उन्हें हवा में तैराकर महल में ले आया। साईके उनसे फिर मिलकर रोई। अबकी बार उन दोनों ने बाकायदा षड्यंत्र फैलाकर साईके के नाश करने का निश्चय कर लिया था। उन्होंने उससे बहुत प्यार किया और उसका पूर्ण विश्वास अपनाया। उन्होंने उससे बातों ही बातों में उसके पति के बारे में बहुत से प्रश्न किये जिनका सही उत्तर वह न दे सकी। वह कभी अटकती तो कभी हिचकिचाती थी। उसकी ऐसी हालत देखकर वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मन ही मन समझ गई कि स्वयं साईके ने भी कभी अपने पति को नहीं देखा था। परन्तु वह चतुर थीं; उन्होंने यह बात उस पर प्रकट नहीं की कि वह जान गई हैं कि उसने कभी अपने पति को देखा नहीं है बल्कि उल्टे उसे फटकारते हुए ताना देने लगीं कि वह अपने पति के बारे में खासकर उनसे जो प्यारी बहिनें थीं उनसे भी छिपाव रखती है। साईके सुनकर चुप रही। तब मौका देखकर वह बोलीं :

"माफ़ करना परन्तु हमने सुना है कि तुम्हारा पति मनुष्य नहीं है बल्कि एक भयानक उड़ने वाला, भारी परदार सर्प है जैसा कि एपोलो ने पिता से कहा था ....वह इस समय अवश्य तुम्हारे प्रति नेक और दयावान है परन्तु यह निश्चय है कि अपनी सर्प वृत्ति होने से वह तुम्हें किसी न किसी दिन ऐसा खा जायगा कि तुम्हारा अस्तित्व ही संसार से उठ जायगा...." ..

यह सुनकर साईके का हृदय काँप गया। भय से वह पीली पड़ गई। अपने पति के प्रति अब उसके हृदय में तनिक भी प्रेम न रहा उल्टे तीव्र घृणा से वह भर उठी। वह सोचने लगी कि जो कुछ उसकी बहिनों ने कहा था सही हो सकता था। उसने स्वयं तो उसे कभी देखा नहीं था फिर भला वह उन्हें कैसे झुठा सकती थी! फिर उसको ध्यान आया कि हो न हो यह बात बिल्कुल सच है। नहीं तो भला क्यों नहीं उसका पति उससे दिन के उजाले में मिलता? वह सदा रात्रि के अंधकार में ही आता था—उसके आने के पहिले सभी चिराग गुल हो जाते थे। सोने का वह कमरा इतना अंधकार था कि चाँद की रोशनी भी वहाँ कभी नहीं पहुँचती थी। ज़रूर बात ऐसी है कि वह मानव नहीं है...वह सर्प है सोचकर उसके शरीर में कँपकँपी चढ़ आई और पसीने से लथपथ वह भय की सीमा को पहुँच गई। वह मानवी....वह सुंदरी स्त्री....और एक उड़न सर्प की स्त्री है। उसका हृदय घृणा से भर गया। वह आगे कुछ न सोच सकी। उसके नेत्रों के सामने अँधेरा छा गया। वह आँखें बंद किये बैठी रही। उसके मस्तिष्क में भयंकर विचारों के तूफ़ान छा गये....वह एक सर्प की स्त्री है!.....वह एक सर्प की स्त्री है!!....उसकी बहिनों ने उसकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह हालत देखी तो वह आँखों ही आँखों में एक दूसरी को देखकर मुस्कराईं तत्पश्चात् कृत्रिम समवेदना प्रकट करने लगीं। बड़ी देर ऐसे ही बैठे रहने के बाद वास्तविकता की ओर साईके जब आई तो वह रोने लगी। वह फफक-फफक कर रोती हुई अपनी बहिनों से लिपट गई। वह बोली :

"मुझे बचाओ....मुझे बचाओ....बोलो मैं क्या करूँ?"

वे तो यह चाहती ही थीं। अब तो उन्हें मन की मुराद मिल गई। बोलीं :

"प्यारी साईके! तुझे देखकर हमें बहुत दुख होता है....तेरी जैसी सुंदरी युवती के साथ ऐसा अन्याय हो, भला हम कैसे सहन कर सकती हैं! अब भी तुझे सावधान हो जाना चाहिये...."

"बताओ....बताओ....मुझे जल्दी बताओ," बीच ही में साईके चीख उठी। तब वह धीरे से बोली :

"आज रात उसके आने से पहले ही तुम एक दीपक और छुरी तैयार रखो। जब वह सो जाय तो चुपचाप तुम शैया को छोड़कर उठ बैठो और दीपक जलाओ। उजाले में तुम्हें उसका भयंकर रूप दिखाई देगा। तुम उसे देखकर उस समय घबराना मत और न चीखना, न चिल्लाना। सधे हुए हाथों से और साहस से वह छुरी उसके हृदय में घुसा देना। जब वह मर जायगा तब हम तुम्हें यहाँ से निकाल ले जायँगी क्योंकि हम उस समय पास ही रहेंगी....तुम्हें इस समय हिम्मत से काम लेना है क्योंकि तुम भारी खतरे में पड़ी हुई हो...."

वे उठीं और उससे बिदा लेकर महल से बाहर चली आईं और वहीं कहीं झाड़ियों की ओट में छिपी बैठी रहीं। वह खुश थीं क्योंकि उनकी चाल चल गई थी। वह सर्प है, मनुष्य नहीं है, यह तो उन्हें निश्चय ही था क्योंकि उनके पिता से स्वयं एपोलो ने ऐसा कहा था। अब उन्हें यह भी निश्चय हो गया कि साईके उसे अवश्य मार डालेगी....तब वह असहाय होकर उन्हीं का मुँह ताका करेगी....तब उसका यह सुख और ऐश्वर्य कुछ भी न रहेगा.... इस विचार से उनके मन में और आनंद हुआ। वह स्त्रियाँ दुष्ट थीं और कभी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किसी को समृद्ध देखकर सुख नहीं पाती थीं। साईके के नाश करने में ही वह सुख का अनुभव करने लगीं।

उनके जाने के बाद साईके बैठी-बैठी सोचने लगी। क्या वह अपने प्रियतम को मार सकेगी? नहीं, हरगिज़ नहीं। परन्तु क्यों नहीं? वह तो मनुष्य नहीं था—वह तो भयानक सर्प था जो यदि न मारा गया तो किसी न किसी दिन जब वह अपनी आदत पर आयेगा, उसी को खा जायगा—वह उसे ज़रूर मारेगी, छोड़ेगी नहीं। परन्तु तभी उसके हृदय में यह बात उठी कि वह उसके सहवास में कितना सुख पाती है, कितना अधिक प्रेम करता था वह उसे, कितने प्यार से वह उसे सुलाया करता था. . . .आह! वह कैसी अच्छी देह का था जो उसे अपने आलिंगन में अनंत सुख देता था। नहीं, नहीं वह उसे कभी नहीं मारेगी।

'मारूँ या न मारूँ' इसी उधेड़बुन में शाम हो गई परन्तु वह कुछ भी निश्चय न कर सकी। उस रात उसने कोई खास शृंगार भी नहीं किया और वैसे ही शैया पर लेटी अपने पति के आने की बाट देखने लगी। वह आया और उससे प्रेम करने लगा। उसने उसका कोई विरोध नहीं किया परन्तु उसके हृदय में भीषण द्वंद्व अब भी चल रहा था। जब वह सो गया तो वह चुपचाप उठी और उसने दो-एक बार खासा। वह न हिला, न बोला। साईके ने उसकी श्वास देखी। वह सो चुका था। उसने अब यह तो तय कर ही लिया था कि जो कुछ भी हो वह चिराग जलाकर उसे देखेगी तो जरूर ही। मारने न मारने के बारे में फिर देखा जायगा। उठकर उसने चुपचाप चिराग जलाया। फिर उसे लेकर पंजों पर चलती हुई वह शैया के पास पहुँची और उसने चिराग ऊँचा कर उसे देखा. . . .

हाय! वह कितना सुंदर था—उसकी सुंदरता से दीपक भी पूर्ण ज्योति से चमकने लग गया। उसके नेत्र प्यार से भर आये। कितनी दुष्टा थीं उसकी वह बहिनें जिन्होंने उसे सर्प बतलाया था। वह तो देवताओं से भी सुंदर था—कितनी बलिष्ठ देह वाला और सौंदर्य का साक्षात्कार स्वरूप था वह. . . . उसका हृदय उसके प्रति अगाध प्रेम से उमड़ आया और उसकी आँखें भर आईं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धिक्कार है उसे जो उसने अपने ऐसे अलौकिक पति पर अविश्वास किया। अब उस छुरी से उसने अपने आप को ही मार लेना उचित समझा। परन्तु वह उसके काँपते हाथों से छूट कर नीचे गिर गई। साईके घुटनों के बल बैठकर उसकी सुंदरता को आँखों से पी लेना चाह रही थी। आज उसका हृदय पूर्णतया तृप्त हो गया था। उसे गर्व हो रहा था कि वह संसार के सर्वश्रेष्ठ पुरुष की प्रिय स्त्री थी। वह काँपते हाथों से दीपक पकड़े हुए उसके रूप पर दीवानी होकर झुकी जा रही थी। परन्तु जिस दीपक ने उसे अपने पति के अपूर्व सुंदरता का दर्शन कराया था वही अब उसके लिये परम शत्रु बन गया। घुटनों पर बैठी हुई साईके ने जैसे ही झुककर उसे देखा उसके रोमांच से काँपते हाथों में वह दीपक हिल गया और उससे गर्म तेल उसके पति के कंधे पर गिर गया। वह एकदम हड़बड़ाकर उठ बैठा। उसने क्षण भर में ही प्रकृतिस्थ होकर परिस्थिति समझ ली। सामने ही उसकी स्त्री दीपक लिये उसकी ओर देख रही थी। वह एकदम बिना कुछ कहे-सुने उठा और तेज कदमों से चलते हुए महल से बाहर चल दिया।

साईके ने उसे जाते देखा तो वह घबरा कर उसके पीछे भागी। परन्तु तब तक वह अन्धकार में लोप हो चुका था। वह भागती जा रही थी और रोती हुई उसे बुला रही थी। परन्तु वह नहीं लौटा। वह भागते-भागते गिर गई और एक चट्टान पर सिर रखकर हताश होकर बैठ गई। तभी उसने सुना। उसका पति कह रहा था:

"जहाँ विश्वास नहीं होता वहाँ प्रेम नहीं रहता....मैं कामदेव हूँ.... प्रेम का देवता....तूने मुझ पर ही विश्वास नहीं किया!" और तब सब कुछ शांत हो गया।

अंधकारपूर्ण रात्रि में वह अकेली रह गई। उसका पति उसे छोड़ कर जा चुका था। साईके हतबुद्धि होकर बैठी रही।

कामदेव उसका पति था। हाय! वह जो प्रेम का सुंदरतम देवता है। वह अभागी ऐसा पति पाकर भी उस पर विश्वास न कर सकी—उसको मर जाना चाहिये था। कहाँ मिलेगा अब वह—आह वह कितनी अभागी थी—कामदेव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

——साक्षात कामदेव को पाकर भी उसने अविश्वास से खो दिया। तो क्या वह चला गया. . . .क्या वह फिर कभी उसे नहीं मिलेगा ? अब वह क्या करे. . . . कहाँ जाय ? और तब वह रोने लगी। उसका हृदय दुख से बैठा जा रहा था। बहुत देर बाद वह उठी और कहने लगी :

"मैं उसे प्यार करती हूँ. . . .मैं उसके बिना चैन नहीं पा सकती। वह मुझे छोड़ गया है तो क्या हुआ ? मैं तो उसे हृदय से चाहती हूँ. . . .मैं दुनिया को दिखा दूँगी कि मेरे हृदय में उसके लिये कितना प्रेम है।"

और तब वह चली। उसके जाने की दिशा निश्चित नहीं थी क्योंकि वह स्वयं ही नहीं जानती थी कि उसे कहाँ जाना है। वह केवल इतना जानती थी कि उसे अपने पति को ढूंढ़ना है और वह उन्हें तब तक ढूँढ़ती रहेगी जब तक उसके तन में प्राण रहेंगे।

कामदेव का सारा प्रयत्न निष्फल हो गया। उसने अपने माता की इच्छानुसार ही यह प्रसिद्ध किया था कि साईके का पति एक भयंकर सर्प है। वह उससे छिपा कर ही साईके से रात्रि के अंधकार में मिला करता था। एपोलो द्वारा उसने भयंकर सर्प वाली बात प्रसिद्ध कर दी थी। अब जब साईके ने उसे देख लिया था तो यह लाजिमी था कि बात उसके मुँह से फूटतीं। अगली बार जब उसकी बहिनें आकर उसे छेड़तीं तो वह अवश्य जोश में आकर उसकी अस्लियत खोल देती। यदि वे न भी आती तब भी वह उन्हें बुलाकर फटकारती, यह भी स्वाभाविक ही था। और जब गुल फूटता तो वीनस भी जान जाती और तब तो वह उसे दंडित अवश्य करती। उसे तब अपने वचन से उसके सामने नीचे गिरना पड़ जाता। इसीलिए अब वहाँ वह चाहकर भी नहीं ठहर सका। साईके के अविश्वास से भी वह नाखुश था।

जब वह गर्म तेल से जल गया तो उसके कंधे का घाव पीड़ा देने लगा। वह सीधे अपनी माता वीनस के पास गया और अब जब कि वह साईके को छोड़ आया था तो उससे कुछ भी छिपाने की उसने आवश्यकता नहीं समझी। उसने अपना घाव दिखाया जिसे देख कर वीनस घबरा गई और उसकी सुश्रूषा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करने लगी परन्तु जब उसे मालूम हुआ कि वह साईके से प्रेम करता रहा है और यह घाव उसी द्वारा हुआ है तो क्रोध से वह पागल हो उठी। उसने तुरंत उसे अकेले छोड़ दिया और सारी खिदमतें भी खत्म कर दीं। वह सीधी साईके को ढूँढ़ने चली। उसने निश्चय कर लिया था कि जहाँ भी वह उसे मिलेगी वहीं उसे वह पकड़ कर घोर यातनाएँ देकर पुत्र की पीड़ा का बदला लेगी।

बेचारी साईके अपने प्रेमी को सारे संसार में ढूँढ़-ढूँढ़ कर हार गई पर वह उसे कहीं नहीं मिला। वह निराश हो गई। उसने सभी देवताओं को अनेकानेक भेंटें भी दीं और कुर्बानियाँ भी कीं। देवता उसका हाल देखकर द्रवित हो उठते थे परन्तु किसी में इतना साहस नहीं था कि खुल्लमखुल्ला उसकी मदद करके वीनस से शत्रुता मोल लेते। इसलिए उन्होंने चुप रहना ही उचित समझा। बल्कि जब साईके भी बलि पर बलि देती गई और उनका आह्वान करती ही रही तो एक दिन ज़िअस और एपोलो ने तो उससे आकर साफ़ कह भी दिया कि वे उससे खुश तो थे पर उसकी मदद करके वे वीनस को असंतुष्ट नहीं करना चाहते। वीनस अमर देवी थी जो सुंदरी थी और उसको नाराज़ करना उनके हित की बात नहीं थी। साईके ने जब यह सुना तो वह निराश हो गई। उसका दिल बैठ गया। अब उसने जीवन ही व्यर्थ समझा। परन्तु तभी आशा की एक हलकी रेखा उसके मानस में चमकी। उसने हर प्रकार की आने वाली तकलीफ़ों का मुकाबला करने का निश्चय करते हुए अबकी बार उसने खुद वीनस के पास जाकर प्रार्थना करने की ही सोची और तब साहस बटोरकर वह उसी के स्थान को चली। वीनस उसी को ढूँढ़ती फिर रही थी। साईके ने सोचा—वह जाकर वीनस के यहाँ दासी बनकर रहेगी—तब और कुछ नहीं तो कम से कम उसके पुत्र को देख तो सकेगी—परन्तु फिर ध्यान आया—अगर वह वहाँ भी न हुआ तो?

जब वह वीनस के सामने आई तो वीनस उसे देखकर बड़ी जोर से हँसी। उसकी हँसी घृणा से पूर्ण थी। वह बोली :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"क्या अब फिर नये पति की तालाश में घूम रही है ?"

उसकी व्यंगपूर्ण बातें सुनकर साईके को बहुत दुख हुआ पर वह चुपचाप खड़ी रही। वीनस फिर हँसी और बोली :

"पहिले पति को तो इतना जला दिया कि अब भी उसका घाव ठीक नहीं हुआ है . . . . तू वाकई बहुत अभागी है । शायद अब तुझे कभी कोई अच्छा पति नहीं मिल सकेगा जब तक तू बहुत मेहनत से काम करना न सीख ले। तुझे काम करना आता भी नहीं है ? इसलिए मैं सोचती हूँ कि तुझसे मेहनत लूँ जिससे तू पक्की हो जा।"

यह कह कर उसने कई तरह के अनाज और बीज मिलवा कर एक बहुत बड़ी ढेरी साईके के सामने लगा दी और कहा :

"आज शाम तक यह सब अनाज और बीज अलग-अलग छँट जाने चाहिये . . . . देख यह काम पूरा न हुआ तो समझ ले कि तेरी खैर नहीं है. . . ." तत्पश्चात् वह चली गई।

उसके जाने के बाद साईके ने उस ढेरी की ओर देखा और तब वह समझ गई कि कितनी निर्दयता के साथ उसको ऐसी आज्ञा दी गई थी। वह चुपचाप बैठी रही क्योंकि वह क़ाम तो असंभव था। करती भी तो भला वह क्या करती ? उसने सोच लिया 'जो कुछ होना होगा वह तो होगा ही . . . .'

उस समय जब कि मृत और अमर सभी ने उसे असहाय छोड़ दिया था और वह नितांत अकेली वीनस के जुल्मों से यातना भोग रही थी, संसार की निगाहों में तुच्छ और बहुत ही क्षुद्र प्राणी चीटियों न उस पर दया की। वे आपस में बोलीं :

"आओ इस असहाय स्त्री की हम मदद करें। बेचारी दुखी मालूम होती है . . . ."

और तब दल के दल चीटियों के निकल आये। और देखते ही देखते उस ढेरी पर लग गये। थोड़ी ही देर में सब अनाज और बीज अलग-अलग छाँट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिये गये। कई ढेरियाँ लग गईं जिन्हें देखकर साईके बहुत खुश हुई। शाम हुई और साईके चुपचाप उन ढेरियों के सामने बैठी रही। वीनस रात होते-होते आ गई और जब उसने ढेरियाँ अलग-अलग देखीं तो उसकी इस सफलता पर अंदर ही अंदर कुढ़ गई। उसे तो पूर्ण आशा थी कि साईके उस काम को कभी पूरा न कर सकेगी। तब वह बोली :

"तुम्हारा काम अभी पूरा नहीं हुआ है—अभी और काम दूँगी उसे पूरा करके दिखलाओ. . . ." इसके पश्चात् उसने उसे खाने के लिये सूखी हुई एक रोटी दे दी और जमीन पर सो जाने को कहकर खुद अपने सुवर्ण के गुदगुदे और सुगंधित पलँग पर जाकर सोई। उसने सोचा—इस तरह यदि वह उससे खूब काम कराकर आधा पेट खाने को देगी और फिर रात को जमीन पर ही सुलायेगी तो निश्चय ही थोड़े दिनों में उसकी सुंदरता लोप हो जायगी। उसे उस समय अपने पुत्र कामदेव का भी धोखा नहीं था कि कहीं वह उसे देखकर मदद पर न आ जाय क्योंकि वह तो अभी घायल था और अपने कमरे में पड़ा हुआ था। वीनस खुश थी कि सब काम उसकी इच्छानुसार अनुकूल ही हो रहा है। रात भर बेचारी साईके कठोर पृथ्वी पर करवटें बदलती रही जिससे उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग में तीव्र पीड़ा होने लगी।

जब भोर हुई तो वीनस उससे बोली :

"वह देख सामने नदी किनारे जहाँ घनी झाड़ियाँ उगी हुई हैं, भेड़ें चर रही हैं। उनके शरीर में सोने के कीड़े लगे हुए हैं। तू जा और उनके शरीर में से मेरे लिये थोड़ा सा चमकने वाला ऊन तो ले आ. . . .हाँ जरा जल्दी लाना। शाम तक सुवर्ण की भाँति चमकने वाला वह ऊन मुझे जरूर मिल जाय।"

साईके सिर लटका कर नदी की ओर चली। वह अब अत्यंत दुखी थी। जब वह नदी की धीमी धाराओं में घुसी तो एकाएक उसके हृदय में आत्महत्या करने की तीव्र इच्छा जाग्रत हो उठी। उसने सोचा, क्यों न यहीं डूब कर अपने दुख का अंत कर दिया जाय। और तब वह पानी की गहराई की ओर बढ़ने लगी। उसी समय उसने सुना कोई उससे कुछ कह रहा था। वह पानी से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाहर निकल आई। उसके पैरों के पास ही उगी हुई एक झाड़ी में से आवाज़ आ रही थी। आवाज़ धीमी पर सुरीली थी। वह कह रही थी :

"हे सुंदरी, क्यों इतनी अधिक निराश होती है ? यह काम इतना कठिन नहीं है जितना तुझे लग रहा है....और फिर यह दुख भी तो तुझ पर हमेशा नहीं रहेगा। भेड़ों के पास जाकर उनका सुनहला ऊन लाना तो सचमुच ही खतरनाक काम है क्योंकि ये भेड़ें और भेड़ों की भाँति सीधी नहीं हैं बल्कि बहुत खूँखार हैं। इसलिए तू संध्या तक प्रतीक्षा कर क्योंकि तब वह विश्राम करने झाड़ियों से निकल कर नदी तट पर आवेंगी। उस समय तू उन झाड़ियों में चली जाना और वहाँ तुझे काफ़ी सुनहला ऊन नुकीली टहनियों पर अटका हुआ मिलेगा...."

साईके ने उस हरी झाड़ी को प्यार से अपने हाथों से छुआ और शाम तक वहीं रुकी रही। जब भेड़ें नदी किनारे आराम करने आईं तब उसने झाड़ियों में जाकर सुनहला ऊन मय सोने के कीड़ों के समेटा और उन्हें लेकर वीनस के पास गई। उसका विचार था कि अबकी बार उसकी यातनाएँ समाप्त हो जायेंगी परन्तु ऐसा नहीं हुआ। जब वह वहाँ पहुँची और वह ऊन उसने वीनस को दिया तो वह उसे देख कर घृणा से मुस्कराई। तत्पश्चात् वह तीव्र स्वर से बोली :

"तू अपने आप तो इन्हें हरगिज़ नहीं लाई है। निश्चय ही इसमें किसी और का हाथ है...अभी मैं तुझे और काम दूंगी जिससे तुझे अपनी योग्यता और बल दिखाने का पूरा अवसर मिलेगा....वह सामने देख—वहाँ पहाड़ की ऊँचाई से वह काला झरना जो गिर रहा है....उसे देख....घृणा की नदी जिसे 'स्टैक्स' कहते हैं इसी झरने से बनकर बहती है....यह इस पात्र को ले जा और उस झरने में से उस काले पानी को भरकर ला," यह कहकर उसने उसे एक पतले मुँह की केतली दे दी।

साईके झरने के नीचे पहुँची। वह बहुत ऊँचाई से गिर रहा था और उस तक जाने का कोई मार्ग नहीं था क्योंकि पहाड़ की चट्टानें सब चीकनी [illegible] थीं। नीचे अथाह गड्ढा था जिसमें अतल पानी हिलोरें ले रहा था। उसी जल के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह झरना गिरता था। वह किसी भी भाँति झरने के मुहाने से पानी नहीं भर सकती थी। वहाँ तक पहुँचना तो तब हो सकता था जब उसके पर होते और वह उड़ सकती। वह चुपचाप केतली लिये खड़ी रही क्योंकि और तो वह कुछ कर भी नहीं सकती थी। उसका हृदय बैठा जा रहा था क्योंकि दिन तो काफ़ी ढल चुका था अब शाम होने में देर भी थोड़ी रह गई थी। उसने अपने मन में समझ लिया कि आज वह वीनस के हाथों जीती न बचेगी। वह घबरा गई और पृथ्वी पर बैठ गई। घुटनों पर सिर रख कर बैठी हुई वह निराशा से झरने की ओर देखती रही।

परन्तु उसी समय एक बहुत बड़ा बाज़ वहाँ आया और पर फैला कर उसके बगल में उतर गया। उसने वह केतली उसके हाथ से ले ली और उसे चोंच में दबा कर वह उड़ा। झरने के मुहाने पर जाकर उसने वह केतली काले पानी से भरी और लाकर साईके के पास रख दिया और फिर अपनी राह उड़कर चला गया।

साईके ने अपने भाग्य के इस आकस्मिक परिवर्तन को शुभ लक्षण समझा। उसने मन ही मन उस बाज़ को धन्यवाद दिया और तब उस केतली को लिये हुए शाम होने से पहिले ही वीनस के सामने आ उपस्थित हुई। वीनस ने उसे सफलतापूर्वक लौटते जो देखा तो अंदर ही अंदर अपनी चालों को खाली जाते देख बहुत क्रोधित हुई। वह बोली :

"निश्चय ही यह काम भी तूने स्वयं नहीं किया है। मैं तुझे अभी और काम दूँगी. . . ." साईके को फिर रोटी का सूखा टुकड़ा खाने को दिया गया और वह जमीन पर सो गई। आश्चर्य की बात तो यह थी कि बावजूद इन सब यातनाओं और भूखे रहने के साईके की सुंदरता कम नहीं हुई। वीनस यह देख कर और भी नाराज़ हुई।

अब वीनस ने उसे एक खाली डिब्बा देकर कहा कि हैला जाकर प्रोसर्पाईन जो वहाँ की रानी है उससे थोड़ी सी सुंदरता उस डिब्बे में भरवा लाये क्योंकि अपने पुत्र की तीमारदारी करते रहने से उसमें कुछ कमी आ गई है। साईके ने वह डिब्बा ले लिया और चली। पर उसे नीचे की दुनिया का रास्ता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मालूम नहीं था। वह हैरान थी कि आखिर उस जगह बिना मार्ग जाने वह पहुँचेगी कैसे ? डिब्बा लेकर वह इधर-उधर भटकती फिरी।

एक दिन इसी भाँति भटकती हुई वह एक ऊँची पुरानी मीनार के पास से निकली। उसने सुना मीनार उसे बुला रही है। वह ठिठक कर खड़ी हो गई और सुनने लगी। मीनार बोली :

"हे साईके ! सुन, मैं तुझे हेडीस का रास्ता बतलाती हूँ. . . .तू दक्षिण की ओर जा। वहाँ तुझे काले पहाड़ के सामने एक पुराना ओक का पेड़ खड़ा मिलेगा। उसके पीछे की ओर एक लाल चट्टान के बाईं ओर पृथ्वी का भयानक गड्ढा है। वह बिल्कुल अँधेरा है और उसी मार्ग से नीचे की दुनिया में जाने का मार्ग है। तुम बिना डरे उसी मार्ग से पृथ्वी के गर्भ में उतर जाना। काफ़ी दूर जाने के उपरांत तुम्हें मृत्यु की नदी मिलेगी जिसका जल काला और गाढ़ा होगा। उस स्थान पर केवल धूमिल प्रकाश होगा। जब तुम वहाँ पहुँच जाओ तो बिना बोले चुपचाप खड़ी होकर प्रतीक्षा करना। अपने आप ही थोड़ी देर बाद लोहे की नाव खेते हुए एक बुड्ढा मल्लाह आयेगा। तुम उसे एक ताँबें का सिक्का बिना बोले ही दे देना और फिर उसकी नाव में बैठ जाना। वह तुम्हें नदी के पार प्रोसर्पाईन के स्थान में पहुँचा देगा। उस मल्लाह का नाम चारन है और देखने में वह बहुत ही अधिक वृद्ध है परन्तु वह अपार शक्तिवाला है। यदि तुम भूलकर उससे बोल बैठीं तो वह तुम्हें उसी दम मृत्यु की नदी के काले पानी में डुबो देगा।. . . .प्रोसर्पाईन के महल के बड़े द्वार की रक्षा 'सेरबेरस' नामक तीन सिर वाला भयानक और खूँखार कुत्ता करता है जिससे बचकर आगे जाना असंभव है। पर यदि तू उसे खाने के लिये दूध से बना हुआ 'केक' देगी तो वह तुझे प्रेमपूर्वक चाटने लगेगा और तब तेरा रास्ता साफ़ होगा। सावधान . . . .जैसा कहा है उसी प्रकार करना वरना खतरे में पड़ जाओगी।"

साईके अब आगे बढ़ी। उसने उस मीनार को धन्यवाद देते हुए छुआ पर जब वह छूते ही नीचे गिर गई। तब तो साईके बहुत घबराई। उसी समय गिरे हुए पत्थरों में से आवाज़ आई :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"फ़िक्र मत करो. . . .आगे बढ़ो. . . .मैं इसी दिन के लिये यहाँ इतने वर्षों से खड़ी थी. . . .अब मैंने अपना काम खत्म कर दिया है और अब मैं बंधन से मुक्त हो गई हूँ।. . . .मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ क्योंकि तुमने आकर मझे छुटकारा दिला दिया है। अब मैं जाते-जाते यह भी तुम से कह दूँ कि शीघ्र ही तुम्हारे अच्छे दिन आने वाले हैं. . . .कहीं यातनाओं से घबराकर कोई उल्टा काम मत कर वैठना. . . ."

पत्थर चुप हो गये। तभी एक आँधी छूटी और गिरे हुए पत्थरों में से धूल को उड़ाती हुई एक आत्मा आकाश की ओर उड़ गई। साईके ने मन ही मन उसे धन्यवाद दिया और तब बताये हुए मार्ग की ओर आगे बढ़ी।

मार्ग के घनघोर अंधकार और भयानक जीव-जंतुओं को देखकर डर से उसका कलेजा मुँह को आता था। भूख से वह अलग पीड़ित थी और चलने से कठोर मार्ग के कारण उसके कोमल पैरों में फफोले अलग पड़ गये थे। परन्तु मीनार के कहे अनुसार उसने धैर्य नहीं खोया। सब से बड़ी बात यह थी कि उसे अपने प्रियतम कामदेव से मिलने की अब दुबारा आशा हो चुकी थी जैसा कि मीनार की आत्मा ने स्वर्ग जाते समय कहा था। उसे पूर्ण विश्वास था कि मुक्ति के समय उसने उससे जो कुछ कहा था सभी सच कहा था। आखिर जब उसका बतलाया हुआ मार्ग इतना सही था तो उसकी की हुई भविष्यवाणी भी तो सही होनी चाहिये थी।

जब वह प्रोसर्पाईन के सम्मुख पहुँची तो उसने जाकर उसे वीनस का संदेश सुनाया। वह बोली :

"देवी वीनस ने मुझे यहाँ भेजा है। यह डिब्बा जो मैं साथ लाई हूँ, इसे तुम सुंदरता से भर दो जिससे वीनस फिर सुंदरी बन जाय। उसका पुत्र अस्वस्थ है और उसकी सेवा-सुश्रूषा करने से वह कुछ थक गई है। इसमें इतनी सुंदरता भर दो जिससे वह अपनी खोई हुई सुंदरता को पुनः प्राप्त कर सके।"

प्रोसर्पाईन ने फौरन उस डिब्बे को कोमल सुंदरता से भर दिया और बोली :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"वीनस मेरी प्यारी सहेली है, उसके लिये मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ।"

जब साईके उसे लेकर चली तो प्रोसर्पाईन ने उसे अपनी इच्छा से पलक मारते ऊपरी दुनिया में पहुँचा दिया। इस बार उसे उस भयानक और लंबे मार्ग से नहीं आना पड़ा। वह शीघ्र ही वीनस के सामने जा पहुँची और उसने उसे वह डिब्बा दे दिया। डिब्बा लेकर वीनस ने उस सुंदरता को ओढ़ लिया और फिर सूँघा। वह तुरंत एक बार फिर अत्यधिक सुंदर बन गई। परन्तु उसे आश्चर्य हो रहा था कि साईके इतना शीघ्र उसे लेकर वापस कैसे आ गई।

अब साईके ने जो वीनस का अद्भुत रूप देखा तो उसके मन में पहिली बार ईर्षा जाग्रत हुई। कठोर यातनाओं से, उसने समझा, कि उसकी सुंदरता कम हो गई थी। वह और सुंदर होना चाहती थी क्योंकि उसे भय था कि यदि कभी उसके सुंदर पति कामदेव से उसकी मुलाकात अचानक कहीं हो गई तो वह उसे कम सुंदरी जानकर छोड़ न जाय। जब वीनस दूसरे दिन बाहर चली गई तो उसने चुपके से उस डिब्बे को खोला और सूँघा। पर उसमें उसे कुछ नहीं मिला। सारी सुंदरता तो वीनस ने ले ली थी। उल्टे उसे सूँघकर वह बेहोश होकर गिर पड़ी। गहरी नींद उसकी पलकों पर बैठ गई।

उधर तो वह नींद में बेहोश होकर गिरी और उसी समय कामदेव जो अब अच्छा हो गया था, शैया से उठकर खड़ा हो गया और बाहर चला। उसे अपनी स्त्री की याद अब इतनी अधिक सताने लगी कि वह उसे देखने को बेचैन हो उठा। वह सीधे द्वार पर पहुँचा। परन्तु जब उसे बाहर से बंद पाया, क्योंकि उसमें तो वीनस हमेशा ताला लगाकर रखती थी, तो वह निराश हो गया। परन्तु तभी उसकी निगाह खिड़की की ओर गई और उसकी खोई हुई आशा फिर जाग उठी। वह खिड़की के बाहर उड़कर आ गया और अपनी प्रिया को ढूँढ़ने लगा। उसे अधिक नहीं चलना पड़ा क्योंकि पहले मोड़ पर ही उसे साईके गहरी नींद में सोती हुई पड़ी मिली। उसने मिलन की खुशी में आह भरी और तब वह उसके सुंदर शरीर पर झुक गया और उसे फौरन ही पता चल गया कि नींद ने उसकी पलकें धर दबाई हैं। कामदेव देवता था और सर्वशक्ति-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मान था। उसने फौरन ही उसकी पलकों पर हाथ फेर कर उस नींद को पकड़ कर फिर उस डिब्बे में भर दिया। साईके एकदम उठ बैठी और जब उसने अपने ऊपर झुके हुए अपने प्रियतम को देखा तो एक बार तो उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। वह समझी कि वह स्वप्न देख रही है। उसने आँखें मींज कर फिर देखा और तब वह लजा गई। उसके गालों पर आकर्ण लाली दौड़ गई। कामदेव ने उसे अपने हृदय से लगा लिया। वह भी सब दुख भूलकर अपने पति से लगी पड़ी रही। मिलन के प्रेमाश्रुओं से उसकी आँखें बह रही थीं।

कामदेव ने उससे कहा :

"भला तुम जैसी भुवनमोहिनी सुंदरी को क्या सूझी थी जो उस डिब्बे को सूँघकर सुंदरता बढ़ाने चली थी. . . .इसी सुंदरता के कारण वीनस जली जा रही है, फिर भला और सुंदर होकर तुम क्या करोगी. . . ."

तत्पश्चात् उसने उससे कहा कि वह उस डिब्बे को वीनस को ही दे आवे जो उसे सूँघ कर नींद द्वारा दब जायगी, तब तक वह अपना प्रबंध देवताओं से कह कर कर लेगा।

साईके अब बहुत खुश थी। उसे उसके प्राण वापस मिल गये थे। कामदेव के कहे अनुसार वह सीधी वीनस के पास पहुँची और जब वीनस ने उस डिब्बे को लेकर सूँघा वह नींद से गाफ़िल होकर सो गई।

कामदेव सीधा देवताओं की ऊँची सभा में पहुँचा जिसे ओलिम्पस कहते हैं। ज्यूपिटर अपने ऊँचे सोने के सिंहासन पर बैठा था। वह सभी देवताओं और मनुष्यों का पिता था। कामदेव ने उससे जाकर कहा :

"साईके मेरी ब्याही हुई स्त्री है और मुझे अत्यंत प्रिय है। वीनस उससे व्यर्थ ही में बैर साधती है और उसे कठोर यातनायें देती है। मैं चाहता हूँ कि आज ओलिम्पस में बैठ कर देवता लोग वीनस से साईके की रक्षा करें क्योंकि यह नित्य का झगड़ा मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है।" उसने उन्हें उत्तेजित करने के लिये उनका नाम लेकर दुहाई भी दी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तब ज्यूपिटर गंभीर वाणी से बोला :

"हे कामदेव ! सुन....तूने मुझे पहले समय में काफी परेशान किया है, मेरे उज्ज्वल नाम पर कई बार बट्टा लगाया है....मुझे काम के वश बनाकर तूने मुझे कभी बैल तो कभी हंस बनाकर मेरा उपहास कराया है....पर खैर उन बातों को अब जाने दे। मैं तेरी मदद करने के लिये अब तैयार हूँ। मैं तेरी प्रार्थना को ठुकरा नहीं सकता।"

उसने ओलिम्पस में तब सभी देवी-देवताओं को निमंत्रण देकर बुलवाया। वीनस भी बुलाई गई। जब सभी आकर अपने-अपने आसनों पर बैठ गये तो वह बोला :

"कामदेव और साईके का विधिपूर्वक विवाह हो चुका है, इसलिए मैं चाहता हूँ कि वीनस अब उससे शत्रुता छोड़ दे...."

वह कह ही रहा था कि बीच ही में बात काट कर वीनस चिल्ला उठी :

"परन्तु साईके तो मर्त्यलोक की स्त्री है। भला देवताओं से कैसे विवाह कर सकती है---देवता तो अमर हैं।"

"मैं उसे अमर बनाने की आज्ञा देता हूँ," गंभीर स्वर से ज्यूपिटर ने फैसला दे दिया।

बस फिर क्या था। चारों ओर आनंद ही आनंद छा गया। साईके फूली नहीं समाती थी।

मरकरी उसे लेकर देवताओं के महलों में ले गया और वहाँ ज्यूपिटर ने अपने हाथों से साईके को 'एम्ब्रोसिया' नामक अमृत पिलाकर अमर बना दिया। साईके अब देवी बन गई।

वीनस उसका विरोध न कर सकी क्योंकि अब वह पृथ्वी की स्त्री तो रही नहीं थी जो वहाँ रह कर फिर उसकी सुंदरता में बाधक बनती। जब वह वहाँ रहती ही नहीं तो फिर लाज़िमी था कि फिर मनुष्य वीनस की ही उपासना करते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और फिर उसके मंदिरों में उसकी विधिपूर्वक पूजा की जाती। एक बात और थी। साईके देवी बनकर उसके सुंदर पुत्र की सुंदरी पत्नी जँचती भी थी।

इस प्रकार कामदेव ने साईके को पा लिया और साईके जिसे संसार में योग्य पति नहीं मिल सका अब स्वयं कामदेव की स्त्री बन कर आनंद करने लगी। कामदेव स्वयं 'प्रेम' था और साईके जिसका अर्थ 'आत्मा' है, अब मिल गये। आत्मा में प्रेम घुलमिल गया। सर्वत्र आनंद ही आनंद फैल गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर्सियस की महायात्रा

अरगौस के राजा एक्रिसिअस की एक ही संतान थी। वह एक लड़की थी। उसका नाम डैनी था और वह अत्यधिक सुंदरी थी। सारे देश में उसके समान सुंदरी दूसरी स्त्री नहीं थी। परन्तु राजा दुखी रहता था क्योंकि उसके कोई पुत्र नहीं था। उसने हर देवी-देवता से प्रार्थनाएँ कीं पर उसका मनोरथ पूर्ण नहीं हुआ।

आखिरकार एक दिन वह सुदूर पर्वत पर स्थित डैल्फी के मंदिर में गया और उसने अपनी इच्छा प्रकट की। परन्तु उसके उत्तर में जो कुछ पुजारिन ने कहा उसे सुनकर वह घबरा गया। वह बोली :

"ए एक्रिसिअस सुन ! ....तेरे कोई पुत्र कभी नहीं उत्पन्न होगा.... बल्कि तेरी पुत्री के एक पुत्र अवश्य होगा जो तुझे मार डालेगा...."

जब राजा अपने महल को लौटा तो वह तरह-तरह की बातें सोच रहा था। उसके मन में अपनी सुंदरी पुत्री का भय समा गया था। अब सिर्फ एक ही रास्ता उससे बचने का था। वह यह कि वह उसे मरवा डालता। यह बात तो थी कि उसे पहिले भी अपनी उस पुत्री से कोई खास प्रेम नहीं था। और अब तो वह उसे अपना शत्रु ही समझने लगा था। ऐसी हालत में वह उसे मरवाने को तैयार था पर उसे देवताओं के कोप का भी भारी भय था। वह जानता था कि वे लोग इस तरह के अपराधों का दंड बहुत कठोर देते थे। इसलिए वह डर के मारे इस प्रकार का हुक्म तो नहीं दे सका कि डैनी को मार डाला जाय। वह चुपचाप बैठा हुआ डैनी से बचने का उपाय खोजने लगा।

शीघ्र ही उसने उपाय खोज निकाला। उसकी लड़की अब तक अविवाहिता थी। उसने सोचा क्यों न इसे मजबूती के साथ कहीं बंद कर दिया जाय जो न कभी इसका संपर्क किसी से हो और न यह किसी पुत्र को जन्म ही दे सके।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसने फौरन एक काँसे का बहुत बड़ा कमरा बनवाया और उसे पृथ्वी में गड़वा दिया। ऊपर की तरफ इस कमरे में एक छोटा सा छेद रखवा दिया जिसमें से हवा और रोशनी आ जा सके। तत्पश्चात् उसने डैनी को उसके अंदर बंद करवा दिया। बेचारी डैनी अब रात-दिन उसके अंदर बंद रहती और अपने दुर्भाग्य पर रोया करती थी। काफ़ी दिनों तक वह वहाँ पर इसी प्रकार दुखपूर्वक अपने दिन काटती रही। उसे केवल आकाश में चलते हुए बादल उस छोटे से छेद में से दिखाई देते थे, बाकी दुनिया उसके लिये बंद थी।

एक बार जब वह इसी तरह बैठी हुई उस छेद से आकाश में तैरते हुए बादलों को देख रही थी एकाएक विद्युत की भाँति उजाला फैल गया। वह अचंभे से भर उठी; पर उसी समय उस छेद में होकर सुवर्ण के टुकड़े बाहर से आकर उसके कमरे में गिरने लगे। उसकी चमक से कमरा अंदर से जगमगाने लगा। उसकी चमक से डैनी के नेत्र बंद हो गये। सुवर्ण ने चारों ओर गिर कर भूमि को ढँक लिया था। वह चुपचाप बैठी हुई इस विचित्र वर्षा पर चकित हो रही थी और कभी-कभी आँख खोलकर वह उस ढेरी को देख भी लेती थी। एकाएक उसने देखा कि उस सोने की ढेरी में से एक सुंदर पुरुष उठकर बैठ गया। वह हैरत में उसकी ओर देखती रह गई। डर उसे इतना लगा कि उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। उसको क्या मालूम था कि आने वाला पुरुष देवताओं में सर्वश्रेष्ठ स्वयं ज़िअस ही था। यह तो उसकी असीम कृपा थी जो वह उस पर इतनी प्रेम-दृष्टि रखता था।

ज़िअस उठा और तब उसने डैनी को छुआ। वह बोला :

"हे सुंदरी ! देवताओं का राजा ज़िअस खुद तुमसे प्रेम करने को आया है, आओ मेरे हृदय से लग जाओ. . . ."

डैनी इन शब्दों को सुनकर उसकी ओर आश्चर्य से देखने लगी। अब उसका भय जाता रहा था। और दूसरे ही क्षण जब ज़िअस ने उसे अपने आलिङ्गन में भर लिया तो वह अत्यंत प्रसन्न हो उठी और उसने भी ज़िअस से खूब प्रेम किया। ज़िअस उसके पास कई दिनों तक रहा। इस बीच उसका समय बहुत आनंद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से कटा। डैनी भी बहुत ही खुशी से अपने साथी के साथ विहार करने लगी। जब ज़िअस गया तो वह बाज़ बनकर उस छेद से निकल कर आकाश की ओर उड़ गया। डैनी अब गर्भवती हो गई थी।

जब कई महीने गुजर गये और गर्भ बढ़ गया तो डैनी उसको छिपा न सकने के कारण चिंतित हो उठी। उतने छोटे दायरे में भला वह छिपाती भी तो कैसे। यथासमय उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम ज़िअस की आज्ञानुसार पर्सिअस रखा गया।

एक दिन उस शिशु को गोद में लिये जब डैनी बैठी हुई उसे सुलाने का प्रयत्न कर रही थी तो उसी समय उसका पिता वहाँ आ पहुँचा। उसने जो बच्चा देखा तो उसका दिल डर के मारे दहल गया, परन्तु उसने अपने आप को सँभाला और तब क्रोधपूर्वक पूछा :

"यह तेरा बच्चा है ?"

डैनी ने धीरे से उत्तर दिया, "हाँ !"

सुनते ही उसकी क्रोधाग्नि भड़क उठी। वह चिल्लाया :

"मग़र इसका पिता कौन है ?"

"ज़िअस," शांत भाव से डैनी ने उत्तर दिया और फिर गर्व से अपने पिता को घूरा। ज़िअस का नाम सुनकर एक्रिसिअस की छाती पर घूँसा सा लगा। वह घबरा गया। अब वह समझ गया कि उसकी मौत सामने खड़ी है। उसने चाहा भी कि डैनी की बातों का विश्वास न करे और उस बच्चे को माता सहित तुरंत मरवा डाले परन्तु फिर देवताओं के निर्मम प्रतिशोध को याद कर वह काँप उठा। उसने मन ही मन कहा : "तब तो ज़िअस मुझे कुत्ते की मौत मारेगा . . ."

वह चुपचाप अपने महल को वापस आ गया। घबराहट और बेचैनी से वह परेशान था। डैनी और उसके पुत्र से उसे अब बहुत ही ज्यादा डर लग रहा था परन्तु इस बात को सोच-सोच कर वह और भी ज्यादा परेशान था कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह चाह कर भी उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकता था। वह सोचने लगा कि किस प्रकार अपने प्राण बचाये जायँ। आखिर सोचते-सोचते वह इसी निष्कर्ष पर पहुँचा कि इन दोनों माँ-बेटों को अपने से बहुत दूर कहीं भेज दिया जाय। उसने एक बहुत बड़ा लकड़ी का संदूक बनवाया और उसमें उन माँ-बेटों को बंद करवा कर समुद्र के अथाह जल में बहा दिया। इसके बाद उसने संतोष की साँस ली और वह अपने महल को वापस चला आया।

डैनी अपने बच्चे को गोद में लेकर उस बक्स में बैठी रही। अंदर अँधेरा था, कुछ दिखलाई नहीं देता था। बाहर का कोई भी दृश्य नहीं दिखता था। बैठे-बैठे वह केवल समुद्र की लहरों की आवाज़ सुना करती थी। दिन बीत गया, रात आई पर उसे कुछ मालूम नहीं हुआ। रास्ते में समुद्र में से निकले हुए अनेक टापू दिखाई देने लगे पर वह उन्हें न देख सकी—लहरें उस बड़े बक्स को तैराती हुई लिये जा रही थीं।

आखिरकार समुद्र की लहरों ने उसे एक स्थान पर किनारे पटक दिया। अब हिलना-डुलना बंद हो गया परन्तु वह अब भी उसी में रहती रही क्योंकि बाहर निकलने का कोई मार्ग ही नहीं था। संदूक पड़ा रहा और वह उसमें रहती रही।

ज़िअस ने अब अपनी प्रेयसी और पुत्र पर दया की। उसने एक मछुए के हृदय में ऐसी प्रेरणा भरी कि वह उधर से घूमता हुआ निकला। संदूक को देखकर वह ठिठका परन्तु फिर पास जाकर उसने उसे गौर से देखा। अंदर से बच्चे के रोने का शब्द सुनाई दिया। और वह उसे सुनकर अचंभे में भर गया! उसने उस बक्स को खोलने का प्रयत्न किया परन्तु वह तो मजबूती के साथ चारों तरफ से बंद था। उसने शीघ्र ही निश्चय किया और फिर वह उस बक्स को तोड़ने लगा। थोड़ी देर के परिश्रम के उपरांत वह टूट गया और उसके अंदर से जब डैनी अपने बच्चे को लेकर बाहर निकली तो वह हैरत से देखता रह गया।

सब बातें तो डैनी ने उसे नहीं बतलाईं क्योंकि वह वास्तविकता कहकर अपना आश्रय खोना नहीं चाहती थी। उसने केवल इतना ही कहा कि वह एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साधारण स्त्री थी जिसे उसके पति ने नाराज़ होकर बच्चे सहित समुद्र में बहा दिया था। मछुआ रहमदिल था। वह उसे अपने घर ले गया जहाँ उसकी स्त्री ने भी उसका बहुत प्रेमपूर्वक स्वागत किया। इस मछुए का नाम डिक्टिस था और अब डैनी अपने पुत्र सहित उसी के यहाँ रहने लगी। धीरे-धीरे उसका पुत्र पर्सियस अब बड़ा होने लगा और उस मछुए के साथ उसी का काम भी बँटाने लगा था। डैनी ने भी कोई विरोध नहीं किया। अब पर्सियस जवान हो चुका था।

एक दिन संध्या समय समुद्र तीर पर बालू पर डैनी बैठी हुई डूबते हुए सूर्य की शोभा देख रही थी। उस समय वह वहाँ बिल्कुल अकेली थी। गर्मी के दिन थे और उस समय हवा बंद थी। ऊमस के कारण वह पसीने से भींग रही थी। उसने नहाने की सोची। तुरंत अपने वस्त्र उतार कर वह वहीं किनारे पर जल के अंदर घुस गई और समुद्र की लहरों से खेलती हुई नहाने लगी। वह अब भी इतनी गज़ब की सुंदरी थी कि कोई उसे इतने बड़े और जवान बेटे की माँ नहीं कह सकता था। शरीर से पुष्ठ और सौंदर्य से वह दमक रही थी। उसका यौवन अब भी प्रचंड था जो इस समय वस्त्रों से मुक्त होकर चंचलता-पूर्वक थिरक रहा था। सुवर्ण की भाँति घुँघराले और चमकते पिंगल केश उसके पीन नितंबों से भी नीचे लटक रहे थे। मांसल देह जल के छींटों से युक्त उस समय अद्भुत आकर्षण पैदा कर रही थी। उसके मुख पर षोडषी की सी चपलता और लावण्य था। उसके नीले नेत्र चपल मीन की भाँति चलते थे और समुद्र की भाँति नीले और गहरे थे। उसके इस रूप को चुपचाप तीर पर जाते उस नगर के राजा पौलीडिक्टिस ने देखा और वह उसे देखकर उद्वेलित हो उठा। उसने अपने घोड़े की लगाम खींची और खड़े होकर चुपचाप उसके नग्न यौवन को वह अपने नेत्रों से पीने लगा। डैनी को पता ही न चला कि कोई उसे छिपकर इस प्रकार देख रहा है। पौलीडिक्टिस उसे तब तक खड़ा-खड़ा देखता रहा जब तक वह वहाँ रही। जब डैनी नहाकर वहाँ से चली गई तब वह भी अपना घोड़ा बढ़ाकर अपने महल को चला गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पौलीडिक्टिस असल में डिक्टिस का छोटा भाई था। उसने अपने बड़े भाई का राज्य छीन कर उसे निकाल दिया था और स्वयं उस देश का राजा बन गया था। बेचारा डिक्टिस अपनी स्त्री सहित उस समय तो दूर देश प्राण बचाकर भाग गया था परन्तु बाद में वापस आकर वहीं समुद्र तट पर मछुआ बनकर जीवन यापन कर रहा था। पौलीडिक्टिस कठोर और अन्यायी शासक था। वह सदा अपनी मर्ज़ी ही किया करता था। उससे सभी डरते थे क्योंकि तनिक क्रोध आने पर ही वह लोगों को मरवा डालता। जिस किसी भी स्त्री को वह पसंद कर लेता, बिना रोक-टोक उसे पकड़वा बुलवाता और उसके साथ बलात्कार और अन्याय करता था। जब से उसने डैनी को देखा था उसके मन में उसे प्राप्त करने की लालसा हिंसा बनकर समा चुकी थी। उसने उसी रात्रि अपने अनुचरों को भेजकर उस स्त्री (डैनी) को पकड़ कर ले आने को भेज दिया।

उस समय डैनी डिक्टिस के पास बैठ कर बातें कर रही थी जब सैनिक उसे लेने पहुँचे। सैनिकों ने जाकर राजाज्ञा सुनाई। डैनी तो सुनकर चुप रही पर डिक्टिस क्रोध से बोल उठा :

"पौलीडिक्टिस इस स्त्री को बिना विधिपूर्वक स्त्री बनाये यहाँ से नहीं ले जा सकता. . . .मैं पौलीडिक्टिस का बड़ा भाई डिक्टिस यह बात कह रहा हूँ . . . .तुम जाओ और उससे इसी प्रकार सब कुछ कह सुनाओ. . . ."

पौलीडिक्टिस ने जब यह बात सुनी तो उसने ऐसा करने में कोई आपत्ति न समझ कर उससे विवाह कर लेने का वचन दे दिया। परन्तु जब उसे मालूम हुआ कि डैनी का पुत्र एक जवान पुरुष है तो वह कुछ अनमना हो गया। पहिले तो उसने विश्वास ही नहीं किया। वह बोला :

"यह हो ही कैसे सकता है कि इतनी सुंदरी युवती के इतना बड़ा पुत्र हो. . . .अवश्य ही इसमें कोई भेद है।"

परन्तु जब जाँच के बाद भी वही बात सच निकली तो वह अब तरकीब सोचने लगा कि किस प्रकार उस लड़के को उसकी माँ से दूर किया जाय और तब वह उस सुंदरी से अखंड भोग कर सके।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके राज्य से बहुत दूर समुद्र के बीच एक टापू पर कुछ दानव रहते थे जो गौर्गन्स के नाम से मशहूर थे। वह मृत्यु की भाँति कठोर और अज़ेय थे और उनसे जीतना असंभव था। दूर-दूर तक यह बातें उनके बारे में प्रसिद्ध थीं। पौलीडिक्टिस ने पर्सियस को अपने पास बुलवाया और उसने उससे कहा :

"सारे संसार में सबसे मूल्यवान वस्तु, मैं, गौर्गन्स में से किसी एक के सिर को समझता हूँ. . . उपहार में यदि उनका सिर मुझे कोई दे तो मैं उसे सर्व-श्रेष्ठ समझूँगा।"

पर्सियस ने सुना और वह कुछ न बोला। राजा उसे चुप देखकर निराश हो गया। उसने तो यह बात कहकर समझा था कि सुनते ही पर्सियस जोश में वहाँ जाने के लिये तैयार हो जायगा। परन्तु वह तो बोला तक नहीं। इसका मतलब यह था कि वह मृत्यु के डर से वहाँ नहीं जाना चाहता था। राजा की चाल खाली गई और तब उसने उसे फँसा कर मार डालने का दूसरा उपाय सोचा।

दूसरे दिन पौलीडिक्टिस ने यह आम ऐलान कर दिया कि वह सुंदरी डैनी से विवाह करने वाला है। सारे नगर में खुशियाँ मनाई जाने लगीं। जगह-जगह नाच और गाने शुरू हो गये और शराब के दौरे खुले हाथों चलने लगे। लोग नशे में अत्यधिक चूर होकर नाचने और आनंद मनाने लगे।

राजा के दरबार में आज बड़ी शान-शौकत और सजावट थी। अपने ऊँचे सुवर्ण के सिंहासन पर राजा बैठा था और सभी दरबारीगण उसे बहुमूल्य भेंटें दे रहे थे। यह उस देश का रिवाज था कि जब भी राजा विवाह करता उसे दरबार में नज़रें दी जातीं। सभी ने उसे बेशकीमती उपहार दिये परन्तु जब पर्सियस उसके सामने आया, उसके दोनों हाथ खाली थे। उसे ऐसे देखकर सभी दरबारी हँस दिये और उन्होंने उस पर व्यंग भी छोड़े। सुनकर वीर पर्सियस ने गर्व के साथ सिर ऊँचा किया और आग्नेय नेत्रों से दरबारियों को देखकर वह बोला :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पौलीडिक्टिस असल में डिक्टिस का छोटा भाई था। उसने अपने बड़े भाई का राज्य छीन कर उसे निकाल दिया था और स्वयं उस देश का राजा बन गया था। बेचारा डिक्टिस अपनी स्त्री सहित उस समय तो दूर देश प्राण बचाकर भाग गया था परन्तु बाद में वापस आकर वहीं समुद्र तट पर मछुआ बनकर जीवन यापन कर रहा था। पौलीडिक्टिस कठोर और अन्यायी शासक था। वह सदा अपनी मर्ज़ी ही किया करता था। उससे सभी डरते थे क्योंकि तनिक क्रोध आने पर ही वह लोगों को मरवा डालता। जिस किसी भी स्त्री को वह पसंद कर लेता, बिना रोक-टोक उसे पकड़वा बुलवाता और उसके साथ बलात्कार और अन्याय करता था। जब से उसने डैनी को देखा था उसके मन में उसे प्राप्त करने की लालसा हिंसा बनकर समा चुकी थी। उसने उसी रात्रि अपने अनुचरों को भेजकर उस स्त्री (डैनी) को पकड़ कर ले आने को भेज दिया।

उस समय डैनी डिक्टिस के पास बैठ कर बातें कर रही थी जब सैनिक उसे लेने पहुँचे। सैनिकों ने जाकर राजाज्ञा सुनाई। डैनी तो सुनकर चुप रही पर डिक्टिस क्रोध से बोल उठा :

"पौलीडिक्टिस इस स्त्री को बिना विधिपूर्वक स्त्री बनाये यहाँ से नहीं ले जा सकता....मैं पौलीडिक्टिस का बड़ा भाई डिक्टिस यह बात कह रहा हूँ ....तुम जाओ और उससे इसी प्रकार सब कुछ कह सुनाओ...."

पौलीडिक्टिस ने जब यह बात सुनी तो उसने ऐसा करने में कोई आपत्ति न समझ कर उससे विवाह कर लेने का वचन दे दिया। परन्तु जब उसे मालूम हुआ कि डैनी का पुत्र एक जवान पुरुष है तो वह कुछ अनमना हो गया। पहिले तो उसने विश्वास ही नहीं किया। वह बोला :

"यह हो ही कैसे सकता है कि इतनी सुंदरी युवती के इतना बड़ा पुत्र हो.. ..अवश्य ही इसमें कोई भेद है।"

परन्तु जब जाँच के बाद भी वही बात सच निकली तो वह अब तरकीब सोचने लगा कि किस प्रकार उस लड़के को उसकी माँ से दूर किया जाय और तब वह उस सुंदरी से अखंड भोग कर सके।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके राज्य से बहुत दूर समुद्र के बीच एक टापू पर कुछ दानव रहते थे जो गौर्गन्स के नाम से मशहूर थे। वह मृत्यु की भाँति कठोर और अज़ेय थे और उनसे जीतना असंभव था। दूर-दूर तक यह बातें उनके बारे में प्रसिद्ध थीं। पौलीडिक्टिस ने पर्सियस को अपने पास बुलवाया और उसने उससे कहा :

"सारे संसार में सबसे मूल्यवान वस्तु, मैं, गौर्गन्स में से किसी एक के सिर को समझता हूँ...उपहार में यदि उनका सिर मुझे कोई दे तो मैं उसे सर्व-श्रेष्ठ समझूँगा।"

पर्सियस ने सुना और वह कुछ न बोला। राजा उसे चुप देखकर निराश हो गया। उसने तो यह बात कहकर समझा था कि सुनते ही पर्सियस जोश में वहाँ जाने के लिये तैयार हो जायगा। परन्तु वह तो बोला तक नहीं। इसका मतलब यह था कि वह मृत्यु के डर से वहाँ नहीं जाना चाहता था। राजा की चाल खाली गई और तब उसने उसे फँसा कर मार डालने का दूसरा उपाय सोचा।

दूसरे दिन पौलीडिक्टिस ने यह आम ऐलान कर दिया कि वह सुंदरी डैनी से विवाह करने वाला है। सारे नगर में खुशियाँ मनाई जाने लगीं। जगह-जगह नाच और गाने शुरू हो गये और शराब के दौरे खुले हाथों चलने लगे। लोग नशे में अत्यधिक चूर होकर नाचने और आनंद मनाने लगे।

राजा के दरबार में आज बड़ी शान-शौकत और सजावट थी। अपने ऊँचे सुवर्ण के सिंहासन पर राजा बैठा था और सभी दरबारीगण उसे बहुमूल्य भेंटें दे रहे थे। यह उस देश का रिवाज था कि जब भी राजा विवाह करता उसे दरबार में नज़रें दी जातीं। सभी ने उसे बेशकीमती उपहार दिये परन्तु जब पर्सियस उसके सामने आया, उसके दोनों हाथ खाली थे। उसे ऐसे देखकर सभी दरबारी हँस दिये और उन्होंने उस पर व्यंग भी छोड़े। सुनकर वीर पर्सियस ने गर्व के साथ सिर ऊँचा किया और आग्नेय नेत्रों से दरबारियों को देखकर वह बोला :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हे हँसनेवालो ! अपनी यह हरकत फौरन बंद करो वरना अच्छा नहीं होगा. . . .", तब फिर राजा की ओर मुखातिब होकर उसने कहा :

"हे राजा ! तुम भी सुनो क्योंकि मेरी माता से तुम ही तो विवाह कर रहे हो. . . .मैं गौर्गन्स के मुल्क में जाकर तुम्हारे लिये मैडूसा का सिर उपहार में लाऊँगा । मेरा विचार है कि तुम उसे पाकर अवश्य प्रसन्न हो उठोगे ।"

उसकी बातें सुनकर सभी लोग अचंभे से भर गये और विस्फारित नेत्रों से उसकी ओर देखने लगे । कुछ ने तो उसे बिल्कुल ही पागल समझा क्योंकि गौर्गन्स के देश जान-बूझ कर जाना सबसे बड़ी मूर्खता थी । यह तो वह स्थान था जहाँ से लौटकर कोई आ ही नहीं सकता था । राजा पौलीडिक्टिस अपने मन में बहुत खुश हुआ । अब उसकी चाल चल गई थी । वहाँ जाकर पर्सियस तो लौटेगा नहीं और वह आनंदपूर्वक उसकी युवती माता डैनी के साथ विहार कर सकेगा । और फिर पर्सियस ने और किसी गौर्गन-दानव का नाम न लेकर खास मैडूसा का नाम लिया था । यह तो निश्चय ही उसके अंत की सूचना दे रहा था क्योंकि मैडूसा वह भयंकर दानवी थी जिसकी सूरत देखकर सभी पत्थर के हो जाते थे । फिर भला पर्सियस की क्या मजाल जो उससे बचकर वापस आता । ऐसा सोचकर राजा बहुत खुश हुआ और ज़ाहिरा में उसने उसकी बहादुरी की बड़ी प्रशंसा भी की । बाकी सभी दरबारियों को भी निश्चय हो गया कि पर्सियस की मृत्यु उसके सामने खड़ी थी ।

पर्सियस दूसरे दिन ही प्रातःकाल गौर्गन्स के उस टापू की ओर चल दिया । उसके जाने के बाद राजा पौलीडिक्टिस ने सुंदरी डैनी से विवाह कर लिया और वह उसे अपने महल में लाकर उससे सुख भोगने लगा । परन्तु शीघ्र ही डैनी को उससे घृणा होने लगी । वह उससे दूर-दूर रहने का प्रयत्न करने लगी । एक दिन जब वह मदिरा के नशे में चूर होकर सो रहा था, डैनी वहाँ से भागी और अपने पुराने आश्रयदाता डिक्टिस के पास वापस पहुँची और उसने उससे भी अपने साथ भागने को कहा । डिक्टिस ने सारी परिस्थिति को समझकर भाग जाना ही उचित समझा । तब दोनों जाकर एक मंदिर में छिप गये ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राजा ने उन्हें बहुत ढुंढ़वाया पर वे नहीं मिले। राजा अत्यंत क्रोधित था क्योंकि इतनी सुंदरी स्त्री उसके काबू में आकर फिर निकल गई थी।

पर्सियस जब चला तो वह अपनी माँ से बिना मिले ही चला गया। वह जानता था कि यदि उसे उसके इरादों का पता चल जायगा तो हर्गिज़ वह उसे जाने नहीं देगी। वह जहाज़ पर बैठ कर सीधा ग्रीस पहुँचा जहाँ उसे पहिले गौर्गन लोगों के उस टापू के बारे में जानकारी करनी थी कि वह है कहाँ और उसका रास्ता किस ओर से है। वह डैल्फी के मंदिर में पहुँचा और उसने वहाँ की पुजारिन से अपने प्रश्न किये। सब कुछ सुनकर वह केवल इतना बोली कि वह वहाँ जाने का इरादा फौरन बदल कर अपने घर वापस चला जाय। जब इसने ज़िद की तो वह बोली :

"डिमीटर के दिये हुए सुवर्णमय अनाज (गेहूँ) को वे लोग नहीं खाते। वहाँ केवल कीड़े-मकोड़े ही खाये जाते हैं....मैडूसा इत्यादि के स्थान को कभी नहीं जाना चाहिये....तुम वापस हो जाओ...."

पर्सियस तब वहाँ से चला आया और वह डोडोना की ओर गया जहाँ ओक के बोलते वृक्ष बहुतायत से पाये जाते थे। वास्तविकता में यह उन्हीं का मुल्क था और वह वृक्ष वही बोलते थे जो ज़िअस उनसे बुलवाता था। वहाँ उनके लिये सेल्ली घास के दानों को बीन कर उसके आटे से रोटियाँ बनती थीं। जब वह वहाँ पहुँचा तो उस देश की सुंदरता देखकर मुग्ध हो गया। उसने अपने वही प्रश्न उन वृक्षों से किये। एक सबसे पुराना पेड़ बोला :

"....हम तो सिर्फ़ इतना ही जानते हैं कि तुम्हारे ऊपर दो पराक्रमी देवी-देवताओं की असीम कृपा है....गौर्गन लोगों के देश, उनकी वेशभूषा इत्यादि के बारे में हम कुछ भी नहीं जानते...."

निराश होकर पर्सियस वहाँ से भी लौटा। अब वह काफी चिंतित हो उठा था कि आखिर कहाँ जाकर वह उस स्थान का पता लगाये। तत्पश्चात् वह और कई जगहों पर भी गया और उसने पूछताँछ भी की पर उसे कहीं कोई सूराग नज़र नहीं मिला। जब ढूँढ़ते-ढूँढ़ते काफी परेशान हो गया और उसे कुछ भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हे हँसनेवालो ! अपनी यह हरकत फौरन बंद करो वरना अच्छा नहीं होगा....", तब फिर राजा की ओर मुखातिब होकर उसने कहा :

"हे राजा ! तुम भी सुनो क्योंकि मेरी माता से तुम ही तो विवाह कर रहे हो....मैं गौर्गन्स के मुल्क में जाकर तुम्हारे लिये मैडूसा का सिर उपहार में लाऊँगा। मेरा विचार है कि तुम उसे पाकर अवश्य प्रसन्न हो उठोगे।"

उसकी बातें सुनकर सभी लोग अचंभे से भर गये और विस्फारित नेत्रों से उसकी ओर देखने लगे। कुछ ने तो उसे बिल्कुल ही पागल समझा क्योंकि गौर्गन्स के देश जान-बूझ कर जाना सबसे बड़ी मूर्खता थी। यह तो वह स्थान था जहाँ से लौटकर कोई आ ही नहीं सकता था। राजा पौलीडिक्टिस अपने मन में बहुत खुश हुआ। अब उसकी चाल चल गई थी। वहाँ जाकर पर्सियस तो लौटेगा नहीं और वह आनंदपूर्वक उसकी युवती माता डैनी के साथ विहार कर सकेगा। और फिर पर्सियस ने और किसी गौर्गन-दानव का नाम न लेकर खास मैडूसा का नाम लिया था। यह तो निश्चय ही उसके अंत की सूचना दे रहा था क्योंकि मैडूसा वह भयंकर दानवी थी जिसकी सूरत देखकर सभी पत्थर के हो जाते थे। फिर भला पर्सियस की क्या मजाल जो उससे बच-कर वापस आता। ऐसा सोचकर राजा बहुत खुश हुआ और ज़ाहिरा में उसने उसकी बहादुरी की बड़ी प्रशंसा भी की। बाकी सभी दरबारियों को भी निश्चय हो गया कि पर्सियस की मृत्यु उसके सामने खड़ी थी।

पर्सियस दूसरे दिन ही प्रातःकाल गौर्गन्स के उस टापू की ओर चल दिया। उसके जाने के बाद राजा पौलीडिक्टिस ने सुंदरी डैनी से विवाह कर लिया और वह उसे अपने महल में लाकर उससे सुख भोगने लगा। परन्तु शीघ्र ही डैनी को उससे घृणा होने लगी। वह उससे दूर-दूर रहने का प्रयत्न करने लगी। एक दिन जब वह मदिरा के नशे में चूर होकर सो रहा था, डैनी वहाँ से भागी और अपने पुराने आश्रयदाता डिक्टिस के पास वापस पहुँची और उसने उससे भी अपने साथ भागने को कहा। डिक्टिस ने सारी परिस्थिति को समझकर भाग जाना ही उचित समझा। तब दोनों जाकर एक मंदिर में छिप गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राजा ने उन्हें बहुत ढुंढ़वाया पर वे नहीं मिले। राजा अत्यंत क्रोधित था क्योंकि इतनी सुंदरी स्त्री उसके काबू में आकर फिर निकल गई थी।

पर्सियस जब चला तो वह अपनी माँ से बिना मिले ही चला गया। वह जानता था कि यदि उसे उसके इरादों का पता चल जायगा तो हर्गिज़ वह उसे जाने नहीं देगी। वह जहाज़ पर बैठ कर सीधा ग्रीस पहुँचा जहाँ उसे पहिले गौर्गन लोगों के उस टापू के बारे में जानकारी करनी थी कि वह है कहाँ और उसका रास्ता किस ओर से है। वह डैल्फी के मंदिर में पहुँचा और उसने वहाँ की पुजारिन से अपने प्रश्न किये। सब कुछ सुनकर वह केवल इतना बोली कि वह वहाँ जाने का इरादा फौरन बदल कर अपने घर वापस चला जाय। जब इसने ज़िद की तो वह बोली :

"डिमीटर के दिये हुए सुवर्णमय अनाज (गेहूँ) को वे लोग नहीं खाते। वहाँ केवल कीड़े-मकोड़े ही खाये जाते हैं....मैडूसा इत्यादि के स्थान को कभी नहीं जाना चाहिये....तुम वापस हो जाओ...."

पर्सियस तब वहाँ से चला आया और वह डोडोना की ओर गया जहाँ ओक के बोलते वृक्ष बहुतायत से पाये जाते थे। वास्तविकता में यह उन्हीं का मुल्क था और वह वृक्ष वही बोलते थे जो ज़िअस उनसे बुलवाता था। वहाँ उनके लिये सेल्ली घास के दानों को बीन कर उसके आटे से रोटियाँ बनती थीं। जब वह वहाँ पहुँचा तो उस देश की सुंदरता देखकर मुग्ध हो गया। उसने अपने वही प्रश्न उन वृक्षों से किये। एक सबसे पुराना पेड़ बोला :

"....हम तो सिर्फ़ इतना ही जानते हैं कि तुम्हारे ऊपर दो पराक्रमी देवी-देवताओं की असीम कृपा है....गौर्गन लोगों के देश, उनकी वेशभूषा इत्यादि के बारे में हम कुछ भी नहीं जानते...."

निराश होकर पर्सियस वहाँ से भी लौटा। अब वह काफी चिंतित हो उठा था कि आखिर कहाँ जाकर वह उस स्थान का पता लगाये। तत्पश्चात् वह और कई जगहों पर भी गया और उसने पूछताँछ भी की पर उसे कहीं कोई सूराग नज़र नहीं मिला। जब ढूँढ़ते-ढूँढ़ते काफी परेशान हो गया और उसे कुछ भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न मालूम हुआ तो वह वहुत अधिक दुखी हुआ । उसी समय हर्मीस और एथेना ने उस पर दया की और एक सुंदर पुरुष को उसके पास भेजा । वह परम विचित्र व्यक्ति था । उसके हाथ में एक सोने का छल्लेदार डंडा था। उसके सिर पर सोने का परदार टोप और पैरों में उड़ने वाले जूते थे । उसके गालों पर प्रभात की लालिमा की भाँति शुभ्र ज्योत्स्ना थी और उसको देखकर मालूम होता था कि वह अवश्य ही कोई दैवी पुरुष है । पर्सियस का हृदय उसे देखकर ही आशा से भर गया । वह समझ गया कि वह अच्छाइयाँ देने वाला देवता हर्मीस ही था ।

हर्मीस ने पर्सियस की ओर प्रेम से देखा और वह बोला :

"मैडूसा का गला काटने के लिये पहले तुझे वहाँ जाने के लिये और वहाँ पहुँचकर लड़ने के लिये पहले सामान तो जुटा लेना चाहिये। प्रथम बात तो यह है कि तुझे उन गौर्गन स्त्रियों तक पहुँचने का मार्ग जान लेना चाहिये । यह तुझे यहाँ से उत्तर दिशा की ओर स्थित एक ऐसे टापू पर जाकर पता चलेगा जहाँ सूर्य का प्रकाश कभी नहीं होता । वहाँ रात्रियों में चाँदनी भी नहीं छिटकती । अंधकार में केवल धूमिल सा प्रकाश छाया रहता है । उस जगह उदासी ही उदासी छाई रहती है । हर वस्तु पर धूल पड़ी रहती है । वहाँ तीन जीर्ण वृद्धा स्त्रियाँ रहती हैं जो भयंकर जादूगरनियाँ हैं । उन तीनों के पास केवल एक ही आँख है । बाकी दो तो सोती रहती हैं, तीसरी पहरा देती है । जब उसका समय खत्म हो जाता है तो वह अपने माथे से उस आँख को निकाल कर दूसरी को दे देती है । इसी तरह फिर जब वह सोती है तो दूसरी और फिर तीसरी बारी-बारी से उसी आँख को अपने माथे में लगाकर जागती हैं और पहरा देती हैं । तू पहले वहाँ जाकर चुपचाप छिप जा और अपने को उन पर प्रकट मत होने दे । तत्पश्चात् मौका देख कर किसी प्रकार उस आँख को उनसे छीन ले । जब वह सभी अधीर होकर घबराने लगें तब तू उनसे मैडूसा के रहने का स्थान और वहाँ पहुँचने का मार्ग पूछ. . .यदि तू सफल हो गया तो फिर आगे के सभी काम तेरे लिये सरल बन जायँगे । वे जादूगरनियाँ परी-स्त्रियों के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाम से प्रसिद्ध हैं।"

पर्सियस ने उस दिव्य पुरुष को अनेकानेक धन्यवाद दिये और तब वह जहाज़ लेकर उन जादूगरनियों के देश की ओर चल पड़ा। वह दिव्य पुरुष भी आकाश मार्ग से उसे मार्ग बतलाता हुआ उसके साथ गया।

पर्सियस शीघ्र ही उस धूमिल स्थान में पहुँच गया। उसने देखा कि उस देश में केवल वही तीन जादूगरनियाँ रहती हैं। वे देखने में बहुत ही भयंकर और साथ-साथ वृद्ध भी लगती थीं। वह एक स्थान में छिप गया। दो स्त्रियाँ सो रही थीं और एक जाग रही थी। जब उसके पहरे का समय खत्म हुआ तो उसने सोती हुई स्त्रियों में से एक को जगाया और तब अपने माथे में से आँख निकाल कर उसकी ओर बढ़ाई। उसी समय पर्सियस ने झपट कर उससे वह आँख छीन ली। अब तो बुढ़ियाएँ बहुत घबराईं क्योंकि वे सभी अंधी हो गई थीं और उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं देता था। पर्सियस चतुराई खेल गया था। उसने उस समय दाँव मारा था जब वे तीनों ही अंधी थीं। वह दूर जाकर खड़ा हो गया और तब उन अंधी बुढ़ियों से बोला :

"तुम्हारी आँख मेरे पास है। इसे मैं तुमको वापस करने को तैयार तो हूँ परन्तु इसके लिये तुम्हें मेरी एक शर्त्त मंजूर करनी होगी....बोलो तुम्हारा क्या इरादा है ?"

बुढ़ियाएँ उसकी बोली सुनकर क्रोध से आग बबूला हो गईं और उसे गालियाँ देने लगीं। उन्होंने उसे भय भी दिखाना चाहा और यहाँ तक कहा कि वे उसकी कोई शर्त्त मानने को तैयार नहीं हैं। यदि वह आँख उन्हें फौरन वापस न मिली तो वे उन्हें फौरन मार डालेंगी। पर पर्सियस जरा भी न डरा। वह जोर से हँसा और बोला :

"तो फिर मैं तो इस आँख को लेकर अब चला, तुम भटको।" बुढ़ियाएँ यह सुनकर बहुत घबराईं और तब उससे मीठी-मीठी बातें करती हुई उसकी खुशामद करने लगीं। अब उनकी सारी अकड़ चली गई। पर्सियस ने उनसे जो पूछा वह सभी उन्होंने उसे बता दिया। मैडूसा के देश का मार्ग इत्यादि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सभी कुछ बतलाकर उन्होंने उसे स्वयं कोई नुकसान न पहुँचाने का वचन भी दिया और तब उससे अपनी आँख माँगी। पर्सियस ने सब बातों की जानकारी पूरी तरह से कर ली और वह आँख लौटा दी। तत्पश्चात् वह वहाँ से उत्तर दिशा की ओर चला। हर्मीस उसके साथ था। उसने उसे एक विचित्र और मज़बूत तलवार देकर कहा :

"इससे तू मैडूसा का गला आसानी से काट सकेगा। यह तलवार न मुड़ती है न लचकती है। यह बहुत ही अधिक मज़बूत है जो उन गौर्गन स्त्रियों की मोटी से मोटी केंचुली को भी आसानी से काट देगी....परन्तु एक बात है ....जो कोई भी मैडूसा के सामने जाता है वह पत्थर का हो जाता है.... उस सूरत में यह तलवार भी व्यर्थ है क्योंकि यदि तू उसके सामने गया तो तेरे साथ-साथ यह भी पत्थर की हो जायगी....इस बात का उपाय मेरे पास नहीं है...."

और तब उसने अपनी मजबूरी दिखाकर उदास भाव से पर्सियस की ओर देखा। पर्सियस स्वयं भी यह बात सुनकर चिंता में पड़ गया। परन्तु उसे अधिक परेशान नहीं होना पड़ा क्योंकि देवी पैलैस एथेना ने उस समय उसकी सहायता की। वह उसके पास आई और उसने अपनी छाती पर बँधी चमकती ढाल उतार कर दे दी। फिर वह बोली :

"इस काँसे की ढाल को तू ले ले और जब तू मैडूसा के पास पहुँचे तो इसमें ही उसका प्रतिबिंब देखकर उसके गले पर वार कर। ऐसा करने से तू पत्थर का नहीं बनेगा। यह ढाल इतनी चमकदार है कि इसमें तुझे मैडूसा का अक्स दर्पण जैसा स्वच्छ दिखाई देगा....परन्तु यहाँ से पहिले हाईपरबोरियन लोगों के मुल्क को जा जहाँ तुझे तीन जरूरी चीजें और मिलेंगी जिनके बिना तू मैडूसा के देश में जाकर खतरे से नहीं बच सकता।

पर्सियस उस ढाल को पाकर बहुत खुश हुआ। और तब वह हाईपरबोरियन देश की ओर रवाना हुआ। मार्ग बहुत ही भयानक था जहाँ न तो जहाज ही जा सकते थे और न पैदल ही जाया जा सकता था। वह आगे बढ़ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में बहुत ही मुश्किलें महसूस करने लगा पर हर्मीस जो उसके साथ था, इसलिए उसकी सहायता से वह बढ़ता चला गया। आखिरकार अंधकार पीछे छूट गया और वह उज्वल प्रकाश से युक्त एक ऐसे स्थान पर जा पहुँचा जहाँ चारो ओर अत्यंत सुंदर दृश्य दिखाई दे रहे थे। उन्मुक्त हँसी से युक्त नर-नारियों ने पर्सियस का स्वागत किया और वह उसे अपने साथ महल में ले गये। वहाँ विचित्र प्रकार के सुरीले वाद्य बज रहे थे। सुंदरियाँ महीन स्वर से गा रही थीं और नाच भी रही थीं। पर्सियस उन्हें देखकर बहुत खुश हुआ। तारों के वाद्य और वाँसुरी की तान के साथ कदम उठाती हुई सुंदरियों ने उस पर सुगंधित पुष्प फेंके और उसका मधुर कटाक्षों से स्वागत किया। तत्पश्चात् उसे दावत खिलाई गई। नाचने वाली लड़कियों ने उसे तीन विचित्र वस्तुयें महल के अंदर से लाकर दीं। यह वही चीजें थीं जिनके बारे में एथेना ने इशारा किया था।

यह तीन वस्तुएँ थीं, उड़ने वाले जूते, कमर की पेटी और एक सिर पर पहिनने की टोपी। उन जूतों को पहिन कर उड़ा जा सकता था। कमर की पेटी ऐसी थी कि जो कोई भी उसको पहिनता उसी के ठीक आती और उसमें खोंस कर कुछ भी ले जाया जा सकता था। सबसे विचित्र वस्तु वह टोपी थी जिसे पहिनने वाला अदृश्य हो जाता था।

इन्हें पाकर पर्सियस बहुत खुश हुआ और तब वह हर्मीस की तलवार और एथेना की ढाल सहित गौर्गन्स के देश जाने को पूरी तरह तैयार हो गया।

अब हर्मीस और पर्सियस आकाश में उड़े और समुद्र को पार करते हुए उस भयानक देश की ओर चले। नीचे की ओर उन्होंने भयानक मृत्यु के गह्वर और अजदहों, विषधर सर्पों इत्यादि से पूर्ण स्थान देखे जिन्हें चलकर किसी भी प्रकार पार नहीं किया जा सकता था।

देर तक उड़ने के उपरांत पर्सियस गौर्गन्स के देश में पहुँचा। भाग्यवश उस समय वह तीनों गौर्गन स्त्रियाँ (दानवियाँ) सो रही थीं। जब पर्सियस उन्हें ढाल में देखने लगा तब हर्मीस और एथेना दोनों ही उसके पास आ गये और उन्होंने पहचान कर उन्हें मैडूसा को दिखलाया। पर्सियस ने ढाल में देखा कि सामने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तीन भयानक दानवियाँ सो रही हैं। उनके पर बहुत बड़े-बड़े थे और केंचुली सोने की थीं; बालों के स्थान पर भयानक साँप उगे हुए थे। तीनों दानवियों को देखकर अलग पहिचानना असंभव था। वे बिल्कुल एक सी थीं। यदि एथेना उसे उस समय मैंडूसा को पहिचान कर न बतलाती तो उसके लिये उसे पहिचानना नामुमकिन ही होता। यह भी बहुत ही अच्छा हुआ जो एथेना ने उस समय उसे मैंडूसा को पहिचान कर दिखा दिया क्योंकि उन तीनों में से एक वही थी जो मारी जा सकती थी। बाकी दो तो अमर थीं। उन्हें यदि पर्सियस भूल से मार बैठता तो वह मरतीं तो कभी नहीं उलटे पाँव उसी पर मुसीबत आ जाती। अब पर्सियस ने ढाल में मैंडूसा को ताककर उलटे हाथ से ऐसी तलवार उसके गर्दन पर मारी कि वह फौरन कटकर अलग हो गई। मारते समय उसने हवा में उड़कर अपना निशाना बनाया था क्योंकि जमीन पर खड़े होकर उसे मारा नहीं जा सकता था। जब उसने तलवार मारी थी तो एथेना ने ही उसके काँपते हाथ को साधा था।

मैंडूसा का सिर कट कर अलग जा गिरा जिसे पर्सियस ने फौरन एक चमड़े के बक्स में बंद कर लिया। अब उसके हृदय में भय का नाम-निशान नहीं था। वह वापस जाने के लिये तैयार हुआ पर उसी समय मैंडूसा की दोनों बहिनें जाग उठीं। उन्होंने जो अपनी बहिन को मरा हुआ पाया तो क्रोध से पागल होकर पर्सियस पर झपटीं जो अब उड़ने की तैयारी कर रहा था। गौर्गन स्त्रियाँ वायु वेग से उसके पास आ गईं और निश्चय ही उसे पकड़ कर मार डालतीं यदि वह उसी समय उस विचित्र टोपी को सिर पर लगा कर एकदम अदृश्य न हो जाता। उसके अदृश्य हो जाने पर दोनों क्रोध से भनभनाती हुई वापस लौट गईं।

अब पर्सियस महासमुद्रों पर से उड़ता हुआ वापस चला। चाँदी की पेटी में मैंडूसा का सिर बंद था जो उसने अपनी विचित्र कमरबंद में लटका रखी थी। हाथ में उसके वह चमचमाती ढाल और मजबूत तलवार थी और वह अदृश्य होकर उड़ा चला जा रहा था। उसके साथ-साथ हर्मीस भी था।

जब वह एथिओपिआ नामक देश में आया तो आकाश से पृथ्वी पर उतरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और उसने अपनी वह टोपी उतार ली। यहाँ से हर्मीस उससे विदा लेकर चला गया। उसने देखा कि एक निर्जन पहाड़ पर मज़बूत जंजीरो से एक परम सुंदरी युवती बँधी पड़ी है। वह डर से कांप रहीं थी और कभी-कभी भयातुर कातर स्वर से वह रोने लग जाती है। एक सुदरी और फिर युवती पर ऐसा अमानुषिक अत्याचार देखकर उसका हृदय उसके प्रति करुणा से भर गया। उसे साथ ही साथ उन लोगों पर बहुत क्रोध आया जिन्होंने उस सुंदरी को इस तरह बाँध कर पटक दिया था। वह झपट कर उसके पास पहुँचा। पास से उस स्त्री के लावण्य को देखकर उस पर इतना मोहित हो उठा कि अब उसने अनुभव किया कि वह उससे प्रेम करने लग गया है। उसने अपनी तलवार उठाई और उसके बंधनों को काटने के लिये बढ़ा। परन्तु उसी समय अपने पीछे से किसी का स्वर सुनकर वह ठिठक गया और मुड़कर देखने लगा। एक बुढ़िया उसे बंधन खोलने को मना कर रहीं थी।

एथिओपिआ की रानी कैसिओपिआ एक बहुत ही अधिक सुंदरी स्त्री थी। वह इस समय तरुणी थी परन्तु उसे देखकर कठोर और नीरस पुरुषों के हृदय में भीं चंचलता आ जाती थी। उसकी पुत्री का नाम एंड्रोमेडा था, जो पहाड़ पर जंजीरों से कसी पड़ी थी। हुआ यह कि कैसिओपिआ को अपनी सुंदरता का बहुत गर्व हो गया था और तब उसने शेखी में अपने आप को नीरियस की पुत्रियों से भी अधिक कोमलाङ्गी और नाज़ुक कहना शुरू कर दिया। नीरियस ठहरा समुद्री-देवता। उसकी पुत्रियाँ भी बहुत सुंदर थीं। वास्तविकता में कैसिओपिआ उनसे बहुत ही अधिक सुंदर थी पर वह जो देवता की पुत्रियाँ थीं यह बात भला सहन क्यों करतीं। उन्होंने अपने पिता को उसके विरुद्ध भड़काया कि वह उसे इस धृष्टता के लिये दंड दे। नीरियस ने तुरंत एक भयंकर समुद्री सर्प को आज्ञा दी कि वह एथिओपिआ जाकर वहाँ के आदमी और औरतों वगैरह को खाना शुरू कर दे। वह भयंकर सर्प एथिओपिआ जाकर अमानुषिक अत्याचार करने लगा। उसने थोड़े ही समय में इतने अधिक आदमी खा डाले कि लोगों में हाहाकार फैल गया। लोग भय से आतंकित होकर काँपने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब परेशानी बहुत बढ़ गई तो सब लोग मिलकर ज़िअस के मंदिर में गये और उन्होंने घुटनों के बल बैठ कर मिन्नतें कीं। ५२ ज़िअस ने उन्हें नीरियस के मंदिर में ही जाने को कहा। वह बोला :

"नीरियस का तुम्हारे ऊपर कोप है, इसलिए तुम उसी के मंदिर में जाकर मिन्नत करो....'

सब लोग समुद्र के किनारे बने हुए नीरियस के विशाल मंदिर में गये और कहा :

"हे समुद्र के पराक्रमी देवता! हम से ऐसी क्या गलती हो गई है जो तू हम पर इतना क्रोध कर रहा है। हम पर अब तो रहम कर क्योंकि हम सब बहुत ही दुखी हैं। हमें क्या करना चाहिये जिससे यह मुसीबत टले। यह हमें तेरे सिवा भला बतला भी कौन सकता है? जो तू कहेगा वैसा ही हम करने को तैयार हैं...."

नीरियस ने मंदिर की पुजारिन की मार्फत कहलवाया :

"तुम्हारी रानी कैसिओपिआ ने ही मुझे और मेरी पुत्रियों को नाराज़ किया है....अब यदि तुम लोग उस भयानक सर्प से बचना चाहते हो तो उसका केवल एक ही उपाय है। कैसिओपिआ के अपराध के कारण अब उसे हम दंड देना चाहते हैं....उसकी पुत्री एंड्रोमेडा हमारे सर्प को भेंट में यदि दी जायगी तो फिर लोगों की यह मुसीबत हमेशा के लिये खत्म हो जायगी....एंड्रोमेडा को निर्जन पहाड़ पर मज़बूत जंजीरों से कसकर बाँध दो और अकेली छोड़ आओ। तुम्हारी तकलीफ हमेशा के लिये मिट जायगी।"

लोगों ने सुना और तब वह लोग सीधे राजमहल पहुँचे। वहाँ पहुँच कर उन्होंने कैसिओपआ के पति सैफ़िअस से जाकर सब बातें कहीं और एंड्रोमेडा की बलि देने के लिये भी उससे कहा। राजा अपनी प्यारी पुत्री को इस प्रकार सर्प द्वारा मारे जाने की बात सुनकर बहुत दुखी हुआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक बार तो उसने साफ़ इंकार भी कर दिया पर लोगों ने उसे दबाया और विद्रोह की धमकी दी। मजबूरन सैफ़िअस को उनकी बात माननी पड़ी। एंड्रोमेडा पहाड़ पर अकेली बाँधकर छोड़ दी गई।

पर्सियस ने बुढ़िया की जबानी सारी बातें सुनीं और उसने उसे विदा करके कहा :

"मैं अब सारी बातें सुन चुका हूँ तो इस सुंदरी के बंधन तो नहीं काटूँगा. . . .पर जब वह सर्प आवेगा तो उसी को उसकी धृष्टता का उचित दंड दूँगा।"

इसके बाद जब बुढ़िया चली गई तो वह वहीं एक ओर बैठ गया। उसने अब अपनी टोपी फिर पहिन ली जिससे वह अदृश्य हो गया।

जब रात हुई तो समुद्र के पानी में बड़े जोर की खलबली मचने लगी। पर्सियस ने थोड़ी देर बाद देखा कि एक बहुत ही बड़ा विषधर सर्प रेंगता हुआ उस युवती की ओर बढ़ा चला आ रहा है। उसके नेत्र चमक रहे हैं। मुख से अग्नि की लपटें निकल रही हैं। वह अपनी तलवार लेकर अदृश्य होकर उस पर झपटा। साँप को तो वह दिखा नहीं, इसलिए वह तो निश्चिंत भाव से बढ़ा चला आ रहा था। जब वह पास आया तो पर्सियस ने तक कर उसके सर पर भरपूर तलवार का हाथ मारा जिससे उसकी गर्दन कट कर अलग जा गिरी। अब न रहा सर्प न आगे आने वाली मुसीबत। पर्सियस ने तब खुशी-खुशी एंड्रोमेडा के बंधन काट डाले।

दूसरे दिन सुबह ही वह उसे लेकर राजा सैफ़िअस और रानी कैसिओपिआ के पास पहुँचा। एंड्रोमेडा को जीवित देखकर उन्हें परम आश्चर्य हुआ और उन्होंने उससे सारी बातों के बारे में पूछा। पर्सियस ने उनसे सारे वृत्तांत को खोलकर कहा और उनसे एंड्रोमेडा को अपनी पत्नी बनाने के लिये माँगा। वे लोग बहुत खुश हुए और उन्होंने उसकी बात

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सहर्ष मान लो। तत्पश्चात् पर्सियस का विवाह बड़ी धूमधाम के साथ एंड्रोमेडा से हो गया।

पर्सियस अब अपनी प्रेयसी को लेकर आकाश मार्ग से उड़ता हुआ अपने देश को वापस चला जहाँ उसकी माता डैनी उस मछुए डिक्टिस के साथ मंदिर में छिप कर रहती थी। उसने अपनी स्त्री को भुजाओं में बाँध लिया और उड़ता हुआ तीव्र गति से चला।

शीघ्र ही वह उस देश में जा पहुँचा। जाते ही उसने अपनी माँ को ढूँढ़ा पर वह उसे कहीं नहीं मिली। उसने इधर-उधर पूछा तो पता चला कि डिक्टिस की स्त्री तो मर चुकी थी, और पौलिडिक्टिस के डर से उसकी माँ और मछुआ डिक्टिस कहीं भाग गये हैं। उसे पौलिडिक्टिस पर बहुत क्रोध आया। वह राजमहल की ओर चला। वहाँ पहुँच कर उसे पता चला कि राजा अपने सभी दरबारियों सहित अंदर बैठा हुआ दावत खाता हुआ आनंद मना रहा है। पर्सियस ने ऐसा मौका खाली छोड़ देना मुनासिब नहीं समझा। उसने एंड्रोमेडा को तो बाहर छोड़ा और फिर टोपी उतार कर स्वयं दरबार के बड़े कमरे में घुसा।

उस समय दरबारी लोग शराब पीकर मस्त हो रहे थे। पर्सियस हाथ में एथेना की छाती पर बँधने वाली चमकती ढाल और हर्मीस की तलवार लिये हुए था। उसकी कमर की पेटी चमचमा रही थी जिससे एक चाँदी की चमकदार पेटी लटक रही थी। वह उस समय भव्य लग रहा था। द्वार पर उसे इतने ठाठ के साथ खड़ा देख कर सभी की निगाहें उस पर जम गईं। सभी लोग उसे अचंभे से देख रहे थे। और तो शायद उसे न पहचान पाये हों पर राजा पौलिडिक्टिस उसे पहली निगाह में ही पहिचान गया और उसकी त्योरियाँ बदल गई थीं।

पर्सियस ने उपयुक्त मौका देखा। इससे पहिले कि कोई उससे कुछ कहता उसने वह चाँदी की पेटी खोली और पलक मारते मैडूसा का सिर बाहर निकाल कर उन सबको दिखा दिया। सब की निगाहें एकदम मैडूसा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के सिर पर पड़ीं और वे सभी एकदम पत्थर के हो गये। पूरा दरबार मय राजा और दरबारी सभी पत्थर की मूर्त्तियाँ बनकर जैसे बैठे थे वैसे ही बैठे रह गये। राजा पौलिडिक्टिस की पत्थर की प्रतिमा की त्योरियाँ खिंची की खिंची रह गईं। पर्सियस ने तब वह सिर फिर चाँदी की पेटी में बंद कर दिया और एंड्रोमेडा को बुलाकर कतार की कतार पत्थर की बैठी हुई मूर्त्तियों को उसे दिखाया। वह आश्चर्यचकित होकर उन्हें देखने लगी। उसने अपने पति का आलिङ्गन करके उसकी वीरता की प्रशंसा की।

जब नगरवासियों को इन सारी बातों का पता चला तो सभी लोग उस निर्दयी राजा से छुटकारा पाने की खुशियाँ मनाने लगे। पौलीडिक्टिस के राज्य में उसके अत्याचारों से सभी लोग बहुत ही अधिक दुखी थे। उन्होंने पर्सियस को वहाँ का राजा बनाना चाहा पर उसने इंकार कर दिया।

उसने ढुँढ़वा कर अपनी डैनी माता और मछुए डिक्टिस का पता बतलाया। जब वे मिल गये तो स्वयं जाकर वह उन्हें राजमहल में लिवा लाया। वह उनसे मिलकर बहुत खुश हुआ और उसने अपनी स्त्री का परिचय उनसे कराया। डैनी एंड्रोमेडा से मिलकर बहुत खुश हुई।

तत्पश्चात् डिक्टिस को वहाँ का राजा बनाकर डैनी और पर्सियस एंड्रोमेडा सहित ग्रीस की ओर रवाना हुए। डैनी ने कहा :

"हमें अब अपने देश को वापस चलना चाहिये। मुमकिन है अब तक मेरा पिता एक्रिसिअस अपना पुराना बैर हमारे प्रति भूल गया हो... वह निश्चय ही अपने पोते और उसकी सुंदरी स्त्री को देख कर खुश होगा..."

तीनों तब ग्रीस की ओर चले। जब वे लोग अर्गोस पहुँचे तो उन्हें बहुत निराश होना पड़ा। वहाँ एक्रिसिअस नहीं था। अपने अत्याचारों के कारण वह लोगों द्वारा कभी का देश से भगा दिया गया था। उन्होंने उसे ढूँढ़ने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु उसका कहीं भी पता नहीं चला। डैनी उदास हो गई क्योंकि इतना सब कुछ होते हुए भी वह अपने पिता से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुत प्रेम करती थी। निदान जब ये लोग वहीं रह गये। पर्सियस अर्गोस का राजा बन गया और सुखपूर्वक अपनी स्त्री और माता के साथ राज्य करने लगा।

कुछ समय बाद उसके पास लैरीसा के राजा का निमंत्रण आया। वह अपने राज्य में एक बहुत बड़े खेल-कूद और भागदौड़ का आयोजन कर रहा था। उसने देश देशांतरों से वीर पुरुषों को उस आयोजन में भाग लेने के लिये बुलाया था। पर्सियस ने शीघ्र जाने की तैयारी की और दूसरे दिन वह रथ पर बैठ कर उत्तर दिशा में स्थित लैरीसा की ओर चल पड़ा।

खेलकूद का आयोजन भव्य था। बड़े-बड़े पराक्रमी पुरुष अपना शौर्य दिखाने को एकत्रित हुए थे। उनकी सुंदर और बलिष्ठ देहों से शौर्य टपकता था। वीरों में होड़ पड़ रही थी। मैदान के एक ओर एक बहुत बड़े चबूतरे पर एक सुनहरा पंडाल तना हुआ था जो नीचे की ओर सुवर्ण के ठोस खम्भों के सहारे खड़ा था। उसके ऊपर ध्वजाएँ और सुवर्ण के शिखर चमक रहे थे। विचित्र वाद्य बज रहे थे। समा बँधा हुआ था। एक ओर घुड़सवार अपनी चमचमाती हुई पोशाकें पहिने हुए भागने के लिये तैयार खड़े थे।

चपल अश्व भागने को आतुर हो रहे थे। वह बारबार हिनहिनाते और पैरों से धरती खोदते हुए अपने सवारों सहित थिरक रहे थे।

पंडाल के अंदर सम्मानित स्त्री पुरुष बैठे थे। राजा अपनी सुंदरी रानी सहित अपने ऊँचे सोने के सिंहासन पर बैठा था। सब के बीच लैरीसा की अति सुंदरी राजकुमारी हाथों में सुगंधित फूल का सुंदर गुच्छा लिये बैठी थी। जो उस प्रतियोगिता में जीतता उसे वह सुंदरी अपने हाथों से उस गुच्छे को देती। उसकी एक मुस्कान प्राप्त करने के लिये देश देशांतरों से आये हुए वीर उतावले हो रहे थे। अद्भुत दृश्य था। चारों ओर अपार भीड़ लगी थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर्सियस उस सब को देख कर बहुत खुश हुआ। जब डिस्कस (काँसे की मोटी थाली जैसी वज़नी. फेंकने की चीज़) फेंकने का समय आया तो पर्सियस केवल एक ऊँचा चीते की खाल का बना हुआ जाँघिया पहिन कर मैदान में उतरा। उसका शरीर उस समय जँच रहा था। वह वीर्यवान पौरुष से जगमगा रहा था। उसकी सुंदरता और शोभा उस समय सब की प्रशंसा का केंद्र बन रही थी । उसने भुक कर पृथ्वी पर पड़े हुए डिस्कस को अपने दायें हाथ से उठा लिया। धीरे-धीरे पग रखता हुआ वह उसे लेकर पीछे की ओर चला। तत्पश्चात् हठात वह घूमा और वायु वेग से भागा। जब वह निर्धारित स्थान पर पहुँचा तो उसने हाथ घुमा कर वह डिस्कस आकाश में फेंक दिया। चारों ओर शोर मच गया। लोग खुशी से उसकी जीत पर उछलने लगे। उसका फेंका हुआ डिस्कस सभी से बहुत आगे निकल गया था।

परन्तु उसी समय मैदान के एक ओर एक भयानक चीत्कार हुई और साथ ही एक व्यक्ति पृथ्वी पर गिर गया। उसके सिर में वह डिस्कस जाकर बड़ी जोर से लग गया था जिससे उसका सिर फट गया था और रक्त अजस्र धाराओं से बह रहा था।

पर्सियस भाग कर वहाँ गया और उस मरते हुए मनुष्य पर भुक गया। डैनी भी वहाँ आ पहुँची थी। उसको देखकर वह घायल व्यक्ति एक बार तड़पा और धीमे स्वर से बोला :

"डैनी ! मेरी प्यारी पुत्री डैनी ! मैं तेरा अभागा पिता एक्रिसिअस हूँ. . . .यह तेरे साथ कौन है ?"

डैनी यह सुनकर दौड़ी उससे लिपट कर रोने लगी। तत्पश्चात् बोली :

"हे पिता ! यह तुमने क्या किया ? हाय ! इस शुभ घड़ी में तुम हमें फिर छोड़कर जा रहे हो. . . .यह मेरा पुत्र पर्सियस है और वह सुंदरी एंड्रोमेडा इसकी स्त्री है. . . ."

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"तब तो ठीक है...." एक्रिसिअस्र बोला, "देवताओं का कथन सच हो गया है। तेरे पुत्र द्वारा ही मैं मर रहा हूँ....परन्तु मैं उससे अब नाराज़ नहीं हूँ....मुझे मरना ही चाहिये। मुझे क्षमा करो क्योंकि मेरी मूर्खता के कारण तुम्हें बहुत दुख उठाने पड़े हैं....बिदा...."

इतना कह कर वह मर गया। दुखी हृदय से डैनी अपने पुत्र और पुत्रवधू को लेकर अर्गोस वापस चली आई।

तत्पश्चात् पर्सिअस सुखपूर्वक राज्य करने लगा। हर्मीस और एथेना उसकी हमेशा सहायता किया करते थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वृद्ध की पत्नी फ़ीड्रा

जब हर्क्युलीस पागल हो गया और उसने अपनी स्त्री और बच्चों को मार डाला तो उसके सभी साथी उसे छोड़ कर भाग गये। परन्तु जब उसका पागलपन ठीक हो गया और जब उसे अपने किये पर पश्चात्ताप होने लगा तो थीसियस को उस पर बड़ी दया आई। उसके किसी साथी ने उस समय भी उसका साथ नहीं दिया। उन लोगों ने हर्क्युलीस का मुंह देखना भी ठीक नहीं समझा क्योंकि ऐसे पापी का मुंह देख कर वह कलुषित नहीं होना चाहते थे। थीसियस ने अकेले ही उसका साथ दिया और जब वह दुख से आत्महत्या करने पर तुल गया तो उसी ने उसे ऐसा करने से मना किया और कहा कि आत्महत्या करना महापाप है। वही उसे अपने साथ एथेन्स ले गया और उसे सांत्वना दी।

राज्य की और सेना की अनेकानेक जिम्मेदारियों के साथ-साथ थीसियस सदा अनाथों, असहायों की रक्षा का पूरा ध्यान रखता था। उसी प्रकार दुष्टों का दमन करके उन्हें दंड देने में भी तत्पर रहा करता था। उसमें यह खास बात थी कि कभी खतरा समझकर या उससे डरकर उसने न्याय का पथ नहीं छोड़ा। भ्रमण का शौक उसका सदा बना रहा और उसे भी उसने खतरे से डर कर नहीं छोड़ा। उन्हीं दिनों एमेज़ौन में स्त्रियों का अखंड राज्य था। वहाँ स्त्रियाँ बहुत ही कठोर और नृशंस थीं और युद्धविद्या में निपुण थीं। उनसे आसपास के सभी लोग डरते थे। थीसियस ने अकेले ही उस देश में जाकर उनकी रानी को पकड़ लिया और उसे अपने साथ ले आया। तत्पश्चात् उसे उसने एट्टिका में ले जाकर रखा। एट्टिका महानगर एथेन्स के पास ही एक उपनगर था। थीसियस उस स्त्री के साथ कुछ दिन रहा और उससे उसका एक पुत्र उत्पन्न हुआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस स्त्री का नाम एन्टिओप था जो हिप्पोलिटा के नाम से भी प्रसिद्ध थी। रूपवती तो वह बहुत थी परन्तु एक बलवान देश की रानी होने के नाते मदान्ध और अहंकारी भी थी। उसका पुत्र बड़ा सुंदर और बलिष्ठ था जिसका नाम हिप्पोलिटस था। एमेज़ौन की स्त्रियों ने अपनी रानी को एट्टिका से छुड़ाने के लिये चढ़ाई भी की थी और तब वह पास ही स्थित एथेन्स में भी घुसकर उत्पात मचाने लगी थीं। परन्तु थीसियस ने उन्हें मार कर भगा दिया। उसने उन्हें समझाया भी कि अब हिप्पोलिटा का पुत्र उत्पन्न हो चुका है, अतएव उसका वापस जाना न्याययुक्त नहीं है। परन्तु जब वे न मानीं और मारकाट करने लगीं तो मजबूरन उन्हें युद्ध में पराजित करके भगा दिया। तत्पश्चात् जब तक वह जीवित रहा एथेन्स की ओर आँख उठाकर देखने का भी साहस कभी किसी को नहीं हुआ।

थीसियस ने अपने जीवन में अनेक भयंकर यात्रायें कीं। सुनहली रंग-भूमि को ढूँढ़ने के लिये आर्गो जाने वालों में उसका नाम भी खास है। जब कैलिडौन देश के राजा ने सारे ग्रीस में एलान करके वीर पुरुषों को एक भयानक बनैले सुअर को मारने के लिये आमंत्रित किया था तब वही अकेला एक बहादुर था जो उसके यहाँ शिकार को गया। वह सुअर कैलिडौन देश के हरे-भरे खेतों को तबाह किये दे रहा था और वहाँ किसी के मारे नहीं मरता था। थीसियस ने अकेले ही घोर बन में जाकर उस भयानक पशु को मार कर कैलिडौन के राजा और निवासियों को त्राण दिया था। उसकी बहादुरी और उदारता से सभी लोग अत्यंत मुग्ध थे क्योंकि सुअर को मार कर वह अपनी बड़ाई और प्रशंसा सुनने के लिये वन से कैलिडौन लौटा भी नहीं था। उसने ऐसा आदर्श दिखा कर उन सभी लोगों के दिलों को जीत लिया था।

उसने शिकार में अपने मित्र पिरीथौअस को कई बार मृत्यु के मुँह में जाते-जाते बचाया था। पिरीथौअस स्वयं अत्यंत साहसी और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बलवान था परन्तु वह कभी थीसियस की भाँति जीवन में सफल नहीं हो पाया। इसीलिए वह सदैव एक न एक मुसीबत में फँसा रहता था और थीसियस उसका भक्त था और हमेशा उसकी मदद किया करता था।

पिरीथौअस और थीसियस की मित्रता भी विचित्र तरीके से हुई थी। पिरीथौअस ने एक दिन थीसियस की प्रशंसा सुनकर निश्चय किया कि वह उससे ज़रूर मुकाबला करेगा। वह स्वयं अपने आप को प्रचंड योद्धा और साहसी वीर समझता था। वह भेष बदल कर एट्टिका पहुँचा और वहाँ से मौका देखकर थीसियस की कुछ मवेशी लेकर नगर के बाहर भागा। जब थीसियस को यह बात मालूम हुई तो उसने उसका पीछा किया और शीघ्र ही जाकर उसे पकड़ लिया। पिरीथौअस यही तो चाहता था। आगे भागना बंद करके वह पलट पड़ा और थीसियस से मुकाबले के लिये तैयार हो गया। थीसियस तलवार लेकर उसके सामने आया। परन्तु उसे देखते ही भावुक हृदय पिरीथौअस लड़ना बिल्कुल भूल गया और उसके रूप और तेज पर आसक्त होकर खाली हाथ उसकी ओर बढ़ कर चिल्लाया :

"हे थीसियस ! तू जो चाहे अब दंड मुझे दे....मैं तेरे हाथ से मरने के लिये भी तैयार हूँ....अब तू ही मेरा न्याय कर और मैं उसे सहर्ष मानूँगा," और वह उसे प्रशंसा भरे नेत्रों से देखने लगा।

थीसियस यह सुनकर बहुत खुश हुआ और दोनों हाथ फैलाकर उसकी ओर बढ़ा और उससे लिपट गया। तत्पश्चात् बोला :

"आह ! मेरे दोस्त ! मैं तुझे अपना सच्चा दोस्त बनाना चाहता हूँ ...भला तुझे मैं दंड किस प्रकार दे सकता हूँ ?"

और तब दोनों मित्रों ने अपना रक्त मिलाकर आजन्म मित्रता की शपथ ली थी। पिरीथौअस ने जब विवाह किया था तो थीसियस मेहमानों में मौजूद था। पिरीथौअस जो लैपिथी राज्य का राजा था अपनी सेना सहित शादी की दावत खा रहा था। उसकी स्त्री के दूर के कुछ रिश्तेदार लोग भी इस शादी में आये हुए थे। वे लोग सिन्टौरस् कहलाते थे और बड़े

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भयंकर तथा प्रचंड बली थे। उनका ऊपर का आधा शरीर बलिष्ठ मनुष्यों जैसा और नीचे का आधा शरीर पुष्ट घोड़ों जैसा था। वे लोग अनगिनती थे और दावत में शरीक होने आये थे। थोड़ी ही देर बाद उन घोड़ों ने अत्यधिक शराब पीनी शुरू कर दी और ऊटपटाँग बकने लगे। जब बहुत ज्यादा पी गये और उन्हें तेज नशा चढ़ा तो वे सब पागल हो गये और सारी सभ्यता को छोड़कर औरतों को पकड़ कर उन पर बलात्कार करने का प्रयत्न करने लगे। उस समय बिल्कुल बर्बरों की भाँति व्यवहार करने लगे। स्त्रियाँ चिल्लाने लगीं और उनकी चीत्कारों से महल गूँजने लगा। उनके सरदार अर्ध-मनुष्य घोड़े ने सब कुछ भूल कर दुलहिन पर ही हाथ मारा . . . तब थीसियस ने बड़ी बहादुरी से तलवार निकाल कर उसका मुकाबला किया। पिरीथौअस अपने सैनिकों सहित उन पर टूट पड़ा और उनसे घोर युद्ध करके उनको मारने लगा। तत्पश्चात् वह तो अपनी रानी के पास महल ही में रह गया परन्तु थीसियस उन्हें भगाता हुआ राज्य की सीमा से बाहर निकाल कर ही आया। इसी की वीरता और अदम्य साहस से पिरीथौअस पर आई हुई उस विपत्ति को टाला जा सका था।

आखिरी बार पिरीथौअस और थीसियस दोनों नीचे की दुनिया में गये परन्तु वहाँ जाकर जब पिरीथौअस फँस गया तो थीसियस उसे निकाल कर बाहर नहीं ला सका। ऐसा हुआ कि कुछ वर्षों बाद जब राजा पिरीथौअस की वह स्त्री मर गई तो उसने अब की बार एक अत्यंत सुंदर और पवित्र आजन्म कुमारी से विवाह करना चाहा। इसके लिये उसने खास पर्सिफोन देवी को ही चुना और इस विचार से वह तनिक भी नहीं डरा कि भला मर्त्यलोक का मानव होकर एक अमर देवी से वह किस प्रकार विवाह कर सकता था। उसने थीसियस से कहा :

"हे मित्र ! मैं जो खुद पर्सिफ़ोन से ही विवाह करने का निश्चय कर चुका हूँ तो क्या तुम मुझे मदद नहीं दोगे ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"क्यों नहीं दूँगा....मैं तुम्हारे साथ उसे लाने नीचे की दुनिया अवश्य जाऊँगा....", थीसियस ने तुरंत छाती पर हाथ रख कर उसे विश्वास दिलाया। तत्पश्चात् ऐसी भावनाओं से प्रेरित होकर उसके अपने मन में भी प्रेम के क्षेत्र में बड़ा काम करने की सूझी। उसने निश्चय किया कि पिरीथौअस की मदद के लिये नीचे की दुनिया में जाने से पहिले वह स्वयं अपने लिये कहीं से हर कर एक सुंदरी लायेगा। वह पिरीथौअस से बोला:

"हे मित्र मैं परम सुंदरी हैलेन को उड़ाकर लाने जा रहा हूँ। वह अभी बच्ची ही है परन्तु जब वह बड़ी होगी तब निश्चय ही उसके समान सारे संसार में कोई सुंदरी नहीं होगी। उस समय मैं ही उससे विवाह कर लूँगा।"

दूसरे ही दिन जाकर वह हैलेन को उड़ा लाया। उसको उस समय मालूम नहीं था कि यही हैलेन आगे चलकर 'ट्रोजन युद्ध' का कारण बनेगी। उसे घर ले आकर वह बहुत खुश था और तब वह उसे वहीं छोड़ कर पिरीथौअस को साथ लेकर उसके लिये पर्सिफ़ोन को लाने के लिये नीचे की दुनिया की ओर चला गया।

हैलेन के भाइयों का नाम कैस्टर और पोलक्स था जिनसे कोई मानव जीत ही नहीं सकता था। उन्हें जब थीसियस की इस हरकत का पता लगा तो वह उस पर चढ़ आये और अपनी बहिन को वापस ले गये। इत्तिफ़ाक से थीसियस उस समय वहाँ मौजूद नहीं था वरना जाने कितना खून खराबा होता। हैलेन वापस चली गई।

जब पिरीथौअस सहित थीसियस नीचे की दुनिया हेडिस में पहुँचा तो वहाँ का राजा जो उनके सारे इरादे जानता था उन्हें देखकर मन ही मन बहुत क्रुद्ध हुआ। परन्तु उसने प्रत्यक्ष में उनसे कुछ नहीं कहा। उसने उन्हें मारा भी नहीं हालाँकि हेडिस में उसे मारने का पूर्ण अधिकार था। जब वह उसके पास पहुँचे तो उसने हँसकर उनका कृत्रिम रूप से स्वागत किया और पास ही पड़ी हुई एक चौकी पर बैठने का इशारा किया। पिरीथौअस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और थीसियस दोनों उसके व्यवहार से बहुत खुश हुए और उस चौकी पर बैठ गये। वह चौकी याद भुलाने वाली चौकी थी जिस पर बैठ कर किसी को कुछ भी याद नहीं रहता था। बैठने वाला शून्य दृष्टि से देखने लगता था और उसके मस्तिष्क में कोई ख्याल या विचार उठता ही न था। दोनों मित्र उस पर बैठ कर एकदम से निश्चेष्ट होकर बैठे रह गये और उनका हिलना-डुलना भी बंद हो गया। सुंदरी देवी पर्सिफ़ोन को उड़ाकर लाने वाली सब बातें वे भूल गये।

बहुत बाद में जब थीसियस का मित्र जगत्-प्रसिद्ध हर्क्युलीस हेडिस में वहाँ के राजा से लड़ने के लिये गया था तो उसने उसे उस चौकी से बलपूर्वक उठाकर एक बार फिर उसकी प्रज्ञा वापस कर दी थी। अपनी संज्ञा को वापस पाकर वह सीधा पृथ्वी पर आ गया था परन्तु अबकी बार वह अपने दोस्त पिरीथौअस को अपने साथ वापस नहीं ला सका। वह तो क्या स्वयं महाबली हर्क्युलीस भी उसे नहीं उठा सका। मृत्यु के राजा ने उसे कसकर पकड़ लिया था क्योंकि उसे पूर्ण विश्वास हो चुका था कि देवी पर्सिफ़ोन को उड़ाकर ले जाने की योजना उसी ने बनाई थी। वह उससे बहुत क्रुद्ध था।

अपनी पहिली एमेज़ौन स्त्री के मरने के बाद थीसियस अपने युवा पुत्र हिप्पोलिटस के साथ रहता था। बहुत दिनों तक उसने उसे दक्षिण दिशा में स्थित एक छोटे से नगर में रखकर पाला था जहाँ छुटपन में वह स्वयं रहा था। यह लड़का जब जवान हुआ तो गज़ब का खिलाड़ी और शिकारी बना। उसका शरीर अत्यंत सुगठित और सुंदर था। वह बड़ा मेहनती था और आराम से रहने वालों से वह घृणा किया करता था। जो लोग प्रेम किया करते थे और कोमल शरीर वाले थे उन्हें तो वह पल भर भी सहन नहीं करता था। स्त्रियों से उसे आंतरिक घृणा थी, वह उनकी सूरत से ही नफ़रत करता था। जब थीसियस को उसकी इन विचित्र आदतों के बारे में पता चला तो वह मन ही मन बहुत खुश हुआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थोड़े दिन बाद थीसियस ने दूसरा विवाह किया। फ़ीड्रा उसकी इस स्त्री का नाम था और वह अत्यंत सुंदरी थी। उस समय वह बिल्कुल जवान थी और थीसियस अब वृद्ध हो चुका था। पिता और पुत्र का प्रेम बहुत प्रगाढ़ था और वह स्त्री अपने पति से धीरे-धीरे घृणा करने लगी। उसके हृदय में हिप्पोलिटस के प्रति प्रेम हो गया था और वह उसके साथ आनंद से समय काटना चाहती थी। परन्तु एक वह था जो कभी फ़ीड्रा की ओर आँख उठा कर देखना भी बुरा समझता था। फ़ीड्रा अपने सौतेले पुत्र के प्रेम में पड़ जाने से स्वयं लज्जित थी परन्तु वह विवश थी। न जाने क्यों वह ऐसी पागल हो गई थी। उसकी असलियत यह थी कि सुंदरता की देवी एफ्रोडाईट हिप्पोलिटस से बहुत ही अधिक क्रोधित थी क्योंकि वह स्त्रियों के प्रति घृणा और तिरस्कार की भावनायें रखता था। उसने उसे उसके ऐसे व्यवहार से रुष्ट होकर उसे कठोर दंड देने की सोची। इसीलिये उसने उसकी विमाता के हृदय में ऐसा निंदित प्रेम भर दिया था।

थीसियस कुछ दिनों के लिये घर से बाहर गया हुआ था। उस समय अकेला पाकर फ़ीड्रा ने हर तरह से हिप्पोलिटस को अपने जाल में फँसाना चाहा परन्तु उस पर तो जैसे जूँ भी नहीं रेंगी। आखिर फ़ीड्रा ने निराश होकर आत्महत्या करने का निश्चय किया क्योंकि वह उसके विरह को सहन नहीं कर पा रही थी।

उसकी एक बूढ़ी दाई थी जो उसकी सेवा किया करती थी। उसने जो अपनी स्वामिनी को इस प्रकार प्रेम के कारण मरते देखा तो वह सीधी हिप्पोलिटस के पास पहुँची। वह फ़ीड्रा की सारी बातें जानती थी। उससे उसका कुछ भी छिपा नहीं था। वह बोली :

"हे नवयुवक! क्या तुम्हारे सीने में हृदय नहीं है? क्या तुम स्त्री के अपरूप और यौवन और सुंदरता को देखकर भी उस पर मोहित नहीं होते? तुम्हारे जैसे सुंदर युवक को तो स्त्री की प्रेम पुकार कर प्रतिकार अवश्य देना चाहिये. . . .वह देखो फ़ीड्रा तुम्हारे लिये मर रही है। वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुमसे अगाध प्रेम करती है। उठो और उसे जीवनदान दो। वीर पुरुष स्त्री के प्रेम का उत्तर अपना प्रेम देकर करते हैं।"

हिप्पोलिटस सुनकर घृणा और क्रोध से काँपने लग गया। प्रथम तो वह स्त्री के प्रेम से ही नफ़रत करता था और यह प्रेम जो कलंकित और पापमय था इससे तो उसकी घृणा और भी बढ़ गई। उसका मुख क्रोध से लाल हो गया और उसने पृथ्वी पर नफ़रत से थूक दिया। फिर वह एकदम उठा और झपटकर मकान के बाहर आँगन में आ गया। बूढ़ी दाई भी उसके पीछे-पीछे समझाती हुई बाहर आ गई। वहीं एक ओर फ़ीड्रा बैठी थी परन्तु हिप्पोलिटस ने उसकी ओर देखा तक नहीं। बूढ़ी औरत को पीछे आते देखकर वह आग बबूला हो गया और तब वह चिल्लाया :

"नीच बुढ़िया! मेरे सामने से हट जा। तू और तेरी स्वामिनी मुझे अपने पिता के साथ ही विश्वासघात करना सिखा रही हैं। इस तरह के गंदे शब्दों को सुनकर ही मेरे शरीर से दुर्गंध आने लगी है। मुझे उलटी आ रही है....ओ बदजात औरतों! तुम सब ही नीच हो....मैं तुमसे अंतरआत्मा से घृणा करता हूँ....मैं जा रहा हूँ और इस घर में तब तक वापस नहीं आऊँगा जब तक कि मेरा पिता वापस नहीं आ जाता।"

इतना कहकर वह भन्नाता हुआ घर छोड़ कर चला गया। अब जो बूढ़ी दाई ने फ़ीड्रा के मुख की ओर देखा तो वह डर गई। भयानक निराशा और अपमान के कारण उसका मुख सफेद हो गया था। उसे देख कर उस समय उसे जीवित नहीं कहा जा सकता था। बुढ़िया उसके पास आई और प्यार भरे स्वर से बोली :

"स्वामिनी इतनी निराश न हों....मैं अब भी साहस रखती हूँ। विश्वास रखो कि मैं तुम्हारे हेतु फिर एक बार उसे समझा कर किसी न किसी भाँति तुम्हारे पास लाऊँगी ही...."

परन्तु फ़ीड्रा तब तक घर के अंदर जा चुकी थी। वह वहीं से मृत्यु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के घुटे हुए स्वर से बोली :

"मूर्ख बुढ़िया चुप रह और अपना काम देख। अपना काम मैं स्वयं जानती हूँ और अब स्वयं ही उसे पूरा कर लूँगी।" उसने अंदर से द्वार बंद कर लिये। बुढ़िया वहीं बाहर बैठी रही।

थोड़ी ही देर बाद बाहर कई आदमियों के बोलने का शब्द सुनाई दिया और शीघ्र ही थीसियस अपने सेवकों सहित अपने घर वापस आ गया। उसे देखकर बुढ़िया रो पड़ी। दरवाजा अंदर से बंद था। थीसियस ने बुढ़िया से बंद होने का कारण पूछा तो वह बोली :

"स्वामिनी मर चुकी है....वह अंदर है...."

सुनते ही घबराकर थीसियस ने दरवाजा तोड़ डाला और अंदर घुस गया। उसने देखा सामने ही पृथ्वी पर उसकी स्त्री फ़ीड्रा मरी पड़ी है। उसने आत्महत्या कर ली थी। उसने उसे झुककर चूम लिया और तभी उसने देखा फ़ीड्रा के हाथों में एक पत्र रखा है। उसने उसे उठा लिया और बोला :

"हे प्रिये! यह तुम्हारा आखिरी पत्र है....आह मैं तुम्हारी आखिरी इच्छाएँ भी पूरी नहीं कर सका! अब तुम भला कैसे मेरी ओर मुस्कराओगी? तुम तो मर चुकी हो...."

तत्पश्चात् उसने वह पत्र पढ़ा और पढ़ते ही उसका सिर चकरा गया। वह क्रोध से लाल हो उठा। वह उठा और बाहर आँगन में आकर नौकरों के सामने चिल्लाया :

"यह पत्र बोल रहा है! यह मेरी पत्नी की आवाज़ है! सुनो इसमें लिखा है कि मेरे दुष्ट पुत्र हिप्पोलिटस ने मेरी पत्नी पर बुरी नियत से आक्रमण किया था....हे पौसीडौन! तुम पराक्रमी देवता हो! मेरी पुकार सुनो....यह दुष्ट हिप्पोलिटस भी शीघ्र ही मर जाय....वह बुरी मौत मरे....घायल होकर मरे....तकलीफ़ पाये....तुम मेरे इस शाप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को दैवी प्रभाव से सच कर दो ।"

सारे आँगन में मौत की भाँति सन्नाटा छा गया। पर उसी समय उस सन्नाटे को तोड़ता हुआ तेज़ कदमों से हिप्पोलिटस आ पहुँचा । आँगन में वह घुस गया और वहाँ पिता को रोते देखकर वह चिल्लाकर बोला :

"क्या हुआ....क्या हुआ ? मुझे शीघ्र बतलाओ....वह कैसे मर गई....हे पिता ! तुम स्वयं मुझे सब बातें बताओ....मुझसे अपना दुख मत छिपाओ....मैं तो तुम्हारा प्यारा पुत्र हूँ ।"

"ठीक कहते हो....", व्यंग से उसके पिता ने उत्तेजित स्वर में कहा : "प्रेम को नापने के लिये कोई डंडा होना चाहिये क्योंकि बिना उसके वह नापा भी कैसे जाय....कैसे पता चले कि कौन सच्चा और कौन झूठा है....तुम जो मेरे पुत्र हो....तुम्हें अपना पुत्र कहते हुए मुझे शर्म आती है....देखो यह पत्र....इसमें तुम्हारी असलियत लिखी है। जिसे मैं अब तक चमकता हुआ सोना समझता था वही पीतल निकला... अफ़सोस....तुमने अपनी विमाता को बुरी नीयत से छेड़ा जिससे वह तो शर्म से मर गई परन्तु तुम बेशर्म अब तक जीवित हो....अब तुम सफ़ाई देने की व्यर्थ कोशिश मत करो....जाओ निकल जाओ मेरी आँखों के सामने से....मैं तुम्हें इसी क्षण देश निकाला देता हूँ....जाओ तुम्हारा नाश हो ।"

हिप्पोलिटस उसकी बातें सुनकर सारी परिस्थिति को समझ गया। वह गंभीर स्वर से बोला :

"हे पिता ! मैं वाक्-चतुर मनुष्य नहीं हूँ और न मेरे पास कोई गवाह ही सफ़ाई देने के लिये है । जो एक उस समय थी वह अब मर चुकी है ....शायद वह जीवित रहती तो इस समय मुझसे आँख मिलाकर झूठ न कह सकती....अब तो मैं सबसे बड़ी सौगन्ध और वह भी स्वयं ज़िअस की सौगन्ध खाकर कह सकता हूँ कि मैंने तुम्हारी स्त्री को छूना तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्या कभी आँख उठाकर देखा भी न था, उसके बारे में सोचा भी न था ....यदि मैं झूठ बोल रहा होऊँ तो देवता लोग मुझे बुरी मौत मारें.."

"खामोश...." थीसियस चिल्लाया, "अब झूठ बोलकर बचना चाहते हो ? उस बेचारी ने मर कर तो सारी बातों की सच्चाई सिद्ध कर दी है...जाओ तुम्हें देश निकाला दिया जाता है...जाओ...निकल जाओ।"

हिप्पोलिटस के पास अब सिवा चले जाने के और कोई चारा ही न था। उसके हृदय में क्षोभ के कारण अत्यंत दुख था क्योंकि वह इतना निर्दोष होते हुए भी उसके पिता ने, उस दुष्टा स्त्री के मृत्यु के समय भी झूठ लिखने के कारण, उसे दोषी ठहराया था। सिर झुका कर वह वहाँ से चल दिया। शीघ्र ही वह रथ पर चढ़कर घोड़े भगाता हुआ चला जा रहा था।

घर से बहुत दूर जब वह समुद्र के किनारे-किनारे चला जा रहा था तभी एकाएक समुद्र में से एक बहुत ही भयानक जीव पानी में खलबली मचाता हुआ तट की ओर आया। घोड़े उस समय मुड़ी हुई सड़क पर बिल्कुल उसके करीब आ गये थे। उस भयंकर जीव को देख कर वह बुरी तरह विचके और भागे। भय ने उनके पैरों में मानो पंख लगा दिये थे—वह वायुवेग से पथ छोड़कर गड्ढे और टीलों को पार करते हुए जी-जान छोड़कर भाग चले। हिप्पोलिटस न उन्हें बहुत रोकना चाहा पर वे नहीं रुके। सारा रथ टूट गया और पहिये निकल कर अलग गिर पड़े। उसी समय एक बड़े से टीले के नीचे वह घोड़े कूदे और हिप्पोलिटस दूर जा गिरा। उसका अङ्ग क्षत-विक्षत हो गया। वह बुरी तरह घायल हो गया और रक्त की बहती हुई धाराओं से भींग गया। उससे उठा भी नहीं गया। कमजोरी से उसकी आँखें बंद हो गईं और वह बेहोश हो गया।

उसी समय अपने घर में अकेले बैठे हुए थीसियस का हृदय जोर से धड़क उठा। उसने घबराकर चारों ओर देखा। फिर सिर उठाया और ऊपर देखा। सामने ही अर्टमिस देवी खड़ी थी। उसके दिव्य प्रकाश से प्रकोष्ठ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जगमगा रहा था। वह बोली :

"तेरा पुत्र मृत्युशैया पर पड़ा है....तूने उसे मरने का शाप दिया था। वह पूरा हो गया है....तेरा पुत्र निर्दोष था....तेरी स्त्री पापिनी थी और वही उससे अनुचित संबंध करना चाहती थी....जब उसने फ़ीड्रा को फटकार दिया तो वह अत्यंत रुष्ट हुई और विरह में स्वयं तो मरी, पर उसे भी अपने झूठ से मार गई....उसने जो पत्र लिखा था....वह सब झूठ था....मैं तेरे पास यह दुखद संदेश लाई हूँ।"

थीसियस ने यह सुनकर अपना माथा पीट लिया। वायुवेग से उड़ने वाले अश्वों को रथ में जुड़वा कर उसने रथ रवाना किया जो जाकर घायल हिप्पोलिटस को ले आये। उस समय वह मरणासन्न हो चुका था। उसकी आखिरी साँसें चल रही थीं। वह आते ही बोला :

"हे युद्धभूमि की देवी अर्टेमिस ! मैं तो निर्दोष था ! फिर मुझे ऐसा दंड क्यों ? हे देवताओं ! यह कैसा अन्याय हो रहा है !!" तत्पश्चात् उसने फिर एक बार अर्टेमिस को पुकारा और कहा :

"हे अर्टेमिस ! देखो तुम्हारा शिकारी मर रहा है !!!"

"तेरे सिवा और कोई मानव मुझे प्यारा नहीं है....यह तू सच मान," अर्टेमिस ने उत्तर दिया और तब उसने उस पर प्यार से हाथ फेरा।

उसी समय थीसियस दुखी हृदय से वहाँ आया और अपने पुत्र की ऐसी दशा देखकर रोने लगा। उसे देखकर हिप्पोलिटस प्राणपण से चिल्ला उठा :

"हे पिता ! यह तुम्हारा दोष नहीं था जो मुझे निकाल दिया ! यह तो देवी अर्टेमिस और अफ्रोडाईट की ही इच्छा थी कि सारी कथा का अंत इसी प्रकार हो....तुम इतने दुखी मत हो।"

थीसियस यह सुनकर जोर से रो पड़ा और बोला :

"काश ! तेरी जगह मैं मर सकता !!"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसी समय धीर, गंभीर और मधुर स्त्री कंठ सुनाई दिया। अर्टमिस फिर प्रकट हुई थी। वह थीसियस से बोली :

"थीसियस ! अपने पुत्र को अपनी भुजाओं में भर लो। तूने उसे नहीं मारा है....इस तरह दुख न कर। उसे तो एफ्रोडाईट ने मारा है क्योंकि वह सुंदरता से घृणा करता था। स्त्री के लावण्य और सौंदर्य से वह कभी प्रभावित नहीं हुआ। वह सदा उन्हें दुतकारता ही रहा। इसीलिए एफ्रोडाईट ने उसे दंड दिया है। उसी ने इसे इस प्रकार मरवाने के लिये फ़ीड्रा के हृदय में ऐसा दूषित प्रेम भर दिया था....अब उठ और इसका संस्कार कर। हिप्पोलिटस को संसार में मनुष्य कभी नहीं भूल सकेंगे। हज़ारों साल तक उसकी कथाएँ और गाथायें गाई जायँगीं...।"

इतना कहकर वह अंतर्धान हो गई थी। थीसियस ने अपने पुत्र की ओर देखा परन्तु वह भी मर चुका था—थीसियस उसके सीने पर सिर रख कर रो उठा।

थीसियस तत्पश्चात् अकेला ही दुखपूर्वक दिन काटने लगा। कुछ वर्षों बाद वह एक दिन अपने एक पुराने मित्र लाईकोमिडीस के यहाँ गया और फिर वहीं रहने लगा। यह भी कहा जाता है कि जिस एथेंस के लिये इतना सब कुछ किया और अपना राज्य तक त्याग दिया उन्हीं एथीनियन लोगों ने उसे वृद्धावस्था में राज्य से बाहर निकलवा दिया था और तभी वह राजा लाईकोमिडीस के यहाँ शरणागत बन कर रहने लगा था।

परन्तु यहाँ भी वह सुखपूर्वक न रह सका। एक दिन उसी राजा लाईको-मिडीस ने अधिकार में मदांध होकर उसे मरवा डाला।

उसकी मृत्यु के पश्चात् एथेंस के लोगों ने अपनी गलती महसूस की और उसके लिये आँसू बहाने लगे। उन्होंने उसकी एक बड़ी जबर्दस्त कब्र बनवायी और उसको इतने आदर के भाव से पूजने लगे जैसे वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी कोई देवता ही था। दासों, असहायों और निर्धनों का तो वह असली मददगार था और वही उसे सबसे अधिक प्यार करते थे और मानते थे।

इस प्रकार थीसियस ने अपने जीवन में महान् कार्य करने के उपरांत स्वर्ग में जाकर शांति पाई। संसार में आज भी उसका नाम प्रसिद्ध है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थीसियस और बैल

प्राचीन महानगर एथेन्स के पराक्रमी योद्धा थीसियस का नाम ग्रीस के इतिहास में प्रसिद्ध है। वह अपने समय में अत्यंत साहसी पुरुष था जिसने अनेकानेक यात्राएँ कीं और जिसका जीवन वीरता की बातों से परिपूर्ण था। बाद में उसके नाम के बारे में यहाँ तक कहा जाने लगा कि बिना थीसियस के एथेन्स में कुछ भी नहीं है—जो कुछ है बस वही है।

एथेन्स के राजा ईगियस का वह पुत्र था। जब थीसियस गर्भ में ही था तो उसका पिता उसकी माता को उसके पिता के यहाँ ग्रीस के दक्षिण में स्थित एक शहर में छोड़ गया था। थीसियस अपने नाना के यहाँ वहीं पैदा हुआ, पला और बड़ा हुआ। जाने से पहिले ईगियस ने एक पोली जगह में एक तलवार और एक जोड़ी जूते रखकर उन्हें एक भारी चट्टान से ढँक दिया। उसने यह काम अपने स्त्री के सामने ही किया और उससे कहा :

"प्रिये ! यदि तुम्हारे गर्भ से पुत्र उत्पन्न हो, जिसकी कि मुझे पूर्ण आशा है, तो तुम उसे मुझसे छिपाकर पालना और बड़ा करना। उसे तब तक यह न बताना कि वह मेरा बेटा है, जब तक कि वह अपने पराक्रम से इस चट्टान को उठाकर अंदर से यह तलवार और जूते जोड़ी न निकाल ले। यदि वह इस कार्य में सफलता प्राप्त कर ले तब उसे एथेन्स मेरे पास भेज देना. . . .मैं उसे तब अपना लूँगा और उसे अपना उत्तराधिकारी घोषित करूँगा।"

जब थीसियस बड़ा हुआ तो वह बहुत पराक्रमी और बलवान बना। उसकी माता उसके रूप को देखकर बहुत खुश हुई और तब वह उसे उस स्थान पर ले गई जहाँ उसकी परीक्षा ली जानी थी। थीसियस ने हल्के हाथों से उस भारी चट्टान को उठाकर एक तरफ रख दिया और नीचे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से जूते निकाल कर पहन लिये। वह उसके बिल्कुल ठीक आये। तलवार उठाकर उसने अपने कमर में खोंस ली और हँसकर अपनी माता से बोला :

"क्या इसी चट्टान् को उठाने के लिये तुम मुझसे कह रही थीं? यह तो बहुत हल्की है...."

उसकी माता उसका यह उत्तर सुनकर बहुत खुश हुई और उसने जाकर अपने पिता से सारा वृत्तांत कह सुनाया। वह भी सुनकर बहुत खुश हुआ। तब उन लोगों ने उससे एथेन्स अपने पिता के पास जाने को कहा।

थीसियस जब चलने को उद्यत हुआ तो उसके नाना ने उसके लिये एक जहाज तैयार कराया। वह बोला :

"हे थीसियस! अब तुम इस जहाज को लेकर अपने बाप के पास जाओ....पानी का मार्ग ही अति उत्तम है क्योंकि इसमें तुम्हें कोई दिक्कत या परेशानी नहीं होगी—जमीन के रास्ते से जाना सचमुच ही बहुत खतरनाक है, इसलिए तुम्हारे लिये यही उचित है कि जलमार्ग को ही अपनाओ।"

थीसियस यह सुनकर बहुत नाखुश हुआ क्योंकि यह तो उसका अपमान था। वह अत्यंत वीर और महाबली पुरुष भला आसान रास्ते से जाय? थल के मार्ग को केवल कठिनाइयों और शत्रुओं के डर से छोड़ दे?.... उसने अपने नाना और माता से जलमार्ग द्वारा जाने से साफ इंकार कर दिया। वह बोला :

"मैं इस प्रकार आसान रास्ते से जाकर अपनी तौहीन कराने को तैयार नहीं हूँ....मैं बहादुर हूँ। मैं बहादुरों की भाँति ही अपने पिता से मिलने जाऊँगा। तुम लोग मुझे जलमार्ग से जाने को मजबूर न करो...."

तत्पश्चात् वह विपत्तियों से भरे मार्ग से होता हुआ एथेन्स की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ओर चला। उसने घोड़े की सवारी भी ठीक नहीं समझी और वह पैदल ही चला। मार्ग बहुत चक्करदार और बहुत लंबा था। उसमें डाकुओं के गिरोह के गिरोह यात्रियों को लूट लेते थे और उन्हें मार भी डालते थे। थीसियस को जब वे मिले तो उसने उन्हें पकड़ लिया और कठोर दंड दिया। परन्तु इससे वे लोग नहीं दबे। निरंतर हमले करते हुए उनका अत्याचार जारी रहा। थीसियस यह देखकर गुस्से से लाल-पीला हो उठा। तब उसने उन्हें पकड़-पकड़ कर मारना शुरू किया। अब वह उन डाकुओं के पीछे ऐसा पड़ा कि वे लोग घबराकर भागने लगे परन्तु थीसियस की तलवार से बचकर निकलना उनके लिये असंभव हो गया। उसने उन सभी को गिन-गिन कर मार डाला और मार्ग हमेशा के लिये साफ़ कर दिया। फिर कभी उस मार्ग में डाकू लोग यात्रियों को नहीं मिलते थे। उसने उन्हें नेस्तोनाबूद कर दिया।

अब थीसियस ने दुष्टों को दंड देने का आसान तरीका अपना लिया। जो जिस प्रकार औरों के साथ वर्ताव करते थे वैसा ही वर्ताव उसने उनके साथ करना शुरू कर दिया। सिरौन नामक एक दानव उसे मिला। वह बड़ा दुष्ट और अत्याचारी था। वह लोगों को पकड़ कर समुद्र में पैर धोने के लिये कहता और जब वह ऐसा करते तो उन्हें लात मार कर समुद्र में दूर ढकेल देता था। थीसियस ने उसे पहाड़ की चोटी पर से लात मारकर नीचे गहरे समुद्र में फेंक दिया जहाँ गिर कर वह मर गया। एक दानव सिनिस था और वह आदमी को पकड़ कर उसके दोनों हाथ ऊँचे और मजबूत पाइन के दो वृक्षों को झुकाकर उससे बाँध देता। तत्पश्चात् पेड़ों को छोड़ देता जो झटके के साथ ऊपर चले जाते और आदमी की बोटी-बोटी अलग गिर जाती थी। थीसियस ने उसे पकड़ कर वैसे ही उन्हीं पेड़ों से बाँधकर मार डाला।

प्रोक्रुस्टीस नामक दानव बड़ा जालिम था। उसके पास एक लोहे का पलंग था। उस पर वह अपने शिकार को सीधा सुला देता। यदि वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आदमी पलंग पर छोटा पड़ता तो वह उसे खींच कर बड़ा करने का प्रयत्न करता और इस तरह मार डालता। और यदि वह पलंग से लंबा निकल जाता तो तलवार लेकर उसके अंगों को काटकर छोटा कर देता था। वह बेचारा कट कर ऐसे मर जाता था। थीसियस ने उसे भी उसी की तरकीब से मार डाला।

इस प्रकार दुष्टों को खत्म कर देने से थीसियस को बहुत ही ख्याति मिली। शीघ्र ही उसका नाम सारे ग्रीस में फैल गया। जब वह एथेन्स पहुँचा तो वहाँ उसका भव्य स्वागत हुआ और राजा ने उसे बुलाकर उसके सत्कार में एक बहुत बड़ी दावत दी। राजा को यह मालूम ही न था कि थीसियस उसी का बेटा है।

वास्तविकता यह थी कि एथेन्स के राजा के हृदय में भय ने स्थान कर लिया था। वह इस उठते हुए बहादुर से डरता था कि कहीं लोग उससे खुश होकर उसी को अपना राजा न बना लें। इसलिए मन ही मन कपट रखकर उसने उसे दावत में बुलाकर जहर देकर मार डालना चाहा था। ज़हर देने की चाल उसकी अपनी न थी। यह राय थी मीडिआ की जो नहीं चाहती थी कि ईगियस अपने पुत्र को पहचान कर उसे अपना उत्तराधिकारी बना दे। मीडिआ एक सुंदरी स्त्री थी जो राजा के पास रहती थी। जब सोने की खोज हुई थी तो यही स्त्री उसमें प्रधान बनकर गई थी। वह जादूगरनी भी थी। जिस समय एथेन्स में थीसियस आया था वह कोरिन्थ नामक स्थान में थी परन्तु उसे जादू से सब पता लग गया था। वह एकदम अपने उड़ने वाले परदार रथ में बैठकर एथेन्स आ गई थी और यहाँ आकर उसने राजा से असलियत छिपाकर यह कृत्य करवाया था।

जब उसने जहर का प्याला थीसियस को दिया तो उसने उसे एक हाथ में लेकर दूसरे हाथ से अपनी तलवार म्यान के बाहर निकाली क्योंकि वह अपने पिता के सामने शीघ्र ही जाहिर हो जाना चाहता था। ईगियस ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो वह तलवार देखी तो फौरन पहचान गया। लपक कर उसने वह जहर का प्याला थीसियस के हाथ से नीचे फेंक दिया और उसे अपने गले से लगा लिया। वह उसे पहचान गया था। मीडिआ ने जो यह पिता-पुत्र का मिलन देखा तो वह वहाँ से भागी और हमेशा की भाँति एशिया में जाकर छिप गई।

ईगियस ने अब थीसियस को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया जिसे सुनकर सभी एथेन्स के रहने वाले बहुत ही खुश हुए। उन्होंने उसे कंधों पर उठाकर पूरे नगर में उसका बड़ा शानदार जुलूस निकाला।

एथेन्स में बहुत दिनों से एक भारी संकट छाया हुआ था। यह बात वर्षों पुरानी थी परन्तु उसका असर अब तक बदस्तूर था।

बहुत साल पहिले एक बार क्रीट देश का राजकुमार एंड्रोजियस राजा ईगियस के पास एथेन्स में आया। राजा ने उसका भव्य स्वागत किया और उसके सत्कार में एक बहुत बड़ी दावत दी। परन्तु शीघ्र ही न जाने क्यों उसने उसे एक ऐसा कठिन कार्य करने के लिये भेजा जो उसके लिये प्राणघातक सिद्ध हुआ। उसने अपने मेहमान के साथ यह व्यवहार करके सारे करे कराये पर पानी फेर दिया क्योंकि उन दिनों कोई भी अपने अतिथियों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करता था। उसने उसे एक भयंकर साँड़ को मारने के लिये भेजा। एंड्रोजियस बहादुर था, इसलिए उसने ईगियस का कहना नहीं टाला और वह उसे मारने गया। परन्तु वहाँ जाकर स्वयं बैल द्वारा मारा गया। उसकी मृत्यु का समाचार पाकर ईगियस और एथेन्स के रहने वाले सभी डरे और उन्होंने इस बात को छिपाने का प्रयत्न भी किया परन्तु कहीं बात छिप सकती थी? शीघ्र ही क्रीट के जबरदस्त राजा माईनौस को अपने इकलौते पुत्र की इस मृत्यु का पता चल गया और क्रोध से पागल होकर वह अपनी विशाल वाहिनी लेकर एथेन्स पर चढ़ आया। ईगियस इतना बलवान नहीं था जो क्रीट की सेना से लड़कर जीत सकता। वह बहुत घबराया। माईनौस कठोर शासक था। ईगियस ने संधि का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आदमी पलंग पर छोटा पड़ता तो वह उसे खींच कर बड़ा करने का प्रयत्न करता और इस तरह मार डालता। और यदि वह पलंग से लंबा निकल जाता तो तलवार लेकर उसके अंगों को काटकर छोटा कर देता था। वह बेचारा कट कर ऐसे मर जाता था। थीसियस ने उसे भी उसी की तरकीब से मार डाला।

इस प्रकार दुष्टों को खत्म कर देने से थीसियस को बहुत ही ख्याति मिली। शीघ्र ही उसका नाम सारे ग्रीस में फैल गया। जब वह एथेन्स पहुँचा तो वहाँ उसका भव्य स्वागत हुआ और राजा ने उसे बुलाकर उसके सत्कार में एक बहुत बड़ी दावत दी। राजा को यह मालूम ही न था कि थीसियस उसी का बेटा है।

वास्तविकता यह थी कि एथेन्स के राजा के हृदय में भय ने स्थान कर लिया था। वह इस उठते हुए बहादुर से डरता था कि कहीं लोग उससे खुश होकर उसी को अपना राजा न बना लें। इसलिए मन ही मन कपट रखकर उसने उसे दावत में बुलाकर जहर देकर मार डालना चाहा था। ज़हर देने की चाल उसकी अपनी न थी। यह राय थी मीडिआ की जो नहीं चाहती थी कि ईगियस अपने पुत्र को पहचान कर उसे अपना उत्तराधिकारी बना दे। मीडिआ एक सुंदरी स्त्री थी जो राजा के पास रहती थी। जब सोने की खोज हुई थी तो यही स्त्री उसमें प्रधान बनकर गई थी। वह जादूगरनी भी थी। जिस समय एथेन्स में थीसियस आया था वह कोरिन्थ नामक स्थान में थी परन्तु उसे जादू से सब पता लग गया था। वह एकदम अपने उड़ने वाले परदार रथ में बैठकर एथेन्स आ गई थी और यहाँ आकर उसने राजा से असलियत छिपाकर यह कृत्य करवाया था।

जब उसने जहर का प्याला थीसियस को दिया तो उसने उसे एक हाथ में लेकर दूसरे हाथ से अपनी तलवार म्यान के बाहर निकाली क्योंकि वह अपने पिता के सामने शीघ्र ही जाहिर हो जाना चाहता था। ईगियस ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो वह तलवार देखी तो फौरन पहचान गया। लपक कर उसने वह जहर का प्याला थीसियस के हाथ से नीचे फेंक दिया और उसे अपने गले से लगा लिया। वह उसे पहचान गया था। मीडिआ ने जो यह पिता-पुत्र का मिलन देखा तो वह वहाँ से भागी और हमेशा की भाँति एशिया में जाकर छिप गई।

ईगियस ने अब थीसियस को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया जिसे सुनकर सभी एथेन्स के रहने वाले बहुत ही खुश हुए। उन्होंने उसे कंधों पर उठाकर पूरे नगर में उसका बड़ा शानदार जुलूस निकाला।

एथेन्स में बहुत दिनों से एक भारी संकट छाया हुआ था। यह बात वर्षों पुरानी थी परन्तु उसका असर अब तक बदस्तूर था।

बहुत साल पहिले एक बार क्रीट देश का राजकुमार एंड्रोजियस राजा ईगियस के पास एथेन्स में आया। राजा ने उसका भव्य स्वागत किया और उसके सत्कार में एक बहुत बड़ी दावत दी। परन्तु शीघ्र ही न जाने क्यों उसने उसे एक ऐसा कठिन कार्य करने के लिये भेजा जो उसके लिये प्राणघातक सिद्ध हुआ। उसने अपने मेहमान के साथ यह व्यवहार करके सारे करे कराये पर पानी फेर दिया क्योंकि उन दिनों कोई भी अपने अतिथियों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करता था। उसने उसे एक भयंकर साँड़ को मारने के लिये भेजा। एंड्रोजियस बहादुर था, इसलिए उसने ईगियस का कहना नहीं टाला और वह उसे मारने गया। परन्तु वहाँ जाकर स्वयं बैल द्वारा मारा गया। उसकी मृत्यु का समाचार पाकर ईगियस और एथेन्स के रहने वाले सभी डरे और उन्होंने इस बात को छिपाने का प्रयत्न भी किया परन्तु कहीं बात छिप सकती थी? शीघ्र ही क्रीट के जबरदस्त राजा माईनौस को अपने इकलौते पुत्र की इस मृत्यु का पता चल गया और क्रोध से पागल होकर वह अपनी विशाल वाहिनी लेकर एथेन्स पर चढ़ आया। ईगियस इतना बलवान नहीं था जो क्रीट की सेना से लड़कर जीत सकता। वह बहुत घबराया। माईनौस कठोर शासक था। ईगियस ने संधि का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रस्ताव राजा माईनौस के सम्मुख रखा। माईनौस ने यह सुनकर कठोर शब्दों में कहा :

"हर नौ वर्ष बाद एथेन्स से छाँटकर सात कुमारी कन्यायें और सात स्वस्थ युवक क्रीट पहुँचाने का वायदा यदि ईगियस करे तो इस समय मैं तुम्हें छोड़ सकता हूँ...."

राजा माईनौस की बात टाली नहीं जा सकती थी। यदि उसके विरोध में एक शब्द भी कहा जाता तो उसी समय वह एथेन्स का नाश कर देता। मजबूरन ईगियस ने अनुमति दे दी। तत्पश्चात् जो सात नवयुवक और नवयुवतियाँ पहले भेजी गईं उनके साथ जो व्यवहार क्रीट में हुआ उसे सुनकर एथेन्स के निवासी भय से थर्रा उठे। क्रीट के राजा ने उन्हें भूलभुलैयाँ वाले तहखाने में मिनोटौर के पास पटकवा दिया और वह उन्हें अमानुषिक तौर से खा गया।

देवता पौसीडौन ने एक दिन एक बहुत सुंदर बैल (साँड़) राजा माईनौस को दिया और कहा कि वह उसे अगले उत्सव पर उसी के मंदिर में भेंट चढ़ा दे। पर वह बैल इतना बलिष्ठ और सुंदर था कि माईनौस ने उसे नहीं मारा और उसे रख लिया। पौसीडौन ने यह देखकर उसे दंड देना चाहा और इसीलिये उसने उसकी रानी पैसिफ़ी के हृदय में उस बैल के प्रति इतना प्रेम और इतनी वासना भर दी कि वह उस पर दीवानी हो गई। नतीजा यह हुआ कि रानी पैसिफ़ी के उससे एक पुत्र उत्पन्न हो गया। परन्तु वह आधा आदमी और आधा बैल था। ऊपर उसका शरीर मनुष्यों जैसा और नीचे वह बैल जैसा था। वह हिंस्र पशुओं की भाँति भयंकर था। माईनौस ने जब उसे देखा तो एक बार तो वह रानी पर बहुत क्रोधित हुआ परन्तु फिर ममता से उसका दिल भर आया। उसने उसे नहीं मरवाया। उसकी आज्ञा से पृथ्वी के अंदर एक ऐसी भूलभुलैयाँ वाली गुफा डीडैलस ने बनाई जिसमें घुसकर किसी के लिये बाहर आना असंभव था। उसने उस अर्ध-मनुष्य बैल को उसमें छुड़वा दिया और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसका नाम मिनोटौर रखा। मिनोटौर शीघ्र ही विशालकाय और अत्यंत पराक्रमी हो गया और वह क्रूर और हिंस्र भी बहुत था। जब कभी कोई उस गुफा में फँस जाता तो वह उसे खींच कर मार डालता और फिर खा जाता था। उससे बचना असंभव था। मनुष्य अपनी वीरता और अस्त्र-शस्त्रों से जीतने का प्रयत्न भी करता तो सबसे बड़ी मुश्किल तो मार्ग पाकर वापस बाहर जाने की थी। वह गुफ़ा बनी ही ऐसी थी कि चाहे जिस रास्ते से भागने पर मनुष्य सीधा मिनोटौर के सामने जा पहुँचता था। यदि वह चुप खड़ा हो जाता तो जाने किधर से आकर वह भयंकर पशु उस पर आक्रमण कर देता था। मिनोटौर के सींग भी बड़े तेज़ थे जिनसे वह मनुष्य को छेद डालता था।

एथेन्स के लोगों को इन तमाम बातों का पूरा इल्म था और इसलिए वह क्रीट जाने के नाम से थर-थर काँपते थे। थीसियस के राजकुमार घोषित होने के कुछ ही दिन बाद एक बार फिर नवें वर्ष का निर्धारित समय आ गया और सारे एथेंस में रोना फैल गया। थीसियस को उसी समय इन सारी बातों के भेद का पता लगा गया था। वह फौरन आगे आया और अपने पिता से कहा :

"हे पिता! अबकी बार उन सात युवकों के झुण्ड में मैं भी जाना चाहता हूँ....मुझे जाने की अनुमति दो।"

थीसियस इतना अधिक जनप्रिय था कि लोगों ने उसे मृत्यु के मुँह में इस तरह भेजने से साफ़ इंकार कर दिया और उन्हें देखकर राजा ने भी अपनी अनुमति नहीं दी। तब वह अपने पिता के पास पहुँचा और बोला :

"....मुझे वह युक्ति मालूम है जिससे मिनोटौर मारा जा सके, अतएव मेरा यहाँ रुककर औरों को मुसीबत में ढकेलना ठीक नहीं है। मैं निश्चय कर चुका हूँ कि वहाँ अवश्य जाऊँगा...यह जो हमारे जहाज़ों पर मातम का काला झंडा उड़ा करता है इसे मैं बदल कर सफ़ेद झंडा लगा दूंगा....परन्तु मैं ऐसा तब ही करूँगा जब उस दुष्ट मिनोटौर को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मार डालूँगा। और तब उस सफ़द झंडे को दूर से ही फहराते देखकर तुम समझ लेना कि मैं विजयी होकर आ रहा हूँ...."

राजा ने आधे मन से उसे जाने की आज्ञा दे दी। तत्पश्चात् रोते हुए स्त्री-पुरुषों के साथ वह क्रीट देश की ओर रवाना हो गया।

जब यह सब लोग वहाँ पहुँचे तो राजा माईनौस की आज्ञा से इनका एक जुलूस सारे नगर में निकाला गया। भूलभुलैयाँ वाली गुफा की ओर इन्हें ले जाया जा रहा था। थीसियस सबसे आगे चल रहा था। सभी लोग इन्हें उत्सुकता से देख रहे थे। कुछ के हृदय में इनके प्रति दया की भावना भी उस समय आई क्योंकि मिनोटौर के बल से सभी परिचित थे।

राजा माईनौस की एक लड़की थी। उसका नाम एरिआडने था। वह एक बहुत सुंदरी युवती थी। उसने राजमहल के झरोखे से खड़े होकर नीचे जाते हुए थीसियस को जो देखा तो वह उस पर एकदम रीझ गई। प्रथम दृष्टि में ही वह उससे प्रेम करने लग गई। वह उसके बिना ऐसा अनुभव करने लग गई जैसे रह ही नहीं सकेगी। जब थीसियस आँखों से ओझल हो गया तो वह एक पल भी बिना उसके छटपटाने लगी। वह सीधी डीडैलेस के पास पहुँची और उससे बोली :

"हे डीडैलस! तुमने ही वह भूलभुलैयाँ वाली गुफा बनाई है और आज मैं तुम्हारे पास इसीलिये आई हूँ कि तुम मुझे उसमें से निकलने का मार्ग बतला दो। थीसियस से मैं प्रेम करने लगी हूँ और उसके बिना अब मैं रह नहीं सकती हूँ। तुम्हें मेरी मदद करनी चाहिये और मेरे प्रियतम को उस मौत के घर से बचाना चाहिये।" इतना कहकर वह आँखों से आँसू बहाती हुई उसकी ओर देखने लगी।

डीडैलस ने उसकी प्रेम से व्यथित अवस्था देखी और तब वह प्यार से बोला :

"अंदर जाते समय थीसियस हाथ में छिपाकर एक डोरे का गोला ले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाय। जब वह अंदर चला जाय तो दरवाजे में एक ओर उस डोरे को बाँध दे। फिर जैसे-जैसे आगे बढ़ता जाय उस गोले को खोलता चला जाय इससे वह गये हुए मार्ग से वापस आ सकेगा।....लो मैंने तुम्हें तुम्हारे प्रियतम के बचने का उपाय बतला दिया है।"

माईनौस की लड़की यह सुनकर बहुत खुश हुई और सीधी उस गुफा के पास जा पहुँची, साथ में डोरे की एक पेचक (गोला) भी लेती गई। उसने वहाँ जाकर अंदर घुसते हुए थीसियस को एक ओर बुला कर कहा :

"हे सुंदर पुरुष! यदि तुम मुझे यहाँ से जाते समय अपने साथ एथेन्स ले जाने का वायदा करो....यदि तुम मुझे अपनी प्रिया स्त्री बनाने का वचन दो तो मैं तुम्हें इस भयानक स्थान से बचने का उपाय बता सकती हूँ," और तब वह उसकी ओर उत्सुकता से देखने लगी।

थीसियस ने जब उस राजकुमारी की सुंदरता देखी तो वह ठगा सा रह गया। उससे उससे सब बातों का वचन शीघ्र दे दिया। सुनकर राजकुमारी बहुत खुश हुई। और उसने उसे डीडैलस की बतलाई हुई तरकीब बतलाकर उसके हाथ में छिपाकर वह डोरे की पेचक दे दी।

थीसियस अपने तमाम साथियों को गुफा के द्वार पर ही छोड़कर अकेला अंदर गया। वह दुबकता, छिपता, डोरा खोलता हुआ आगे बढ़ा। थोड़ी ही दूर जाने पर उसने देखा कि एक भयंकर जीव पड़ा सो रहा है। थोड़ी देर तक थीसियस खड़ा होकर उस विचित्र पशु को आश्चर्यपूर्वक देखने लगा। उसने अपने भाग्य की बड़ी सराहना की और देवताओं को मन ही मन धन्यवाद दिया कि उस समय मिनोटौर उसे सोता हुआ मिला। अब बिजली की तरह वह उछला और उस सोते हुए पशु की गर्दन पर सवार हो गया। तलवार तो उसके पास उस समय नहीं थी परन्तु उसका जोश अवश्य दूना हो रहा था। उसने अपने मज़बूत हाथों से मिनोटौर का गला इतना दबाया कि वह साँस रुक जाने से शीघ्र ही मृतप्राय हो गया। थीसि-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मार डालूँगा। और तब उस सफ़द झंडे को दूर से ही फहराते देखकर तुम समझ लेना कि मैं विजयी होकर आ रहा हूँ...."

राजा ने आधे मन से उसे जाने की आज्ञा दे दी। तत्पश्चात् रोते हुए स्त्री-पुरुषों के साथ वह क्रीट देश की ओर रवाना हो गया।

जब यह सब लोग वहाँ पहुँचे तो राजा माईनौस की आज्ञा से इनका एक जुलूस सारे नगर में निकाला गया। भूलभुलैयाँ वाली गुफा की ओर इन्हें ले जाया जा रहा था। थीसियस सबसे आगे चल रहा था। सभी लोग इन्हें उत्सुकता से देख रहे थे। कुछ के हृदय में इनके प्रति दया की भावना भी उस समय आई क्योंकि मिनोटौर के बल से सभी परिचित थे।

राजा माईनौस की एक लड़की थी। उसका नाम एरिआडने था। वह एक बहुत सुंदरी युवती थी। उसने राजमहल के झरोखे से खड़े होकर नीचे जाते हुए थीसियस को जो देखा तो वह उस पर एकदम रीझ गई। प्रथम दृष्टि में ही वह उससे प्रेम करने लग गई। वह उसके बिना ऐसा अनुभव करने लग गई जैसे रह ही नहीं सकेगी। जब थीसियस आँखों से ओझल हो गया तो वह एक पल भी बिना उसके छटपटाने लगी। वह सीधी डीडैलेस के पास पहुँची और उससे बोली :

"हे डीडैलस! तुमने ही वह भूलभुलैयाँ वाली गुफा बनाई है और आज मैं तुम्हारे पास इसीलिये आई हूँ कि तुम मुझे उसमें से निकलने का मार्ग बतला दो। थीसियस से मैं प्रेम करने लगी हूँ और उसके बिना अब मैं रह नहीं सकती हूँ। तुम्हें मेरी मदद करनी चाहिये और मेरे प्रियतम को उस मौत के घर से बचाना चाहिये।" इतना कहकर वह आँखों से आँसू बहाती हुई उसकी ओर देखने लगी।

डीडैलस ने उसकी प्रेम से व्यथित अवस्था देखी और तब वह प्यार से बोला :

"अंदर जाते समय थीसियस हाथ में छिपाकर एक डोरे का गोला ले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाय। जब वह अंदर चला जाय तो दरवाजे में एक ओर उस डोरे को बाँध दे। फिर जैसे-जैसे आगे बढ़ता जाय उस गोले को खोलता चला जाय इससे वह गये हुए मार्ग से वापस आ सकेगा।....लो मैंने तुम्हें तुम्हारे प्रियतम के बचने का उपाय बतला दिया है।"

माईनौस की लड़को यह सुनकर बहुत खुश हुई और सीधी उस गुफा के पास जा पहुँची, साथ में डोरे की एक पेचक (गोला) भी लेती गई। उसने वहाँ जाकर अंदर घुसते हुए थीसियस को एक ओर बुला कर कहा:

"हे सुंदर पुरुष! यदि तुम मुझे यहाँ से जाते समय अपने साथ एथेन्स ले जाने का वायदा करो....यदि तुम मुझे अपनी प्रिया स्त्री बनाने का वचन दो तो मैं तुम्हें इस भयानक स्थान से बचने का उपाय बता सकती हूँ," और तब वह उसकी ओर उत्सुकता से देखने लगी।

थीसियस ने जब उस राजकुमारी की सुंदरता देखी तो वह ठगा सा रह गया। उससे उससे सब बातों का वचन शीघ्र दे दिया। सुनकर राजकुमारी बहुत खुश हुई। और उसने उसे डीडैलस की बतलाई हुई तरकीब बतलाकर उसके हाथ में छिपाकर वह डोरे की पेचक दे दी। ...

थीसियस अपने तमाम साथियों को गुफा के द्वार पर ही छोड़कर अकेला अंदर गया। वह दुबकता, छिपता, डोरा खोलता हुआ आगे बढ़ा। थोड़ी ही दूर जाने पर उसने देखा कि एक भयंकर जीव पड़ा सो रहा है। थोड़ी देर तक थीसियस खड़ा होकर उस विचित्र पशु को आश्चर्यपूर्वक देखंने लगा। उसने अपने भाग्य की बड़ी सराहना की और देवताओं को मन ही मन धन्यवाद दिया कि उस समय मिनोटौर उसे सोता हुआ मिला। अब बिजली की तरह वह उछला और उस सोते हुए पशु की गर्दन पर सवार हो गया। तलवार तो उसके पास उस समय नहीं थी परन्तु उसका जोश अवश्य दूना हो रहा था। उसने अपने मज़बूत हाथों से मिनोटौर का गला इतना दबाया कि वह साँस रुक जाने से शीघ्र ही मृतप्राय हो गया। थीसि-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यस ने उसके माथे और सिर पर घूँसों से भयानक प्रहार किया। मिनोटौर मर गया। अब उसने उसी डोरे की मदद से बाहर का रास्ता ढूँढ़ लिया और अपने बाकी साथियों को लेकर उस गुफा से बाहर आया। वहाँ उसे एरिआडने तैयार खड़ी मिली जो उसे देखते ही उससे लिपट गई। वह उसके प्रेम में मतवाली हो गई थी। थीसियस ने शीघ्र ही उन सब के साथ जहाज़ पर चढ़कर उसका लंगर उठा लिया और एथेन्स की ओर तीव्र गति से चलने के लिये मल्लाहों को आज्ञा दी।

जब वे लोग काफ़ी दूर निकल आये तो उन्हें समुद्र के बीच एक टापू मिला। माईनौस की पुत्री अपने जीवन में पहली बार समुद्र पर निकली थी और उसकी तबियत बहुत ज्यादा खराब हो गई थी। थीसियस ने उसके खातिर जहाज़ को उस टापू के किनारे लगा दिया और बाँध दिया। वह उसे लेकर टापू पर उतर गया। उसने उसे वहाँ के हरे-भरे स्थानों में खूब घुमाया और कहा :

"हे सुंदरी! अब कुछ दिन तुम यहीं रहो जिससे तुम्हारी हालत सुधर जाय....तब तक मैं जाकर जहाज की व्यवस्था देखकर आता हूँ...."

"जल्दी आना....मैं तुम्हारे बिना जी नहीं सकूँगी....," एरिआडने ने आह भर कर कहा।

"अभी आया प्रिये," कहकर थीसियस वहाँ से किनारे की ओर चला। जब वह किनारे आकर जहाज के अंदर घुसा उसी समय तेज तूफान समुद्र में चलने लगा। मल्लाह लोग जहाज को बाँधने भागने लगे। तूफान इतना तेज़ था कि जितने में थीसियस जहाज़ से उतरे, उसके तमाम बंधन टूट गये और जहाज डगमगाता हुआ, समुद्र के बीच बहता हुआ चला गया। थीसियस ने उतरने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु वह ऐसा न कर सका।

पंद्रह दिन तक जहाज़ समुद्र के बीच लहरों के थपेड़ों से इधर-उधर डोलता रहा और किसी भी भाँति थीसियस के काबू में नहीं आया। बड़ी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुश्किल से मल्लाहों ने उसे काबू में किया और तब वे लोग उसे उसी टापू के किनारे वापस लाये।

थीसियस जहाज से उतर कर सीधा उस स्थान पर जा पहुँचा जहाँ वह एरिआड्ने को छोड़ गया था परन्तु वहाँ उसे न पाकर वह चारों ओर उसे पुकारते हुए ढूँढ़ने लगा। थोड़ी देर बाद एक झील के किनारे एक घने वृक्ष की छाया में उसे उस स्त्री की लाश पड़ी मिली। वह एक बार उसे देखकर धक से रह गया। परन्तु फिर उसकी चेतना वापस आ गई। और तब वह उसके पास जाकर उससे लिपट कर रोने लगा। उसने उसे खोकर बहुत दुख मनाया और उसके सभी साथियों उसे बहुत-बहुत सांत्वना दी। तत्पश्चात् फिर सब लोग जहाज पर बैठे और एथेन्स की ओर चले।

राजा ईगियस जब से थीसियस गया था, नित्य एक्रोपोलिस (राजधानी) पर चढ़कर समुद्र की ओर अपने पुत्र के वापस लौटने की प्रतीक्षा किया करता था। उसने निश्चय किया था कि यदि जहाज काले झंडे सहित वापस आया तो वह ऊँचे पहाड़ से जिसके नीचे समुद्र हरहरा रहा था, गिर कर प्राण त्याग देगा।

अपनी प्रेयसी के मर जाने से थीसियस इतना अधिक दुखी हो रहा था कि एथेन्स के करीब आने पर भी उसे काला झंडा बदल कर सफ़ेद झंडा लगाना याद न रहा। जब ईगियस ने काला झंडा देखा तो वह हताश हो गया और तभी ऊँचे पहाड़ पर चढ़ कर समुद्र में कूद पड़ा और मर गया। थीसियस की थोड़ी सी गलती से उसके पिता की मृत्यु हो गई। जिस समुद्र में वह गिरा वह उसी के नाम पर ईगियन समुद्र आज तक कहलाता है।

थीसियस एथेन्स में आते ही वहाँ का राजा बना दिया गया था। वह अत्यंत समझदारी और विरक्त भाव से राज्य करने लगा। कभी-कभी तो वह लोगों से यहाँ तक कहा करता था कि वह राज्य चाहता ही नहीं है। वह सभी को समान अधिकार देकर जनता का राज्य बनाना चाहता था। उसने थोड़े दिनों बाद अपने पद से स्वयं इस्तीफा दे दिया और तब एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धारा-सभा बनाई। उसके लिये एक सुंदर भवन का निर्माण कराया और उसमें जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों को बुलाकर, राजमंत्रणा और प्रबंध उनके हाथ में दे दिया। अब उसने केवल एक पद अपने लिये रखा। वह सेनापति बन गया और सेना को सदैव संगठित रखने लगा। शीघ्र ही एथेन्स पृथ्वी का स्वर्णिम भाग बन गया। वहाँ जनता अत्यंत सुखी थी और चारों ओर आनंद ही आनंद दिखाई देने लगा। केवल वही एक राज्य उस समय सारे संसार में था जहाँ लोगों को पूर्ण स्वतंत्रता थी।

सात राज्यों के महायुद्ध में जब विजयी थीबिस के रहने वाले थीबन सैनिकों ने हारे हुए अर्गिव लोगों को उनकी लाशों तक को दफ़नाने न देकर उनको जुल्म से दबाया तो वे लोग एथेन्स को ही स्वतंत्रता का उज्वल केन्द्र मानकर थीसियस के पास मदद के लिये आये। शरण में आये हुए लोगों के साथ थीसियस और एथेन्स के निवासियों ने बहुत ही अच्छा बर्ताव किया। थीसियस ने थीबन लोगों के पास संदेश भेजा कि मरे हुए लोगों से इस प्रकार बैर साधना मनुष्यता नहीं है परन्तु जब उन्होंने उसकी बातों पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया तो वह अपनी विशाल वाहिनी लेकर थीबिस पर चढ़ बैठा। उसने अपूर्व साहस और बल से उन्हें युद्ध में हरा दिया और उनसे कहा :

"मरे हुए लोगों से किसी की शत्रुता नहीं होती। तुम लोगों को चाहिये कि अर्गिव लोगों को आज्ञा दो कि वह अपने मुर्दों को गाड़ सकें।"

थीबन लोगों ने फौरन अर्गिव लोगों को ऐसा करने की आज्ञा दे दी। तत्पश्चात् थीसियस अपने सैनिकों से बोला :

"मेरे मित्रो! हम लोगों ने थीबन लोगों पर किसी शत्रुता के कारण तो हमला किया ही नहीं था। हमारी संसार भर में किसी से लड़ाई नहीं है क्योंकि हम किसी को हराकर उन्हें परतंत्र नहीं करना चाहते। मौजूदा हमला तो केवल इन्हें सबक सिखाने और मनुष्यत्व के पथ पर लाने के लिये किया गया था। अब हमारा उद्देश्य पूर्ण हो गया है। अर्गिव लोगों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धारा-सभा बनाई। उसके लिये एक सुंदर भवन का निर्माण कराया और उसमें जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों को बुलाकर, राजमंत्रणा और प्रबंध उनके हाथ में दे दिया। अब उसने केवल एक पद अपने लिये रखा। वह सेनापति बन गया और सेना को सदैव संगठित रखने लगा। शीघ्र ही एथेन्स पृथ्वी का स्वर्णिम भाग बन गया। वहाँ जनता अत्यंत सुखी थी और चारों ओर आनंद ही आनंद दिखाई देने लगा। केवल वही एक राज्य उस समय सारे संसार में था जहाँ लोगों को पूर्ण स्वतंत्रता थी।

सात राज्यों के महायुद्ध में जब विजयी थीबिस के रहने वाले थीबन सैनिकों ने हारे हुए अर्गिव लोगों को उनकी लाशों तक को दफ़नाने न देकर उनको जुल्म से दबाया तो वे लोग एथेन्स को ही स्वतंत्रता का उज्वल केन्द्र मानकर थीसियस के पास मदद के लिये आये। शरण में आये हुए लोगों के साथ थीसियस और एथेन्स के निवासियों ने बहुत ही अच्छा बर्ताव किया। थीसियस ने थीबन लोगों के पास संदेश भेजा कि मरे हुए लोगों से इस प्रकार बैर साधना मनुष्यता नहीं है परन्तु जब उन्होंने उसकी बातों पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया तो वह अपनी विशाल वाहिनी लेकर थीबिस पर चढ़ बैठा। उसने अपूर्व साहस और बल से उन्हें युद्ध में हरा दिया और उनसे कहा :

"मरे हुए लोगों से किसी की शत्रुता नहीं होती। तुम लोगों को चाहिये कि अर्गिव लोगों को आज्ञा दो कि वह अपने मुर्दों को गाड़ सकें।"

थीबन लोगों ने फौरन अर्गिव लोगों को ऐसा करने की आज्ञा दे दी। तत्पश्चात् थीसियस अपने सैनिकों से बोला :

"मेरे मित्रो ! हम लोगों ने थीबन लोगों पर किसी शत्रुता के कारण तो हमला किया ही नहीं था। हमारी संसार भर में किसी से लड़ाई नहीं है क्योंकि हम किसी को हराकर उन्हें परतंत्र नहीं करना चाहते। मौजूदा हमला तो केवल इन्हें सबक सिखाने और मनुष्यत्व के पथ पर लाने के लिये किया गया था। अब हमारा उद्देश्य पूर्ण हो गया है। अर्गिव लोगों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के मुर्दे अब गाड़े जा सकेंगे। अब थीवन्स से हमारा कोई सरोकार नहीं है। हम उनके देश को लूटना नहीं चाहते न उन्हें दबाना चाहते हैं. . . .मित्रो अब वापस चलो।"

और इस प्रकार थीसियस ने अपनी महानता का प्रदर्शन करके संसार में अपना गौरव ऊँचा किया।

आज भी संसार में थीसियस का नाम प्रसिद्ध है क्योंकि वही पहला राजा था जिसन स्वयं ही अपने सर्वाधिकारों का त्याग करके एक आदर्श राज्य की स्थापना की थी। ग्रीस के प्राचीन इतिहास में उसका नाम स्वर्णाक्षरों से लिखा जाता है।

इन सब कामों के अतिरिक्त उसने और भी ऐसे-ऐसे काम किये थे जिनसे औरों का बहुत हित हुआ। थीसियस सच्चा मित्र और हमदर्द साथी था। प्राचीन वृद्ध ईडियस जब बहुत वृद्ध हो गया था और उसे संसार में सभी ने त्याग दिया था उस समय केवल थीसियस ने ही उसकी सहायता की और अपने पास लाकर रखा। वह उसकी आखिर तक सेवा करता रहा। जब वह मर गया तो उसने उसका दाह संस्कार विधिपूर्वक किया और उसकी दोनों पुत्रियों को उचित आश्रय दिया।

इसी भाँति थीसियस जनता द्वारा प्यारा बनकर एथेन्स के इतिहास को उज्ज्वल करता हुआ बहुत वर्षों तक जीवित रहा। उससे सभी लोगों ने प्रेम किया और जब वह मरा तो एथेन्स दुख में डूब गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust